॥ श्री ॥

क्या था देश हमारा, हम थे? उसका सपना आज हुआ!।
भूल गये हम, हमको सारे, सवही काज अकाज हुआ ॥
रहा न कुछ भी वैभव धन वा, दुख दरिद्र हम पर छाया।
छोड़ गया वाणिज्य हमें वह, दूर हटा धन की छाया ॥
मातृभूमि ! तू अपनी सन्तति, कैसी गोद सुलाती है ?।
भूखी, आधा पेटभरी वा, कैसी तरस न लाती है ? ॥
क्या तू इतनी रूखी सूखी, कठोर-हृदया हो ली है !।
कुपुत्र होता, कुमात पर नहिं, चहुँ दिश अकाल, होली है ॥
वन्धुभाव का अभाव होकर, नहीं किसी को समता है।
स्वभाव कैसा हुआ ? न कुछ भी, रही परस्पर ममता है ॥
आज न हमको स्वधर्म अपना, जाति, देश, कुल प्यारा है।
"हाय हाय धन!" करने पर भी, अव वह हमसे न्यारा है ॥
हाय ! हुए हम इतने परवश, वस्त्रपात्र के संग्रह में।
अल्प चीज भी यहां न मिलती, देशी खासी साग्र हमें !॥
छोड़ दिया निज उद्यम हमने, जिससे वैभव वढ़ता है।
वने आलसी अव हम पूरे, कैसे दरिद्र हटता है ? ॥
उठो उठो ! सव कमर वांधकर, घड़ी खूव अच्छी आई।
शिल्पकला से पदार्थ-संचय, करके धनी वनो भाई ! ॥
पदार्थ कर से वना काम में, अपने नित लाओ प्यारे !।
भूल न छीओ कभी विराने, निर्धन सव को कर डारे ॥
सस्ते महँगे कभी न देखो, भले वुरे वा मत मानो।
लेवो वेचो पदार्थ अपने, "फेशन" शोभा मत ठानो ॥
प्रज्ञावादी वनो कभी ना, उद्योगी वन दिखलाओ।
जिससे हो उद्धार तुम्हारा, कुल का, सव का, सुख पाओ ॥

श्री

उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति ओर पराक्रम ये छे जठे छे उठे भगवान् सहाय होवे छे. उद्योगी पुरुषश्रेष्ठ के पास लक्ष्मी आवे छे, हलका आदमी नसीबा पर भरोसो राख्या करे छे. नसीबा को भरोसो छोड़कर आपकी शक्ति परवाणे पराक्रम करणो चाहिजे. प्रयत्न कीनो छतां पण कोई काम सिद्ध नहीं होवे तो फेर उठे कौने दोष छे?

छोटी छोटी वस्तु एक ठिकाणे हो जावे तो वे मिलकर बड़ो काम कर नाखे. घास की काड्यां इकट्ठी होबा सूं बींको रस्सो बणकर बड़ा हाथीने बांध नाख्या करे छे!

सत्य युग मांहे बलि, त्रेता युग मांहे परशुराम, द्वापर युग मांहे धर्मराजा बड़ा दानी था. कलियुग मांहे कोई दानी रह्यो नहीं तिकासूं विधाता वेपारी उत्पन्न कीना छे.

देश देश फिरकर अनेक चमत्कार देखतो हुवो वेपार सूं धन संपादन करने पीछो आकर वियोग सूं उत्कंठित स्त्री के साथ कोई विरलो सभाग्यो धन्य होकर सुख भोग्या करे छे.

उत्सव मांहे, संकट मांहे, काळ मांहे, राज्यक्रान्ति मांहे, राजदरबार मांहे ओर स्मशान मांहे जो साथ देवे वींने भाई जाणणो. संकट मांहे पड़्या हुवा भाई को उद्धार करे वोही साचो भाई छे. खाली मूंडा सूं वड़ी वड़ी वाता करने अलग रहवाळो कदेही भाई नहीं ! शोक, शत्रु ओर भय सूं बचावाळा, प्रीति ओर विश्वास का पात्र इशा " मित्र " ये दो अक्षररत्न कुण निर्माण कर्‍या छे ?

भगवान् परोपकार ओर मुक्तिने तराजू मांहे तोली, जद मुक्ति सूं परोपकार को वजन ज्यादा हुवो—देखकर ही भगवान् दस अवतार धारण कर्‍या. परोपकार के तांई वृक्ष फळे छे, परोपकार के तांई नद्या वव्हे छे, परोपकार के तांई गायां दूजे छे ओर परोपकार के तांई ओ शरीर छे.

परहित बस जिन्ह के मन मांही ।
तिन्ह कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं ।।
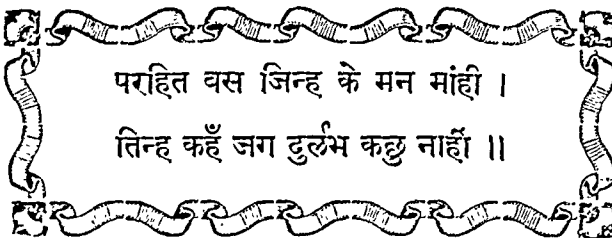
प्रस्तावना.

नाना रसमय चित्र है, नाटक जग में जाण ।
दृश्य काव्य सब को रुचे, मंगल रस को प्राण ॥
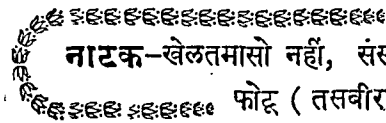
नाटक—खेलतमासो नहीं, संसार को चित्र छे. जिण तरह चितारो अथवा फोटू (तसवीर) उतारबाळो मिनख जिनावर विगेरा की तसबीर हूबेहूब खींच लेवे तिका मुजब संसार को खींच्यों हुवो चित्र—नाटक छे.

काव्य का दो प्रकार छे—एक श्राव्य ओर दूजो दृश्य. श्राव्य काव्य सुणवा लायक हुवा करे छे. जिशा—महाभारत, रामायण, रघुवंश, नैषधादिक, ओर दृश्य काव्य दीखबा लायक अर्थात् उण मांहेलो कथाभाग अथवा वर्णन जाणे वांचबाळा अथवा सुणवाळा के सामने हो रह्यो छे. जिशा—शाकुन्तल, उत्तररामचरित, मृच्छकटिक इत्यादि. सार वात—नाटक वींकोही नांव छे के वीं मांहे लिखी हुई वातां जाणे बांचवाळा ओर सुणवाळा के सामने समयानुसार लिख्या हुवा पात्र करने दिखा रह्यां छे. इसी वास्ते पंडितां को कव्हणो छे के—

वेदविद्येतिहासानामर्थानां परिकल्पनम् ॥
विनोदकरणं लोके नाट्यमेतद्भविष्यति ॥

वेदविद्या इतिहास का अर्थां की कल्पना करने दिल बहलाव के तांई नाटक को रूप होसी—इण मांहे कांई शंका छे ! संस्कृत मांहे इसीही नाटकरचना छे. जिण भाषा मांहे नाटक नहीं बा भाषा अपूर्ण ओर तुच्छ जाणणी. नाटक का लक्षण, संविधानक, प्रकार, पात्र, नायक, नायिका, रस, अलंकार इत्यादि किशा होणा तथा नाटक की रचना कियान होणी इत्यादि बातां जाणवा के तांई संस्कृत मांहे कित्ताही ग्रन्थ बण्या छे. तिका परवाणे ओ नाटक बण्यो छे इशी बात नहीं, तोभी आजका जमाना मुजब कितनीही वात का गुणदोष दिखाकर उणको सुधार करवा के तांई साधारण बोलचाल मांहे दिल सूं संविधानक जमाकर जाणे प्रत्यक्ष हुवोड़ी घटना के माफकही रचना करने आ पुस्तक वणाई छे. ओ नाटक रंगभूमि पर खेलवा का उद्देश्य सूं नहीं, फकत वांचने उपदेश मिलवा के तांई रच्यो छे.

इण नाटक को नांव "**फाटकाजंजाल**" रख्यो छे **फाटका** शब्द को अर्थ "सट्टो" एक प्रकार को बेपार जिण मांहे खाली कोई माल का भाव परवाणे वींको लेण

देण करणो ओर नियमित समय पर वीं माल को जो भाव होवे वीं परवाणे नफो नुकसाण लेणो देणो—छे. इण मांहे प्रत्यक्ष कोई माल लियो दियो जावे नहीं ओर न वींकी कीमत का रुपया दिया लिया जावे छे. ओ एक प्रकार को निष्परिवर्त्तन (बिलाबदल) जुव्वा को सो व्यवहार छे. वींको **जंजाल**–फंद, फांसो, झगड़ो, अर्थात् फाटका का फंद को वर्णन जिण मांहे छे वो "**फाटकाजंजाल नाटक**" तिकासूं विशेषकर मारवाड़ी सरदारांने म्हारी प्रेमपूर्वक बीनती छे के इण पुस्तकने खूब चित्त लगाकर साराही वांचे ओर वींको खूब विचार करने उण सू लाभ उठावे.

इण नाटक को संविधानक इशो छे के–श्रीकिसनजी ओर ब्रजलालजी दो भाई था. इण की दुकान मातबर थी. इणको रुजगार जमींदारी, जमीन की ऊपज, लेणदेण, हुण्डीचिट्ठी, व्याजबट्टा विगेरा को थो. श्रीकिसनजी साधो, भोळो, धर्मात्मा, पुराणा ढंग को आदमी थो. इणको वेपार साचो ओर प्रामाणिकपणा को थो. झूठकपट सट्टा फाटका को काम नहीं थो. छोटा भाई ब्रजलालजी की कम उमर थी ओर पढ्योलिख्यो नहीं थो, तिकासूं बुरी सोबत मांहे पड़कर भाई के छानेचोरी सट्टोफाटको करवा लाग गयो. सट्टा मांहे तथा ओर बुरा ढंग मांहे हजारों रुपया गमावा लाग गयो. पीछे घर मांहे कलह मचाकर भाई सू न्यारो हुवो. रुपया पंधरा लाख की पूंजी पांती मांहे आई. झट न्यारी दुकान करने खूब सट्टो चूंचायो. सट्टा मांहे दिन दिन नुकसाणही लागबो कर्‍यो. दुकान का मुनीम गणेशरामजी ओर ब्रजलालजी का दोस्त गंगाविसनजी एक मतो करने ब्रजलालजीने–सट्टा का सौदासूत कराकर खूब खाडा मांहे उतार्‍या ओर आपको फायदो कर लीनो. सौदा मांहे नफो मिलतो सू तो इणको ओर नुकसाण लागतो सू ब्रजलालजी को ! श्रीकिसनजी को वड़ो बेटो रामरतनजी पढ्योलिख्यो, हूंशार ओर घणो सुशील थो. रामरतनजी की वहू सुगनी पण पढ़ीलिखी ओर कुलवती थी. आपकी वहण सदासुखी का व्याव मांहे सीठणा, गाळया, नाच, फजूलखर्ची मना करने रामरतनजी आछो धैर्य दिखायो. रामरतनजी को मारवाड़ी लोगां के तांई एक कपड़ा की मिल खोलवा को विचार हुवो. उणका मित्र शिवनारायणजी, जगन्नाथप्रसाद, नारायणराव ओर मणिलाल के साथ देशहित संबंधी ओर सुधार संबंधी खूब संवाद हुवो. उण मांहे प्रत्येक वात पर विचार कियो गयो ओर मारवाड़ी जातिने देशहित संबंधी आछो उपदेश दियो गयो. ब्रजलालजीने हसनखां तथा करीमोद्दीन की सोबत मिली. णका प्रभाव सूं ब्रजलालजी का गळा मांहे एक मुन्ना जान की बेटी महबूब पड़ी. गाणोबजावणो, नाचरंग ओर खेलतमासा सुरू हुवा. बगीचो बंगलो खूब सजाया गया. नवा बंगला को काम सुरू हुवो. ब्रजलालजी की वहू पढ़ीलिखी सती लुगाई थी. आपका धणी का ये इशा बुरा प्रकार देखकर वा घणी दुखी रहती ओर वासवरत,

पूजापाठ करने धणी को भलो चाहती. पंडित बंसीधरजी एक विद्वान् ब्राह्मण इणका पुरोहित था. वे समय समय पर आछो बोध करता. इणही का कहबा परसू श्री-किसजनी तथा उणकी बहू लछमी बाई रामरतनजीने कपड़ा की मिल काढ़बा की परवानगी दीनी. अठीने ब्रजलालजीने सट्टा मांहे पूरो नुकसाण लाग्यो. अब इणको काम डिगमगायो. घरदार चीजबस्त विकणी सुरू हुई जरां, श्रीकिसनजी जगन्नाथ-प्रसाद वकीलने भाई के पास भेजकर उणकी कोई भी चीजबस्त बारे बिकणी पावे नहीं जिशो बन्दोबस्त करने आपको पूरो पूरो मायतपणो दरसायो. धणीने रस्ता पर लावाने राधा बाई नेम धरम सूं चालकर अमरसिंग तथा गुलाबचन्दजी की सहायता संपादन कीनी तथा महबूबने पण हाथ मांहे लीनी. अब ब्रजलालजी की दोस्ती गंगा-बिसनजी की बहू-जड़ाव के साथ हुई. सट्टा का भाव कव्या. भुगतावण के तांई गणेशरामजी तथा गंगाविसनजी की सल्ला परसूं लाख पचास हजार को गहणो गिरवी रखवा के तांई मुन्ना जान, हसनखां तथा करीमोद्दीनने ब्रजलालजी सूंपकर गवा-लियर कानी रवाना किना. वे गहणो लेकर चंपत हुवा. अठीने रामरतनजी कपड़ा की मिल खोलवा की तैयारी करने धूमधाम सूं पाया को मुहूर्त कीनो, उण वखत बंसीधरजी को उप-देश, जगन्नाथप्रसाद को लेक्चर तथा रामरतनजी को स्वागत घणा आनन्द ओर उत्साह सूं होकर मिल को काम सुरू हुवो. ब्रजलालजी को काम कच्चो पड़कर इण की दुकान उठ गई. अब ब्रजलालजी आंक का सौदा करता हुवा ओर लोगां का लेण देण का धाक सूं मुंह छिपाता हुवा अठीने उठीने गळी गळी मांहे फिरवो सुरू कीनो. करीमोद्दीन, हसनखां तथा मुन्ना गहणो ले गई सू कानपुर मांहे जाकर रह्या. तीन्या मांहे फूट पड़वा सूं हसनखां तथा करीमोद्दीन मुन्नाने मारकर गहणो लेकर पटियाले गया. उठे सू पकड़ीजकर पीछा कान-पुर आया ओर दोन्यांने फांसी की सजा हुई. गुलाबचन्दजी तथा अमरसिंग की खट-पट सूं ब्रजलालजी को सारो गहणो पाछो हाथ आयो. पंडित बंसीधरजी की वहू चम्पाबाई लछमी बाईने-बामण्या कने सू माथोचोटी कराणी, पगां के मेहंदी लगाणी तथा सीठणागाळ गुवाणी ये बातां बुरी तथा धर्मविरुद्ध छे तिकारो खूब आछो उप-देश दीनो. अठीने गंगाविसनजी की वहू जड़ाव-घर को सारो मालताल लेकर गणेशरामजी मुनीम के साथ चलती हुई, तिकासूं गंगाविसनजी घबराकर अफीम खाकर अपघात कर लीनो. राधा बाई का सत का प्रभाव सूं तथा गुलाबचन्दजी ओर अमरसिंग की खटपट सूं-साहूकारां की डिगन्या परसूं दीवाणी जेल मांहे पड्या हुवा आपका भाईने छुड़ाकर श्रीकिसनजी घरां भेजो. घणा दिनां सूं लुगाई बेटा को मिलाप हुवो. अब धणी धिराणी का आनन्द को पार नहीं रह्यो. जगन्नाथप्रसाद तथा रामरतनजी की सल्ला सूं ब्रजलालजी को सारो कर्जो चुकाकर श्रीकिसनजी सारां की रसीदां लीनी. ब्रजलालजी के तांई एक घर, बगीचो तथा जयदेव का व्याव के

तांई दस हजार रुपया राख्या. महवूव रंडी होकर भी उशा वखत मांहे काम आई तिकासूं वींने दियोड़ो घर वींके पास कायम रखकर जीवे जठे तांई तीस रुपया को महीनो कर दीनो. अमरसिंग तथा गुलावचन्दजीने पांच पांच हजार रुपया इनाम दीना. तथा मिल मांहे नोकर राखकर उणको पूरो आदर कीनो. व्रजलालजीने मिल का मेनेजर वणाकर कमिशन एजंसी मांहे रामरतनजी आपका भाग मांहे सू आधो भाग दीनो. ओर दोन्यूं भाई, भतीजा सारा कुटंव का पीछा एकत्र होकर आनन्द सूं आपको संसार चलायो.

आरंभ मांहे वंसीधरजी को धर्म सम्वन्धी सदुपदेश, श्रीकिसनजी तथा लछमी वाई का भापण मांहे श्रीकिसनजी का वन्धुभाव को निदर्शन, व्रजलालजी की नवी दुकान पर दलालां का छक्कापंजा, व्रजलालजीने जगन्नाथप्रसाद को उपदेश, वगीचा मांहे गंगाविसनजी, हसनखां, करीमोद्दीन के साथ व्रजलालजी को चौसर खेलणो, सुगनी वाई के सामने सदासुखी तथा सुन्दर की हांसीठट्टा, व्याव मांहे सीठणा तथा गाळया गाणी नहीं तिका वावत लछमी वाईने श्रीकिसनजी को समझावणो ओर वींको लछमी वाई को हांसीभर्‍यो जवाव, रामरतनजी, शिवनारायणजी आदि को स्वदेशभक्ति ओर सुधार वावत संवाद, व्रजलालजी का वंगला मांहे मुन्ना जान को गाणो, राधा वाई की सत्यनारायण की पूजा ओर पति का कल्याण के तांई परमेश्वर की प्रार्थना, रामरतनजी, जगन्नाथप्रसाद, पंडित वंसीधरजी आदि को स्वदेशीय वस्तुप्रचार का विपय मांहे ऊहापोह, मुन्ना जान ओर महवूव की व्रजलालजी का प्यार सम्वन्धी खूव रसीली वातचीत, रामरतनजी ओर सुगनी वाई की—मारवाड़ी राहरीत की, स्त्री पातिव्रत्य की, स्त्रीधर्म की इत्यादि सशास्त्र वातां, सट्टा का भाव सम्वन्धी व्रजलालजीने मोतीलालजी की सलाह, व्रजलालजीने सहायता देवा को जगन्नाथप्रसाद को वचन, महवूव का मिलाप मांहे राधा वाईने गहणा को तथा ओर वातां को पत्तो लागणो, लछमी वाई तथा श्रीकिसनजी की व्रजलालजी सम्वन्धी वातां, वंसीधरजी को कपड़ा की मिल खोलवा को उपदेश, तिका परसूं मिल खोलवा की श्रीकिसनजी की परवानगी, व्रजलालजी की ओर जड़ाव वाई की रसीली वातां, गंगाविसनजी तथा जड़ाव वाई का खूव मजेदार विचार, श्रीकिसनजी का वगीचा मांहे मिल को पायो नाखवा की तैयारी तथा जलसो, वंसीधरजी का प्रश्नां परसूं कम्पनी तथा मिल कियान खोलणी ओर मिल का नफानुकसाण का हिसाव विगेरा को सारो खुळासो, वंसीधरजी को उपदेश, जगन्नाथप्रसाद को रुई, कपड़ो ओर मिल सम्वन्धी हिन्दी मांहे लेक्चर, रामरतनजी को सारां को स्वागत करने अभिनन्दन करणो, व्रजलालजी का साहूकारां की गंगाविसनजी की जपती करणी, शहर का रस्ता मांहे व्रजलालजी के साथ पांचपचास रुपयां के तांई दो

दलालां की धूमधाम, राधा वाई के पास टोपी के तांई जयदेव को करुणाजनक हठ, अमरसिंग तथा गुलावचन्द को मुन्ना जान, करीमोद्दीन ओर हसनखां को पत्तो लगाकर आणो, मुन्ना को खून, हसनखां तथा करीमोद्दीनने फांसी, गयोड़ो गहणो पीछो मिलणो, वंसीधरजी की वहू चम्पा वाई को वामण्या कने सू माथो चोटी कराणी, पगां के मेहंदी लगाणी ओर सीठणा गाळ्या गवाणी ये इशा काम नहीं करवा को लछमी वाईने उपदेश, जड़ाव बाई को मालताल लेकर गणेशरामजी के साथ भाग जाणो, गंगाविसनजी की मृत्यु, ब्रजलालजीने दीवाणी जेल मांहे सू छुड़ाकर अमरसिंग तथा गुलावचन्दजी को उनके घरां पुगाणो, राधा वाई को मिलाप ओर पतिभक्ति, जयदेव को प्यार, ब्रजलालजीने मिल को कारखानो दिखाकर उणका प्रश्न परसू रामरतनजी को मिल सम्बन्धी काम को खुलासो तथा हिसाव करणो, ब्रजलालजी को सारो कर्ज चुकाकर श्रीकिसनजी को भाईने मुक्त करणो, गुलावचन्दजी तथा अमरसिंगने इनाम तथा नोकरी देकर सत्कार करणो, ब्रजलालजीने मिल का मेनेजर वणाकर एजंसी मांहे आपका हिस्सा मांहेलो आधो हिस्सो देकर रामरतनजी को सारा घरकां के साथ एकत्र करणो ओर श्रीकिसनजी को पूर्ण वन्धुभाव प्रदर्शित करणो—इत्यादि घणी वातां आई छे.

इण मांहे धर्म का दस लक्षण, पुत्रधर्म, वन्धुभाव, दलालां को जाळ, सट्टाफाटका सूं नाश, कुसंग को फळ, स्वार्थी लोगां की दगावाजी, रंडीवाजी को वुरो परिणाम, मारवाड़ी समाज की कुरीतां, उणका सुधार को उपाय, फूट सूं खरावो, एकता सूं फायदा, लुगायां को स्वभाव, स्वदेशभक्ति, स्वदेशवस्तुप्रचार, पातिव्रत्य, स्त्रीधर्म, रंडी ओर दगावाज मित्रां की करतूत, साची वन्धुप्रीति, संकट मांहे स्त्री तथा मित्र की परीक्षा, उद्योगधंधा कलाकुशलता सूं लाभ, मिल को उद्योग, रुई तथा कपड़ा को इतिहास, विद्या, स्त्रीशिक्षण, संसारसुधार, नीति, धर्म ओर सन्मार्ग को उपदेश—इत्यादि वातां को हो सक्यो जठे तांई ठिकठिकाणे खुलासो कीनो छे, जगां जगां शास्त्र को विचार कीनो छे ओर स्थान स्थान् धर्म, नीति, वाणिज्य को उपदेश कीनो छे. उमेद छे के कोई भी सरदार इण पुस्तकने एक वार वांच लेसी अथवा सुण लेसी तो अलवत कुछ न कुछ उणका घर को तथा वेपार को सुधार होसीही होसी.

इशा वखत का हेरफेर मांहे इण पुस्तक का वांचवा सुणवा सूं कींको भी आपका घर का तथा वेपार का सुधार कानी ओर सट्टाफाटका कपटजाळजंजाळ छोड़वा कानी जरा भी लक्ष्य गयो तो ग्रंथकर्त्ता घणी धन्यता मानसी ओर आपका क्रया परिश्रम सफळ हुवा जाणसी.
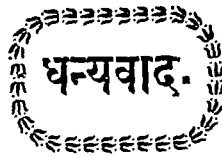
धन्यवाद.

धन्यवाद सबको करूं, पुस्तक लेकर हाथ ।
पढ़ी सुणी जिण नेह सूं, सादर दीनो साथ ॥

मारवाड़ी बोली मांहे प्रथम पुस्तक "केसरविलास" नाटक लिखी. वीं वखत उमेद बिलकुल नहीं थी के मारवाड़ी सरदार इण पुस्तकने हाथ मांहे लेकर वांचसी ओर आपका सुधार कानी कुछ भी लक्ष्य देसी. पण नहीं, थोड़ाही दिनां मांहे अनुभव आयो के मारवाड़ी सरदारां आपकी भाषा जाणकर खूब आदर कीनो ओर आपको आछो अभिप्राय जणायो. "केसरविलास" प्रसिद्ध होता पाण मन मांहे शंका आई के कदास आ वड़ी ओर एक रुपया की कीमत की पुस्तक वांचवा लेवा मांहे मारवाड़ी सरदार कुछ आगे पीछे करे तो एक छोटीशी पुस्तक "मोत्यां की कंठी" नांव की बणाकर सारा सरदारांने मुफत नजर कीनी. वींको तो खूब आछो असर जणायो. घणा लोगां को आपका घर का तथा लुगायां का सुधार कानी लक्ष्य गयो. पीछे "कनकसुन्दर" नांव की एक नवलकथा को पूर्वार्ध लिखकर प्रसिद्ध कीनो. उणको भी खूब आदर हुवो. मारवाड़ी सरदारां तो आदर कीनोही पण, हिन्दी, मरेठी, गुजराती जाणवावाळा भी इण पुस्तकां को आदर करने संग्रह कीनो. तिकासूं थोड़ाही दिना मांहे इण तिन्यूं पुस्तकां की काप्यां हाथोहाथ विक गई, ओर आजकाल घणाही सरदार मांग रह्या छे सू अब दूजी वार छपावणे की तजवीज हो रही छे.

चौथी पुस्तक "बुढ़ापा की सगाई नाटक" म्हारा एक दो रसीला मित्रां का कहवा सूं लिखकर छपाई छे, सू वा अबार सारा सरदारां की सेवा मां हे दाखल हो रही छे. उमेद छे के वींको भी आदर इण तरहही होवेलो ओर उण मांहे दरसाया मुजब बेजोड़ व्याव, सगाई तथा कन्याविक्रय को प्रचार बन्द करवा के तांई साराही भाई कमर कसकर तैयार होवेला. ऊपर की तीन्यूं पुस्तकां मांहे ब्राह्मणां का संबंध मांहे ठिकाणे ठिकाणे जोरदार लेख आया छे. तिका ऊपर ब्राह्मणां की तरफ सूं तथा अन्यान्य महाजन सरदारां की तरफ सूं भी आक्षेप हुवा छे के आपणी जाति का बुरा प्रचार लोगां के सामने रखकर पड़दो खोलणो ठीक नहीं, इण मांहे समाज की बुराई छे तथा आपणा हाथ सूं आपणी हलकी कर लेणी छे–सू ठीक ! पण जठे तांई समाज का दोष नहीं दिखाया जावे तथा व्यां दोषां सू समाज की कांई बुराई छे तिका नहीं दरसाई जावे, ओर व्यां दोषांने त्यागवा को उपदेश नहीं दियो जावे उठे तांई समाज को सुधार कदेही हो सके नहीं. दोष को छिपावणो उलटी बुराई करणो छे, दोषने प्रबल करणा छे, तथा दोष करवाने उत्तेजन देणो छे.

आज तांई समाज का दोष छिप्या रह्या तिकासूंही मारवाड़ी समाज आज सगळा सू पिछाड़ी छे, विद्या रहित छे ओर निराधार छे.

म्हारी इशी इच्छा कदेही नहीं छे के म्हे आगे होकर आपकी उच्च जाति का तथा पूज्य ब्राह्मणां का दोष दिखाकर स्वजाति की तथा ब्राह्मणां की बुराई करूं ! नही नहीं, कदेही नहीं ! म्हे एक उणको जातीय नम्र सेवक छूं, उणको हितचिंतक छूं ओर उणको साचो सलाहकार छूं. इण वास्ते शुद्ध अन्तःकरण सूं, प्रेमपूर्वक तथा नम्रभाव सू सारां की सेवा मांहे प्रार्थना छे के–सरदारो ! अब आगली दुनिया छे नहीं, सारो हेरफेर हो गयो छे ओर नवी रोशनी चमक उठी छे सू–विद्या सीखकर शाणा वणो, लुगायांने शाणी करने घर को सुधार करो, बेटा बेटीने पढ़ाकर हूंशार करो, आपका वेपार को ढंग सुधारो तथा फजूलखर्ची छोड़ द्यो. अब अगालो जमानो छे नहीं, अब आगलो रुजगार छे नहीं ओर अब आगली वात छे नहीं. जात मांहे, आपस मांहे ओर घर मांहे फूट छे वींने मिटावो ओर बन्धुभाव, ममता तथा एकता करने सारां सू हिलमिल कर खूब धनमाल कमावो. इणके तांईही आ पांचवी पुस्तक "फाटकाजंजाल" नाटक की लिखी छे सू सारा सरदार इणने बांचकर कुरीतां तथा फाटका को जंजाल छोड़कर सत्य वेपार सूं धन को संग्रह करने आपको सुधार करो !

इण तरह जिण जिण सरदारां आपका अभिप्राय दीना, साहनुभूति दरसाई, सहायता दीनी ओर विचार प्रकट कीना तिकाने घणा घणा धन्यवाद छे. तथा इण पुस्तकां को संग्रह करने उत्तेजन दीनो तिकाने भी धन्यवाद छे. उशोही आपकी मातृ-भाषा मारवाड़ी की कदर करने भाई गंगारामजी बी. ए. एलएल. बी. वकील अजमेर "धर्मपाल" नामक मारवाड़ी भाषा मांहे नाटक बणाकर मारवाड़ी भाषा को उपकार कीनो, ओर बाबू भगवतीप्रसाद दारूका कलकत्ता मांहे "वृद्धाविवाह" नाटक बणाकर मारवाड़ी भाषा पर आपको प्रेम व्यक्त कीनो, तथा भाई लछमनदासजी सालगराम कावरा "संगीत मोहन नाटक" मारवाड़ी भाषा मांहे बणाकर मारवाड़ी मांहे संगीत को प्रचार कीनो—तिका बद्दल इण तीन्यूं सरदारां को धन्यवाद छे. आखरी श्री परात्पर जगन्निवास परमात्मा का कोटिशः धन्यवाद छे के वीं मारवाड़ी भाषा कानी मारवाड़ी सरदारां को ध्यान पुगाकर उण कने सू मारवाड़ी भाषा मांहे पुस्तकां लिखाणी सुरू कराई—वोही परमेश्वर अब मारवाड़ी समाज की चकाचोंध दूर करने उणकी आंख्या मांहे ज्ञानशलाका फेरकर उणका दोष उणाने आपही आप दिखाकर पूर्व काळ के समान पूरा पूरा वर्णाश्रम समारूढ ओर धनधान्य संपन्न वणासी.

इंदोर, वर्षप्रतिपदा,
संवत् १९६४.

जातीय लघु सेवक–
शिवचन्द्र भरतिया.

॥ श्री ॥

इण नाटक मांहेला सारा नाटक पात्रां की बिगत.

रामचन्द्रजी	श्रीकिसनजी सेठ का मुनीम.
रतनसिंग	दुकान को जमादार.
हीरालालजी	श्रीकिसनजी का रोकड़या.
श्रीकिसनजी	एक अग्रवाल महाजन.
रामरतनजी	श्रीकिसनजी को वड़ो वेटो.
वंसीधरजी	एक विद्वान् पंडित.
लछमी वाई	श्रीकिसनजी की वहू.
व्रजलालजी	,, का छोटा भाई.
गणेशरामजी	व्रजलालजी का मुनीम.
गुलावचन्दजी	,, ,, रोकड़या.
शिवकरणजी	एक दलाल.
मोतीलालजी	दूजो ,,
जगन्नाथप्रसाद	एक वकील.
हसनखां	व्रजलालजी को जमादार.
करीमोद्दीन	हसनखां को दोस्त.
अमरसिंग	,, ,, दूजो दोस्त.
गंगाविसनजी	व्रजलालजी का दोस्त.
सुगनी वाई	रामरतनजी की वहू.
सदासुखी	श्रीकिसनजी की डावड़ी.
सुन्दर	पाड़ोसी की वेटी.
राधा वाई	व्रजलालजी की वहू.
शिवनारायणजी	रामरतनजी का दोस्त.
नारायणराव	,, ,, दूजा दोस्त.
मणिलाल	,, ,, तीजा दोस्त.
मुन्ना जान	एक गावाळी रंडी.
महवूव वीवी	मुन्ना जान की वेटी.
जड़ाव वाई	गंगाविसनजी की वहू.
जयदेव	व्रजलालजी को डावड़ो.
चंपा वाई	पंडित वंसीधरजी की वहू.
गोपाळजी	एक पुजारी.

तारवाळो, व्रजलालजी को साईस, तवलची, सारंगीवाळो, पेटी वजावाळो, शहर का मारवाड़ी, दूजा लोग, वाजावाळा ओर दो दलाल.

॥ श्री ॥

मंगलाचरण.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐकार-कारी प्रभु निर्विकारी, ॐ देश-धारी प्रभु सर्व-कारी ॥ ॐ देश-रूपी प्रभु सुस्वरूपी, ॐ बीज-रूपी प्रभु चित्स्वरूपी ॥ १ ॥
नमोऽस्तुते-मंगल लाभकारी, नर स्वदेश-प्रतिमा-विहारी ॥ नहीं जहां अल्प विदेश छाया, न स्वार्थ, देशार्थ निजार्थ काया ॥ २ ॥
मोहादिकों का दृढ़ जाल पूरा, मोह-प्रमादी बनके अधूरा ॥ मोक्षप्रथा को यदि छोड़ देगा, मोघ स्वदेशाऽहित तू करेगा ॥ ३ ॥
भगा विकारी भव-वासना को, भयावनी देश-दरिद्रता को ॥ भवार्त्तिहारी प्रभु-नाम भारी, भक्ताऽर्थ-कारी रट मोक्ष-कारी ॥ ४ ॥
गनीम मोहादिक को हटाके, गरीब होके रह काल ताके ॥ गति स्वतंत्रा प्रभु की कृपा से, गरिष्ठ होती जन-एकता से ॥ ५ ॥
वरिष्ठ ऐसा नरदेह पाया, वस्त्राऽन्नपानी बिन हा ! गंवाया ॥ वशी हुआ ना कर देश-सेवा, वदान्य से पाय सका न मेवा ॥ ६ ॥
तेजस्विनी शक्ति बिना न होती, तेजी कभी दुःख दरिद्र खोती ॥ तेरा न मेरा कुछ भी नहीं है, तेजोमय द्रव्य विना कहीं है ॥ ७ ॥
वार्ता दिखा तू कर देशभक्ति, वाणी वृथा बोल गंवा न शक्ति ॥ वाचालता से नहिं कार्य होता, वादप्रथा छोड़ विचार कोता ॥ ८ ॥
सुखावहा है निज वस्तु सारी, सुधारकर्त्री बहु लाभकारी ॥ सुलभ्य होना उसका जरूरी, सुकृत्य-साध्या, कर यत्न भूरी ॥ ९ ॥
दे साथ, उत्साह सहाय होके देशोपकारी बन, ताप खोके ॥ देहात्मधी वैर तज, प्रचार, देशाऽर्थ-कारी कर तू सुधार ॥ १० ॥
वाजी, करी, गो, धन, धान्य सारा वाणिज्य का है बहुधा पसारा ॥ वाणिज्य से लाभ अपार होता, वाणिज्य ही दुःख दरिद्र खोता ॥ ११ ॥
यथेच्छ यत्न, प्रिय देश-भाव, यथार्थ भक्ति प्रभु की, प्रभाव ॥ यकीन पूरा, निज धर्म-चाव, यशोऽर्थ देते कर सत्स्वभाव ॥ १२ ॥

विधान

है ॐ नमो भगवते युत वासुदेव—
आय-प्रयुक्त जग में यह मंत्रदेव ।
उद्धार पूर्ण अपना इससे किया है,
हो शूर पूर्वज घने, जय पा लिया है ॥

जन्मादि वन्ध इससे सब छूट जावें,
दुर्लभ्य क्या फिर यहां हम जो न पावें ? ।
सप्रेम मात्र इसको जपना सदाही,
कोई न नेम जप में स्थल, काल नाहीं ॥

ऐसा अमोघ फलदायक है न अन्य,
श्रद्धालु हो जप करो, वनके अनन्य ।
सद्भक्तियुक्त जप से प्रभु हो प्रसन्न,
होगा सहाय झट देख तुम्हें विपन्न ॥

दूजा उपाय अव है न, करावलम्व,
आधार है न कुछ भी, न करो विलम्व ।
हो देशतत्पर सदा, जप मंत्र-राज,
होवो विमुक्त करके निज देश-काज ॥

है सिद्धि पूर्ण इसमें कुछ भी न शंका,
है मुक्ति का यह विशाल निशानडंका ।
खाली इसे जप तरे ध्रुव, पुंडरीक,
प्रह्लाद तत्पद—सरोरुह—चंचरीक ॥

ऐसा समर्थ जव है निज मंत्र-राज,
क्यों फेर देर करना, जपना न आज ? ।
खोना न दुःख अपना, सपना न पाना,
सन्मुक्ति-लाभ उससे नहिं क्यों उठाना? ॥

हे ईश ! हे परम ईश्वर ! हे कृपालु ! होके दयार्द्र अब तू हमको संभाल ।

त्राता प्रभो ! शरण भारत का न कोई, तेरे सिवाय, जिसने रति, शांति खोई ॥

सट्टा बट्टा ना करो, कपट जाळ जंजाळ । लेण देण साचो करो लेवो देवो माल ॥

॥ श्री ॥

फाटकाजंजाल नाटक.

अंक पहलो.

पात्रः–रामचन्द्रजी (श्रीकिसन सेठ का मुनीम), **रतनसिंग** (दुकान को जमादार), **हीरालालजी** (रोकड्या), **श्रीकिसनजी** (एक अग्रवाल महाजन), **रामरतनजी** (श्रीकिसनजी का बड़ा बेटा), **बंसीधरजी** (एक पंडित), **लछमीबाई** (श्रीकिसनजी की बहू), **ब्रजलालजी** (श्रीकिसनजी का छोटा भाई), **गणेशरामजी** (उनका मुनीम), **गुलाबचन्दजी** (रोकड्या), **शिवकरणजी** (एक दलाल), **मोतीलालजी** (दूजो दलाल), **जगन्नाथप्रसाद** (एक वकील), **हसनखां** (ब्रजलालजी को जमादार), **करीमोदीन** (जमादार को दोस्त), **अमरसिंग** (दूजो दोस्त), **गंगाबिसनजी** (ब्रजलालजी का दोस्त), **तारवाळो तथा ब्रजलालजी को साईस.**

प्रवेश पहलो.

ठिकाणो–सराफा की दुकान.

(रामचन्द्रजी मुनीम आवे छे.)

रामचं०–(चान्या कानी देखकर) जमादार ! जमादार !!

(रतनसिंग अंदर सू आकर.)

रतन०–जी, होकम !

रामचं०–हुकम कायको भाई, हाल कोई आया नहीं ? आठ बज गई.

रतन०–हम क्या जानी ? अभी कोउ नहीं आवा.

(इतना मांहे हीरालालजी आवे छे.)

हीराला०–(हाथ जोड़कर) जयगोपाल, मुनीमजी साव.

रामचं०–(ऊपर देखकर) जयगोपाल, आज इत्ती देर कियान लगाई ?

हीराला०–देर कांई, घरां सू तो करां कों रवाना हुवो छूं पण, रस्ता मांहे रामाकिसनजी मिल गया. व्यां थोड़ी वार बैठा लीनो तिकासूं थोड़ी देर हो गई.

रामचं०–अबके तो रामाकिसनजी के पूरो नुकसाण सुण्यो छे. काम संभळ जावेलो के नहीं ?

हीराला०–भाईजी, नुकसाण तो पूरो छे. कांई करे बापड़ो, घर को तो सौदोसूत लांबोसो छे नहीं, पण आड़त्यां को फसाव ज्यादा छे. आपणा लोग आड़त का लालच मांहे आया पीछे बिलकुल आगे पाछे देखे कोनी; झट चार आठ आना का पैसा के तांई सो रुपया की जोखम उठा लेवे. वखत ऊपर आड़त्या तो दूर रह जावे ओर दुकानदार का गळा के फांसी लाग जावे ! सौदासूत की वखत जराभी विचार रव्हे नहीं. झट हजारों रुपया का नफानुकसाण मांहे उतर कर आप डूब कर दूसरांनेभी डुबा देवे.

रामचं०–भाईजी, म्हेतो आजतांई सट्टाफाटका सूं कोई न्याहाल हुवोड़ो देख्यो नहीं. सट्टोफाटको जुवो छे.

हीराला०–जुवा की तो भाईजी, मनाई छे ओर कायदा सूं दण्डभी छे.

रामचं०–भाई, नक्का दूवा इण मांहे छे नहीं, तिकासूं सरकार मना कर सके नहीं तोभी, लेणदेण की अर्जी फिर्यादी की सुणाईभी नहीं. जुवा मांहे ओर सट्टाफाटका मांहे काई फरक छे ? आपणा वाण्या को ओ रुजगार छेज नहीं. आपांने तो लेणदेण, व्याजवट्टो, माल की खरीदी बिक्री करणी चाहिजे. आपणा सेठ साव सौदोसूत बिलकुल करे नहीं, जरां देखो भलां, काम किशो बरकरार चाल रह्यो छे ? आछा आछा लखपती खुशामद करबो करे छे.

हीराला०–पण भाई, सेठजी नहीं करे तो कांई हुवो ? सेठजी का भाई तो छानेचोरी सौदा काई, आजकाल नीलाम को सौदोभी करवा लाग गया !

रामचं०—जरांही तो भाई भाई न्यारा हो रह्या छे. सेठजी घणा शाणा ओर समझदार छे. भाई हाथ मांहे आतो दीशो नहीं जरां, हारकर अलग कर देणोही चोखो समझ्या—नहीं तो आबरू गमा लेवे कांई ?

हीराला०—भाई रामचन्दरजी, ब्रजलालजी तो सुधरबा सू रह्या ! बुरी सोबत मांहे पड्या पीछे आदमीने कुछ सूझे नहीं. हळकी सोबत के कारण कित्ताही आछा आछा घर बिगड़ गया छे. आजकाल आपणा लोगां मांहे पैसावाळा का छोरा झट बिगड़ जावे, कारण माबापां को धाक नहीं. पढ्या लिख्या होवे तो कुछ ग्यान ऊपजे सू पण नहीं. बंगाली, गुजराती, मरेठां का छोरां कानी देखां जरां घणो ही अचरज आवे ! पण उपाव कांई—आपणा लोगां का छोरा तो ब्यांका छोरा जिशा पढ्या गुण्या होबा सू रह्या.

(इतना मांहे श्रीकिसनजी सेठ आवे छे.)

श्रीकिस०—(रामचन्द्रजीने) मुनीमजी, सारा लेणदेण की फरदी तो कालही तैयार हो गई थी. बाकी सामानसुमान की फरदी होणी थी बींको कांई हुवो ?

रामचं०—हां सेठ साब, हरिराम के पास तैयार करने दीनी छे. अबार आपके पास पूग जासी. ओर तो सब काम होही चुको छे.

श्रीकिस०—(मुंह मरोड़कर) काय को सिर को काम हो चुको छे ? रात दिन घर मांहे गोधम मचा रख्यो छे. आपणी आबरू कांई, बात कांई ओर घराणो कांई तिका ऊपर कुछभी ध्यान नहीं. श्रीजी जीं दिन ओ फंद काट देसी बीं दिन क्यूं थोड़ोघणो आराम मिलसी. (सांस भरकर) अब आराम काय को छे ? न्यारो हुवो तोभी कांई हुवो—दुख तो जनम तांई वण्योही रहसी. मरजी नारायण की ! म्हारे तो ब्रजलाल सूं कदेही दूसरो विचार थो नहीं. रामरतन सूं भी ज्यादा थो. पण करूं कांई—(बीच मांहे)

रामचं०—सेठ साब, आप कांई करो—आप जिशो भाई तो ब्रजलालजीने कोईभी जनम मिलणो नहीं. आपणा लोगां की राहरीत, चालचलन,

ओर सोवत को ओ नतीजो छे. देखो, कंवर साव की किशी चालचलन, बोल-चाल ओर रहारीत आछी छे? "पूत का पग पालणे" इण मांहे काई झूठ छे? ब्रजलालजीने तो वड़ा सेठ लाड़लाड़ मांहे बिगाड़ दीना, नहीं तो आज आ वात होती कांई? कंवर साव के ऊपर आपको पूरो धाक छे जरां रस्ता पर किशा बराबर चाल रह्या छे?

श्रीकिस०—(उदासी सूं) भाई, सारी नसीब की वातां छे. श्रीजी की मरजी मुजब सारी वातां वण्या करे छे. (याद आकर) मुनीमजी, फेर जरा आछी तरह सूं देख लीजो के दिसावर को कींको कुछ देणो तो छे नहीं? आपणे कींका रुपया जमा राखणे की सोगन तो छे पण नेम नहीं, कोई वखत कोई हुंडी फिरती फिरती आवे ओर कींका रुपया मुदत ऊपर आ-योड़्या होवे, अथवा ओर कींका माल का रुपया देणा होवे, तथा कोई भुग-तावण करणी होवे सू सरब चोकस देख लीजो. इशी नहीं होवे के भाया भायां की पांती हो रही छे तो कठे कोई तगादो नहीं भेज देवे? कोई एक रुपयोभी मांगवा आजावेलो तो म्हारी वातने वट्टो लागजावेलो—समझ्या?

हीराला०—(चोंककर) आपकी वातने वट्टो? नोज! इशा बोल आपका मूंडा सूं सुणकर म्हांको जीव घबरावे छे. सेठ साव, आपका वडेरां का पुन्नपरताप मोटा छे. आज वजार मांहे दुकान की हुंडी चार छे आना ऊंची ऊतरे छे. आप वजार सू एक पैसा को भी सामान उधार मंगावो नहीं फेर कुण मांगवाने आवावाळो छे?

(इतना मांहे रामरतनजी आवे छे.)

रामर०—भायाजी, काकाजी की अब बुरीबुरी वातां घर मांहे कीं सूं भी सुणी जावे नहीं. जलदी जठी को उठीने फन्द मिट जावे तो ठीक छे. आपणा लोगां की आ फूट कठे तांई वधेली कुण जाणे? म्हे इसकोल मांहे जातो जरां "पुरंदरे" की भायाभायां की फूट सूं सिवाजी महाराज के हाथ उणको किलो तथा राज्य किण तरह आयो तिकी हकीकत पढकर मने घणोही अचंबो आतो पण, म्हे खुद आपका घर मांहे वाकी वा वात देख

कर बड़ोही हैरान हो रह्यो छूं ! इण फूट सूं सारो देस खराब हो रह्यो छे. एक मा के दो बेटा होणा आपणा लोगां मांहे एक प्रकार को पाप छे. आपणी जात की कांई गति होशी सू राम जाणे ?

(इतना मांहे वंसीधरजी पंडित आवे छे.)

बंसीध०—(हसकर) कांई बोल्या कंवर साब ? “ कांई गति होशी ? ” जिशी करणी उशी होशी.

श्रीकिस०—(हाथ जोड़कर) पगां लागूं पंडितजी, आज घणी देर सूं पधार्‍या ?

रामर०—(पगां पर सिर रखकर) पांवाधोक महाराज !

बंसीध०—(सिर पर हाथ धरकर)

मातृदेवो भव । पितृदेवो भव । आचार्यदेवो भव ।
अतिथिदेवो भव । यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि
सेवितव्यानि नो इतराणि ॥

श्रीकिस०—(हसकर) पंडितजी, आज तो आशीस घणी लांवी चोड़ी दीनी. ईंको अर्थ तो म्हांने सुणा द्यो.

बंसीध०—(खुशी होकर) हां सेठ साव, वेशक आपके सुणवा लायकही छे—कंवरजीने म्हे वेद का वचनां सूं कहूं छूं के—माताने देव मानो, पिताने देव मानो, आचार्य (पुरोहित) ने देव मानो, अतिथि (पावणा) ने देव मानो, जो आछा काम होवे सू करो बुरा कामने छोड़ देवो.

श्रीकिस०—(प्रसन्न होकर) वाह पंडितजी, उपदेश तो घणोही आछो छे. आप जिशा सत्पुरुषां की आशीस सूं भलांही अबार का टावरां मांहे कोई बिरळाने इशी बातां को ग्यान ऊपजकर इशा उपदेश परवाणे माता, पिता, गुरु का हुकम मांहे बिरळो ही चालवावाळो मिले !

बंसीध०—(विचार सूं) देखो सेठ साव, भगवान् मनु काई कव्हे छे:—

यं मातापितरौ क्लेशं सहेते संभवे नृणाम् ।
न तस्य निष्कृतिः शक्या कर्त्तुं वर्षशतैरपि ॥
तयोर्नित्यं प्रियं कुर्यादाचार्यस्य च सर्वदा ।
तेष्वेव त्रिषु तुष्टेषु तपं सर्वं समाप्यते ॥
इमं लोकं मातृभक्त्या पितृभक्त्या च मध्यमम् ।
गुरुशुश्रूषया त्वेव ब्रह्मलोकं समश्नुते ॥

अर्थात् गर्भ धारण हुवा पीछे माता पिता पुत्र के तांई जो क्लेश सहन करे छे वींको उतराई अनेक जन्म मांहेभी पुत्र हो सके नहीं. इसी वास्ते मा-वापां को नित्य भलो करणो चाहिजे. वीं मुजबही आचार्य (गुरु) को भी भलो करणो चाहिजे. इण तीन्यां की प्रसन्नता सूं सारा तपां को फळ मिले छे. ओ लोक माता की भक्ति सूं, मध्य लोक पिता की भक्ति सूं ओर ब्रह्म-लोक गुरु की सेवा सूं प्राप्त हुवा करे छे.

रामचं०—(विचार सूं) सेठ साव, सारी वात सोवत ऊपर छे. इण तरह सास्तर की वातां आदमी रोजीना सुणतो रव्हे तो कुछ न कुछ ग्यान ऊपजेही.

रामर०—भायाजी, आजकाल इसकोल मांहे इण तरह धरम की वातां सिखावे नहीं जरांही आपणा लोगां की धर्मश्रद्धा घट गई.

वंसी०—सेठां, धर्मही श्रेष्ठ वस्तु छे, ओर परलोक साथ चालवाळोभी धर्मही छे. मनुजी कव्हे छे के—

एकः प्रजायते जन्तुरेक एव प्रलीयते ।
एको नु भुंक्ते सुकृतमेक एव च दुष्कृतम् ॥
मृतं शरीरमुत्सृज्य काष्ठलोष्ठसमं क्षितौ ।
विमुखा बान्धवा यान्ति धर्मस्तमनुगच्छति ॥

प्राणी एकलो उत्पन्न होवे, एकलोही मरे, पुण्य एकलो भोगे, पापभी एकलोही भोगे. लकड़ी ओर मट्टी के समान मन्या हुवा शरीरने पृथ्वी पर नाखकर भाईबन्द छोड़कर चल्या जावे तोभी धर्म तो साथही जावे.

हीरा०—धर्म इशीही चीज छे पंडितजी. धर्म का आधारपर सारो जगत् चाल रह्यो छे. अपणा लोगां मांहे सू धरम उठ गयो जरांही तो दुख पा रह्या छां.

बंसी०—नहीं नहीं हीरालालजी, धरम नहीं उठ गयो. धरम को शिक्षण उठ गयो तिकासूं धरम की पिछाण भूल गया, ओर धर्म मांहे कुछ की कुछ बातां जा घुसी ! अब बामणने अगर भिखारीने मूठी भर आटो, नहीं तो धेलो-पैसो देबो धरम गिणीजे छे. " धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ॥ धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् " धृति—संतोष, क्षमा—आपका बुरो करवाळा को भी भलो करणो, दम—विकारां सूं भऱ्या हुवा मन को दमन, अस्तेय—अनीति सूं धन को संचय अर्थात् चोरी नहीं करणी, शौच—यथाशास्त्र मट्टीजळ सूं शरीर की सफाई, इंद्रियनिग्रह—विषयभोग सू इंद्रियांने हटाणी, धी— शास्त्र को ग्यान, विद्या—आत्मज्ञान, ईश्वरको ज्ञान, सत्य—यथार्थ भाषण, साच बोलणो, अक्रोध—क्रोध को कारण हो करभी क्रोध नहीं करणो—ये इशा धर्म का दस लक्षण छे. तिकी बातां को तो लोप हो गयो ओर बीं जगां कुछ का कुछ प्रचार हो गया ! सार बात धर्म को शिक्षण नहीं तिका सूं सारो अंधेरो हो रह्यो छे.

श्रीकिस०—" कुछ करणी, कुछ करम गत, कुछ पूरबला भाग " इत्ती बातां मिले जरां कठे विद्या आवे ओर धरम पर सरधा होवे.

रामर०—गुरु महाराज, जठे अक्षर को नांव नहीं उठे धर्मविचार कठे सू ? विद्या बिना कुछ भी नहीं. निरक्षर मनुष्य पशुतुल्य रह्या करे छे. उठे धर्म काई ओर अधर्म काई एकही बात छे.

रामचं०—नहीं कंवर साब, विद्यावाळा कीतो वात ठीकही छे तोभी साधारण पढ्यालिख्या भी धरम पर तो पूरा जम्योड़ा रह्या करे छे. एकवार विद्वान् फेरभी धरम मांहे कसर कर जासी पण सादोसूदो आदमी तो कदे ही बींने छोड़सी नहीं. नजीकही सेठ साबने देख ल्यो. कठे दूर जावा को काम भी नहीं.

वंसीध०—मूंडापर तारीफ करणी ठीक नहीं तोभी आई हुई बात पर बोलवा मांहे क्यूं हरकत भी नहीं. श्रीकिसनजी सेठ आज **मारवाड़ी** जाति मांहे खरा खरा वैश्य छे. " कृषिगोरक्ष्यवाणिज्यं. वैश्यकर्म स्वभावजम् " **गी**ता मांहे कह्यो छे के खेती, गायां को पालन, ओर बिणज करणो वैश्य को स्वाभाविक कर्म छे. तिका परवाणे सेठजी चाल रह्या छे. खेती, बागबगीचा मोकळा कर राख्या छे, गायबैल पाळे छे तथा साचो साचो विणज करनेही आज लाखों रुपया कमाया छे. धरम पर पूरो विसवास छे. स्नान, संध्या, नित्यनेम, देव-ब्राम्हणपूजा, आया गया को सत्कार, दान-दक्षणा यथाशास्त्र आचरे छे. अब आगे इशा सत्पुरुष उत्पन्न होणा घणो कठिन छे. इण वास्ते अब आगली पीढ़ी का बाळकांने विद्या पढ़ाणी चाहिजे, ओर धर्मभी सिखाणो चाहिजे. नहीं तो फेर रहीसही सारीही बात पर बिंदी समझणी चाहिजे !

श्रीकिस०—(सिर हलाकर) नहीं पंडितजी, म्हे तो एक गरीब वाण्यो छूं. म्हे काई कर सकूं छूं ? आप जिशा ब्राह्मणां का ओर वडेरां का पुन्न-परताप सूं घरसंसार चाल रह्यो छे. तिका मांहे कोई वखत पैपावणा, अभ्यागतने जिमा देवां, जातपांत मांहे जाकर हाजर हो जावां तथा आया गया सूं दो बात मीठी बोल लेवां तो इण मांहे कांई हुवो ?

रामचं०—सेठ साव, इण सिवाय ओर संसार मांहे दूजी कांई बात हुवा करे छे ? जो करबा की वातां छे सू तो आप करही रह्या छो.

वंसीध०—सुणो मुनीमजी, धर्म के ताई त्र्यैलोक्याधिपति राजा **रामच**न्द्रजी वनवास ग्रहण कीनो. धर्म के ताई राजा हरिश्चन्द्र डोम के अठे बिक गयो. धर्म के ताई राजा युधिष्ठिर अज्ञातवास धारण कीनो. धर्म के ताई राजा **नळ** दुःख भोग्यो. धर्म के ताई **परमेश्वर** का अवतार हुवा. धर्म के ताई **गौ**तमबुद्ध को अवतार हुवो. धर्म के ताई श्रीशंकराचार्य अवतर्‍या. धर्म के ताई वड़ा वड़ा महात्मा, राजा ओर गृहस्थी उपदेश सूं, सत्ता सूं ओर शरीर सूं काम आया. धर्मही इण जगत् मांहे प्रधान वस्तु छे. श्रीकृष्ण भगवान् गीता मांहे कव्हे छे के—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

हे अर्जुन! जिण जिण बखत धर्म को नाश होकर अधर्म को उठाव होवे छे उण उण बखत मने अवतार लेणो पड़े छे. सेठसाब, इण बखत साचो धर्म तो ओ छे के परस्पर बन्धुभाव, परस्पर प्रीति ओर परस्पर सहानुभूति रखकर उद्योग धन्धो करने देश मांहे धनकी समृद्धि करणी—(वीच मांहे)

रामर०—गुरु महाराज, बन्धुभाव, प्रीति ओर सहानुभूति आपणा देस मांहे सू जाती रही जरांही तो देस का सारा लोग हीन दीन बण गया छे. तिका मांहे मारवाड़ी जाति के वास्ते तो कुछभी बोळबाने जगा छे नहीं. एक माके दो बेटा हुआ के मूर्त्तिमान् बैर को अवतार हुवो जानणो ! परस्पर प्रीति तो इतनी छे के इशो कोई शहर अथवा गांव खाली नहीं होसी के जेठ मावाप, वेटावेटी, धणीधिराणी मांहे झगड़ो नहीं, ओर जात मांहे दो धड़ा तीन धड़ा नहीं. ओर सहानुभूति तो इशी छे के कोई भाई अथवा सगोसोई कठे क्यूं रुजगार करने क्यूं कमातो होसी तो उठेही आप—बो एक रुपया मांहे कुछ काम करतो होसी तो आप वोही काम आठ आना मांहे करबा तैयार हो जासी ओर आपको नुकसाण करने आगला को पण नुकसाण कर देसी ! गुरुजी, मारवाड़ी जात को तो ईश्वरही रखवाळो छे!

बंसी०—वाह कंवर साब, आपकी दीर्घायु हो—आपका विचार घणाही आछा छे. श्रीजी की बड़ी कृपा छे के मारवाड़ी जाति मांहे आप जिशा रत्न निर्माण हुवा छे.

श्रीकि०—पंडितजी, ओ सारो आपकी शुभ आशीस को फळ छे.

बंसी०—सेठ साब, आप शाणा, समझदार ओर कुळवान् छो. आपने कुछ कहवा की जरूर नहीं तोभी म्हां ब्राह्मणां को कर्त्तव्य छे के समय समय पर आपका जजमानने बोधकरतो रव्हणो—तिका सारू आपने इत्तोही कहणो छे के, हो सके जठे तांई तो ब्रजलालजीने न्यारा होवा दीजो मतीना.

आखर मानेही नहीं तो फेर चुपचाप जठी को उठीने निकाळ करने आपको मायतपणो वणायो राखजो. ब्रजलालजी की उमर ज्यादा छे नहीं तिकासूं न्यांने हाल दुनियादारी को अनुभव छे नहीं. घणा लिख्या पढ़्या नहीं ओर सोवत भी आछी नहीं तिकासूं ये इशा परिणाम हुवा छे. नहीं तो आप जिशा माजाया भाई सूं न्यारो होणो ब्रजलालजी का कम नसीवा की वात छे. भाई जिशो वळ, भाई जिशो भाव, भाई जिशो मित्र ओर भाई जिशो सहायकारी दुनिया मांहे दूजो कुण छे ? एक माता का उदर मांहे लोटकर भायाभायां मांहे वैरभाव होणो देश को, जाति को, कुळ को ओर निज को वड़ो भारी दुर्भाग्य समझणो चाहिजे. भरत ओर लछमण को वन्धुभाव किशो थो ? युधिष्टिर, भीम, अर्जुन आदि पांच भायां को प्रेम किशो थो ? ओर श्रीकृष्ण वलराम की परस्पर सहानुभूति किशी थी? परन्तु जठे वेटावेटी का वालपणा मांहे मावाप घर वांधती वखत न्यारा न्यारा वारणा राखे, लिखावा पढ़ावा के वदला सगाई करकर वेटावेटीने डवोवे ओर धर्म के वदला भायाभाया मांहे लड़ाई करणी सिखावे—उठे देश, जाति ओर कुळ का सुधार की आशा कांई ! लो सेठ साव, वणी वार हुई अव जावूं छूं. (जावे छे.)

श्रीकि०—रामरतन, चाल अव जीमवा को वखत हुवो वरां चालां. (जावे छे.)

रामचं०—भाई हीरालालजी, चालो अव आपांभी जीमकर आवां.

हीरा०—ठीक छे. दुकानपर जमादार छे ही. (जमादारने) रतनसिंग, म्हे जीमवाने जावां छां, दुकान संभाळजे भलां.

रतन०—जी साव, दूकान समालवेगा नहीं तो कँह जाइत है ?

(रामचंदरजी तथा हीरालालजी जावें छे.)

प्रवेश दूजो.

ठिकाणो–ऊपर को चोबारो.

(श्रीकिसनजी आवे छे.)

श्रीकिस०–(मन मांहे) चालो ब्रजलाल की फारगती होकर तो एक बार लार छूटी. आज बरस हुवो घर मांहे रोज किटाकिट थी. ये आपणा लोगां की मुरखाई का परिणाम छे. नहीं तो ब्रजलाल कुण ओर रामरतन कुण ? इण फूट के अगाड़ी कुछ उपाय चाल्यो नहीं. आ इशी छे के देश का देश, गांव का गांव, जात की जात ओर कुळ का कुळ बिगाड़ दीना छे. "दो की लड़ाई तीजा को लाभ, घर हाण–लोगां की हांसी" को समयो तो आ गयो थो. परन्तु श्रीजी की कृपा सूं ब्रजलाल राजी रहणे सूं सारा काम को चुपचाप निवेड़ो आ गयो. माद्या भाई बिगाड़बा मांहे कसर तो नहीं राखी थी. पण वडेरां को पुन्न काम आयो. ब्रजलाल पहली पहली तो खूब चिंगऱ्यो रह्यो. वोलतो चालतो कुछ भी बिचार देखतो नहीं. पण सारा घरकांने म्हे खूब ताकिद कर दीनी थी तिकासूं सामने कोई बोल्यो नहीं, जरांही लड़ाई झगड़ो मच्यो नहीं. नहीं तो अरे राम ! म्हे कित्ताही भाया भायांने न्यारा होता देख्या छे. खूब गाळभेळ, मारपीट, रोवाराई हुवा पीछे कठे बरस बरस, दो दो वरस मांहे निकाळ हुवा करे छे. ओर आपस मांहे जनम बैर बंधीजे छे ! पण ओ बिचार नहीं के भाई कुण ओर म्हे कुण– एक माका पेट मांहे जनम लेकर आपस मांहे वैर? ओर ओ वैर काय के ताई? पांती के ताई–हे राम ! कींकी पांती ओर पूळी ? भाई मालक रह्यो तो कांई, ओर आप खुद मालक रह्यो तो कांई ? पण ये वातां कुण समझे ? सारी बात को जठे अंधेरो उठे ये इशा विचार कठे सूं आवे ?

(इतना मांहे लछमी वाई आवे छे.)

लछमी०–(घणी के नजीक बैठकर) कांई रतन का भायाजी सारोही घर खाली कर दीनो ? इशी पांती पूळी तो म्हे कठे देखी काई–सुणीभी

नहीं! ब्रजलालजीने ज्यूं ज्यूं माद्या भाई सिखाता गया त्यूं त्यूं आछा आछा वरतण, काच, तसवीरा, पिलंग, कुरशां, दरी, गलीचा जो जो चीज हाथ आई सू सारी ले गया! रांड पांतीपूळी होवे तो भी हिसाव सू तो होणी चाहिजे, के जो चीज आछी दीखी तिकी एकलोही ले लेणी? कुण वोल सके? जो थांका ध्यान मांहे आवे सू करो—म्हांने कांई, म्हांके सामने जो चीज लाकर धरशो तिकी म्हे वरतशां. पण फेर ये चीजां लाती वखत जीव दोरो होतो म्हे वता देशूं! वर संसार मांहे कोई जाहिजे कोनी? काल दो दो छोरा छोरी परणाणा छे, जीमणजूटण, न्यातपांत करणी छे जरां, कुणशी चीज विना सरसी? ब्रजलालजी को काई—फकत "इन मीन तीन" घणीधिराणी ओर एक छोरो छे. (बीच मांहे)

श्रीकिस०—हो हो, ये सारी वातां मालम छे पण उपाय कांई? ब्रज-लाल मांहे ओर रामरतन मांहे फरक कांई छे? अवार रामरतन ये सारी चीजां उठाकर ले जावे अथवा कींने दे देवे तो आपणो जोर चाले कांई? (वीच मांहे जोर सूं)

लछमी०— (गुस्से होकर) क्यूं नहीं चाले? मगदूर छे म्हारो रामर-तन इयान कोई चीज उठा लेवे ओर कोईने दे देवे!

श्रीकि०—(चिड़कर) वस वावा, लुगायां के आगे हद छे! पूरी वात सुणे नहीं ओर वीच के वीच मांहे वातने ले भागे! ब्रजलाल माजायो भाई छे ना? ओर म्हारे सू छोटो छे ना? (वीच मांहे)

लछमी०—फेर हुवो तो कांई हुवो? भाई साराही के हुवा करे छे. एक थांके ही अनोखो हुवो होसी तो राम जाणे!

श्रीकिस०—भाई कांई हुवा करे छे सू थे लुगायां कांई जाणो? थे तो घर मांहे एकला रहवा सू राजी. थांने तो जेठ देवर की हवा भी नहीं सुहावे—जरांही तो आपणा लोगां का आछा आछा घर मट्टी मांहे मिल गया छे! देवर देवराणी, जेठा जिठाणी—यूं वोल्या, यूं कन्या, यूं विगाड़या, यूं

खाया, यूं खरच्या—सारो हिसाब धणीने समझा समझाकर कित्ताही घर उजाड दीना तिकारी गिणती नहीं ! भाई बांहबळ हुवा करे छे, भाई सज्जन मित्र हुवा करे छे, ओर भाई सुख दुख को साथी हुवा करे छे.

लछमी०—(दोरी होकर) तो फेर म्हे बोली कांई के थे भाईने न्यारो कर द्यो ? सारा घरकां के नाक मांहे दम आगयो थो तोभी थांका डर के मान्या कोईभी हूं के चूंभी करी नहीं. मरती रात छे, म्हे तो—ब्रजलालजी इत्ता सताता तोभी—थांके पास कदेही क्यूं कह्यो नहीं. आज मने जो जो बातां मालम छे बे सारी थांने सुणावूं तो कानां का कीड़ा झड़ जासी ओर फेर भाई भाई करता एक कानी बैठ कर भाई को मूंडोभी देखशो नहीं. थोड़ाही दिना मांहे बता देशूं आपका भाई साबने धूळ खाता फिरताने ! कमाई करणी घणी दोरी छे. लोही को पाणी करणो पड़े जरां कठे पैसो निजर आया करे छे. सावण का आंधाने चाऱ्या कानी हऱ्यो हऱ्योही दीशा करे छे !

श्रीकिस०—(सांस भरकर) थे बोलो सू सारी बातां साची छे, पण उपाय कांई ? इसी कुण जाणतो थो के ब्रजलाल इशो नीकळेलो ! खैर, बुरे रस्ते चालसी तो आपही दुख पासी. (बीच मांहे)

लछमी०—(चिड़कर) बो क्यूं पासी, थे पाशो ! पूंजी तो बरस दो बरस मांहे मांहे बिले लाग जाशी ओर फेर "बाबू का भाई दरवेस" बण्या के थांके पास खड़ा दीखसी. जरां फेर भाई की बाकी वा पांती होसी ओर बेकी बे बातां नवा सिर सूं आपने करणी पड़शी !

श्रीकिस०—करणी पड़शी जका को उपाय कांई ? जिण तरह श्रीजी की मरजी होसी तिका मुजब होणो पडसी—जोरही कांई करशां ? (सामने देखकर) ओ ह हो ! म्हे तो निगह करी ही कोनी, आज देवरने न्यारो कर कर ठाटबाट कीनो दीखे छे ! आज बुढ़ापाने कठीने भड़कायो ? "बूढ़ी घोड़ी लाल लगाम !"

लछमी०–(दूर सरककर) देवर घर मांहे छोड्योही काई छे सू ठाट-वाट करूं ? रामजी लुगाई को जमारो इशोही वणायो छे के सारां का बोल सहवो करणा ! वूढ़ी दुनिया मांहे म्हे एकलीही हुई छूं के ओर कोई कोनी हुई ? म्हे कांई वुढ़ापाने भड़कायो ? म्हां लुगायांने कठेभी गत कोनी ! (आंसू टपकावे छे.)

श्रीकिस०–(हाथ पकड़कर) वाह साव वाह ! आ कांई वात, यूं हांसी मांहे आंसू टपकावणा ?

लछमी०–ओर म्हांको जोरही कांई छे ?

श्रीकिस०–(हाथ खींचकर) आवो ऊली कानी, छोड़ो परी ये देवर की ओर पांतीपूळी की वातां. श्रीजी की कृपा सूं वड़ेरां की वात वणी छे जठे-तांई तो क्यूंभी कमती कोनी. सारी चीज वस्तभी आजाशी, ओर पीछो जठे को जठे घरभी भर जासी. पूत कपूत हो जाया करे छे पण मायतने उशो हुया नहीं सरे–समझ्या ?

लछमी०–लावो जरां कालही वजार मांहे सू रसोईपाणी के तांई सारा नवा वरतण. वरतण मंगाशो जरां रसोई होशी ओर पाणी भी पीशो ! वाकी को सामान तो लारे सूभी आयां काम चाल जासी. मुव्वामान्या, इशा भाई तो नोज कींके होजो !

श्रीकिस०–(लछमी वाई का होंटांपर हाथ रखकर) हां हां कांई वोल रह्या छो ? व्रजलाल तो थांने रामरतन ज्यूं छे ना ? खाली वरतणभांडा ओर चीज-वस्तके तांई वींने दुरशीस देवो ? नहीं नहीं, ओ आपणो धरम नहीं. वो थांको देवर नहीं वेटो छे. थे जाणजो के आपणे पास रही जित्तीही चीज-वस्त, गहणोगांठो, कपड़ोलत्तो ओर पैसाटका था. ये इतनाही वण्या रह्या तो थांकी सात पीढ़ीने पूर जासी.

लछमी०–(मुंह मरोड़कर) न्यारा घरां का न्यारा वारणा ! रह्यो सह्यो

ओर भी सब कुछ दे द्यो. म्हांने काई, म्हांके सामने जो चीज लाकर घर देशो बींने बरत लेशां, नहीं तो नहीं !

श्रीकिस०–(हंसकर) आज दिल ठिकाणा पर दीसे छे नहीं. लुगायां को जनम लोभीस्वभाव रह्या करे छे, जठे आधो धन बंटीज्योड़ो कियान आछो लागे ? आज काल पेट मांहे रोटी पण पुरी जाती नहीं होशी ? जरां ही बदली बदली बातां हो रही छे !

लछमी०–लुगायां को तो सुभाव लोभी हुवा करे छे ओर मोट्यार तो धन रस्ता मांहे उछाळता फिरे छे ! बस करोजी, सब सू लोभी, झूठी, कपटी ओर बुरी जात लुगाई कीज छे ! (वीच मांहे)

श्रीकिस०–(चिड़कर) बस, अब छोड़ो परी ये बातां. जो होणो थो सू हो गयो. अब जो थांके पास छे बींने आछी तरह संभाळकर घर चलावो बस ! (हाथ पकड़कर) चालो आवो ! (पेट पर हाथ फिराकर) पेट तो बिलकुल खाली पड़्यो छे. जरांही ये इशी बातां हुई. नहीं तो अरे राम ! म्हारे सामने ये इशी जोर की बातां ? कदेही नहीं. (कपाट मांहे सू मेवो काढ़कर) हूं, चालो आवो, आपां थोड़ा थोड़ा काजू, बिदाम, पिस्ता खावां. (मेवो मूंडा मांहे देवे छे.)

लछमी०–(हाथ पकड़कर) जावो बाई, म्हे थांकी साथ खाती आछी लागूं काई? थे खाल्यो, पीछे ऊबरसी जको म्हे खा लेशूं. भूखी म्हे क्यूं रहूं ? मने थोड़ो ही कठे कमावाने जाणो पड़े छे ? (मेवो खावे छे.)

श्रीकिस०–(हंसकर) मने कांई मालम के आपका पेट मांहे क्यूं भी कोनी. नहीं तो म्हे जरांही खुवा देतो पण, फेर ये इशी बातां का मजाभी तो कोनी आता ! खैर, चालो अब रात घणी हुई सोवां. (दोन्यू अंदर जावे छे.)

प्रवेश तीजो.

ठिकाणो– व्रजलालजी की नवी दुकान.

(व्रजलाल जी आवे छे.)

व्रजला०–(गादीपर बैठकर मन मांहे) चालो आज दुकान को मुहूर्त तो हो गयो. दुकान को आगलो नांव तो भाई सावही चलासी. आपणे तो "व्रजलाल जयदेव" ही ठीक छे. सारा दिसावरांने चिठ्ठी मांहे नांव लिख तो दियो छे. मुम्वाई, कलकत्तो, उमरावती, इंदोर, रतलाम, उज्जेन, दिल्ली, आग्रो, कानपुर, अजमेर, अमरसर, साराही दिसावरां की आड़त करणे वदलाभी लिखापढ़ी कर दीनी छे. मुम्वाई लालचन्द रामदयाल वाळाने लाख रुपया की हुंडी पण लेणी भेज दीनी छे. वाकी दो लाख की हुंड्या थोड़ी थोड़ी सारा दिसावरांने वीड़ देशां, सू खूब आड़तिया मांटे पेठ जम जासी. आपांने कीं कने सू उधारा थोड़ाही लेणा छे. नहीं तोभी, दिसा-वर मांहे पेठ जम्योड़ी कोई वखत कामही आवे. कींको धन कुण देखवा जावे छे पण, हुंडी की वरावर भुगतावण ओर लेणदेण की सफाई परही धीजपतीज वध्या करे छे. लोगां का दम मांहे आकर भाईजी सू न्यारा तो हुवा पण अव एकदम फिकर लाग गई. इत्ता दिन व्यांका जीव-पर वेफिकरी थी. विचारा भाई साव की हजारी उमर हो–व्यां तो कदेही कुछ कह्यो नहीं. लोग ज्यूं ज्यूं लगा देता ओर जो जो चीज म्हे ले लेतो तिका वदल भाई साव के, भाभी साव के रामरतन कदे नाक-सळ घाल्यो नहीं. इशां भाई भोजाई को मिलणा घणाही दुर्लभ छे.

(इतना मांहे गणेशरामजी आवे छे.)

गणेश०–(हाथ जोड़कर) जयगोपाल सेठ साव ! (गादीपर वैठे छे.)

ब्रजला०—मुनीमजी आज तो देर लगाई. जरा नवो काम छे उठे ताई तो जलदीही आवो करो. देखो, गुलाबचन्दजी रोकड़्या भी हाल ताई आया नहीं. इण तरह देर लगाया सूं काम किया न चालसी ?

गणेश०—(आगे सरककर) नहीं सेठ साब, म्हे तो आप बोलशो जरांही हाजर हो जाशां. म्हारी तरफ सू तो जराभी देर होवेली नहीं.

(इतना मांहे गुलाबचन्दजी आवे छे.)

गुलाब०—(हाथ उठाकर) जयगोपालजी सेठ साब ! (बैठे छे.)

ब्रजला०—रोकड़्याजी, जरा थांकी रोकड़ की वही तो लावो.

गुलाब०—(वही पकड़ाकर) आ लेवो सेठ साब !

ब्रजला०—(पानां उथलकर) रात का पोतेबाकी सारा पचीस हजार छे सोही नीसन्या ?

गुलाब०—(आगे आकर) हां सेठ साब, हुंड्या तीन लाख की ली. पचास हजार की परमेसरी नोटां ली. दस हजार राधावल्लभ हरनारायणने दीना. चार साड़े चार हजार सोदा मांहे उठ्या. ओर चाहीजसी तो हुंडी चिट्ठी कर लेशां.

ब्रजला०—(गणेशरामजीने) क्यूं मुनीमजी, अब रुई पर थांकी कांई आमना बैठे छे ?

गणेश०—म्हारी आपना तो सेठ साब, तेजी की छे. पछे तो श्रीजी जाणे !

ब्रजला०—मुंबाई का लोग तो मंदी मांहे छे. मरीकान को पाक एक करोड़ पचीस लाख बतावे छे. रसीद पण ज्यादा छे. बिलायत सू तो रोजीना मंदी आवे छे. कठे भरूच जीन को भाव २६० को थो सू अब २२० हो गयो ! म्हे भी तेजी मांहे पड़कर बारासो गांठा पोते कराई छे. आज तो नुकसण छे.

गणेश०—सेठ साब, ओ तो सट्टो छे. इण मांहे नफा नुकसाण को पर-वाण कांई छे ? तो पण बराबर धुरंद बांधकर तेजी मंदी मांहे आदमी उथलो

करतो रव्हे तो नुकसाण मांहे उतरे नहीं. आपतो एकही अमना पकड़ राखो. तेजी तो तेजी ओर मंदी तो मंदी ! पण जाण्या, म्हारो ध्यान तो वैठे छे के अब मंदा भाव मांहे ओरू हजार वारासो गांठा धीरे धीरे लेकर मंदा भाव की पड़त कर लेणी ठीक छे. थोड़ो घणो भाव वावड्यो के नुकसाण नीसर जासी.

व्रजला०—भाई, न्यारा होवाने तो देर हुई नहीं ओर जित्ता सौदा कराया छे व्यां सारा मांहे नुकसाण छे. चांदी मुंवाई मांहे ६४।= का भाव मांहे विकाई आज ६८॥= को भाव छे. अळसी ८।= की पोते कराई आज ७॥ को भाव छे. अफीमका भाव को तो कुछ ठिकाणो छेज नहीं. ७८। का वोझ पोते कीना छे तिकारो भाव आज ६९ को छे !

(इतना मांहे शिवकरणजी तथा मोतीलालजी दलाल आवे छे.)

शिवक०—(हाथ जोड़कर) जयगोपाल सेठ साव, वोझ को भाव ६८॥= आना. इण भाव मांहे वेचवाळ छे. पेटी को भाव १९२७ को छे. भादवा की तेजी लगाणी होवे तो वोलो. रुई का वोझ ७२ को भाव छे.

व्रजला०—वरावर का होवे तो अफीम का पचास वोझ की लेवाळी छे. देखो, जचतो होवे तो वोलो.

शिवक०—नहीं सेठ साव, अवार तो भाव ६८॥= को छे. पचास वोझ को सोदो छे तो खटपट करणे सूं कदास दो आना घणा तो चार आना कमती हो जावो. वाभी पक्की देवो जद. हाल सेठ साव, वजार ठिकाणे वैठ्यो नहीं. घड़ी मांहे दिसावर की वेचवाळी आजावे, घड़ी मांहे लेवाळी आजावे. हाल तो मंदी को परसंग दीसे छे.

मोतीला०—सेठ साव, म्हारे पास एक सौदो छे. रुई का वोझ लेवो तो ७१॥ मांहे वेचवाळी छे. वजार मांहे तो पक्को भाव ७२ को छे. पचास, सो—जित्ता लेणा होवे उत्ता हां वोल द्यूं. घणा दिन हुवा एकाध तो सोदो

करावो. लोगांने तो आप कित्तीही पैदा करावो छो. बोलो म्हारे पास पक्की छे. आसामी सराफ श्रीकार छे.

शिवक०—भाई, जरा सबूरी राखशो तो सेठजी आपांने भी पैदा देशी. आज सराफा मांहे इणकी बराबरी करबावाळो कुण छे? सेठजी पर सारो बजार छे. दिलपर धारे तो अवार दो दो टका की घटबद कर देवे. सैकड़ों बोझ पेटी को सौदो करे छे!

व्रजला०—**मो**तीलालजी, कित्ता बोझ की थांके पास पक्की छे?

मोतीला०—(आगे होकर) सो बोझ की सेठ साब!

व्रजला०—सराफ को नांव वतावो.

मोतीला०—सौदा की हां भरो तो वतावूं. नहीं तो पछे म्हारे हाथ सूं सौदो जातो रव्हे. हां सेठ साब, मने बारा बज्या तांई की परवानगी छे.

व्रजला०—हां तो सो बोझ लीना. बस अब तो नांव खोलो.

मोतीला०—हां साब, "**रामलाल माणकचंद.**"

व्रजला०—**गुलाबचन्दजी,सो बोझ को सौदो मो**तीलालजी के हस्ते नूंद ल्यो.

(इतना मांहे तारवाळो आवे छे.)

मोतीला०—देखो हो काई सेठ साब, सौदो होता पाण तार आयो छे, तो तेजी काही समाचार छे—इण मांहे कोई फरक नहीं.

व्रजला०—(तार लेकर) देखां भाई, कांई छे सू? तेजी का समाचार होसी तो थांकी दलाली पाकसी (तार देखकर) छे तो रुख ठीक पण दम नहीं. आज काल एक दिन बजार जरा तेज आवे तो चार दिन पाछो मंदो चालबो करे. पण म्हारी तो आमना तेज छे तिकासूं मंदा भाव की पड़तल करतो जावूं छूं.

शिवक०—सेठ साब, **मो**तीलालजीने तो आज आप खटा दीनो. मने भी क्यूं पैदा कराशो के नहीं? म्हे लोग तो सदा आपकीही माळा फेरबो

करां छां. म्हारो तो ध्यान बैठे छे के आप भादवा की तेजी १०० बोझ की लगा द्यो. वरसात मांहे केई रंग हुवा करे छे. अफीम को भाव तो वादळां पर रह्या करे छे. आपके पास घणोही मंदी तेजी को रुजगार छे. एकवार म्हारो भी मानो. नारायण कीनो तो इण मांहे फायदोही होसी.

ब्रजला०—भाई, कबूतरने तो कुव्वो ही सूझे. फायदो ओर नुकसाण तो नारायण के हाथ छे. तेजी खावाळो कोई एक घणी सराफ होवे तो जावो सो बोझ की लगा द्यो. कोई वखत वदलो कर लेशां. जावो थांकी दलालीही पकी सही. दो वज्यां तांई की परवानगी छे. जावो.

(शिवकरणजी तथा मोतीलालजी जावे छे.)

गणेश०—(दिसावरां की चिठ्ठियां देकर) लेवो सेठ साव, चिठ्ठयांपर दसकत करो. डाक की वखत होवा आई.

ब्रजला०—(मुम्बाई की चिठ्ठी हाथ मांहे लेकर) मुनीमजी, कांई आज फेरूं दस हजार की हुंडी वीडी छे ? भरूच जिन की २०० गांठा की खरीदी लिखी छे ? पण २०० गांठ बंगाल की भी खरीदी लिख देणी थी. थे चिठ्ठी मांहे भाव बान्धकर लिखो सू काम आवे नहीं. लेणो बेचणो होवे सू बजार भाव की परवानगी लिख दिया करो.

गणेश०—पड्या भाव छे. तिका मांहे हरकत नहीं. सौदो ढूक जासी. नहीं तो आप नीचे जयगोपाल मांहे खुलासेवार लिख देवो.

ब्रजला०—मुनीमजी, मुम्बाई को काम तो रातदिन पड़े छे. सौदोसूत भी थोक होवे छे. हुंडीचिठ्ठी भी मोकळी होवे छे. कम सू कम साल मांहे आड़त पंधरा वीस हजार देणी पड़शी ! थांका ध्यान मांहे आवे तो मुम्बाई दुकान कर लेवां घर को धंधो तो छेज ओर आड़तां भी हो जाशी. जाणा हां खरच तो पर भारो आड़त मांहे नीसर जावेलो. बोलो, कांई सलाह छे ?

गणेश०—सेठ साव, विचारतो ठीक छे पण आज काल आदमी ईमानदार मिलणा घणा मुस्कल छे. आदमी विना काम चलसी नहीं. मुम्बाई

दिसावर पड़्यो घणो मोटो, उठे आदमी शाणो, लायक, घराणदार ओर ईमानी चाहिजे नहीं तो उलटा लेणा का देणा पड़ जावे ! मुंबाई दुकान कन्या पीछे सारो आधार मुंबाई पर रह जावे. दिसावर की ज्यादा मुकळास रहणे सूं रकम फसता देर लागे नहीं ओर फसाव हुवा पीछे जलदी निकाळ होवे नहीं. इण बातां को पूरो बिचार करने काम करणो चाहिजे. हाल तो काम चाल रह्यो छे सू ठीकही छे. कोई आछा आदम्यां की तजवीज लाग्या सूं फेर बात.

ब्रजला०—ठीक छे, पण मुम्बाई दुकान तो जरूरही करणी पड़शी. (दिसावर की चिट्ठियां पर दसकत करने) लेवो ये चिट्ठियां बीड़ देवो.

गणेश०—जो हुकम ! (चिट्ठियां खामकर जमदारने देवे छे.)

(इतना मांहे जगन्नाथप्रसाद वकील आवे छे.)

ब्रजला०—(ऊठकर) जयगोपाल वकील साब ! आवो, पधारो, अठीने बैठो.

जगन्ना०— (बैठकर) क्यों, हो गये एक नामी घर के दो घर ?

ब्रजला०—साब, कायका दो घर ? एकही घर छे. भाई साब मायत छे. उण सूं दूजो बिचार थोड़ोही छे ? अठे उठे सारो व्यांकोही परताप छे.

जगन्ना०—बस भाई, ये तो खाली बोलने की बातें हैं. अब आपको भाई से क्या सरोकार है ? पर याद रखियेगा यह जवानी का जोश थोड़े ही दिनों का है. भलेबुरों की सोहबत में आकर कहीं बापदादों का पैदा किया हुआ नाम खो न बैठें ? आजकल पैसा बड़ी मुश्किलोंसे मिलता है. हमारे जैसे अच्छे अच्छे बी. ए., एम्. ए., बी. एल्. मारे मारे फिरते हैं जिनको पेटभर टुकड़ाभी मिलना दुस्वार है ! इस वक्त देश की क्या दशा है—उसका भी कुछ ख्याल है ? कितनेही लोगों को एकही वक्त भोजन बड़ी कठिनतासे मिलता है ! बार बार अकाल पड़ने से अनाज पैदा नहीं होता और जो पैदा होता है उसमें से बहुतसा परदेश चला जाता है. यहां लोगों को अन्न-

वस्त्र पूरा नहीं मिलता इसी लिये प्लेग जैसी भयंकर बीमारी वढ़कर हजारों मनुष्यों का संहार हो रहा है ! इस प्लेग से गरीव और मध्यम स्थिति केही मनुष्य मरते हैं—इसका कारण भी यही है. कभी सुना है कि कोई वड़ा आदमी या अंग्रेज प्लेग से मरा है ? देश की गरीवी का कारण सिर्फ यहां के उद्योग धन्धों का नष्ट हो जाना है. यहां तक हमारी दशा हो गई है कि सूई दोरा जैसी छोटीसी चीज के लिये भी हमको परदेश का मुंह ताकना पड़ता है ! हजारों कारीगर वेकार हैं. हजारों आदमी कुली वनाकर द्वीपद्वीपान्तर को भेजे जाते हैं ! इस पर जरा विचार करके खूव संभलकर दिन दिन पूंजी वढ़ाने सेही आपका और देश का भी भला होगा.

व्रजला०—वकील साव, पूंजी वधाणी घटाणी कींके हाथ छे ? म्हे म्हारी जाण मांहे तो वधावा के तांईही रुजगारधंधो कर रह्या छां. नफो नुकसाण तो **श्री**जी के हाथ छे.

जगन्ना०—सेठ साहव, आजकल आप लोगों का धंधा ठीक नहीं है. " घी का पैसा और पैसे का घी " ये दिन जाते रहे. सट्टे फाटके में वड़े वड़े करोड़ पतियों के भी दीवाले निकल गये ! अव आपको अपने धंधे की दिशा वदलनी चाहिये, वरना ये आपके पैसे थोड़ेही दिनों के हैं. कहिये आपको भाई से अलग होने कई महीनों का अरसा होता है, क्या कमाया ? मेरे ख्याल में तो आपने वहुत कुछ खोया होगा ?

गणेश०—नहीं वावू साव, कमाया गमाया की अवार कांई मालूम पड़े ? वाकी आपको कहणो वणोही आछो छे.

(इतना मांहे मोतीलालजी दलाल आवे छे.)

मोतीला०—जयगोपाल सेठ साव, सो वोझ की भादवा की तेजी लगा दीनी छे. सौदो नूंदवा को हुकम फरमावो. **गोरधनदास नारायणदास** की दुकान रुपया भेज दीजो. ओर क्यूं सौदोसूत होवे तो फरमावो. हुंडी दरसणी छे आना कम को भाव छे. नोट चार आना कमती छे.

जगन्ना०—क्या भाई, अभी तुमने सौ बोझ की तेजी लगाई इसका अर्थ क्या है ? मैं जानता हूं कि यह सट्टे का सौदा होगा ? और नोट चार आने कम क्या ?

मोती०—बाबू साब, आगली मित्ती का सौदा पर तीन रुपया बोझ लगा देणा, जिण भावपर तेजी लगाई होवे उण सू भाव ज्यादा हो जावे तो नफो मिले, नहीं तो रुपया दिया सो गया. ओर नोट चार आना कम— सो को नोट नन्याणवे बारा आना मांहे बिके छे.

जगन्ना०—वाह भाई, यह तो अजब बात है ! ये दोनोंभी बातें खिलाफ जाबिता हैं. जिसमें सौ का नोट चार आने कम सौ में लेना तो बड़ाही बुरा काम है. इस अपराध के लिये तो बड़ी भारी सजा है.

ब्रजला०—(हंसकर) बाबू साब, बेपार मांहे तो इयानही चाल्या करे छे. बेपार को ओर कायदा को मेळ कांई ? बेपार तो विसवासपर चाल्या करे छे. बेपार मांहे कायदो काम आवे नहीं.

जगन्ना०—(चोंककर.) सेठ साहब, आप कहते हैं क्या ? खिलाफ जाबिता कभी व्योपार चल सकता है ? आप बहुत सावधानी से काम करियेगा वरना कहीं फंस न जाँय ? मुझे तो यह आपकी तेजी मंदी और कम कीमत से नोट लेना देना बड़ाही खतरनाक मालूम होता है. खैर, आप साहूकार और व्यापारी हैं, हमसे बहुत कुछ जानते हैं तौभी हमें जो नजर आया सो आपको फायदे की नियत से कह दिया है; क्यों कि आपकी दूकान से हमारा बहुत दिनों का संबंध है. यह बातें पेशा विकालत की तौर पर नहीं बल्कि एक पुस्तैनी बिरादराना तौर पर कही गई हैं. माफ फरमाकर सही मालूम हो तो इनपर अमल कीजियेगा नहीं तो जाने दीजिये.

गणेश०—बाबू साब, आपका कहणा ऊपर सेठ साब जरूर ध्यान देसी. आप जित्ती बातां कही छो वे सारी इणका फायदा की छे. आप जिशी

साची ओर भला की कहणेवाळो कुण छे ? म्हे लोग तो खुसामद्या छां सू हांजी हांजी करवो करां !

जगन्ना०—अच्छा तो अब बहुत देर हुई, हाजिर होता हूं. (जावे छे.)

(इतना मांहे साईस गाड़ी लेकर आवे छे.)

साईस—सेठ साब, गाड़ी तैयार है.

ब्रजला०—मुनीमजी, म्हे बगीचे जाऊं छूं. पीछे कोई दलालदुलाल आवे तो सौदासूत की निगह राखजो.

मोतीला०—सेठ साब, कांई हुकम छे.

ब्रजला०—भाई अबार तो क्यूं सौदो छे नहीं. रात का दीखीजसी.

(गाड़ीपर बैठकर ब्रजलालजी जावे छे.)

गुलाब०—मुनीमजी साब, घरां जावूं छूं. (जावे छे.)

मोतीला०—मुनीमजी साब, जरा गरीब आदमी पर निजर राख्या करो. आजकाल खरच भी नीसरे नहीं ! भागादोड़ करता करता नाक मांहे दम आजावे. आपकी निजर रही तो रोटयां को मेळ तो बैठ जाया करसी.

गणेश०—भाई मोतीलालजी, थांको रोटयांको मेळ बैठ जावे तो फेर म्हे कांई भूखा रव्हां ?

मोतीला०—(चिमककर) नोज ! रामजी थांने क्यूं भूखा राखे—आज करोड़पती की दुकान का मुनीम छो. थांके आसरे म्हां जिशा आज कित्ताही पेट भर रह्या छे.

गणेश०—हां भाई, आसरावाळा को म्हांने भी क्यूं आसरो मिले जदही क्यूं काम चाल्या करे छे. सूखी तो गाड़ी भी चाल सके नहीं !

मोती०—तो म्हे किशो आपके बारे छूं ? आप हुकम फरमाशो तिको सिर मांथे छे.

गणेश०—बस तो फेर काम चालबो करसी. सेठजी सूं सौदासूत की वात करवा की पहलां म्हारे सू जांच लिया करो बस !

मोतीला०—(खुशी होकर) जो हुकम. अव परवानगी होवे ? (जावे छे.)

गणेश०—चालो आपां भी अब घरां जावां. (जावे छे.)

प्रवेश चौथो.

ठिकाणो—ब्रजलालजी का वगीचा मांहेलो वंगलो.

(हंसनखां जमादार आवे छे.)

हसन०—(मन मांहे) हमारा सेठ बड़ा यारबाज, शौकीन और जिन्दा दिल वनिया है, इसमें कोई शक नहीं. भाई से लड़ झगड़कर खूब माल लेके अलग हुआ है. खुदा जाने यार ! बनियोंके नजदीक इतनी दौलत कहांसे आती है ? क्या हमारे सेठ को थोड़ा माल मिला है? करीव करीव पंधरह वीस लाख का माल मिला होगा ! आठ या दस हजार—भूला, नहीं नहीं—लाख रुपया तो नग्द मिला है ! जेवर, असबाव और जायदाद तो अलगही है.

(इतना मांहे करीमोद्दीन आवे छे.)

करीमो०—(हाथ उठाकर) अलेकम सलाम ! मिजाजे शरीफ ?

हसन०—अलहमदुलिल्ला ! खुदा का शुक्र है ! आइये, आज इतनी देर क्यों हुई ? सेठ साहव भी अभी नहीं आये.

करीमो०—मैं दूकानकी तरफसेही आ रहा हूं. दूकान से निकले सेठ साहव को वहुत देर हुई, इस लिये जल्द चला आया तो सेठ साहव यहां नहीं दीखे. शायद और कहीं चले गये हों. कहिये भाई साहव, और क्या हाल है ?

हसन०—(हंसकर) वदस्तूर साविक !

करीमो०—नहीं नहीं, कुछ तौभी कहो. आज कल वड़ी तंगी है.

हसन०—तो जरा ठहरो, अभी मिट जाती है.

करीमो०—कैसे भाई ? जल्द कहो, यार ! तुम तो दिल्लगी करते हो !

हसन०—नहीं नहीं, दिल्लगी नहीं. खुदा जानता है, जल्दही तंगी रफा होगी.

करीमो०—कहो तो भाई, झट—कैसे रफा होगी ? यार ! तुम तो वड़ी इन्तेजारी वढ़ाते हो. इसमें कुछ तुमको मिलता है ?

हसन०—(कान मांहे) यों यों—

करीमो०—(खुशी होकर) अल्ला तुम्हें जीता रक्खे. (हाथपर हाथ मारकर.) वस, अव तो मामिला वन गया ! गहरा काम हो चुका ! भाई, तुम भी वड़े वस्ताद हो इसमें कुछ भी शक नहीं. कहां की वात कहां भिड़ाई ! पर दोस्त ! एक मेरीभी वात याद रखना—वह गंगाविसन वनिया वड़ा फितना अंगेज है ! वह अपनी सोहवत में है इस लिये कहीं उसको कुछ न कह देना. वह सेठ साहव का जातभाई है. कहीं जात में जात मिल जाय और तुम हम धक्के खांय !

हसन०—(हंसकर) करीम, यार ! अभी तुझे कुछ तजुर्वा नहीं. भला, ये ऐसी वातें कहीं किसको कही जाती हैं ? (इतना मांहे अमरसिंग आवे छे.)

अमर०—(हाथ उठाकर) आदाव, वंदगी, तस्लीमात ! क्या सलाह मसलहत चल रही है ? हमेंभी शरीक करेंगे ? सेठ साहव अभी नहीं आये ?

हसन०—आइये आइये सिंघजी, कुछ सलाह है न मसलहत. आपही का रास्ता देख रहे थे. सेठ साहव अभी आये नहीं. अव आनेही में हैं.

अमर०—भाई, जिस वक्त मैं इस वंगलेमें आता हूं रोजवरोज इसको ज्यादातर आरस्ता देखता हूं. क्या वम्बई से रोज सामान मंगवा कर इसमें रक्खा जाता है ? आज तो यहां कितनीही नई चीजें दिखाई देती है. इधर यह वड़ा फोनोगिराफ रक्खा हुआ है, उधर यह कोई नई किस्म का वाजा देख पड़ता है. दीवारों पर कितनीही नई नई खूवसूरत औरतों की तस्वीरें लटकती हुई दीख रही हैं. सामने एक वहुत वाढ़िया और वड़े सीशे-

वाली अलमारी धरी हुई है. बाहर अभी कितनेही कोच, कुर्सियां पेक की हुई हैं. शायद कल मेरे जानेके बाद यह सब सामान आया हो ?

हसन०—हां सिंघ साहब, आपके जानेके बाद नहीं, आज सुबह १०, ११ बजे बहुत सामान आया है. पहिले भी कुछ कम न था. अब तो खूब ही अच्छी सजावट हो गई. भाई, यहां किस बातकी कमी है ? **कारून** का खजाना हाथ लगा है—फिर कहनाही क्या है ? अब इसी बगीचे में सड़क के बाजू पर एक बड़ा भारी नया बंगला बननेवाला है. मैं जानता हूं कि कम से कम तीन चार लाख रुपया खर्ज होंगे.

अमर०—(हंसकर) बहुत अच्छा है. आप लोगों की मजा है. बजाइये चैन की बंसी ! पर इस गरीब की भी याद रखियेगा. यह भी कोई वक्त कामही आवेगा.

करीमो०—भाई अमरसिंग, तुम तो हमारे प्यारे दोस्त हो. तुमसे कोई जुदागी हो सकती है ? तुम हम सब एकही किश्ती में सवार हैं.

(इतना मांहे ब्रजलालजी ओर गंगाविसनजी आवे छे.)

ब्रजला०—(गंगाविसनजी को हाथ पकड़कर) चालो जरा बगीचा की सहल करां.

गंगावि०—(आगे चालकर) भाई साब, आज काल तो बगीचो खूब सुधार दियो. अब इण सहर मांहे आपका बगीचा बराबर ओर दूजो बगीचो छे नहीं. (चालता चालता) आज काल तो नवा नवा झाड़ ओर तरह तरह का कूंडा खूब चाऱ्या कानी लगा रख्या छे. (आगे चाल कर) अब तलाव के चाऱ्या कानी सीढयां भी वण गई. ठिकाठिकाणे बेंच भी रख दिया गया. (ओर आगे चालकर) सावण भादवो भी तैयार हो गयो. पहलीही बड़ा सेठ का हाथ को लगायोड़ो बगीचो, फेर आप वींने खूब सुधार दीनो उठे देखणोही कांई ? मुंबाई का आम का झाड़ भी मोकळा लग गया. नींबू, नारंगी, संतरा, हऱ्या लाल केळा भी घणा हो गया.

गुलाव, चमेली, मोतियो, गुलछवू, सेवती–फूलझाडां का तखता भी ठिकाणे ठिकाणे लाग गया. अब भाई साव, फेर तीन वातां की कमती छे. (वीच मांहे)

व्रजला०–वोलो वोलो, कायकी कमती छे ?

गंगावि०–एक तो वगीचा के वीचोवीच हजारी फंवारो.

व्रजला०–ओर ?

गंगावि०–पूरो तो सुणो नहीं, आप वीच मांहे जलदी कर देवो.

व्रजला०–हां वोलो झट. थे देर लगावो जरां कांई करां.

गंगावि०–सुणो, एक तो फंवारो–(वीच मांहे)

व्रजला०–फेर वाही वात. वतावो झट, देर हो रही छे.

गंगावि०–दूजी वीजळी की रोशनी.

व्रजला०–आज कांई भांगवींग पीली दीसो छो ? वगीचा मांहे कठे वीजळी की रोशनी होती होसी ?

गंगावि०–क्यूं नहीं होवे ? जेठ करे जठेही हो जावे. कलकत्ता मांहे "ईडनगार्डन" मांहे किशी भवूकादार वीजळी की रोशनी हुवा करे छे ?

व्रजला०–ठीक, अब तीजी वात वोलो.

गंगावि०–नवो महल.

व्रजला०–तो आपणो वंगलो कांई कमती छे ?

गंगावि०–कमती तो कोनी, पण जूनी फेसन को वड़ा सेठजी का हाथ को वणायो हुवो मारवाड़ी ढव को छे. लुगायांपतायांने रहवा जगा कोनी, पांच पचास आदमी आजावे तो जुदी जगा कोनी ओर रमतगमत जलसाने चाहिजे जिशी जगा कोनी. वाकी आप सामानसूमान वणो लाकर वंगलाने भर दियो तिकासूं रही सही जगा फेर भी कोती हो गई. सू अब आपका नांव मुजव वड़ो दो मज़लो वंगलो नवी तरह को मकराणा का पत्थर लगाकर

नवी भांत को बांधणो चाहिजे—जद बगीचा की सजावट खूब होवे ओर आपकी सोभा भी बधे ! भाई साब, दुनिया मांहे दोही बातां छे—" गीतड़ा के भीतड़ा. "

ब्रजला०—भलां, ठीक छे ये तीन वातां तो मान लीनी. चौथी ओर कोई होवे तो बतावो. काम करणो तो फेर पूरो करणो चाहिजे, बीं मांहे कुछ खामी रहण पावे नहीं.

गंगाबि०—(आगे चालकर) अब कांई बतावूं भाई साब, थोड़ा घणा जीव जिनावर भी पाळ्या जावे तो फेर देखणोही कांई ? दूजो राणी को बाग बण जावे ! (मन मांहे) फोकट को धन हाथ आयो छे उड़ालो चार दिन मजा. फेर कांई छे ?

ब्रजला०—ठीक छे. आपकी वातां को बिचार पहली सूंज हो रह्यो थो समझ्या भाई साब ? थोडाही दिनां मांहे ये सारी वातां आपकी निगह आ जाशी ! चालो अब बंगला मांहे. (इतना मांहे माळी फूल का तुर्रा ला देवे छे.)

(ब्रजलालजी तथा गंगाविसनजी बंगला मांहे जावे छे. सारा ऊठकर खड़ा होवे छे. रामराम, सलाम हुआ पीछे सारा आप आप की जगां पर बैठे छे.)

गंगावि०—(हसनखांने) कांई जमादार; आज थंडो थंडो मामलो कियान दीस रह्यो छे ? हुक्कोबिक्को, पानसुपारी कठे छे ? ओर—(बीच मांहे)

हसन०—(आगे होकर) जी, हुजूर ! सब मौजूद है. आप जरा तशरीफ रखिये.

ब्रजला०—जमादार, लावो झट, देर हो गई. चोसर कठे छे.

हसन०—(हाथ जोड़कर) जी हुजूर, यह क्या सामने रक्खी हुई है.

ब्रजला०—भाई गंगाविसनजी, मांडो बाजी झट. आज देखां कुण हारे ओर कुण जीते ? भाई साब, आप चालाखी नहीं करी तो कच्ची बाजी आपपर आवेली. खेल मांहे इत्ती चालाखी करो छो तो सौदासूत मांहे कांई करता होशो—राम जाणे !

गंगावि०—हां भाई साब, रहवा द्यो. आप सूं तो क्यूं कमतीही छूं. म्हे हिसाब सूं नरद चलावूं तिका मांहे आपकी नरदां मर जावे, पण आप भी कोड्यां जोड्वा मांहे उस्ताद छो सू फेर झट ठिकाणे आजावो.

ब्रजला०—चालो भाई, आप आप का रंग ले लेवो. म्हे तो म्हारो लाल ले लीनो छे. अमरसिंग हऱ्यो लीनो छे. करीमोदीन पीळो लीनो छे. ओर आपके माथे काळो रंग छे.

गंगावि०—(हंसकर) हां साब, आखरी काळो रंग तो माथा के लागतोही दीसे छे. इण मांहे आप नवी वात कांई कही ?

हसन०—(मन मांहे) खाली सिरही के नहीं सारे मुंह को काला रंग लगकर वेटे ! हद्दपार होवोगे ! अभी बन्दे के पंजे में पूरे फंसे नहीं हो. (वड़ा सूं) नहीं सेठ साहव, आपके सिर काला क्यों लगेगा ? हम धोनेवाले मौजूद हैं. आप वेफिकर चलिये !

ब्रजला०—(कोड्यां हात मांहे लेकर) दस, दस, दस—

गंगावि०—(वड़ा सूं) दो, दो, दो ! दोही पड्या छे !

अमर०—(कोड़यां हात मांहे लेकर) देखो साहव, (कोड़यां नाखकर) इसको पच्चीस कहते हैं ! (फेर कोड़यां लेकर) अब दूसरे भी—(कोड़यां नाखे छे.) नहीं, तीन है. कुछ फिकर नहीं. गंगाविसन सेठ, लो इसको चीरे पर रख दो.

गंगावि०—(कोड़यां हाथ मांहे लेकर) देखो भाई साब, दस ईने बोल्या करे छे ! (फेर कोड़यां उठा कर) दूजो भी दस—दसही छे ! (फेर कोड़यां लेकर) अवके लेखो चोखो पूरो छे नहीं तो दो तीन आवेलाही ! (कोड़यां नाखे छे.) चालो, तीनही आया. दो नरदां लागू हुई.

करीमो०—(कोड़यां हाथ मांहे लेकर) देखिये जनाव, पच्चीस—पच्चीसही है ! (फेर कोढ़यां उठा कर) दस—दसही है ! (फेर कोड़यां लेकर) अव हिसाव पूरा होता है नहीं तो दो तीन आते ही हैं. अरे वाह ! छः आये.

ठीक, अब लीजिये फेर पच्चीस. (कोड़्यां नाखे छे.) पच्चीस—पच्चीसही है ! बस भाई, अब दो तीनही बस है. (कोड़्यां नाखे छे.) दो दो—नहीं चार आये. खैर, लो **गंगाबिसन** साहब, तीन नरदें तो बैठा दीजियेगा. (नरदा देवे छे.)

ब्रजला०—(कोड़्यां हात मांहे लेकर) अरे वाह ! तीन्या का हाथ लागू हो गया ? ओर म्हारो हाथ हाल तांई लाग्यो नहीं. पण अब तो (कोड़्यां नाखे छे.) दस दस—दसही छे. (कोड़्यां उठा कर) फेर पच्चीस (कोड़्यां नाखे छे.) पच्चीसही छे ! देखो, **गंगाबिसनजी**, **करीमोदीन** की नरदने कित्ता बाकी छे ?

गंगाबि०—(देखकर) सेठ साब, तीन लेवो तो बैठता पाण तोड़ होवे छे. देखो, जरा तजबीज सूं कोड़्यां नाखो.

ब्रजला०—(कोड़्यां नाखे छे.) तीन, तीन—तीनही छे ! ल्यो भाई साब, पीळी ऊपर लाल रक्खो ! चालो तोड़ तो हुई.

करीमो०—हां जनाब, पीले पर लालही रंग जेब देता है. इन्शा अल्ला-ताला ! देखो लालपर पीली भी सवार होती है !

हसन०—अलहमदुलिल्ला ! शुक्र है खुदा का, आज लाल काही सितारा तेज है, वरना सबके पीछे हाथ लगना और सबके पहले तोड़ होना—क्या आसान बात है ?

गंगाबि०—वाह भाई, थे थांका मालक की तारीफ नहीं करो तो किया-न चाले ? जरा खुद खेलबा बैठो जद मालम पड़े !

हसन०—(वड़ा सूं) हां हां आजाइये, कोई वक्त वन्देके साथ भी दो दो हाथ कर लीजिये—देखें कौन हारता है ?

गंगाबि०—(हंसकर) भाई, वाण्या तो सदाही हान्योड़ा वैठ्या छे. एक छोटासा जवान सूं डरकर घर मांहे छिप जावे ! थे तो भलां, वड़ा सेठजी का जमादार छो. थांने कुण जीतणेवाळो छे ?

हसन०—(मन मांहे) भाई, अभी तो तेरे जैसे कढ़ीदाल खानेवाले नामर्द वनियेनेही हमें गिरा रक्खा है! पर बेटे, याद रखना—जिस दिन हाथमें आ जायगा कच्चाही खा डालूंगा! (वड़ा सूं) नहीं सेठ साहव, आपको कौन हरानेवाला है? हम आपके साथ हैं. देखें भला आपको कौन हराता है?

गंगावि०—(हंस सर) थां जिशा सिपाई वहादुर की मदद रही तो फेर म्हांने कुण हराणेवाळो छे? चालो आज तो वाजीने खूव रंग आयो छे! (व्रजलालजी कानी देखकर) म्हांका भाई साव की आज खूव चढ़ती कमान छे! तीन नरदां तो घर मांहे चली गई. अव एक वाकी रही छें. पण ईने तो म्हे खूव उलटो चक्कर देशां. हाल कांई हुवो छे?

व्रजला०—(हंसकर) देवो साव, कित्तो भी चक्कर देवो. पण फक्कड़ तो सारां के पहली घर मांहे जासी.

अमर०—हां सेठ साहव, देखिये पीछे पीछे मैं भी आ रहा हूं, जरा संभल कर चलियेगा. उधर से **करीमोदीन** आ रहे हैं. **गंगाविसन** सेठ तो अभी वहुत लंवे पल्लेपर हैं.

गंगावि०—(कोड़यां नाखकर) लेवो भाई, ये पच्चीस! (कोड़यां उठाकर) ये लेवो दस! देखो **करीमोदीन**, हरीने अव कित्ता वाकी छे?

करीमो०—वस, दो या तीन ले लो कि हुआ काम!

गंगावि०—(कोड़यां नाखे छे) दो, तीन, तीन—तीनही है!

करीमो०—(खुशी होकर) लो साहव, हरी तो मरीही पर लाल भी मर गई! दो झट सेठ साहव के हाथ में. एक नरद का चलना वड़ा मुश्किल होता है.

व्रजला०—(कोड़यां हाथ मांहे लेकर) देखो, अव म्हे मंतर मारकर कोड़यां फेंकूं छूं. लो ये पच्चीस—(कोड़यां उठाकर) लो फेर ओर पच्चीस—(कोड़यां उठाकर) लो अव छक्को—(कोड़यां उठाकर) लो अव दस—भाई

गंगाबिसनजी गिणती राखजो. दो पच्चीस ओर बीच मांहे छक्को छे. लो अब दस–बस, अब दो तीन घणा छे. दो, दो–दोही छे. चालो साव, अब तो नरद पक्की करने घर मांहे सुवाणशो के नहीं ?

करीमो०–(खुशी होकर) क्यों नहीं जनाब ! अब तो सिर्फ दोही का काम है, पर कहीं नरक में न गिर जाय ?

ब्रजला०–हूं, हाल तो बाजी घणी बाकी छे. नरक मांहे गिर भी गई तो नीसरता कित्ती देर लागसी ?

अमर०–हां भाई साहब ! जल्द जल्द हाथ फेंकिये. बहुत देर हो गई. अब क्या, हमारे सेठ साहब तो सो गये !

गंगाबि०–लो साव, सेठ साव के भेळे म्हेभी सो गया ! बस !

करीमो०–अरे वाह ! यह बाजी तो मेरे परही आती दीखती है ?

ब्रजला०–(कोड्यां हाथ मांहे लेकर) बस दो चाहिये. (नाखकर) दो, दो, दोही छे. चलो साव, म्हे तो बाजी सू छूटया.

गंगाबि०–लो अब म्हेभी छूट गया.

अमरसिं०–लीजिये साहब, जनाबे मन करीमोदीन साहब, एक नरद की बाजी आपपर आई. (घड़ी निकाळकर) ओहहो ! आठ बज गये ? आज बहुत देर हो गई. (ब्रजलालजीने) सेठ साहब ! आज आपको एक नई बात सुनाता हूं.

ब्रजला०–ठीक, भाई, कांई छे सू झट सुणावो. अब जावाने देर होवे छे.

अमर०–ग्वालियरसे एक बड़ी नामी गानेवाली तवायफ आई है. जिसका गाना बड़े बड़े राजा महाराजाओं-को पसन्द है. रंडी बड़ी नेकचलन, हौसिलेवाली और मालदार है. आप जैसे शौकीन सरदारोंको अक्सर पसन्द करती है. वह खुद तवंगर है इस लिये पैसेटके की कुछ परवाह नहीं करती. योंतो एक एक मुजरेके पांचपांच सो रुपये लेती है मगर आप

जैसे यार वाज, जिन्दा दिल शौकिनों से कुछभी नहीं लेती. खां साहव की गुजारिश है कि एकवार उसका जल्सा यहां भी होना चाहिये.

हसन॰—हां सेठ साहव, रंडी तो वड़ी अच्छी गानेवाली है.

गंगावि॰—(खुशी होकर) हां मिय्या, जरां तो—खूव मजा छे. इशा ठाटवाट मांहे गाणो तो जरूर होणो चाहिजे. नाचरंग विना मिजलस फीकी फीकी लाग्या करे छे. आ तो सेठजी चौसर तास खेलवो जाणे छे जरां, हांशी खुशा मांहे वखत चल्यो जावे; नहीं तो फेर एकमेक का मूंडा कानी एकमेक देखवो करो !

व्रजला॰—ठीक छे तो, दीखीजशी—आजही कांई जलदी छे. सारांने पानसुपीरा, अतर, हार देवो, चालो.

(पानसुपारी, अतर, हार लेकर सारा जावे छे.)

पहलो अंक समाप्त.

देख भक्ति राधा तणी, पति की बणजो नार । पतिव्रता सुन्दर घणी, करजो कुळउद्धार ॥

॥ श्री ॥

फाटकाजंजाल नाटक.

अंक दूजो.

पात्रः—सुगनींबाई (रामरतनजी की वहू), सदासुखी (श्रीकिसनजी की डावड़ी), सुन्दर (पाड़ोसी की बेटी), लछमीबाई, श्रीकिसनजी, रामचन्द्रजी, ब्रजलालजी, राधाबाई (ब्रजलालजी की वहू), रामरतनजी, जगन्नाथप्रसाद, शिवनारायणजी (रामरतनजी को दोस्त), नारायणराव (एक मरोठो ब्राह्मण), माणिलाल (एक गुजराती वाण्यो), अमरसिंग, हसनखां, करीमोदीन, मुन्नाजान (एक गावावाळी रंडी), महबूब बीबी (मुन्नाजान की बेटी), गंगाबिसनजी, गुलाबचन्दजी, तबलची, सारंगीवाळो ओर पेटी बजाबावाळो.

प्रवेश पहलो.

ठिकाणो—श्रीकिसनजी को घर.

(सुगनीबाई तथा सदासुखी आवे छे.)

सुगनी०—(सदासुखी को हाथ पकड़कर) बाईजी, हाथ के मेहंदी तो बराबर राची कोनी. मने तो बींद बींदणी को प्यार इशोही रहतो दीसे छे.

सदासु०—(सुगनीबाई को हाथ देखकर) आपका हाथ की तो मेहंदी घणीही लाल लाल हुई छे—फेर भैयो क्यूं रोजीना थारे ऊपर लाल लाल होवो करे ? मेहंदी परही प्यार होवे तो, लावो म्हे इण मांहे घणो खरो लाल रंग मिलाकर हाथ खूब लाल लाल कर ल्यूं !

सुगनी०—खाली मेहंदी मांहे लाल रंग मिलाया सूं काई होवे छे ? बाईजी साव ! जीव मांहे लाल रंग मिलावा सूं हाथ भी लाल होवे ओर काळजो भी लाल होवे—समझ्या ? थांका भाई म्हारे पर लाल लाल होवे सू हिरदा को लाल रंग वधावा के ताई हुवा करे छे. देखां, अब म्हांकी बाईजी साव का कंवरजी किशोक रंग वधावे सू ?

सदासु०—(चिड़कर) हो हो, वड़ी आई रंग वधावाळी ! तने कांई—म्हांको रंग तू थोड़ोही देखवाने आशी ? जा, म्हे वेरंगही सही !

(इतना मांहे सुन्दर आवे छे.)

सुन्दर—(सदासुखी कानी देखकर) ओहहो ! आज तो बाईसाव का नखरा ! लखपत्यां की बेटी, लखपत्यां की वहू ओर छोटा कंथ की बींदणी ! फेर उठे देखणोही कांई ?

सदासु०—(मुंह मरोड़कर) हो हो, थारो बूढो छे तो म्हांने कांई करणो छे ?

सुगनी०—(हंसकर) जावोजी बाई, म्हांकी बाईजी को बींद छोटो कंथ क्यूं छे ? जनमपतरी मिलाई जद बाईजी सूं दो वरस वड़ा छे करने सुसराजी कहता था. वड़ा घरां का टावर जरा गळ्योड़ा साही रह्या करे छे. अकेलड़ा हाड़ का छे. मावापां को लाड़कोड़ भी ज्यादा छे. तिकासूं बराबरी का लागे छे. बाकी बाईजी सूं छोटा तो छे नहीं.

सुन्दर—(सेन करने) क्यूं भी बोल बाई भाभी, कंरवजी म्हांकी बाई साव सू तो छोटाही लागे छे. देखजे, चंवरी को धुंवो लाग्यो के बाईसाव पूरी लुगाई हो जाशी ओर कंवरजी तो कंवरजीही वण्या रहसी !

सदासु०—(चिड़कर) जा परी, तने कांई ? थारा डोकराजी सू तो चोखाही छे.

सुगनी०—(दावकर) यूं कांई बाईजी, वोलती वखत जराभी आगे पीछे देखो कोनी ? सुन्दरबाई थांके सायना छे तो पण थांसू दोतीन वरस

वड़ा ओर परण्यापोत्या छे. यांको बींद डोकरो थोड़ोही छे ? दूजबर होवे जका साराही बूढ़ा हुवा करे छे कांई ?

सदासु०—फेर मने आ क्यूं चिड़ावे ? बींद डोकरो नहीं तो कांई मोट्यार छे ? दांत पड़ गया, वाळ धोळा हो गया—तो फेर कांई बाळक छे ? रोजीना तो बाईसाब काकी के सामने बींद का गराणा करती थी ओर मावापां का नांवने रोती थी जका म्हे सुणतीं कोनी कांई ?

सुन्दर—हो बाई, तू वड़ी दादीडोकरी पड़ी के नहीं, सू थारे बिना इशी बातां कुण सुणे ?

सुगनी०—जावा द्यो बाई, इशी बातां मांहे कांई छे ? बाळक, जवान, बूढ़ो—मिलणो नहीं मिलणो, जीं बींका तिलोद की बात छे ! कोई मावापांने बेटी को प्यार, कोई मावापांने धनवाळा को प्यार ओर कोई मावापांने धन को प्यार ! पण नहीं, धन का लालच सूं पाळ्यापोशा पेट का गोळाने धनवाळाने देखकर छोटा नादान के साथ परणा देणो तथा धन का लालच सूं बूढ़ाने परणा देणो—घणोही पाप छे. विचारी बेटी जनम इशा कसाई मावापांने दुरशीस देवो करे ! आपणा लोगां मांहे ये इशी रीतां कियान पड़ी, ओर सारांने बुरी लागकर भी क्यूं नहीं मिटे—राम जाणे ? ये कांई, ओर भी घणीही बुरी बुरी रीतां छे. पण हाल कांई कोई मिटे छे ? आगे होकर ये रीतां मिटावा की कींकी हीमत भी चाले नहीं !

सुन्दर०—(उदास होकर) बाई भाभी, बेटी की दुरशीस लेकर कोई भलो पावे नहीं. म्हारो बाप रुपया पांच हजार लीना. व्यां रुपयां मांहे सूं खूब नीलाम का आंक पर रुपया लगाया, पण जो लगाया सू गया ! पीछी एक कोड़ी आई नहीं. फेर क्यूं बोझ को सौदो कीनो वीं मांहे भी नुकसाणही लाग्यो. फेर दलाली करी. घणाही सट्टा, फाटका, कचाड़ा कन्या कराया पण, बारा महीना भी हुवा नहीं सारा रुपया जाता रह्या ओर उलटा माथे दोतीन हजार हो गया ! लोगां का रोजीना तगादा आवे छे, अब मुंह छिपातो फिरे छे!

मा बापड़ी रो रोकर आंख्या फोड ली ! कांई करे, वींतो घणीही मनाई करी थी पण, रुपया का लालची कींकी माने कांई ?

सुगनी०—बाईजी, रुपयो इशी वलाय चीज छे के वींके आगे क्यूं भी कींने सूझे नही. ईंके तांई पाळघापोशा पेट का गोळाने मावाप वेच नाखे, भाई भाई वैर कर ले, मिनख मिनखने मार नाखे ओर आपस मांहे लड़ाई झगड़ाने तो देर भी नहीं लागे ! **नारायण** की लीला **नारायण**ही जाणे ! पेट का गोळाने वेचकर, भायां भायां सूं वैर करकर, लड़ाई झगड़ा करकर कपटजाळ जंजाळ रचकर ओर सट्टा फाटका कवाड़ा करकर रुपया मिलाकर भी सुख होवे कांई ? कदे ही नहीं ! आछा रस्ता सूं धरम परवाणे चालकर भी दुनिया मांहे कित्ताही धका लागवो करे तो फेर ये लोग कियान आंधा हो जावे ? **राम**ही जाणे !

(इतना मांहे लछमी बाई आवे छे.)

लछमी०—(हंसकर) **सदासुखी**, **सुन्दर**, वींदणी, कांई कर रह्या छो ?

सुगनी०—(सासू के पगां लागकर) क्यूं नहीं सासूजी, व्याव की वातां करां छां.

लछमी०—दूधां न्हावो, पूतां फळो, पेळ्यापाट्यां राज करो ! बस, वेटा बस !

सदासु०—मा देख भलां, **सुन्दर** जद मिले जद मने चिड़ावो करे. ओर म्हे पीछी वोलूं जरां भाभी धमकावे ! आ कांई वात ?

लछमी०—नहीं वेटा, **सुन्दर** गहली छे ! भाभी की मगदूर छे तने धमकावा की ?

सुगनी०—नहीं सासूजी, **सुन्दर**बाई तो वाईजी का लाड़कोड़ करती थी. ओर चिड़ावे तो कांई हुवो ? चिड़े जकाने तो ज्यादाही चिड़ावे !

सदासु०—(चिड़कर) जा वड़ी आई चिड़ावाळी ? मा देख, थारे सामने भी कांई वोले छे—सुण ले. फेर म्हे वोलशूं तो भैया कने जाकर रोती वुरी दीखशी !

लछमी०—गहली बेटी कठेही की ! अब थारो व्याव छे सू छोन्या छापन्यां थारी हांसी करबोही करशी—जद तू यूं चिड़ चिड़कर सारां सूं लड़ती आछी लागशी कांई ?

सुगनी०—नहीं सासूजी, बाईजी चिड़ोकला थोड़ाही छे ? कींने हांसी सुहावे कींने नहीं सुहावे—इत्तोही.

सदासु०—(जोर सूं)बस बस, वड़ी आई हांसी करबाळी ! (मूंडो फुगावे छे.)

सुन्दर—जावो बाई काकीजी, म्हारी सदासुखी बाई यूं बोलताही चिड़े जरां फेर बाई साब का व्याव मांहे आकर म्हांने करणोही कांई छे ?

सदासु०—(चिड़कर) जावो मत आईजो बस !

सुन्दर—ठीक छे तो जावूं छूं. (जावे छे.)

लछमी०—(घुस्से होकर) कांई दिन दिन अक्कल जावे छे ! कोई सुणे सू कांई कहवे ? यूं पराया आदमीने बोलणो कांई ? विचारी सुन्दर मन मांहे कित्ती दुख पाई होसी ? चाल परी ! ओ कांई लाड़ ?

(इतना मांहे श्रीकिसनजी आवे छे. सुगनी बाई एक कानी होवे छे.)

श्रीकिस०—(हंसकर) मा बेट्यां के कांई तकरार चाल रही छे ?

लछमी०—तकरार काय की जी, ईंने कोई जरा लाड़कोड़ सूं भी छेड़ लेसी तो चिड़ जाशी. राम जाणे ! आजकाल ईंको कियान को सुभाव हो गयो ?

श्रीकिस०—टाबर छे. अबार समझ थोड़ीही छे के काणकायदो राख जाणे !

लछमी०—यूं थे बोल द्यो, जरांही तो फेर विगड़ जावे !

सदासु०—(आंख्या भरकर) देखो भायाजी, घर का चिड़ावे तो चिड़ावे पण बारे का भी चिड़ावे तो कोई वरजे भी कोनी !

श्रीकिस०—(आंसू पूंछकर) गहली बेटी कठेही की ! थारो कांई लेवे कोई चिड़ावे तो ? चिड़णो के पीछो जबाब देकर हटा देणो !

लछमी०—आज बीच मेंही कियान आगया ? म्हे तो डरी, राम जाणे कांई छे ? क्यूं आया ?

श्रीकिस०—क्यूं भी नहीं राजी खुशी आयो छूं. क्यूं व्याव की सल्लासूत करणी थी और कांई.

लछमी०—सल्लासूत कांई करणी छे. सामानसुमान तो सब तैयार होही गयो छे. म्हांको काम तो घणखरो निपट गयो. थांका काम की थे जाणो !

श्रीकिस०—(डरता डरता) म्हांका काम की म्हे कांई जाणा ? भैयो एक दो बात को हट कर रह्यो छे.

सुगनी०—(मन मांहे) बात तो सुसराजी ताई पूगी. म्हे तो बरज्या था पण मानी नहीं. चोखो, आपांने कांई—होसी सू देखशां. देखां, अब सासूजी कांई बोले छे ?

लछमी०—(चिमककर) कांई बात को हट करे छे ? मने तो कदेही क्यूं कह्यो कोनी.

श्रीकिस०—मने भी तो क्यूं थोड़ो ही कह्यो छे. मुनीमजी कने सूं कव्हायो छे.

(इतना मांहे रामचन्दरजी आवे छे.)

लछमी०— ये मुनीमजी भी आया. कांई कव्हायो छेजी ?

श्रीकिस०—कांई कव्हायो छे—अठे दो तीन महीना पहली आपणी जात का लोग भेळा हुवा था, अजमेर सूं अगरवाळ सभा की तरफ सू लाला चुन्नीलालजी आया था जरां, आपणा लोगांकी राहरीतके बारामें उणा कह्यो थो के—सीठणा, गाळियां नहीं गाणी, मंडवो, आतसबाजी, नाच नहीं कराणा, बामणांने जिमा कर दिखणा नहीं देणी, फजूलखरची नहीं

करणी—इशी इशी वातां सुणाई थी तिका ऊपर पंचां विचार करने दोतीन वातां की मनाई कीनी छे. वीं लिखत ऊपर भैयो दसकत कीना छे. वीं दिन म्हारो तो जाणो हुवो नहीं जरां, म्हे पंचांने परवानगी देकर भैयाने भेज दीनो थो. अब आपणाही घर मांहे व्याव आगयो. ओर आपणोही घर सिरे ठहऱ्यो सू लोग अब भैयाके सिर हो रह्या छे. म्हेतो घणी टाळा टाळ कर रह्यो छूं पर भैयो कव्हायो छे के सारा लोग वुरा कहसी, रुप-या पांचसो एक धरमादावा मांहे देणा पड़सी ओर अखवारां मांहे लोग वुराई छाप देशी !

लछमी०—(चिड़कर) मुव्वामाऱ्या लोगांने भी काई उधम सूझ्यो छे मालम नहीं ! आपको रुजगारधन्धो तो छोड़ देवे ओर क्यूं को क्यूं काम करवो करे ! "आप गुरुजी कातरा मारे ओर लोगांने परमोद सिखा-वे !" आपका घर को तो अंधेरो मेटेही नहीं, ओर लोगांने दूर सू दीवो वतावे ! जडवाळ्या लोग म्हाराही घरपर क्यूं हाथ धो राख्या छे, मालम नहीं ! घणा दिनां सू उडीकता उडीकता कठे छोरी को व्याव मंडीज्यो छे—सू खूब गीतगाळ गाकर जवांईभाई, सगासोई, पावणापै का लाड़ कोड़ करता सू वीचमें कठे की पंचातफंचात लाया छो ? भैयो भी गहलो छे सू कठे को कठे जाकर दसकत कर आयो. मुनीमजी, दसकत करो के फसकत करो म्हांने तो गीतगाळ गाया विना कोनी सरे ! मोरलीशी एक छोरी ओर गीतगाळ विना वींका फेरा कराती आछी लागूं ? कांई राममाऱ्या लोगां का हिया फूट गया छे—राम जाणे—म्हाराही घरपर कमर वांधकर त्यार हुवा छे ? म्हे कींका लेणा मांहे न देणा मांहे—राम ! म्हांने फोगट क्यूं सतावे कुण जाणे !

रामचं०—(धीरे सुं) नहीं सेठाणीजी, आपने कुण सतावाळो छे ? आज काल ठिकाणे ठिकाणे ठेठ कलकत्ता सू मुंबाई ताई इण वतां की चरचा चाल रही छे. ओर दूसरी जातवाळाभी ये आपणी गीतगाळ, हांसीठट्ठा, जीमणजूठण, लेणदेण की रींताने हंसे—तिकासूं अब इण वातां को विचार

साराहीने ऊपज रह्यो छे. तोभी हाल ये वडेरां सू चालती आई हुई रीतां थोड़ीही मिटे छे ! मिटता मिटता किताही वरस वीत जासी ! पण सेठाणीजी, आजकाल आगली रीतां करवा के वदला क्यूं छोड़णे सूं ओर क्यूं वदलणे सूं उलटो आछो नांव होवे छे. ओर सारा वड़ा वड़ा लोग इशी वातांने उलटा सराव्हे छे. व्याव सगाई ओर कोई कार्यां मांहे दो पैसा खर्च करां ओर राहरीत, गीतगाळ करां सू काय के वास्ते ? लोग राजी होकर आपणी सोभा वधावे जका के तांई के नहीं ?

लछमी०—(खुशी होकर) हां, तो फेर ओर कांई ?

श्रीकिस०—जरां फेर आजकाल का लोग ये इशी रीतां सूं उलटा नाराज होकर आपणी उलटी हांसी करे जद, फेर घर का पैसा भी खरचणा, गीतगाळ गाकर गळा भी दुखाणा ओर उलटी हांसी कराकर नांव धराणो—क्यूं भलां ? इण मांहे सार कांई ?

सुगनी०—(मन मांहे) सुसराजी ओर मुनीमजी क्यूं भी वोलो,समझावो, डरावो—सासूजी कींकी एक वात मानेला नहीं. ओर भलांही क्यूं मान जावो पण गीतगाळ की तो तीन काळ माने नहीं ! आपांने कांई, जो होसी सू देखशां. व्यांकी मनाई छे तो आपां तो गाळ गावां नहीं.

लछमी०—(दोरी होकर) रतन का भायाजी, थे सगळाही बुरो मानो के भलो मानो—गीतगाळ गाया विना म्हांने सरे नहीं. कांई थे साराही आज अनोखी वात करो छो—गीतां वीनाही कठे व्याव होता होसी ?

रामचं०—(हंसकर) सेठाणीजी, गीत गावा की थांने कुण मना करे छे. गीत गावो, मंगळाचार करो, वींदवींदणी का लाड़कोड़ करो—कुण रोके छे ?

लछमी०—तो फेर ओर म्हांके हाथ कांई करणो छे सू थे मनाई कर रह्या छो ?

श्रीकिस०—मनाई म्हे इत्तीही करां छां के गीतां मांहे फांटा बोल नहीं गावणा. सगोसोई हो, जंवाईभाई हो ब्यांने गाळ नहीं गाणी. सादा गीत थां के ध्यान मांहे आवे सू गावो. अव तो समझ्या के नहीं ?

लछमी०—पहलीही थांके बोलता पाण समझसुमझ गई थी. पण थे तो आछी तरह सू जाणो छो के म्हे कदे कींने गाळ गावूं नहीं ओर छोन्यां कने गवावूं नहीं. पण बारली लुगायां आशी जिकी कियान मानशी ?

रामचं०—सेठाणीजी, आ तो कहबा की बात छे—बारली लुगायां कियान मानशी—लावो आपको हुकम होसी तो म्हे खुद जरांही मना देशूं. इशी कुण लुगाई छे के आज थांकी बात मानशी नहीं !

लछमी०—जावो परा, थे तो खाली चिणा का झाड़पर चढ़ावो छो ! बारा घर की बारा ! म्हे मना कर द्यूं ओर वे गाळ उगार दे तो कांई ब्यांने घर के बारे निकाळ द्यूं ? भलां बीं बखत लुगायां कींकी माने छे ? थां सारां को बिचार अबके ब्याव मांहे म्हां लुगायां को फजीतो करबा को दीसे छे ओर कांई ?

सुगनी०—(मन मांहे) रस्ता पर आता आता फेर बदल गया ! मने मालम छे कदेही मानवा का नहीं !

श्रीकिस०—बस तो, कांई कोई बात को हटही ले लेणो ? लुगायां मानशी नहीं तो कांई करशी ? जबरदस्ती लोगांने फांटा बोल बोलकर आपकी लाज गमाशी ? बस, थे जरा समझा दीजो फेर दीखीजसी !

लछमी०—(दोरी होकर) यूं सूल बोलताही चिड़ो जरां आगो जावो परो ब्याव ! म्हारी एकली की थोड़ीही बेटी छे ? लोग भूंडा भला कहसी तो मने एकलीने थोड़ाही कहसी ? चालो म्हांने कांई, थे बोलशो जियान करशां !

सुगनी०—(खुशी होकर मन मांहे) आयातो सही ठिकाणा पर. मोटयार मन मांहे धारे तो लुगाई कांई कोनी माने ? पण कुण जाणे काई रीत पड़ी

छे के आपणी जात मांहे मोट्यार लुगायां सू डरवो करे ! कुछ भी बोल सके नहीं ! तिकासूं ये बुरी बुरी गीतगाळ की रीतां वध गई ! इण तरह अवार मोट्यार विचारकर जोर सूं घर मांहे लुगायांने समझाय देवे तो मगदूर छे—लुगायां माने कोनी !

रामचं०—चालो सेठ साव, अव सेठाणीजी के गळे वात उतर गई. सारो वन्दोवस्त हो जासी. फेर यूं तो लुगाई की जात छे. कोई मानशी कोई नहीं मानशी तो भूलचूक लेणी देणी छे. पण सीठणा ओर गाळ्यां की रीत आपणा घर सूं वन्द हुई ओ तो आपको नांव दूर दूर हो जासी. इण मांहे आपकी सोभाही वधशी !

श्रीकिस०—मुनीमजी, सदासुखी का सुसराने पण खूब आछी तरह सूं समझाकर समाचार लिख दीजो के अठे पंचायती ठहराव हो गयो छे के व्याव मांहे सीठणा के गाळ्यां गावणी नहीं. नहीं तो व्यांके मांहे सीठणा गुवाणे की चाल छे ओर गावाळी वामणींने सो सो, पचास पचास रुपया देकर साथ लाया करे छे ! वैळ्या व्याव की घणी खटपट रह्या करे छे. म्हे तो वरात मंगाई थी—पण आगला माने नहीं जरां कांई करां ? जान आ जाती तो ७।८ दिनां माहे नीरांत हो जाती. यूं झमेलो एक महीना तांई रहसी. पण जाण्या, समाचार वरावर खुलासेवार लिख दीजो.

रामचं०—ठीक छे, आपका हुकम माफक सव लिखीज जासी. चालो अव. (दोनू जावे छे.)

लछमी०—(सुगनीवाईने) सुसरा की वातां सुणी वींदणी ? भलां गीतगाळ विना सरे छे ?

सुगनी०—सासूजी, हां हां करणो. आपणो कांई गयो—फेर दीखीजसी !

लछमी०—चालो वाई, घणी वार हुई घर को काम निवेडां. (दोनू जावे छे.)

प्रवेश दूजो.

ठिकाणो–ऊपर को चोबारो.

(ब्रजलालजी आवे छे.)

ब्रज०–(मन मांहे) कांई छे राम जाणे ! न्यारा होबा के पहली तथा न्यारा होती वखत मन मांहे उमंग थी सू अब बिलकुल नहीं. दिन दिन फिकर बधतो जावे छे. सारे दिन चित्त कठी को कठीने दोड़बो करे, क्यूंभी सूझ पड़े नहीं ! नहीं तो पहली खाया पीया के मोजमजा उड़ाया–क्यूंभी फिकर नहीं थी. घर का कोई भी बोल सकता नहीं. पण अब तो सारो जाळ गळा मांहे आ गयो ! क्यूं रोटी खाई क्यूं नहीं खाई के भाग्या दुकान पर. उठे दलाल जक कोनी लेबा दे. उठे सू शाम का बगीचे गया तो उठे भी धूमधाम मची रव्हे. रात का जयदेव की मा सताबो करे–करणो तोभी काई ? लोग बोले के पैसावाळा सुखी रह्या करे छे पण, अठे तो आ वात छे ! अठीने हवेली को काम चाल रह्यो छे, उठीने बगीचा मांहे बंगला को काम चाल रह्यो छे. गंगाविसनजी की पूरी मदद छे, नहीं तो एक दिन भी काम नहीं चाले ! गया महीना मांहे तो बीस पच्चीस हजार को फायदो रह्यो. रुई का सट्टा मांहे लहणो ठीक छे. अफीम के तो माथे कोनी मांगा. आज तांई अफीम का बोझ तथा पेटी ओर तेजीमंदी का जित्ता सौदा कीना तिका मांहे गमायाही. बापड़ी रुई मांहे नफो नहीं मिलतो तो आज कित्तो नुकसाण देणो पड़तो ? न्यारा हुवा जद आठ लाख पैंतीस हजार तो रोकड़ा मिल्या था. गहणोगांठो, जेवर लाख सवा लाख को थो. तीन चार घर, दो बगीचा तथा गाड़ी, घोड़ा, बैल, गायां, भैंसां मिलाकर लाख डेढ़ लाख को माल थो ओर असामीतासामी तथा मालगुजारी का दो गांव मिलकर दो ढाई लाख को सुमार थो. रसीद चौदा लाख पच्चीस हजार तीन सो इक्कावन की हुई थी. पण अब आंकडो मिलायो तो इत्ती रकम को मेळ बैठणो

मुश्कल छे. सट्टा माहे लांबोसो नुकसाण लाग्यो नहीं, कोई आसामी तासामी नवी करी कराई नहीं. बाबा, दो गाड़ी घोड़ा तो नवा लीना छे. बंगला के तांई सामानसुमान मुम्बाई सू मंगायो छे. हवेली तथा बंगलो बंधीज रह्यो छे. ओर गंगाविसनजी मांहे पांचपचास हजार होसी, तो कांई इत्ता मांहे आठ लाख पूरा हो गया ? (याद आकर) नहीं नहीं, दो तीन लाख तो दिसावरां मांहे बाकी छे. ओर क्यूं मालताल मांहे, हवेली वगीचा मांहे लाग रह्या छे. रकम तो ठिकाणे ही छे पण, आजकाल रकम हाथ मांहे खेलती कोनी रव्हे तिकासूं जीव मांहे दुग्धा वणी रव्हे ओर जीवभी बरोबर लागे नहीं ! कुण जाणे कांई छे ?

(इतना मांहे जयदेवने लेकर राधावाई आवे छे.)

राधा०—(जयदेवने सुवाणकर) क्यूं आज उदास कियान बैठा छो ? (नजीक जाकर) जीव तो सोरो छे ना ? (डावी मांहे सू पान की बीड़ी लेकर) ल्यो पानकी बीड़ी. क्यूं बोलो कोनी कांई ?

व्रजला०—(जरा चिड़कर) वस, थांके तो आवा की देर छे, चाली फेर किट किट ! आदमी कांई सोच फिकर मांहे छे के, कांई विचार मांहे छे के, कांई कर रह्यो छे—तिकारो बिलकुल विचार नहीं !

राधा०—(डरकर) यूं कांई जी भलां जयदेव का भायाजी, फेर म्हे कींसू बोलां बतळावां ? म्हांके तो धणी— देव, छत्र, सिरताज, मालक, आधार ओर सुखदुख का साथी थेही छो ! थांके विना दुनिया मांहे दूजो कुण छे ? थांको सोचफिकर तो कांई मिटा सका, तो पण जीव खोलकर बात कहणे सूं मालम पड़कर म्हेभी पांतदार वणा ओर तो कांई ?

व्रजला०—थांने मालम पड़या सू कांई होवे ? थे रुजगारधंधा मांहे कांई जाणो ? थे तो फकत गहणागांठो, कपड़ोलत्तो ओर रमतगमत मांहे समझो छो—म्हांका जीव की फिकर म्हेही जाणां !

राधा०—म्हांको गहणोगांठो, कपड़ोलत्तो ओर रमतगमत सारी आपका पगां के लारेही छे. आजकाल इशो कांई फिकर छे जी बोलोना? म्हे थांकी गुलाम छूं! हे **राम**! फिकर का मान्या किशा सूख गया!

ब्रजला०—(चिड़कर) सूख गया तो आछो हुवो के बुरो?

राधा०—(मन मांहे) कांई करूं बाई, आज तो बिलकुलही मिजाज ठिकाणे कोनी! (चूप बैठे छे.)

ब्रजला०—(बिछावणा ऊपर पड़कर) बस, अब मने नींद आव छे. छेड़ छाड़ करजो मतीना.

राधा०—(उदास होकर मन मांहे) हे **नारायण**, कांई थारी मरजी छे सू तूही जाणे! आज न्यारा हुवाने बरस सवा बरस होवा आयो, एक दिन सुख को नहीं गयो! कित्तो जीव के लारे जंजाळ लगा लीनो छे जींको पार नहीं! माद्या भाई तो बिलकुल हाथ धोकर पीछे लाग रह्या छे. अब म्हे कांई करूं? कियान संगत छुड़ावूं? आजकाल वात तो पूरी करेही कोनी! बतळावूं तो चिड़ चिड़ करे! म्हां लुगायां को आधार एक धणी छे. म्हांने धणी का सुख मांहे सुख, धणी का दुख मांहे दुख, धणी का जीणा मांहे जीणो ओर धणी का मरणा मांहे मरणो छे. धणी म्हांको सुहाग, धणी म्हांकी सोभा ओर धणी म्हांको छत्र छे. धणीही के लारे म्हांको रूप छे, धणी ही के लारे म्हांको रंग छे, धणीही के लारे म्हांको मान छे ओर धणीही के लारे म्हांको संसार छे. धणी बिना म्हे पापी, धणी बिना म्हे दुःखी, धणी बिना म्हे नीच ओर धणी बिना म्हे मन्या मुरदा छां! हाय! अब म्हे धणी जिशा प्रत्यक्ष देवने छोड़कर किशा देव की पूजा करूं, बोलवा बोलूं ओर मनावूं के वो म्हारो ओ दुख दूर करे!

ब्रजला०—(सपना मांहे) लिया, लिया सो बोझ--चालो--लो-लो गंगाविसनजी गंगाविसनजी—

राधा०—(चिमककर) मुव्वामाऱ्यां को सत्यानास होजो खूब भुरकी नाख राखी छे ! नींद मांहे पण लार कोनी छोड़े ! (नजीक जाकर धीरे धीरे पांव दावती हुई) जयदेव का भायाजी, आछा वोझ लिया ओर गंगाविसनजीने बुलाया ? जरा चेत तो करो. आ थांकी गुलाम करां की कळप रही छे ! थोड़ी घणी भी दया नहीं करो ? आजकाल इत्ता कठोर हो गया ?

ब्रजला०—(चिड़कर) फेर छेड़छाड़ करकर म्हारी नींद उड़ा दीनी ?

राधा०—अरे राम ! म्हे नींद उड़ा दी के आप क्यूं का क्यूं वक रह्या था !

ब्रजला०—फेर वक रह्या था तो थांको कांई लेता था ?

राधा०—(डरती डरती) अब तो वोझ ओर गंगाविसनजीने छोड़ो. सारा लोग नांव रख रह्या छे. माद्या भाई घर खा रह्या छे ! कमाई घणी दोरी छे, लोही को पाणी करणो पड़े जरां कठे पैसो निजर आया करे छे ! सुसराजी अंग मांहे पूरी अंगरखी पहरता नहीं, ढूंगां के पूरी धोती लपेटता नहीं ओर पेटके पाटो बांध बांधकर पूंजी मिलाई थी ? वा पूंजी इण तरह जाती देख काळजो टूक टूक हो रह्यो छे पण, उपाय कांई ? काल छोरा की सगाई करणी छे, व्याव करणो छे. अब ८।१५ दिनां मांहे सदासुखी बाई को व्याव आयो. मोटा मोटा सगा, पावणापै तथा सिरदार वारणे पधारसी जका ये वातां सुण देखकर कांई कहसी ?

ब्रजला०—कांईकहसी—धूळ ! म्हे भी व्याव मांहे हजार दो हजार खरच देशूं, वस ! आपणा लोगां को कांई—पैसा हुवा के सारा ओगुण गुण हो जाय, बावळो शाणो हो जाय, मूरख पंडित हो जाय ओर बेअकल अकलवाळो हो जाय !

राधा०—(आंसू लाकर) फेर म्हे कायने रो रही हूं ? पैसा के लारेही सारी वातां छे. मावाप, भाईबहण, वेटावेटी, सासूसुसरा, लुगाई, कवीलो, दोस्तमिंतर, भाईवन्द, सगासेई सारा पैसा के लारे छे. पैसो छे उठे ताई

सारा सेठजी सेठजी कहसी ओर नहीं होसी जीं दिन पूछसी भी नहीं के सेठजी कठे छे ओर कुण छे ?

ब्रजला०–(जोर सूं) नहीं पूछसी तो मत पूछो. कींके पास क्यूं मांगणो थोड़ोही छे ?

राधा०–(मन मांहे) बड़ाबड़ाने मांगता देख्या छे ! पण अब धीरज सूंही समझाणा चाहिजे. नहीं तो फेर चिड़ता देर लागेली नहीं (बड़ा सूं) नोज ! थांका बैरी मांगो ! थांने नारायण काई कमती कीनी छे सू मांगबा जाशो !

ब्रजला०–(ऊठकर) आज अठे तो नींद आवे कोनी. ऊपर का बंगला मांहे सोवां तो ठीक छे. उठे हवा भी मोकळी होशी.

राधा०–(उभी होकर) ठीक छे तो चालो. ऊपर बिछावणा कन्योड़ा छे. दीवो भी बळे छे. (जयदेवने उठाकर) चाल म्हारा बच्चा ! ऊपर चालां. तू तो खूब नींद ले रह्यो छे पण, थारी मावड़ी की तो आज आंख सूं आंख भी मिली नहीं !

ब्रजला०–बस, वींने क्यूं जगा रह्या छो ? पहली तो थे नींद लेबा दी कोनी, ओर अब ओ जाग गयो तो फेर " हरेन्नमा "

(दोनू ऊपर जावे छे.)

प्रवेश तीजो.

ठिकाणो–श्रीकिसनजी की दुकान.

(रामरतनजी आवे छे.)

रामर०–(मन मांहे) काकाजी आधी पाती तो ले गया परन्तु घर को झगड़ो मिट गयो. " कलहान्तानि हर्म्याणि, कुवाक्यान्तं च सौहृदम् "

कलह नहीं होवे उठे तांईही राजा का राजमहल छे ओर कुवचन नहीं वोले उठे तांईही प्रीति छे—इण मांहे कांई शक छे? वरस सवा वरस घर मांहे कहल रह्यो तिकासूं वेपारधंधा मांहे ओर कित्तोही नुकसाण हो गयो! कोई सामने हुवा कोनी, नहीं तो काकाजी इत्ती पांती ले लेता? ओर लेता भी तो कित्ती? पण नहीं, भायाजी तो विलकुल चोरीछानो कीनो नहीं. जो चीज मांगी सू दे दी. श्रीजी की कृपा सूं अठे तो फेर वाकी वा वात हो गई. गई साल पीकपाणी चोखो हुवो सू कित्तीही डूवी हुई रकमां वसूल हो गई. अनाज खूव आयो. रुई को भाव वध गयो. डोढा दूणा हो गया! भायाजी के सट्टा की के दिसावर का सौदासूत की सोगन छे तिकासूं आवरू वणी छे. काकाजी अव खूव सट्टो चूंचायो छे. आधीक पूंजी तो विले लाग गई छे. वाकी पण थोडाही दिनां की छे. विचारी काकी सती लुगाई पल्ले वंधीजी छे. तिकारा पुन्नपरताप सूं फेर काकाजी थोड़ा दिन टिक्या रह्या छे, नहीं तो इत्ता दिनां मांहे कदकाही पूरा हो जाता. अव तो गाणोवजाणो रांडरंडी का सोक मांहे भी खूव पड़ रह्या छे. भायाजी दो चार वार जगन्नाथप्रसाद वकील का हाथ सू कव्हायो भी, पण "उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये" इशा आदमीने उपदेश कांई लागे? विचारी काकी जद जद घरां आवे माके पास रोवो करे पण उपाय कांई?

(इतना मांहे जगन्नाथप्रसाद वकील आवे छे.)

जगन्ना०—(हाथ उठाकर) जयगोपाल कंवर साहव! क्यों आज अकेले कैसे?

रामर०—अभी जीमवा गया सू कोई आया दीसे छे नहीं. मन मांहे थांकी अवारही याद कीनी थी जित्ता मांहे आप आ गया. चालो अठे तो मुनीमजी ओर आ जासी सू फेर आपां सूं पूरी वातचीत होशी नहीं. ऊपर चालवा सूं एकान्त ठीक रहसी, ओर आपणी वातां मांहे पण हरकत आशी नहीं. (दोनू ऊपर जावे छे.)

जगन्ना०—अब आपकी बहनके विवाहके कितने दिन बाकी है ?

रामर०—अब काय का दिन बाकी छे. कोई २०।२२ दिन छे.

(इतना मांहे शिवनारायणजी आवे छे.)

शिवना०—(हाथ उठाकर) जयगोपालजी की, आज तो कंवर साब ओर बाबू साब ऊपर बिराज रह्या छे. मने दुकान मांहे कोई कोनी दीख्यो जरां पाछो जातो थो उत्ता मांहे जमादार बोल्यो ऊपर छे जद आयो. काय का २०।२२ दिन बाकी छे ?

रामर०—बाई सदासुखी का व्याव का—ओर कायका !

शिवना०—बस, जरां अब तो थोड़ाही दिन बाकी छे. पण कंवर साब, दिवाळी के पहली अजमेर सू चुन्नीलालजी आया था. पंचायती धरमसाळा मांहे उणको लेकचर हुवो थो. बीं बखत साराही एक लेख लिखकर दसकत कीना था के—व्याव मांहे सीठणा गाळ्या गाणी नहीं, मंडवो ताणणो नहीं, आतसबाजी उड़ाणी नहीं, नाच कराणो नहीं, बामणांने दिखणा देणी नहीं, उछाळ भूर पैसा टका सू ज्यादा करणी नहीं, दो भात के ऊपर तीसरो भात देणो नहीं. सकतीवाळो चाव्हे तो साड़ी बारा न्यात करो नहीं तो आप आपकी न्यात करणी. सगा कने सू बरोटी कराणी नहीं. धजाक-चोळी तथा मिंदरां की लाग रीत मुजब करणी. सगां को ज्यादा खरच कराणो नहीं. ओर बेटीवाळो भी फजूल खरच करणो नहीं. दसकत हुवा पीछे अब पहली व्याव आपकेंही अठे मंडिज्यो छे. ठीक हुवो अब आपकी ही परीक्षा की बखत आई !

रामर०—(हंसकर) कांई हुवो ? आवो बखत आई तो. होसी जित्तो कर दिखाशांही. थांके जिशी थोड़ीही पीठ बता देशां ?

जगन्ना०—मैंने भी सुना है कि हमारे रामरतन साहबने घर में कुछ बन्दोबस्त किया है. सब नहीं तौभी, कुछ कुछ बातें तो अवश्य रुक जायगी. गीत गाये जावेंगे उनमें गालियां नहीं गाई जावेंगी, मंडप, आतिशबाजी

ऐसी वैसी होगी पर, रंडी का नाच मुतलक नहीं होगा. उसके बदले फोनोग्राफ सुनाया जावेगा. ब्राह्मणों को दक्षणा दी जावेगी पर उतनी नहीं. और भी कई वातों का सुधार होगा. मुझे यकीन है कि औरों की अपेक्षा हमारे कार्यकुशल कंवर साहव वहुत कुछ कर दिखावेंगे, क्यों कि ये खुद पढ़ेलिखे हैं और घर में इनकी स्त्री सुशीला, कुलवती और समझदार है. हमारे यहां इनकी धर्मपत्नी की वड़ी तारीफ हुआ करती है.

शिवना०—(हंसकर) तो इण मांहे कांई हुवो ? ये इत्ती वातां तो म्हारे जिशो अणपढ़ भी कर सके. फेर सभा हुई, पंचायती होकर दसकत हुआ ओर तिका परवाणे नहीं चालवावाळाने पांचसो एक धरमादावा को दंड भी ! जरां ये वातां कागद की कागद मांहे रह जावेली कांई ?

जगन्ना०—(चोंककर) जव पंचायत होकर जाति में प्रवंध हो चुका है तो फिर अवश्यही वैसा चलना होगा. उसके खिलाफ कुछ नहीं हो सकता. हमारे श्रीकिसन सेठ सुयोग्य और समझदार हैं. वे कभी जाति में दोषी नहीं हो सकते. जो कभी अपने जवानसे निकला हुआ शब्द तक वापिस नहीं लेते—जहां जात की पंचायत होकर नियम हो गये हैं—तो वे कैसे प्रतिकूल चल सकते हैं ?

शिवना०—नहीं वावू साव, उण मांहे थोड़ो भेद हो गयो छे. पंचायतके दिन सेठजी परवानगी देकर कठे वारे चल्या गया था सू लेख पर कंवर साव का दसकत हुवा छे. सेठजी का दसकत हो जाता तो फेर वोलवा को कामही कांई थो ? आपही आप सारी वात निवेड़ता.

जगन्ना०—(हंसकर) जव सेठजी परवानगी दे चुके थे और कंवर साहव के दस्तखत होने पर सव वातें जान ली हैं तो उनके दस्तखत नहीं हुए तो क्या वे उस कार्यवाही के खिलाफ चल सकते हैं ? हरगिज नहीं ! और जिसमें श्रीकिस सेठ कौन, और रामरतन सेठ कौन ?

शिवना०–बाबू साब, थांने मालम नहीं. म्हां लोगां मांहे इयानही चाल्या करे छे! जात न्यात का रगड़ा छे. घणी वार यूं ठहराव होकर ओर दसकत होकर भी आगे आगे कित्ताही बदल गया छे. न्यांको क्यूं भी हुवो नहीं.

जगन्ना०–(हंसकर) फिर ऐसा क्यों नहीं कहते कि पंचायतफंचायत कुछ भी नहीं. जो वह अपने दिल का मुखतार है!

(इतना मांहे नारायणराव आवे छे.)

रामर०–(उठकर) आवो राव साब, भला बखत ऊपर पधार्‍या.

नाराय०–(हाथ उठाकर) जयगोपाल शेट साहेब! कसें काय, ठीक चाललें आहेना? (जयगोपाल सेठ साब, कियान काई, ठीक चल्यो छे ना?)

रामर०–आपकी कृपा सूं सारो ठीकही चाल रह्यो छे.

नाराय०–आज आमचे बाबू साहेब इकडे कोणीकडे? (आज म्हांका बाबू साब अठीने कठीने?)

रामर०–बाबू साब तो रोजीनाही आया करे छे. इणको तो घरही छे.

नाराय०–म्हटलें कांहीं कोठें मुकद्दमाबिकद्दमा तर नाहींना? वकिलास पाहिल्याबराबर मला तर बुवा कसेंसेंच होतें! वकीलीचा धंदा चागला व स्वतंत्र आहे तरी, ह्या धंद्याच्या योगानें देशाचें कोणत्याही प्रकारें चागलें झालें नाहीं. उलटें वाईटच झालें आहे. थोडेंसें कारण झालें कीं, चालला वकिलाच्या घरीं. तेथें गेल्यावर खरें खोट्याची निवड थोडीच असते? त्यांना तर कूळ आल्याबरोबर त्याच्या मनासारखें भाषण करून उत्तेजन देणें भाग पडतेंच. परंतु उत्तेजनापासून त्यांचा फायदा सेंकडा तीन होतो आणि कुळाचा सेंकडाचा सेंकडा जाऊन सत्याण्णव परदेशांत

जातात ! (वोल्यो कठे मुकद्दमोविकद्दमो तो छे नहींना ? वकीलने देख्या वरावर मने तो वावा, कियान को कियान होवे ! वकिली को धंधो आछो ओर स्वतंत्र छे तो भी इण धंधा सूं देश को क्यूं भी आछो हुवो नहीं. उल्टो वुरोही हुवो छे. थोडोसो कारण हुवो के चाल्यो वकील के घरां. उठे गया पीछे साच झूठ की निवेड़ थेडीज रह्या करे छे ? व्यांने तो गाहक आया वरावर उनका दिल माफक भाषण करने उत्तेजन देणो जरूर पड़ेही. परन्तु वीं उत्तेजन सूं व्यांको फायदो सैकड़े तीन होवे ओर गाहक को सैकड़ो को सैकड़ो जाकर सत्याण्णवे परदेस मांहे चल्या जावे !)

जगन्ना०—(हंसकर) राव साहव, आपका फरमाना वहुतही योग्य है. यह धंधाही ऐसा है कि " अल्वकील खरीते तूफान " याने वकील तूफान का थैला है ! सिवाय भिड़ाने छक्केपंजोंके काम भी तो नहीं चलता ?

(इतना मांहे मणिलाल आवे छे.)

मणिला०—जयगोपाल शेठियाओ ! शूं छक्कापंजा चाली रह्या छे ?

जगन्ना०—आइये सेठ साहव, कुछ भी नहीं. वकीलों के विषय में कुछ वातचीत हो रही है.

मणिला०—शूं वकीलो छक्कापंजा रमे छे ? जरा मुंवई जईने जोशो तो खवर थई जशे के वकीलो केवा होए छे. छक्कापंजा तो दूर—पूरी वात तो करताज नथी. केवा केवा देशहितना काममां ते लोको उतरेला छे.

नाराय०—हो हो, मणिलाल शेट, माहित आहे. फार झालें तर शेंकडा दोन किंवा तीन सांपडतील झालें ! इतक्यानें सर्व वकील देशहितैषी झाले काय ? (हो हो, मणिलाल सेठ, मालम छे. घणो हुवो तो सैकड़े दो अथवा तीन मिलसी हुवो ! इत्ता सूं सारा वकील देशको भलो करवाळा हुवा काई !)

जगन्ना०—जहां तहां लोग "देशहित देशहित" पुकार पुकार कहते हैं पर, देशहित का अर्थ भी तो उन्हें मालूम है या नहीं भगवान् जाने ! खाली "देशहित देशहित" पुकारने से कुछ नही होता राव साहब ! जो कुछ हो करके दिखलाना चाहिये.

रामर०—बाबू साब, थे बोलो सू बात ठीक छे. पण देशहित कियान कर दिखावे ? देशहित को थोड़ो घणो ग्यान अथवा दिल पर असर छे वे साराही बापड़ा धनहीन पड़्या. धनवाळा के देशहित की बात सपना मांहे पण नही. भलां, धनवाळा के पास कोई देशहितवाळो जावे तो धनवाळो साफ जबाब दे देवे के भाई, म्हांने थांका देशहित सूं कांई करणो छे ? म्हे म्हांका सुख सूं कमावां छां ओर मजा मारा छां. दूजा भूखा मरे तो म्हांने कांई ? म्हे सुख को जीव दुख मांहे क्यूं नाखां. इशा देशहित मांहे म्हांने कांई मिलणो छे ? जद बापड़ो देशहितवाळो कांई कर सके ?

नाराय०—शेटजी, तुह्मी ह्मणतां ह्या गोष्टी खऱ्या आहेत. परंतु गरीब कां असेनात असे देशहितैषी श्रीमंताच्या दारीं जाणारे तरी ह्या वेळेस पुष्कळ पाहिजे आहेत. निदान नौकरी पतकरून गुलामगिरी करण्यापेक्षां किंवा भिक्षा मागून पोट भरण्यापेक्षां देशहिताकरितां श्रीमंताच्या दारावर जाणें कांहीं वावगें नाहीं. केव्हां न केव्हां त्या श्रीमंताला वाटलें कीं, देशहित काय आहे, ह्याचा थोडा तरी अनुभव घ्यावा—इतका परिणाम झाला कीं बस आहे. (सेठजी, थे बोलो सूं बातां साची छे. पण गरीब क्यूं नहीं होवे इशा देशहितवाळा धनवाळाका दरवाजा पर जाबावाळा भी इण बखत घणा चाहिजे छे. निदान नौकरी कबूल करने गुलामगिरी करबा सूं अथवा भीख मांगकर पेट भरबा सूं देशहित के तांई धनवाळा का दरवाजा पर जाणो कुछ बुरो नहीं. कदे न कदे बीं धनवाळाने इच्छा होवे के देश हित कांई छे बींको थोड़ो तो भी अनुभव लेणो—इत्तो परिणाम हुवो के बस छे.)

मणिला०—राव साहेब, तमो बोलो छो ते ठीकज छे. पण एवा गरीव देशहितैषीए श्रीमंतोनां घेर फांफा मारीने खाववूं शूं? एनो कांई विचार?

नाराय०—त्याचा विचार हाच कीं त्यांणीं मारवाडी वनावें. (वींको विचार ओहीज के व्यांने मारवाड़ी वणणो.)

शिवना०—वाह राव साव, मारवाड़ी वणणो सोरोही जाण लियो कांई? मारवाड़ी वणणो वणो कठन छे. पहली तो थां लोगां का वोल सुणणा कठन, फेर लोगां की गाळ्यां सुणणी वीं सू भी कठन ओर मार खाणी सब सूही कठन छे! मारवाड़ी—लवाड़, धोखावाज, लुटेरा, मारवाड़ी शायलाक सू भी नीच—मारवाड़्यांने मारणो उत्तोही ठीक! इशी इशी वातां तो आजकाल हो रही छे. चाहो जीं जात का हो जाईजो पण, मारवाड़ी सपना मांहे भी मत होजो!

नाराय०—(हंसकर) शेट साहेब, तुम्ही म्हणतां ह्या गोष्टी अक्षरशः खऱ्या आहेत, परंतु निरक्षर मारवाड्याचा मुलगा जें मिळवितो तें ह्या वेळेस वी. ए., एम्. ए. मिळवूं शकत नाहीं! म्हणून मारवाडी वनलें पाहिजे. जवळच पहा, जेठमल नुकताच मारवाडाहून फक्त एक लोटा घेऊन आला होता तो दोन वर्षांत दहा हजारांचा धनी होऊन वसला आहे! शिवनारायणच्या वापास येऊन कांहीं पिढी लोटली नाहीं तोंच लक्षाधीश होऊन वसले आहेत! (सेठ साव, थे बोलो सू वातां आखर आखर खरी छे, पण निरक्षर मारवाड़ी को छोरो जो मिलावे छे उत्तो इण वखत वी. ए. एम्. ए. नहीं मिला सके! इण वास्ते मारवाड़ी वणणो चाहिजे. नजीकही देखो. जेठमल हाल मेंही मारवाड़ सू फकत एक लोटो लेकर आयो थो वो दो वरस मांहे दस हजार को मालक हो वैठ्यो छे. शिवनारायण का वापने आवा कुछ पीढ़ी हुई नही तो भी लखपती वण वैठ्यो छे!)

रामर०—भाई शिवनारायणजी, राव साब को कहवणो घणो ठीक छे. आपां लोग धन मांहे तो कमती छां नहीं. कमाबा की आपणा लोगां की उपजत अंगविद्या छे. पण अब दिनोंदिन इण विद्या को लोप होतो चल्यो. क्यूं कि आगला जमाना मांहे अठीने का लोग इत्ता हूंशार था नहीं. और तार आगगाड़ी बी वखत थी नहीं तिकासूं रुजगार मांहे गायलो घणो थो. मारवाड़ सू आतां पाण कमाई कमाई दीखती. पण अब बो समयो रह्यो नहीं. लोग सट्टाफाटका पर घणा उतर गया. सट्टाफाटका मांहे कमाई तो दूर सैकडो बरबाद हो गया! तो भी हाल कींकी आंख्या खुले कोनी. आसामीतासामी, करसाणकडूंबी का लेण देण मांहे भी कुछ दम रह्यो नहीं. सरकार दिन दिन कायदा सकत कर रही छे तिकासूं करसाण लोगां को बेपार भी डूबतो चाल्यो. गिरवीगांठा मांहे चोरी का माल को डर, आबरू जातां देर नहीं लागे. हुंडीचिट्ठी आड़त मांहे जोखम उठाणी पड़े. सराफी ब्याज बट्टा मांहे डूबबा को पूरो डर रव्हे. माल-ताल का लेवा बेचबा मांहे तेजी मंदी को डर छेही. (बीच मांहे)

शिवना०—तो भाई साब, फेर अब मारवाड़्यांने कुणसो बेपार करणो चाहिजे ?

रामर०—भाई, प्रथम तो विद्या सीखणी चाहिजे. (बीच मांहे)

शिवना०—जरां थांको बिचार अब मेरेठां की जियान आपणा लोग भी विद्या सीखकर गुलामगिरी धूंडता फिरे ?

रामर०—नोज ! गुलामगिरी को नांव क्यूं लेवो छो ? गुलामगिरी करबाळा रावसाब का भाईबन्द किशा थोड़ा छे ? थांके पांती आशी भी कठे सू ?

नाराय०—(हंसकर) यांत काय संशय आहे ? तिला तर आम्हींच पात्र आहोंत. तरी आतां मारवाडी मंडळीस साधारण इंग्रेजी भाषेचें ज्ञान होऊन स्त्रियां-सही शिक्षण मिळालें पाहिजे ह्मणजे गृहस्थितीची सुधारणा होऊन विशेष

कल्याण होईल. (इण मांहे कांई संशय छे ? वींने तो म्हेही पात्र छां. तो भी अब मारवाड़ी लोगांने साधारण अंग्रेजी भाषा को ज्ञान होकर लुगायांने भी शिक्षण मिलणो चाहिजे तिकासूं गृहस्थिति को सुधार होकर विशेष कल्याण होसी.)

शिवना०—नहीं राव साव, मारवाड़ी अभ्यास मांहे पड़्या के फेर व्यांसूं वेपार होणो नहीं ओर भिखारी वणकर फेर वोही नौकरी को रस्तो !

मणिला०—(हंसकर) शूं बोलो छो शिवनारायण शेठ ? जरा मुंबई तरफ तो जुवो. केवा केवा भणेला, जे अंग्रेजोने वात नहीं करवा दे एवा एवा कपोल वाणिया, भाटिया, लुवाणा, ओसवाळ वाणिया शेठियाओ मोटा मोटा वेपारी छे के जे लाखो रुपयानो वेपार करे छे ! जे भणे ते नोकरीने मोटेज के ? आ शी वात छे ? हमणा भणवूं तो जोइयेज. हवे भणिया विना कंईज काम चालवानूं नथी. मारवाडी लोको भणेला नथी तेथी तेमनो कंई मान नथी ने आदर नथी. आजकाल विद्याने मोटो मान छे. विद्यार्थी माणस घणो कमाई शके छे.

रामर०—इण माहे कांई झूठ छे मणिलाल भाई ? “ विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम् । पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनाद्धर्मं ततः सुखम् ॥”विद्या नरमाई देवे, नरमाई सूं योग्यताने पूगे, योग्यता सूं धर्म मिले, धन सूं धर्म मिलेओर पीछे सुख होवे. विद्या सीखणे सूं गर्व जातो रव्हे अर्थात् नरमाई के साथ सबसूं हिलमिल चालवा सूं अंग मांहे योग्यता आवे, योग्यता आई के धन की प्राप्ति होवाने फेर देर नहीं. ओर इशा न्याय, नीति ओर सन्मार्ग सूं मिलाया हुवा धन सूं धर्म की प्राप्ति होकर सुख को लाभ होवे. अर्थात “ किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या ” कल्पवृक्ष के समान विद्या कांई कांई नहीं देवे ?

नाराय०—आतां मारवाडी लोकांनीं आपल्या व्यापाराची दिशा वदलली पाहिजे. घरांतल्या घरांत मडके न फोडतां परदेशाकडे झुकलें पाहिजे.

आता परदेशीं व्यापार करण्याकरितां इंग्रेजीचें ज्ञान अवश्य पाहिजे आहे. करितां पुढील पिढीस इंग्रेजी वाचतां बोलतां येणें अवश्य आहे तितकें ज्ञान संपादन करून इंग्लंड, अमेरिका, फ्रान्स, जर्मनी आदि देशांशीं प्रथम ठिकठिकाणीं एजन्सी केल्या पाहिजेत. त्यांत म्हणजे मोठेसें भांडवल पाहिजे असें नाहीं. तेथून माल आणून इकडे विकावा आणि इकडील माल तेथें पाठवावा. ह्यांत म्हणजे देशाचा फायदा आहे असें मुळींच नाहीं. तथापि मारवाडी समाजास कांहीं वळण लागावें तेवढ्या पुरतेंच असें करून परदेशाशीं त्यांणीं दळणवळण पाडलें पाहिजे. आज मारवाडी समाज इंग्रजांच्या खालोखाल व्यापारी आहे. इंग्रज लोक शिक्षणाच्या योगानें कलाकुशलता पारंगत होऊन आपल्या देशांत नाना प्रकारचा माल तयार करितात आणि अन्य देशांत त्याची विक्री करून लक्षाधीश नव्हे कोट्याधीश बनून बसले आहेत! त्याचप्रमाणें मारवाडी मंडळीनें केलें पाहिजे. आपल्या देशांत हवा तितका कच्चा माल मिळतो. त्याचेच पदार्थ येथें तयार झाल्यास सध्यां देशांतच इतकी जरूर आहे कीं, असा माल परदेशांत पाठविण्यास कोण जाणे केव्हां वेळ येईल? ह्या योगानें मारवाडी मंडळीचा फार मोठा फायदा होऊन देशाचा उद्योग वाढेल आणि देश संपन्न होईल. (अब मारवाड़ी लोगांने आपका बेपार की रुख बदलणी पाहिजे. घर का घर मांहे ठीकरा नहीं फोड़कर परदेश कानी झुकणो चाहिजे. अब परदेस सूं बेपार करबा अंग्रेजी को ग्यान जरूर होणो चाहिजे. तिका सारू आगली पीढ़ीने अंग्रेजी बांचणो बोलणो आणो जरूर छे उतनो सीख कर इंग्लंड, अमेरिका, फ्रान्स, जरमनी आदि देसां सूं प्रथम ठिकठिकाणे आड़तां करणी चाहिजे. बीं मांहे बड़ीशी पूंजी चाहिजे इयान नहीं. उठे सूं माल मंगाकर अठीने बेचणो ओर अठी को माल उठो भेजणो; इण मांहे देश को फायदो छे इशी बात नहीं. तो भी मारवाड़ी समाजने कुछ रस्तो लागबाके तांईज इयान करने परदेश सूं पिछाण कर लेणी चाहिजे. आज मारवाड़ी समाज अंग्रेजां के नीचोनीच बेपारी छे. अंग्रेज लोग विद्या का जोर सूं

कलाकुशलता मांहे पूरा वणकर आपका देश मांहे तरह तरह को माल तैयार करे छे ओर दूजा देश मांहे वींकी विकरी करने लखपती नहीं करोड़पती वण वैठ्या छे! उसी मुजव मारवाड़ी लोगांने करणो चाहिजे. आपणा देस मांहे चाहिजे उत्तो कच्चो माल मिले छे. वींकीज चीजां अठे तैयार हुई तो हाल देश मांहेही इतनी जरूर छे के इशो माल परदेश मांहे भेजवाने कुण जाणे करा वखत आवे ? इण सूं मारवाड़ी लोगां को वड़ो फायदो होकर देश को उद्यम वध जासी ओर देश संपन्न होसी.)

शिवना०—राव साव, आप वोलो सू वात ठीक छे. पण इशा वेपारने पूंजी कित्ती चाहिजे ईंको भी क्यूं हिसाव छे ? वापड़ा मारवाड़ी आटा दाळ की दुकान करने पेट भरवाळा वे इशी हुनरधंधा की वातां मांहे कांई समझे ?

रामर०—भाई, इयान का विचार सूंही तो अपणा लोग सारी वातां गमा वैठ्या छे. विद्या विना लंबी चौड़ी आंख्यावाळो आदमी आंधो, लंबा चौड़ा कानवाळो वहरो ओर लंवा चौड़ा पेटवाळो विना हिरदा को हुवा करे छे. जठे तांई आपणा लोग पढ़कर शाणा होसी नहीं उठे तांई उणको घर, के संसार, के वेपार कदे सुधारवा को नहीं !

नाराय०—मघाशीं शिवनारायण शेट म्हणाले कीं, अशा व्यापारासाठीं भांडवल कोठून आणावें ? त्यास तुमच्या मंडळीजवळ भांडवलाची कमती आहे असें नाहीं. आसाम्यांच्या देवघेवींत, मालातालांत आणि सट्टाफाटक्यांत लाखों रुपयांचें नफानुकसान करतात आणि होईल तोंपवेतों घरचा तोड़ा तोड़ा विकूनही तोंडी सौद्याच्या नुकसानींतसुद्धां वेळेवर पैसे भरून आपली पत कायम ठेवतात. त्या लोकांस भांडवलाची कमती पडेल काय ? (अवार शिवनारायण शेट वोल्या था के इशा वेपार के तांई पूंजी कठे सू लाणी ? सू थां लोगां कने पूंजी की कमती छे इशी वात नहीं. आसामी का लेण देण मांहे, मालताल मांहे ओर सट्टाफाटका मांहे

लाखों रुपयां को नफो नुकसाण करे छे ओर हो सके जठे तांई घर को तोड़ो तोड़ो बेचकरही जबानी सौदा का नुकसाण मांहे पण बखतपर पैसा भरकर आपकी साख कायम राखे छे. त्यां लोगांने पूंजी की कमती पड़शी कांई ?)

शिवना०–पूंजी की कमती पड़े कोनी सू बात तो साची छे पण, राव साब, म्हांकी जात मांहे एको कोनी तिकासूं आपसको विसबास उठ गयो. ठिकाणे ठिकाणे फूट मच रही छे. मावाप बेटाबेटी मांहे लड़ाई, सासूसुसरा बेटीजवांई मांहे लड़ाई, भाईबहण मामाभाणजा मांहे लड़ाई, भाईभाई की बात तो पूछबा को कामही कांई–एक माके दो बेटा हुवा के बीं घर मांहे बैर को अवतार हुवो !

रामर०–भाई साब, विद्या नहीं तिकासूंही फूट मच रही छे. अबार लोग पढ्यागुण्या होवे तो उनको झट देश की दशा कानी लक्ष्य जाकर बन्धुभाव प्रकट होकर एकता हो जावे. जठे तांई आपणा लोग मूरख बण्या रहसी उठे तांई उनका घरां मांहे फूट दिन दिन ज्यादा बधती रहशी. दूर कायने–म्हांका काकाजी अणपढ़ था तिकासूं न्यारा हो गया. त्यांही फूट मचाई. भायाजी को तो न्यारा होबा को बिलकुल बिचार थो नहीं. काकाजी आज पढ्यालिख्या होता तो न्यारा क्यूं होता ? ओर न्यारा होकर भी पूंजी क्यूं गमाता ? ओ सारो आपणा लोगां की मूरखाई को परिणाम छे !

मणिला०–भाई साहेब, मुंबईमां शुं–आखी गुजरातमां जोवूं छूं के भणेला लोकोमां मुद्दल फूट नथी. मोटा मोटा माणसो, बे बे चार चार भाई प्रेमभावथी वरतीने पोतानो वेपार चलावे छे. ते लोकोए लाखो रुपयानां शेर काढीने घणी कापड़नी मिलो उघाडेली छे तेथी लाखो रुपयानी कमाणी करे छे. मारवाडी लोक पण पैसावाळा छे, ते आज जोइये ते करी शके पण ते एवी वातो मुद्दल समजताज नथी. तेनो शो उपाय ?

नाराय०–शेट साहेब, मनुष्य मात्रास सर्वांत मुख्य आवश्यकता अन्न आणि वस्त्राची असते. अन्न तर आम्हांस आमची भारत माता देते परंतु

वस्त्रसामग्री आम्हांस भारत माता विपुल देत असतांही आम्ही तिचें वस्त्र स्वत: तैयार न करितां पर देशांत कापुस पाठवून तेथून वस्त्रें तैयार होऊन आल्यावर त्यांस नफा देऊन त्या वस्त्रांनीं शरिरास झांकतो ! किती आश्च-र्याची आणि दु:खाची गोष्ट आहे कीं, एक दीड शतकापूर्वीं येथें कोट्या-वधि रुपयांचें कापड तैयार होऊन सर्वांस पुरून अन्य देशास जात होतें; तेथें आतां पस्तीस कोटींचें कापड परदेशांतून तैयार होऊन येत आहे ! आणि आपण कांहीं विचार न करितां मोठ्या हौसेनें विकत घेऊन आपल्या घामाचा पैसा परदेशांत पाठवित आहों—ह्याज पेक्षां आपल्या देशाची व आपली हीनदशा ती कोणती ? (सेठ साव, मनुष्य मात्रने सारा मांहे मुख्य जरूर अन्न ओर वस्त्र की रह्या करे छे. अन्न तो म्हांने म्हांकी भारत माता देवे छे पण वस्त्रसामग्री म्हांने भारत माता घणी देता छतां म्हे वींका कपड़ा खुद वणावा नहीं ओर परदेसने रुई भेज कर उठे सू कपड़ा तैयार हो कर आया पीछे व्यांने नफो देकर वीं कपड़ा सूं शरीर ढका छां ! कित्ती अचरज की ओर दु:ख की वात छे के, एक डोढ़ सैका के पहली अठे करोड़ों रुपया को कपड़ो तैयार होकर सारांने पूरकर दूजा देशने जातो थो; उठे अब पैंतीस करोड़ को कपड़ो परदेश सू वणकर आवे छे ! ओर आपां कुछ भी विचार नहीं करने वड़ी हौंस सूं मोल लेकर आपणा पसीना को पैसो परदेश भेज रह्या छां—इणसूं आपणा देश की ओर आपणी हीनदशा ओर किशी ?)

रामर०—राव साव, इण वातां को विचार आज म्हे घणा दिनां सू कर रह्यो छूं. म्हांका दुकान को वेपार ओर लोगां सू घणो सीधो तथा बेजोखमी जमीन जायदाद को छे. पैदास भी म्हांको खरच खातो जाकर आप लोगां की कृपा सूं मोकळी छे. काका साव न्यारा होकर पूंजी को आधो हिस्सो ले लीनो तो भी म्हांकी पूंजी तो फेर उत्ती के उत्ती हो गई. पण आपका कह्या परवाणे हाल इशो कोई देशोपकारी काम वण्यो नहीं. भायाजी कने एक दोवार म्हे एक कपड़ा की मिल करवा की वात

चलाई थी. पण उणका बिचार पुराणी तरह का छे तो भी वे म्हारी माने नहीं इशी बात नहीं. म्हे लोग विष्णुधर्मी अर्थात् सनातनधर्मी छां तथापि जैनधर्मी लोगां को सहवास म्हां लोगांने ज्यादा रह्यो. कारण म्हांकी जात मांहे तथा साड़ी बारा न्यात मांहे जैनधर्मी घणा छे, तिकासूं इशा कारखाना मांहे जीवहिंसा घणी होवे, ओ पाप को काम छे सू आपांने करणो वाजवी नहीं—इण तरह का उणका उद्गार नीसऱ्या. म्हे इण जीवहिंसा को ओर पाप को खंडन तो कर दीनो छे. अब ब्याव हुवा पीछे कुछ इण बातपर जोर देबा को बिचार छे.

जगन्ना०—(खुशी होकर) हां भाई साहब, आपने यह बहुतही अच्छा, शुभ और देशहित का काम बिचारा है इसमें कुछ भी शंका नहीं. इस वक्त हम लोगों को यही चाहिये कि—(१) जिससे भारत का कल्याण और उन्नति हो तनमनधन से वही काम करना चाहिये. (२) भारतवर्ष हमारा देश है इस लिये इसमें जो पदार्थ उत्पन्न हों उनकाही व्यवहार करना चाहिये. (३) हमारी भाषा भारती है इस लिये वही बोलनी चाहिये. (४) हम ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, हिन्दू, मुसलमान, पारसी, महाराष्ट्र, गुजराती ,बंगाली, मद्रासी, मारवाड़ी इत्यादि हैं ऐसा पृथक् परिचय न देके हम एकमात्र भारतीय हैं ऐसा परिचय देना चाहिये. (५) और हम अक्षय्य भारत धर्मावलंबी हैं ऐसा सबको प्रदर्शित करना चाहिये— ऐसी प्रतिज्ञाओं से जिस दिन हम लोग भारत धर्मावलंबी होंगे उसी दिन हमारा दु:ख दरिद्र दूर हो जायगा.

रामर०—बाबू साब, आ इशी प्रतिज्ञा म्हां लोगां की जीं दिन हो जाशी, फेर बापड़ी फूट को कांई चालशी ओर बा देश मांहे रहशी भी क्यूं ? इण बातांने हाल घणी देर छे. थांका म्हांका जमाना मांहे तो इशी बातां होबा सू रही !

नाराय०—शेट साहेब, मुख्य तत्व इतकेंच आहे की, आम्ही सर्व भारतवासी एक भारत मातेचें संतान आहों असें परस्पर समजून प्रेमभावानें

एकमेकांचा आदर करून वागलें पाहिजे. (सेठ साव, मुख्य तत्व इतनोंही छे के, आपां सारा भारतवासी एक भारत माता की संतान छां इयान एक-मेक जाणकर प्रेमभाव सूं ऐकमेक को आदर करने चालणो चाहिजे.)

शिवना०—राव साव, थे क्यूं भी बोलो, ये इशी वातां मारवाड्यां का नसीवा मांहे कोनी, कोनी, कोनी !

मणिला०—भाई तमो शूं कहेवो छो ? ईश्वरनी लीलानो कोईने पण पार आव्यो छे ? जे थवानूं होय ते न थाय अने स्वप्नमां पण जे थवानूं न होय ते एकदम थई जाय !

नाराय०—यांत काय संशय आहे ? चला, शेट साहेब, फार वेळ झाला. आतां परवानगी असावी. (इण मांहे कांई संशय छे ? चालो, सेठ साव, घणो वखत हुवो. अब परवानगी होवे.) (जावे छे.)

मणिला०—हूं पण जावूं छूं शेठ साहेब. (जावे छे.

रामर०—चालो भाई शिवनारायणजी, वावू साव, वारे फिरवाने चालां.

(सारा जावे छे.)

प्रवेश चौथो.

ठिकाणो—व्रजलालजी का वगीचा मांहेलो वंगलो.

(अमरसिंग आवे छे.)

अमर०—(चार्‍यां कानी देखकर मन मांहे) आज चार वजे जलसा था. पांच वज गये, अभी कोई नहीं आया. क्या वक्त में कुछ फेरबदल तो नहीं हो गया ? खैर, अभी कोई न कोई आताही होगा—मालूम हो जायगा. अफसोस ! अफसोस !! क्या करना चाहिये ? कुछभी अक्ल काम नहीं

देती ! आंखोंके सामने हजारों रुपया लुट रहे हैं ! एक कमअक्ल मारवाड़ी का लौंडा हजारों रुपया लूट रहा है ? ईश्वर जाने, क्या उसने भुरकी डाली है—सेठ को दिवाना बना रक्खा है ! सिवाय उसके सेठको और कुछ भी नजर नहीं आता. हसनखां और करीमोद्दीनने भी खूबही हाथ मारा है और मार रहे हैं. नये बंगले का काम सभी इनके हाथ से हो रहा है. पर भाई, लानत है गंगाबिसन को कि हमजात होकर सेठ को बुरे कामों में फंसाके अपना फायदा उठाना ! यह आदमी इतना हलका और नीच है कि बेचारी सेठानी को भी तकलीफ पहुंचाता है. इतना गुस्सा आता है कि इस हरामपिल्ले का क्या करना और न करना ? सेठ को दो तीन आदमियों के हाथ कहलाया गया लेकिन् वह तो इस वक्त बिलकुल अंधा हो रहा है—क्या किया जाय—हमारी तो अक्ल इस वक्त हैरान है ! जिधर उधरसे लोग नोंच रहे हैं. किसी को क्या कहें ? हाय ! निहायत अफसोस होता है कि एक नामी गिरामी साहूकार मिट्टी में मिल रहा है ! भाई, हमें चाहे कुछ मिले न मिले—हर तरह इस नामी खानदान को बचाना चाहिये. कितना इसका बाप उदार था—हजारों का दानधर्म कर गया है. अभी इसका बड़ा भाई क्या कम है ? कितना सीधासादा और परोपकारी बनिया है—कुछ कहा नहीं जाता ! कुछ भी हो—ऐसी अवस्था में सेठ की सहायताही करना योग्य है; बल्कि कर्त्तव्य है—क्यों कि बापदादोंसे इनका संबंध है. (विचार करने) ठीक है, ऐसाही करना होगा तभी यह काम बनेगा. (दूर सूं हसनखांने आतो देखकर) यह एक पाजी आ रहा है. इसीने सेठ के गले में रंडी का जाल डाला है. आज उसी ग्वालियरवाली रंडी का जलसा है. मुझे अब बड़ा रंज होता है कि इस हरामजादे के दम में आकर सेठ को इसका जलसा कराने के लिये मैंनेही कहा था. खैर क्या हरकत है देखा जायगा.

(इतना मांहे हसनखां आवे छे.)

हसन०—बंदगी सिंघजी साहब, आज तो आपने बहुतही जल्द तशरीफ फर्मा दी ? अभी जलसे को तो बहुत देर है.

अमर०–(अचरज सूं) क्यों भला ? मैंने तो सुना था कि पांच वजे होगा.

हसन०–(हंसकर) कहीं भला, गाने की वैठक पांच वजे हुआ करती है ? सेठजी खाना खाकर कहीं आठ वजे आवेंगे. वाद गाना शुरू होगा.

अमर०–अच्छा भाई, हमें क्या–किसी वक्त क्यों न हो. चलो, फिर हम भी मकान हो आवें.

हसन०–(हाथ पकड़कर) नहीं नहीं, ऐसा कहीं हो सकता है ? अव मकान को जाकर आने में रात के दस वज जावेंगे. शायद फिर आना भी न हो. वस, अव आप यहीं तशरीफ रक्खें. आपके खाने पीने का वन्दोवस्त हो जायगा. मुन्नाजान भी आनेही में है. भला आपके वगैर जलसे में कभी लुत्फ आ सकता है ?

अमर०–जहा आप और करीमोद्दीन जैसे रुक्न मौजूद हैं वहां मेरे जैसे अद्धा आदमी की क्या जरूरत है ?

हसन०–(हंसकर) वस भाई, क्यों तानें मार रहे हो ? जरा दम तो रखिये.

अमर०–(मन मांहे) वेटे, दम क्या रक्खूं वहुत वुरा नतीजा होगा. (वड़ा सूं) वाह भाई खूव ! दम रखवाते रखवाते कहीं दम न निकल जाय ?

(इतना मांहे करीमोद्दीन आवे छे.)

करीमो०–अलेकम सलाम, वन्दगी, किसका दम न निकल जाय ?

अमर०–इस गरीव नाचीज का–और किसका ?

करीमो०–क्यों भला ?

अमर०–खां साहव को मालूम, मैं तो कुछ नहीं जानता !

करीमो०–कहिये विरादर ! क्या मामिला है ?

हसन०–कुछ भी नहीं यार ! सिंवजी खाली मजाक कर रहे हैं.

अमर०–कहीं मजाक मजाक में ही " दम " खतम न कर दीजियेगा.

हसन०–(करीमोद्दीन का कान मांहे) यों यों–अब तो समझे ?

करीमो०–(हंसकर) उसका क्या ? सिंघजी का अपना एकही विचार है. उनसे कोई जुदागी नहीं है. फिर घबराने का क्या सबब है ?

अमर०–वाह भाई, आप तो खा पीकर खूब डकारें देते रहो. मैं भूखा–खानेसे गया तो क्या कहनेसे भी गया ?

करीमो०–" नोश बिल्ला मिनहा" खानेसे क्यों गये ? आइये दस्तर-खान बिछा हुआ है. चलिये ! " बिस्मिल्ला"

(इतना मांहे मुन्नाजान, महबूब बीबी, तबलची, सारंगीवाळो ओर पेटीवाळो आवे छे.)

मुन्ना०–(हाथ उठाकर) बंदगी !

हसन०–(आगे होकर) आइये, आइये बन्दगी ! हुजूर, कितने बजे ?

मुन्ना०–(हंसकर) कितने भी बजे हों. अभी सेठ साहब तो तशरीफ लायेही नहीं. हम तो हमारे वक्त पर मौजूद हैं. बस !

अमर०–(हंसकर) अच्छा, इन छोटी बीबी का क्या नाम है ? इन्होंने तो किसीको सलाम नहीं किया और न मिजाजपुरसी की !

मुन्ना०–इनका नाम " महबूब बीबी" है. अभी जरा शरमाती हैं.

(इतना मांहे ब्रजलालजी तथा गंगाविसनजी आवे छे. सारा खड़ा होकर सलाम, वंदगी, रामराम करने आप आप की जगां बैठे छे.)

गंगाबि०–(खुशी होकर) वाह सेठ साब, आज तो खूब रोसनी हुई छे. आप तो कहता था के बीजळी की रोसनी किसी बाग में होवे छे काई ? फेर आ कियान हुई ?

ब्रजला०–भाई साब, आ बीजळी की काई खुद आपही की रोसनी छे ! ओर बीजळी भी खुद आपके सामने बिराज रही छे !

गंगाबि०–हां सेठ साब, इण मांहे कांई शक छे ! (हसनखांने) जमादार, अब काई देर छे ?

हसन०—हुजूर, अव कुछ देर नहीं है. सव तैयारी है.

गंगावि०—(मुन्नाजानने) ई छोकरी को नांव कांई छे ? ईंने भी गाणो-वीणो सिखायो छे के नहीं ?

मुन्ना०—(अदव सूं) जी हां, इसका नाम "महवूव" है. कुछ गाती भी है. लेकिन् अभी नादान है.

गंगावि०—(हंसकर) नादान छे ? नादान काय की, पंधरा सोळा वरस की तो होशी ?

मुन्ना०—हां सेठ साहव, अभी इसको पंधरहवां वरस लगा है.

हसन०—अव क्या देर है ? चलने दीजिये. सव लोग आपकी तान-सुनने के लिये मुन्तजिर हैं.

मुन्ना०—जी हां—(तवलो,सारंगी ओर पेटी का सुर मिलावे छे.)

पद.

कर जोड़ नमूं प्रभुजीने । सकलधाम सुखधाम दयामूर्त्तीने ॥ धृ० ॥
जो कारण सव भव सृष्टी को । कोई अंत नहीं पायो जींको ॥
"नहि नहि" वेद पुकार हुवो फीको । भक्तपाल, कृपाळ प्रभु
ध्यावूं नित वींने । ध्यावूं नित वींने । कर जोड़ नमूं० ॥

गंगावि०—(अचरज सूं) शावास, शावास ! काई थे मारवाड़ी गा जाणो छो ?

मुन्ना०—(सलाम करने) जी सरकार ! हम लोग खास जयपुरके रहने वाले हैं. वड़े महाराजा साहव के वक्त में जयपुर से हम लोग ग्वालियर वुलाये गये थे. उन नेकनाम सरकार के वक्त में हमको वहुत कुछ मिला है. हम उनके नमकख्वार हैं, लेकिन् अव जमाना वदल गया इस लिये आप जैसे सरदारों की ताजीम उठाना पड़ी !

ब्रजला०—(हंस कर) 'उठाना पड़ी' तो कांई हरकत छे, म्हे किशा ब्यां सूं कमती छां ?

मुन्ना०—(हाथ जोड़कर) " नोझ बिल्ला " सरकार ! आप लोगोंने तो ऐसे ऐसे काम किये हैं कि जो बड़े बड़े राजा महाराजा भी नहीं कर सकते, बल्कि राजा महाराजा आप लोगों के कर्जदार हैं ! आप साहूकार हैं. आपकी बराबरी कौन कर सकता है ? आप लोग बात की बात में लाखों पैदा करते हैं और खो भी देते हैं !

हसन०—इसमें क्या शक है ? परसों हमारे सेठ साहबने पचीस तीस हजार रुपये बात की बात में कमा लिये ! खर्च भी तो हजारों का है. कौनसा दिन खाली जाता है कि दस पांच मेहमान आये गये नहीं.

अमर०—(मन मांहे) देखो, बेटा कैसा जाल फैला रहा है ? याद रखना बचाजी, आपही फसेंगे.

मुन्ना०—(नरमाई सूं) इसी लिये मैं भी बहुत रोज से सेठ साहब की खिदमत में हाजिर होने का कमाल शौक रखती थी. (गावे छे.)

पद.

कवि छे अंतर ग्यानी, छे अंतर ग्यानी, जगमें कवि० ॥ ध्रु० ॥
सूरज को रथ भेद बसे, परलोक गती जिन जानी ॥
लेवे जाण सकल का दिल की, कोई बात नहीं छांनी ॥
इणको अचरज कांई आयो, चित्त लगावो म्हांके कानी ॥

करीमो०—आफरीं, आफरीं ! क्या बात है !

गंगाबि०—वाह भाई करीमोदीन, समझे न समझावे तोभी कर दी तारीफ ! मुसलमान की जातने खुदा को बरदानही हुवा करे छे !

करीमो०—तो क्या मारवाड़ी बोली हम समझ सकते नहीं ?

गंगावि०—समझो छो तो बतावो भलां ईंको काई अरथ छे सू ?

व्रजला०—जावा द्यो भाई, सुणो ! थे तो बीच मांहे बोलकर मजो गमा द्यो !

मुन्ना०—(गावे छे.)—

> **शोभा इण वगिचा की, सुंदर किशि छे झांकी ॥ ध्रु० ॥**
> **कोयल बोले मधुर किशी, भंवरा गूंजे छे भारी ॥**
> **आम किशा फूल्या ? फूलां की वलिहारी ॥ शोभा० ॥**

गंगावि०—(खुशी होकर) वाह्जी वाह ! चीज तो खूब गाई ? देखो काई छो भाई साव, आपही का बगीचा की तारीफ हो रही छे.

हसन०—इसमें क्या शक है ? वागीचा आजकल वैसाही बन गया है.

मुन्ना०—(गावे छे.)—

साकी.

> **मीठी बोली, गीत, नजारा, युवती जन की लीला ॥**
> **देख जगत में कुण नहिं मोहे, सुंदर छैलछबीला ॥**
> **तिरया छे भारी । मद्माती प्रेमपियारी ॥**

व्रजला०—(घणा खुशी होकर) वाह मुन्नाजी, वलिहारी छे आपकी ! (हसनखांने) जमादार, आज वड़ो काम कीनो के थे इशा गुणी आदमी सूं मुलाकात कराई.

हसन०—(फूलकर) नहीं सेठ साहव, मैंने क्या काम किया—मैं तो आपका तावेदारही हूं. आपकी सखावत व नामवरी की वदौलत ऐसे गुन-वान् लोग खुद्बखुद आपके पास चले आते हैं.

अमर०—(मन मांहे) क्या वेटे की तक्दीर है कि सेठ भी इस बद्माश परही फिदा है ! देखा जावेगा.

गंगाबि०—अब कोई मारवाड़ी मांहे गजल होवे तो सुणावो देखां—

मुन्ना०—जो हुक्म ! (गावे छे)

गजल.

छे कुण जग में जो नहिं मोहे देख नजारा, प्यारा प्यारा—देख नजारा॥ध्रु.॥
प्यारा रस सूं खूब भऱ्या सबने लागे मीठा सारा—प्यारा, प्यारा॥
पंच हत्यारी सस्तरधारी मोह गया बिच पलकारा—प्यारा, प्यारा॥
बड़ा बड़ा मुनि भी भूल्या जो था दुनिया सूं न्यारा—प्यारा, प्यारा॥
ब्रह्मा, विष्णु, शंकर मोह्या जो था उनका सरजन हारा—प्यारा, प्यारा॥
तिरया सम मोहिनी कुण छे जिण सूं जग सब हारा—प्यारा, प्यारा॥

अमर०—वाह साहब वाह ! कमाल की. औरत की जात ऐसीही परमेश्वरने बनाई है. उनको कोई नहीं जीत सकता. लेकिनू ऐसी बहादुर औरतें भी प्रेम के जाल में ऐसी जा फँसती है कि फिर उनका कुछ भी चारा नहीं चलता. परमेश्वरने स्त्रीपुरुष का ऐसाही संजोग बनाया है.

करीमो०—यूसफ झुलेखां, लैला मजनू, अबुलहसन शमशुल्निहार, ताजुल्मुल्क बकावली वगैरह कैसे कैसे आशक माशुक दुनियामें हो गये हैं जिनका बयान नहीं हो सकता. इश्क ऐसीही चीज है.

ब्रजला०—(मोहमें आयकर) बस, अब एक खूब आनन्द की चीज सुणा द्यो—

मुन्ना०—जो हुक्म—

पद.

बो आनन्द। बींको छन्द। बो मुखचन्द। देख हुवो दिल गैलो॥
हिरदो कुन्द हुयो। आंख्या धुन्ध हुई सुण लो॥
बींको रंग। नाजुक अंग। निरखने दंग। हुवो म्हे गुंग॥
उणको संग किया मिलसी। होसी जीव खुसी जद मिलसी॥
आसी जासी। कने बेठेसी। दिल अपणो देसी। जद कुछ सूझ पड़ेलो॥

गंगावि०–(घड़ी देखकर) वस भाई वस, वारा वजवाने आया. इशो गाणो तो म्हे आज ताई कठेही सुण्यो नहीं.

व्रजला०–भाई गंगाविसनजी, अव एक चीज अकेली छोटी वीवी कने सूं गवावो. देखां किशी गावे छे ?

गंगावि०–(मुन्ना जानने) सुण्यो, सेठ साव काई कह रह्या छे ?

मुन्ना०–(सलाम करने) जी हां ! (छोकरीने) अच्छा वीवी, सेठ साहव का इर्शाद है तो तुम भी एकाध चीज सुना दो.

महवू०–(गावे छे.)

इस दुनिया की वलिहारी, वलिहारी ॥ ध्रु० ॥

झूठ कपट नित करके सुख की वात विचारी ॥ वलिहारी ॥
खोया धन माल खजाना दुनिया सव हारी ॥ वलिहारी ॥
आखिर काम नहीं आये तिरया सुत हितकारी ॥ वलिहारी ॥
दोही वातें संग चलेगी भली बुरी जो कर डारी ॥ वलिहारी ॥

व्रजला०–(खुशी होकर) जीती रहो ! खूव सुणाई !

अमर०–वाहजी वाह ! महवूव वीवी, आपका शुक्र है. इस वक्त कैसी अच्छी वात सुनाई है. वेशक भली और बुरी वात के सिवाय आदमी के साथ कुछ भी नहीं जाता. हरएक शख्स को चाहिये कि इसको खूव अच्छी तरह समझ ले और इस पर वारवार विचार करता रहे.

व्रजला०–(पांचसो रुपया की नोट खीसा मांहे सू. काढ़कर)लेवो वीवी जान, लेवो !

मुन्ना०–(छोकरी को हाथ पकड़कर) क्या कर रहे हैं सेठ साहव ? नहीं नहीं, हरगिज नहीं ! आपकी जूत्यों की तुफैल से इस कमतरीन् नाचॉ-ज के यहां किसी वात की कमती नहीं है.

गंगाबि०—कांई हुवो कमती नहीं छे तो ? नहीं लेणो कांई ? फेर ओ गाबा को धन्धो छोड़ देणो थो. म्हां लोगांके पास लाखों कांई करोड़ों को धन होकर भी अबार म्हांने कोई बेपार मांहे क्यूं नफो मिले तो म्हे लेवां कोनी कांई ? धंधा के ओर कमती नहीं के कांई निसबत ?

मुन्ना०—आपका फरमाना बजा है. लेकिन् मैं अपने अजीज, करमफर्मा और रफीक साहबान् से कभी कुछ नहीं लिया करती हूं. आप जैसे साहूकारों ही से मेरी परवर्श होती है—मगर नहीं, अभी इस गुलाम के नजदीक वहुत कुछ है ! रहने दीजिये यह मेरी अमानत आपही के नजदीक !

ब्रजला०—(हंसकर) नहीं बावा, कींकी अमानत रखकर कुण करजदार बणे ? जीं बखत को जीं बखत निकाळ.

अमर०—(मन मांहे) हसनखां, तेरी भी कमाल है ! क्या फितूर जमाया है ? रंडी की जात और पैसा न ले ? एक रुपये के लिये आदमी की जान लेनेवाली रंडी कहीं पांचसो की नोट लेने के लिये इन्कार कर दे ? सेठ को फंदे में डालने के लिये क्या तरकीब बनाई है ? लालच में आके बनिया झट अपना गला फंसा देता है. वैसीही यह बात हो रही है. अफसोस ! अफसोस ! !

गंगाबि०—(ब्रजलालजी का कान मांहे) ठीक छे तो रहबा द्यो. हाल किशी आ जावे छे. कोई मिस सूं पुगा देशां.

ब्रजला०—(मन मांहे) रंडी छे तो ईमानदार. कुछ भी लीनो नहीं ! छे भी दोस्ती के लायक. छोटी बीबी हाथ आ जावे तो बड़ी मजा होवो करे. रंग, रूप ओर कंठ भी घणा चोखा छे.

मुन्ना०—(तैयार होकर) सेठ साहब, अब इजाजत हो.

ब्रजला०—हसन खां, सारांने पानसुपारी, अतरगुलाब, हारतुरा देवो.

हसन०—(हाथ जोड़कर) जी हुजूर ! (सारांने देवे छे.)

मुन्ना०—आदाव, वंदगी, तस्लीमात !

(दोन्यूं मावेटी, तवलची, सारंगीवाळो ओर पेटीवाळो जावे छे.)

ब्रजला०—चालो भाई, गंगाविसनजी ! रात घणी हो गई—घर मांहे जाता पाण कुरकुर करशी. आपणी लुगायां का बोलवा को क्यूं ठिकाणो थोड़ोही छे ?

गंगावि०—सेठ साव, वड़ा लोगां की लुगायां लाड़की हुवा करे छे. वे धणीने कुछ माल समझे नहीं ! म्हांके अठे देखां भलां, वात तो कर ल्यो?

(सारा जावे छे.)

प्रवेश पांचवो

ठिकाणो—ब्रजलालजी को घर.

(सफेद साड़ी पहरी हुई राधा वाई आवे छे.)

राधा०—(सामने सत्यनारायण की तसवीर रखकर हाथ जोड़ने) हे सतनारायण स्वामी, तू अंतरजामी छे. जगत को सरजन हार छे. सारांने सुमत कुमत देणेवाळो तूही एक छे. आज घणा कष्ट सूं, दु:ख सू ओर त्रास सूं साक्षात् थारो रूप धणी छतां तने शरण आई छूं ! अंतर की जाणणेवाळो तूही एक छे. (तसवीर के सामने पड़कर) हे त्रिलोकी का नाथ ! फेर वता दे भलां, म्हे कदेही धणी विना ओर कींको स्मरण, ध्यान, कीर्त्तन, दर्शन, अर्चन, वंदन ओर पादसेवन कीनो छे कांई ? (वैठकर) हे नाथ ! कांई म्हे आगले भव पाप कीना था जींका फळ भोग रही छूं ! कांई म्हे कोई सती की दुरशीस लीनी थी सू आज म्हे धणी का दुख सूं दुखी छूं ! हे नाथ ! कोई का मावाप धन देख आपकी वेटीने नादान के साथ परणा देवे, कोई मावाप धन का लालच सूं आपकी वेटी वूढ़ा के साथ परणा देवे—इशी तो म्हारा मावाप म्हारे मांहे कीनी नहीं. वर ओर घर घणो आछो बरावरी को देखकर मने परणाई. पण, करम का लेख कुण मेट सके ? पंधरा वीस लाख को धन लेकर न्यारा हुवोड़ा धणी की घिराणी

आज इयान बिलखती फिरे—ये कांई आगला जनम का ओछा पाप छे ? लाल जिशो—कुण जाणे कींका पुन्नपरताप सूं—छोरो छे बींका भी लाड़ कोड़ होवे कोनी ! (तसबीर पर माथो रखकर) हे नाथ ! तूही जाणे—कुण कांई भुरकी नाखी छे सू रातादिन बगीचोंही सूझ रह्यो छे ! आजकाल दुकान पर भी घणासा बैठे कोनी. पहली भलां, सौदासूत मांहे हजारों गमाता तो भी आप का धंधा मांहे लग्या हुवा तो दुकान पर बैठ्या रहता ओर बखत की बखत घरां आ जाता. पण आजकाल तो दो दो, चार चार दिन घरां आवे कोनी. रसोई भी बगीचा मांहे करावे छे. दुकान का मालक तो अब गणेशरामजी तथा गंगाबिसनजी छे. ध्यान मांहे आवे सू खावो, पीवो ओर मोज करो. (आंख्या भरकर) म्हे पड़ी लुगाई की जात, अब करूं तो भी कांई ? हे नारायण ! अब म्हारो घर ओर आबरू कियान बंचसी ? धनदोलत तो चूला मांहे जावो पण, अब धणी का दरसण बिना म्हे कियान जीवूं ? आजकाल तो कोई रांड राखी बतावे छे. बींके तांई ओर बंगला के तांई सामान लेबाने मुंबाई गया छे. हजारों रुपया बरबाद करने चल्या आसी ! कांई म्हारा नसीब का चक्कर छे, राम जाणे ! लुगाई को जमारो घणोही बुरो छे. धणी बिना कुछ भी नहीं. चाव्हे जित्तो धन हो, गहणोगांठो हो, कपड़ोलत्तो हो, नोकर चाकर हो, रेसम की डोरां झूलो पण धणी बिना कुछ भी नहीं ! पण, मने तो राजा जिशो धणी मिलकर भी सुख नहीं ! सार बात धणी किशोही गहलो, बावळो, नादान, पढ्यो, लिख्यो, शाणो, बूढो, निर्धन, धनवाळो हो, बींको आपकी लुगाई पर साचो प्रेम चाहिजे. धणी का प्रेम बिना लुगाईने सुख नहीं. धणीने म्हे जियान देव माना छां बियान धणीने भी म्हांने देवता मानणी चाहिजे. कुछ भी हो ओर क्यूं भी हो, म्हांका नसीबा मांहे धणी को प्रेम नहीं लिख्यो छे तो म्हांने कठे सू मिलसी ? तो भी हे नाथ ! म्हां लुगायां को फरज छे सू तो म्हांने करणो ही चाहिजे. (याद आकर) देखां भलां, गुलाबचन्दजी रोकड्याने बुलायो

थो. दुकान की खवर तो पूछूं ओर अमरसिंगने भी बुलायो थो के वगीचा की भी खवर मालम होवे. पण हाल तांई कोई आया नहीं. (पूजा करे छे.)

(इतना मांहे गुलावचन्दजी आवे छे.)

गुलाव०—सेठाणीजी, कांई हुकम छे वोलो ! (मन मांहे) किशी वापड़ी लुगाई सती मिली छे ? ईंकोही सत काम आसी ओर तो क्यूं भी नहीं ?

राधा०—हुकम विकम कुछ भी नहीं. भाई, थे म्हारा धरम का भाई छो. इण वखत क्यूं भी तजवीज करने वडेरां को नांव कायम राखशो तो ठीक छे. नहीं तो मने तो ओ रासो डूवतो दीसे छे.(आंख्या भर लावे छे.)

गुलाव०—नोज ! सेठाणीजी, इशी कांई वात करो छो ? आज तो लाखों रुपया को कारखानो छे. ओर आपके सिरपर हाल बड़ा सेठ सेठाणी मायत वरकरार छे—फेर थे इयान फिकर करो ?

राधा०—नहीं भाई गुलावचन्दजी, वे मायत तो सिरपर छेही. पण न्यारा घरां का न्यारा वारणा ! तो भी विचारा धणीही खटपट कर रह्या छे के थांका सेठ की आ वुरी सोवत छूटकर कुछ अकल ठिकाणे आवे. म्हारा मोटा भाग छे के मने इशा जेठ जिठाणी मिल्या छे. पण कांई दिनदसा को फेर आ पड़यो के—कित्ती म्हे समझाती तो पण माद्या भायां का दम मांहे आकर झट घर छोड़ न्यारा हो गया ! आज भेळे होता तो कींकी मगदूर थी के म्हारा धणीने कोई गहलो वणा देतो? पण, भाई, अब भी तो मने जो वातां होवे सू साची साची वता देवो. म्हे थांका गुण भूलूंली नहीं.

गुलाव०—नहीं सेठाणीजी, म्हारा गुण कांई—म्हे तो आपको तावेदार छूं. जो हुकम फरमाशो वजावा तैयार छूं.

राधा०—तो न्यारा हुवा पीछे थांका सेठ क्यूं कमायो के गमायो ?

गुलाव०—कमावा गमावा की पूरी कांई मालम पड़े—तो भी म्हारी जाण माहे तो गमायोही छे. सौदासूत मांहे नफो रव्हे तो गंगाविसनजी ओर मुनीमजी को ओर नुकसाण लागे तो सेठजी को !

राधा०—जरां, ये इशी वातां व्यांने मालम होवे कोनी कांई ?

गुलाब०—मालम तो म्हे घणीही करा दिया करां छां पण, सेठजी तो इण बखत साफ आंधा हो रह्या छे! उठे उपाय कींको ?

राधा०—तो मुनीमजी ओर गंगाबिसनजी खूब आपको घर कर लियो होसी ?

गुलाब०—इण मांहे कांई शक छे. सूना खेत तो ढोरही चरे !

राधा०—(हाथ जोड़कर) हे म्हारा प्रभु ! सतनारायण बाबा ! अब थारोही सरणो छे. अब तूंही सुमत देशी बीं दीन सारी बात सुधरशी.

गुलाब०—सेठाणीजी, आप शाणा समझदार होकर यूं कांई घबरावो ? (मन मांहे) इशो साचो प्यार राखवाळी सती लुगाईने छोड़कर सेठजी एक सड़ी नीच जात की रांड का फंद मांहे पड़ रह्या छे—**राम ! राम !**

राधा०—भाई गुलाब चन्दजी, घबरावूं कांई ओर नहीं कांई—

कागा ! सब तन खाइयो, चुग चुग सारो मांस ।
दो नयना मत खाइयो, पिया मिलन की आस ॥

(आंसू नाखकर) कुणशी बखत मुम्बाई गया छे, तीन तीनसो प्लेग का केस रोजीना हो रह्या छे ! ओ म्हारो जीव काय में घालूं ओर काय में नहीं ? धनदोलतने अंगार लागो—एक बार सारी जठी की उठीने बिळे लाग जाय तो भी सुख हो जावे. फेर यूं बागबगीचे के नीच लोगां के साथ तो कठे फिरता कोनी फिरे !

गुलाब०—सेठाणीजी, धीरज राखो "धीरज मोटी बात छे"करने गुजराती कहवत छे. पूंजी बिळे लाग्या बिना सेठजी की आंख्या पण खुलबा की नहीं ! कोई कित्ताही उपाय करो पण कुछ चालसी नहीं ! म्हांको जीव कांई थोड़ो बळे छे ? सतनारायण भगवान् साक्षी छे—कोई कोई दिन फिकर मांहे रोटी आछी लागे नहीं. देखती आंख्या, धोळे दिन लोग लूट रह्या छे, पण जोर कांई ? (मन मांहे) इशी सती लुगाई का पुन्न सूंही क्यूं आडी आवे तो आवो नहीं तो चार छे महीना मांहे काम पूरो छे !

राधा०—आज काल सौदासूत मांहे नफो नुकसाण कियान कांई छे?

गुलाव०—अव पूनम पर भाव कट्या मालम होसी. पण नुकसाण घणोही छे. दिसावरां का दो तीन लाख रुपया देणा हो गया छे. भाव ठीक ठीक कट गया जरां तो आसरे दो लाख को नुकसाण छे. ओर भावो भाव भाव कट्या तो फेर पूरा चार लाख जासी? श्रीजी करसी सू खरी!

राधा०—मुंवाई जाती वखत कित्तीक रकम ले गया छे?

गुलाव०—कांई वतावूं सेठाणीजी, ले जाता तो घणीही. एक लाख सूं कांई कमी ले जाता.? पण अव लाख लखेरांके अठे रह गई! तिकासूं मांड मांड तो भी पच्चीस हजार ले गया छे! साथ गंगाविसनजी छे. सेठ साव तो पांचपचास हजार खो आसी पण वो तो पांचसात हजार की पोटळी वांधकर घरां लाशी! सेठजीने खुलंखुल्ला मालम छे के गंगाविसन हर चीज मांहे खावे छे. पण, राम जाणे! कांई भुरकी नाखी छे, सू सेठजी कुछ भी वोल सके नहीं.

राधा०—भाई, म्हारा करम के आडो पानड़ो छे—वो कियान वोलवा दे? जावो परो जाणो छे सू सारोंही चल्यो जावो! वे सुखसाता सूं पीछा घरां आजावो—म्हे तो करोड़ों कमाकर लाया समझ जाशूं ओर अंतरजामी प्रभु श्री सत्यनारायण की न्यांका चरणां के साथ जनम तांई पूजा करती रहशूं!

(इतना मांहे अमरसिंग आवे छे.)

अमर०—(हाथ जोड़कर) आज तावेदार की किधर याद फरमाई? जी खोलकर हुक्म करिये वन्दा कमर कस के तैयार है. सच्चा राजपूत और आपका नमकहलाल हूं. वदमाशोंने मुझेभी नमकहरामी में डाला था लेकिन् आपकी आशीसने मुझको वचाया, और सतीत्वने आपके लिये सहानुभूति प्रकट की. इस वक्त आप हर एक के कृपापात्र हैं—वदमाशोंने आप पर वैसाही प्रसंग लाया है. पर जैसा आपका सत्व है वैसाही आपको धैर्य रखना चाहिजे.

राधा०—(माळा हाथ मांहे लेकर) स्वामी का चरणां की ओर श्रीसतनारायण बाबा की माळा फेर रही छूं. वोही नाथ इण संकट मांहे सू पार पाड़सी.

अमर०—आप कुछ मत घबराइये. बगीचे में तो आजकल बड़ाही झमेला हो रहा है. एक तरफ हसनखां और करीमोदिन खूब चख रहे हैं. दूसरी तरफ रंडी का डेरा लगा हुआ है. दिनरात मजाक, हांसी, मखौल उड़ा करती है. इस वक्त तो सभी कारोबार बिगड़ रहा है. मैं बहुत कुछ सोच रहा हूं पर दोनों इतने वस्ताद है कि किसी पेचमें नहीं आते. मैं उनमें मिला हुआ हूं और मिले रहने मेंही ठीक समझता हूं. आजकल के दिन बहुत बुरे हैं—कहीं ये बदमाश सेठ की जिंदगी पर उतारू न हो जांय ! इस लिये बहुतही हिकमत के साथ काम ले रहा हूं. आप बिलकुल फिकर न कीजिये. थोड़ेही दिनोंमें बदमाशों का क्या हाल होगा—आप सुन लेंगी. सेठजी की जान को तो आप कुछ भी खतरा न समझें. बाकी दौलत के लिये कुछ नहीं कहा जा सकता !

राधा०—भाई अमरसिंगजी, दोलत परी आगड़ी जावो. म्हारे थांका सेठ जीवता रह्या तो लाखों कांई करोड़ों रुपया छे.

गुलाव०—सेठाणीजी, संभळसी जठे ताई तो दुकान को काम संभाळणो म्हारो फरज छे. ओर उठीने अमरसिंग छेही. बणशी जठे तांई म्हे दोन्यूं आपकी नोकरी पूरी बजाशां. श्रीसतनारायण बाबो म्हांके सामने छे. आप कोई बात की चिंता मत करो.

अमर०—बाई साहब, आपही का पातिव्रत्य सेठजी का रक्षण करेगा. सेठजी का बड़ा भाग्य है कि उनको आप जैसी पढी लिखी सती नार मिली ! आपही के सतीत्व के प्रभाव से सेठजी सुरक्षित हैं—नहीं तो क्या मालूम अबतक क्या हो जाता ? आपकी तारीफ आपके सामने क्या करना है—आपके पीछे सारा शहर करता है.

गुलाव०—भाई अमरसिंगजी, देख्या सेठाणीजी का कांई हाल हो गया छे ? सूख कर लकड़ी लकड़ी हो गया ! एक वार टुकड़ो खावे छे. रात दिन वास वरत ओर भजन पूजन मांहे रहवे छे. ओही पुन्न आडो आसी.

अमर०—इसमें क्या शक है ? स्त्रीजाति को सिवाय पति के और जगत में क्या है ? स्त्री का सच्चा देव एकमात्र पति है. सिवाय पति के कुछ भी नहीं. सब व्यर्थ है.

राधा०—भाई जरांही तो म्हारो काळजो उथलपाथल हो रह्यो छे. थांका सेठ विना मने सारो संसार सूनो सूनो लाग रह्यो छे.

अमर०—अच्छा तो अब मुझे परवानगी हो ?

राधा०—भाई, दोन्यांने फेर हाथ जोड़कर कहूं छूं के म्हारी खबर लिया करजो. म्हे थांकी धरम की वहण छूं. मने मत भूल जाईजो.

अमर०—यह क्या कह रही हो बाई साहब ! हाजिर होता हूं. (जावे छे.)

गुलाब०—ल्यो सेठाणीजी अब म्हे भी जावूं छूं. (जावे छे.)

राधा०—(माळा हाथ मांहे लेकर) हे नारायण ! हे प्रभो ! जठे होवे उठे म्हारा प्राणवल्लभ को रक्षण करजे. हाय ! पति जिशो परम पवित्र साक्षात् देव मिलकर भी जो लुगाई वींको स्मरण करे नहीं, वींका गुण गावे नहीं, वींको ध्यान करे नहीं, वींको दरसण लेवे नहीं, वींको पूजन करे नहीं, वींके पांवां पड़े नहीं ओर वींका प्रेम की पात्र होवे नहीं—वीं लुगाईने धिरकार छे, लानत छे ओर मलामत छे ! प्रत्यक्ष सजीव देवने छोड़ कर भाटाधींडाने पूजती फिरे ओर व्यांका दरसण करती फिरे तथा प्रत्यक्ष देव का उपदेशने छोड़कर कथा पुराण सुणती फिरे ओर वास वरत करती फिरे वींने आगले भव सिर फोड़वाने भाटाधींडा, सुणवाने गाळ्यांभेळ्यां ओर खावाने मट्टीमलामत के सिवाय ओर कांई मिळणो छे ? हे सतनारायण बाबा ! घणी दोरी ओर लाचार होकर धणी का आछा के ताई जनम भर मांहे आजही थारी सेवा कीनी छे ! ओर स्वामी का चरणां का दरसण होवे जठे तांई करूंली. माफ करजो, खमा करजो ओर म्हारा प्राण प्याराने सुखसाता दीजो. (याद आकर) बस, अब जयदेव रोतो होसी. ऊपर चालो.

(पूजापत्री समेटकर ऊपर जावे छे.)

रामरतन सुगनी जिशा, विद्या सीख अपार ।
होकर खूब सुहावणा, घर को करो सुधार ॥

॥ श्री ॥

फाटकाजंजाल नाटक.

अंक तीजो.

पात्रः-रामरतनजी, शिवनारायणजी, पंडित बंसीधरजी, मुन्ना जान, महबूब बीबी, गंगाबिसनजी, सुगनी बाई, गणेशरामजी, ब्रजलालजी, गुलाबचन्दजी, मोतीलालजी, जगन्नाथप्रसाद, राधा बाई, अमरसिंग, श्रीकिसनजी, लछमी बाई, जड़ाव बाई (गंगाबिसनजी की बहू).

प्रवेश पहलो.

ठिकाणो—सराफा मांहेली दुकान पर को बंगलो.

(रामरतनजी आवे छे.)

रामर०—(मन मांहे) चालो, बाई सदासुखी को व्याव तो श्रीकार हो गयो. सगासोई, पैपावणां, जवांईभाई साराही खुशी होकर गया. एकवार तो गीतगाळ परसू कुछ बिगाड़ कोसो परसंग आ गयो थो. पण रामदयालजी घणा लायक आदमी तिकासूं बात बिगड़ी नहीं. झट लाठी लेकर लुगायां के सामने हो गया ! मोट्यार करणो बिचारे तो कांई कोनी होवे ? बाबा, मने तो फतेपुर्‍यां की लुगायां को बिलकुल बिसवास नहीं थो. वरवाळा चाव्हे जित्तो बन्दोवस्त करता तोभी वे सीठणा गाया बिना रहती नहीं. पण रामदयालजी की बहू भी शाणी लुगाई. वीं भी मोको देख लियो के अब सीठणा गाणे मांहे लोग आपणो फजीतो करसी सू सारी छोटी

मोटी लुगायांने वरज दीनी. म्हांका सेठजी पहलीज अठे सू चिट्ठी लिख दीनी थी तिकासूं रामदयालजी सीठणा गावाळी वामणींने साथ लाया कोनी. यणोही आछो हुवो. नहीं तो वा वेमाता मानती कोनी ओर लोग फजीतो कन्या विना रहता कोनी. म्हे भी दस पांच जणाने खूब आछी तरह सूं समझाकर तैयार कर राख्या था के सगा कानी की कोई लुगाई गाळ के, सीठणा के, वुरी वात वकी के वींकी ईजत खराब कर देणी. होसी सू आगे दीखीजशी! पण श्रीजी की कृपा सूं इशो परसंग आयोज कोनी. म्हांकी माजी साव दो चार दिन तो नाराजसा रह्या पण, परभारी व्यांने मालम पड़ गई के दस पांच जणा लुगायां की ईजत लेवा तैयार वेव्या छे. फेर चुप हो गया! व्याहणने भी समझा दी के गांव का लोग इण तरह उदमाद कर रह्या छे. जरां व्याहण व्याही भी समझ गया. नहीं तो मिठास ओर हाथ जोड़णे सूं आपणा लोग समझे ओर कींकी माने कांई? राम को नांव! परमेश्वर इशी वुद्धि दीनी कोनी—वापड़ा कांई करे?

(इतना मांहे शिवनारायणजी आवे छे.)

शिवना०—जयगोपाल कंवर साव, कियान कांई, कांई विचार हो रह्यो छे? क्यूं म्हांने भी तो मालम करो.

रामर०—आवो भाई, पधारो. विचार कायको छे. व्याव की वातां याद आ रही छे.

शिवना०—वाह भाई, आप खाली कहकर रहही नहीं गया करकर दिखाई. आप जिशा रतन मारवाड़ी जात मांहे नीपज्या छे. तिकासूं कुछ आस वंधे छे के मारवाड्यां का भाग को कुछ उदय होवेलो.

रामर०—भाई, एकलो आदमी कांई कर सके?

शिवना०—कंवर साव, आज तांई जो सुधार हुवो छे वो एकलाही सूं हुवो छे. वुद्ध, शंकराचार्य, ईसो, जरथोस्त ओर महम्मद ये कांई दो दो, चार चार था के इण के पास कोई फोजफांटो थो? किशा किशा दुःख

ओर आघात सहन करने जगत् को उपकार कीनो छे ? ये लोग बिचार लेता के म्हे एकला छां, म्हांसूं काई होणो छे—तो आज दुनिया को कांई हाल होतो कुण जाणे ?

रामर०—(हंसकर) वाह भाई, कठे राजा भोज ओर कटे गांगलो तेली ! म्हे इण महात्मा की बराबरी कर सकूं ? ये सारा अवतारी पुरुष था.

शिवना०—भाई साब, घड़बा सूं ज्यूं भाटा का देव बण जाया करे छे. त्यूं आदमी भी करबा सूं अवतारी हो जाया करे छे. करबा सूं ही कुछ हुवा करे छे. आप ब्याव मांहे कुछ करणो बिचार्‍यो जरां तो सारी बात बण गई के नहीं ? नहीं तो हार मानकर बैठ जाता तो आपने आपको लेख तोड़बा को अपजस मिळतो ओर लेख टूट जाणे सूं मारवाड़ी जाति को बड़ो भारी नुकसाण हो जातो !

(इतना मांहे पंडित वंशीधरजी आवे छे.)

रामर०—(ऊठकर) पधारो पंडितजी, आज तो घणा दिना सूं कृपा कीनी ? (पण्डितजी के पगां पड़े छे.)

बंसीध०—(रामरतनजी का शिरपर हाथ रखकर)

संगच्छध्वं संवदध्वं संवो मनांसि जानताम् ॥
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ॥

रामर०—(शिवनारायणजीने) भाई साब, पंडितजी आवे जद म्हे खूब पग पकड़ लिया करूं छूं तिकासूं प्रसन्न होकर वेद मांहेलो नवोनवोही आशीर्वाद दिया करे छे.

शिवना०—महात्मा पुरुष तो साराही को भलो चाव्हे. फेर आप जिशा सज्जन पुरुषने दिल सूं आशीस देकर कल्याण चाहणो इण मांहे अचरजही कांई ?

वंसीध०—शावास शिवनारायणजी, थे भी तो कंवरसाव का दोस्त छो. थांका भलां, विचार सुंदर क्यूं नहीं होसी ? कंवर साव, वाई को व्याव तो शास्त्ररीति सूं, कुळरीति सूं ओर लोकरीति सूं वणो श्रीकार हो गयो. दान-धर्म भी समयानुकूल वणो आछो हुवो. काशीजी का धर्म महामंडल मांहे एक हजार एक भेज्या, मेरट की वैश्य महा सभा मांहे पांचसो एक भेज्या, अजमेर की अग्रवाल सभा मांहे एकसो एक भेज्या, कलकत्ता की मारवाड़ी असोसिएशनने विशुद्धानन्द विद्यालय का छात्रांने मिठाई वांटवाने इकसट भेज्या, अठे की लायब्ररी मांहे एकावन दीना ओर मिंदरा मांहे दस सूं पांच सूं सारां को संतोप कीनो. पण कंवर साव, लुगायां तो नाराजही रही ! ओर वराती भी भगतण का नाच विना उदासही रह्या !

रामर०—क्यूं गुरु महाराज, वराती क्यूं उदास रह्या ? म्हांके एक मंडवा के नीचे नाच नहीं हुवो तो कांई हुवो ? म्हांका काकाजी साव का बंगला पर तो रोज नाच होता था, खूब वरात्यां की मानमनवार होती थी, भांग, तमाखू, रंग उड़ता था, नहीं नहीं सू वातां होती थी !

वंसीध०—कंवर साव, थांका काकाजी को नांव सुणकर तो अब रोमांच होवे छे ! किशा घर का पुरुप, किशा घराणा का आदमी ओर किशा कुळ का दीपक—जका इशी शोभा मिलाई, इशो नांव मिलायो ओर इशो धंधो चलायो ? द्वारकानाथजी का पवित्र कुळ मांहे किशो कुलांगार उत्पन्न हुवो ? सारा ये अविद्या ओर कुसंग का फळ छे ! सत्संगति किशी अपूर्व चीज हुवा करे छे वींको नजीकही उदाहरण थांकी काकीजी छे. थोड़ो घणो अक्षर को ग्यान होवा सूं किशी पतिव्रता ओर सती वणकर साक्षर हुई छे ? वींकाही सत सूं सेठजी कदास वंच जावेला. नहीं तो, धन तो घणोखरो जातोही रह्यो छे, आपने भी जाता कांई देर लागेली ? दुष्ट लोगां घेर राख्या छे. उठे आछा आदमी को प्रवेश होही सके नहीं. मारवाड़ी जाति को कांई होणहार छे सू वो परात्पर प्रभु ही जाणे !

रामर०—(उदासी सूं) गुरुजी, होणहार बुरोही छे. फकत झूठ साच करने कियान भी दो पैसा कमा लेवे छे तिकासूं क्यूं लखावे कोनी, नहीं तो आज मारवाड़ी कठीने रुळता फिरता कुण जाणे ! विद्या नहीं तिकासूं गुण के बदले सैकड़ों ओगण भऱ्या हुवा छे.

शिवना०—भला ही भाई साब, हजार ओगण भऱ्या हो—पैसो इशी चीज छे के झट ओगण का गुण बणा देवे, मूरखने पंडित बणा देवे ओर नादानने अकलवाळो बणा देवे !

बंसीध०—ठीक छे, पण सेठ साब कठे ताई ? " मूर्खस्य चिन्हानि षडिति गर्वो दुर्वचनं मुखे ॥ विरोधी विषवादी च कृत्याऽकृत्यं न मन्यते ॥ गर्व, दुर्वचन, विरोध, जहरी भाषण ओर कुणशी बात करणी कुणशी नहीं करणी तिकारो बिचार नहीं. ये बातां धन सूं जाती रव्हे कांई ? मारवाड़ी जाति मांहे—खूब निगह पुरा ल्यो--ये का ये सारा लक्षण छे के नहीं ? गर्व तो इतनो रह्या करे छे के कोई सूं पूरी बात भी करे नहीं, भलांही थे कित्ता ही प्यारा दोस्त होशो तो भी दुकान पर कोई चीज खरीदबा जावो देखां,. थांसूं पूरी बात भी करे कांई ? दुर्वचन को तो ठिकाणोही नहीं. दो चार मारवाड़ी एक ठिकाणे मिल्या के गाळभेळ बिना बात नहीं! आपस का बिरोध को तो पार नहीं. जहर तो इत्तो भऱ्यो हुवो छे के एकने एक देख सके नहीं ! कुणसो काम करबा को छे ओर कुणसो नहीं तिकारो कुछ भी बिचार नहीं ! तिका जाति का सुधार की आशा कांई ! पैसा कमाकर खाली पैसावाळा बणबा सूं निज को के, कुळ को के, जाति को के, देश को फायदो कियान हो सके ?

रामर०—(खुशी होकर) वाह गुरुजी, बात तो खूब कही. इण श्लोक परवाणे बराबर मारवाड़ी जाति को वर्त्तन छे, इण मांहे रत्ती बराबर फरक नहीं. विद्या सीखकर शाणा हुवा बिना ये प्रकार मिटे नहीं. खाली पैसा कमा लेवे तो कांई होवे ? वीं पैसा को क्यूं सद्व्यय भी !

वंसीध०—कंवर साव, इणसूं सद्व्यय ज्यादा काई होसी—ओसरमोसर व्यावसगाई मांहे हजारों उड़ा देसी, ओर अणपढ़ शूद्र जिशा बामणां ने जिमाकर हजारों बरबाद कर देसी! आज आपणा देश मांहे ये इशा बामण, नाई, साधुसन्त ओर भिखारी बावन लाख छे. उणके वास्ते एक साल मांहे देश का पचास करोड़ रुपया मुफ्त जा रह्या छे. तिका मांहे मारवाड़ी जाति का कम सू कम चौथाई तो होणा चाहिजे. जठे एक पैसा को खरच होसी उठे हजार खरच देसी ओर जठे हजार को खरच होसी उठे एक पैसो भी देसी नहीं! बाप हो, बेटो हो, भाई हो, चाव्हे जिशो प्यारो दोस्त हो, वींने एक पैसो छोड़सी नहीं, पूरो कपड़ोलत्तो शरीरपर लेसी नहीं ओर क्यूं खासीपीसी नहीं; परन्तु मारता मिग्याने चाव्हे सू दे देसी! शास्त्र मांहे कह्यो छे के—

दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य ॥
यो न ददाति न भुंक्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति ॥

दान, भोग ओर नाश ये इशी तीन गति धन की छे. जो देवे नहीं ओर उपभोग लेवे नहीं वींका धन की तीसरी गति अर्थात् नाश हुवा करे छे.

शिवना०—जरां कांई पंडितजी, पेट के पाटा बांधकर ओर लोही को पाणी करकर मिलायोड़ा पैसा यूंही दे देणा ओर खा पीकर उड़ा देणा?

रामर०—नहीं नहीं, कदेही नहीं! शास्त्रकारां को कव्हणो छे के पैसा को सद्व्यय करो. अर्थात् धर्म का, कुळ का, जाति का ओर देश का हित मांहे लगावो. विना कारण फजूल खर्ची मत करो. सट्टाफाटका जाळजंजाळ मांहे मत गमावो. न्याय ओर नीति सूं पैसो मिलाकर खूब वींको संचय करो. देश मांहे नवा नवा उद्योग धंधा काढ़कर अनाथ गरीबां को पाळण करो. आप विद्या सीखकर बेटाबेटीने सिखावो. लुगायांने सिखाकर घर को सुधार करो. परदेश की कोई चीज मत लेवो. आपणा देश की वणी हुई भलीबुरी ओर सस्तीमहंगी चीजां लेकर देश को भलो करो.

शिवना०—फेर आप सस्ती ओर आछी चीज़ने छोड़कर बुरी ओर महंगी चीज लेकर फजूल खर्च कराणो चाहो छो—आ तो अजब बात छे !

रामर०—भाई, हाल आपने इण बात की समझ पड़ी नहीं. परदेश की चीजां जित्ती सुहावणी ओर सस्ती दीसे छे उत्तीही बुरी ओर महंगी छे. देखो, रुपया तीन चार की पीतळ की एक समाई सात पीढ़ी चली जावे ओर बेचो जरां आधा दाम तैयार. काच को लम्प कित्ता दिन जावे ? बार बार चिमनी ओर ऊपर को काच फूटबोही करे ! घणा जाबता सू बरत्यो तो बरस दो बरस चाल जावो. तिका मांहे तीन चार को तो लम्प ओर उतनी ही कीमत की चीमनी तथा ऊपर को काच फूट जावे; ओर बेचो तो कोडी ऊपजे नहीं ! फेर बिलायती लम्प सस्तो के समाई सस्ती ? इसी तरह काच को सामान, चीनी मट्टी को सामान, टीन को सामान, लोहापट्टी को सामान, पतरातार को सामान, लकड़ी को सामान, कलाई को सामान, तरह तरह का कागद, शाही, दवात, पेन, पेनसिलां, चक्कू, कैंची, छुरी, उस्तरा, खिलोणा, बरतण, दवाइयां, रंग, ओजार, छतरी, लकड़ी, घड़ी, चमचा इत्यादि—हजारों प्रकार को सामान आवे छे. उणकी बणावट, मज़-बूती, स्वच्छता ओर पाकीजगी कानी बारीक नजर सूं देखकर हिसाब लगावणे सूं ऊपर कह्या परवाणे खातरी हो जाशी के आपणा देश की चीज सूं परदेश की चीज दस गुणी कांई, कोई कोई तो सो गुणी महंगी पड़े छे ! इत्तो नुकसाण होकर भी धर्मभ्रष्ट करनेये सारा पैसा परदेश जावे छे !

शिवना०—तो कंवर साब, चाही चीज देस की बणी हुई मिले तोभी नहीं. आजकाल लोगां को डोळडाळ बध गयो तिकासूं कोईने खराब चीज आछी लागे नहीं. जका मांहे लुगायां को तो रामजीही बेली छे. व्यांने तो खूब भपकादार, रंगदार, बारीक तरह तरह का नित नवा कपड़ा चाहिजे. वे देसी कठे सू आवे ?

रामर०—हां भूल गयो, कपड़ा की तो बात याद आईही कोनी. थोड़ा दिनां पहली आपणी मंडळी मांहे राव साब कह्यो थो के परदेस सु आपणा

देस मांहे पैंतीस करोड़ रुपयां को कपड़ो आवे छे. सो सवा सो वरस के अगाड़ी आपणा देस मांहे इतनो कपड़ो तैयार होतो थो के आपां लोगांने पूर कर भी लाखों को परदेस जातो थो. आज बाईस तेईस सो बरस पहली सिकन्दर वादशाह हिन्दुस्थान पर चढ़ाई करकर आयो थो वींका साथ का लोग पाछा आपका देस मांहे गया जरां वे उठे हिन्दुस्थान की वड़ाई करता करता वोल्या के आपणी वकरी मेंढी जिशी ऊन उठे खेतां मांहे नीपजे छे. इण परसू वीं वखत का परदेस का लोगांने रुई की पिछाण नहीं थी तो वे कपड़ो वणाणो जाणताही था कांई ? हाल भी देसी कपड़ो इशो वणे छे के प्रतिसृष्टिकर्त्ता अंग्रेजां सूं भी वींकी नकल नहीं हो सके ! पगड़ी, साड़ी, दुपट्टा, मश्रू, पीतांवर, पैठणी, शालू, दुशाला, अलवान इत्यादि कितना प्रकार का कपड़ा हाल भी अठे इशा वणे छे के उशा परदेश मांहे कठेही वण सके नहीं. फेर अठेही का मिले जिशा कपड़ा लेकर वरतणा इण मांहे आपणा धरम को तथां देश को भलो छे.

शिवना०—आपणा देस का अथवा परदेस का कपड़ा वरतणे मांहे धरम को काई संवंध छे कंवर साव ? कपड़ो किशो पेट मांहे खाणो पड़े छे ?

रामर०—आपां लोग जिनावर की चरवीने कदे छीया करां छां कांई ?

शिवना०—राम राम ! कदे भी नहीं.

रामर०—फेर कपड़ा ने गंजी (खळ) देवे छे, तिका मांहे एक हिस्सो चरवी ओर तीन हिस्सा गहूं चावळ को आटो विगेरा चीजां पड्या करे छे. रंगीन कपड़ा मांहे तो इशा जहरीला पदार्थ पड़े छे के व्यां कपड़ा सूं शरीरपर बुरो परिणाम होवे.

शिवना०—अरे राम ! कपड़ा की गंजी मांहे चरवी पड़े छे ?

वंसीध०—चरवी, हड्डी ओर मद्य कुणशी विलायती चीज मांहे कोनी ? सेठ साव, धर्म को नाश हो गयो तिकासूंही सारा भ्रष्ट होकर शक्तिहीन,

बुद्धिहीन ओर धनहीन हो गया. अकाल, महामारी, प्लेग जिशा भयंकर रोग उत्पन्न होकर लाखों आदम्यां को संहार हो गयो ! ओर हो रह्यो छे. तो भी आप लोगां की आंख्या खुले कोनी. इणसू ज्यादा ओर दुःख की बात काई होसी ?

शिवना०–जिण चीजने छी लेवां तो कपड़ा सूधा स्नान करणो पड़े, बे चीजा आज आपां बरत रह्या छां ओर खा रह्या छां ! हे **नारायण**, कांई म्हांकी गति होशी ? कंवर साब, आप कपड़ा की कळ काढ़बा को बिचार करता था सू भाई साब, अब जलदी निकाळो तो ठीक छे. आज ये बातां सुणकर काळजो फड़क उठ्यो ! ये इशी बातां अबार सारांने मालम हो जावे तो–म्हारी जाण मांहे–आपणी जातवाळा तो बिलायती चीजने फेर छीवे नहीं.

रामर०–ये इशी बातां जाणे नहीं जरांही तो खराबो हो रह्यो छे. ये इशी बातां जाणबा के तांई कुछ विद्या को अंग भी चाहिजे. खैर, लिखणो पढ़णो छे नहीं तो कोई समझाबाळो चाहिजे. ओर समझाबाळो छे नहीं तो मारबाड़ी बोली मांहे कोई छोटी मोटी पुस्तक होवे तो बांचकर सुणाबा सूं व्यांने भी मालम पड़ जावे के म्हांको कपड़ोलत्तो इशो सूगलो छे ! अब रही कळ की बात–म्हे खूब सोच रह्यो छूं के पूंजी तो चाव्हे जित्ती मिल जाशी ओर कळ खुलबा देर भी नहीं लागशी. परन्तु म्हे देखूं छूं के कंपनी का डायरेक्टर (पंच) मारवाड़ी होणा, एजन्ट (काम चळाबाळा) ओर मेनेजर (व्यवस्थापक) मारवाड़ी होणा, वीव्हिंग (कपड़ो बणबाळा को मुख्य) कारांडिग मास्टर (रुईने साफ करने कातबा जिशी करबाळा को मुख्य) ओर जाबर (कळ को काम करबाळो) मारवाड़ी होणा, इंजनेर (इंजिन चळाबाळो) भी मारवाड़ी होणो–बाकी हिसाब किताब रखबाळा तथा दूजो काम करबाळा तो मारवाड़ी घणाही मिल जासी. ओर एक विशेष बात इण मांहे इशी होणी चाहिजे के शेअर-होल्डर (पांतीदार) भी सारा

मारवाड़ी होणा, ओर उणकी इशी प्रतिज्ञा होणी के मिले सू सब कपड़ो इणही कळ को वण्यो हुवो लेणो—जरां कळ निकाळवा को सार्थक होवे.

वंसीध०—(प्रसन्न होकर) वाह कंवर साब, ईश्वर आपने शतायु करो! मारवाड़ी जाति का सुधार मांहे आपको इत्तो लक्ष्य छे, जाणकर म्हारा रोम रोम मांहे आनन्द छा रह्यो छे. मारवाड़ी वड़ा अभागी छे के वे इशा भला नर की पिछाण करने आप को भलो नहीं कर लेवे!

रामर०—(आंसूं लाकर) गुरु महाराज! इण मारवाड़ी जाति का बुरा प्रचार, गीतगाळ, हांसीठठ्ठा, फजूलखर्ची, आपस को बरताव, धर्म, कुळ, जाति ओर देश को विरोध, नीचव्यवहार, मूरखाई, परस्पर वैर, फूट ओर समाजहीनता देखकर कोई कोई वखत मति गुंग हो जाय, हृदय शून्य हो जाय ओर चित्त इत्तो व्यग्र हो जाय के कुछ वोल सकूं नहीं ओर कह सकूं नहीं! एक दिन परस्पर वन्धुभाव इशो थो के आगरोहा मांहे जो नवो भाई आतो वींकी सारा मिलकर सहायता करने धनमाल सूं आपका बराबरी को लखपती वणा लेता था. आज वेही भाई भाई आपस मांहे झगड़कर नाना प्रकार का नीच कर्म करने कोर्टां मांहे खड़ा रहकर हजारों रुपया वरवाद कर रह्या छे! एक दिन आपका धर्म के तांई प्राणतक की परवाह नहीं करकर धर्म को रक्षण करता था. आज वेही पैसा पैसा के ताई झूठ वोलता फिरे छे, छळ च्छिद्र करता फिरे छे ओर नाना प्रकार का जाळ रचता फिरे छे! "हाय पैसो, हाय पैसो!" हो रह्यो छे. ईंके अगाड़ी देव नहीं, धर्म नहीं, कुळ नहीं, जाति नहीं ओर देश भी नहीं. भलां, हाय हाय करकर भी चाव्हे जित्तो पैसो मिला लेवे कांई? ओर कदास क्यूं मिला भी लेवे तो वींने राख जाणे काई? मन मांहे तो वणीही आवे, परन्तु कांई करूं—म्हे इशो सार्वभौम राजा अथवा कुवेर भंडारी नहीं के "हाय पैसो, हाय पैसो!" करवाळा म्हारा सारा सरदारांने राजा, महाराजा ओर श्रीमन्त वणाकर सट्टा फाटका जिशा छळछिद्र का हळका वेपार सूं छुड़ाकर साचा साचा वैश्य

(बेपारी) बणा द्यूं, उणका घर को सुधार कर द्यूं, उणकी सारी कुरीतां मेट द्यूं, उणकी राहरीत सुधार द्यूं, उणकी फजूलखर्ची मिटा द्यूं, उणका बाल-विवाहने रोक द्यूं, उणका बेजोड़ व्याव नहीं होबा द्यूं, मोट्यारांने विद्या पढ़ाकर परस्पर प्रीति करणी सिखा द्यूं, स्त्रियांने धर्मपर आरूढ़ करकर घर का काम मांहे शाणी कर द्यूं ओर वेश्या भी नहीं बोल सके उशा फाटां बोलां का गीत गावणा छुड़ा द्यूं!!

बंसीध०–(उदासी सूं) ईश्वर की मरजी इशीही छे उठे कींको उपाय? पण कंवर साब, आगे तो घणाही था–ओर अबार अबार म्हारे देखता देखता कित्ताही भोळाभाळा, सरल स्वभाव का, पापभीरु ओर धर्मशील किशा बाण्या था के जका लाखों रुपया कमाकर लाखों को दानपुण्य कर गया छे. उणका घरां मांहे आजकाल कीशी बुरी राहरीत, धर्मविरुद्ध आचरण, स्त्रियां को प्रचार, फजूलखर्ची, हाय हाय, कपड़ोलत्तो, गहणोगांठो ओर गीतगाळ थी नहीं. म्हारे देखता देखता जमानो पलट गयो ओर कुछ को कुछ प्रकार हो गयो! अबार भी ये लोग चेत जावे तो भी क्यूं हरकत नहीं.

शिवना०–पंडितजी, मारवाड़ी तो चेत चुक्या! भगवान् की मरजी होशी वीं दिन तो भलांही क्यूं हो जावो, पण ये जाण बूझकर तो सुधरबा सू रह्या!

रामर०–नहीं भाई, हाल आपणा लोगां मांहे कोई अगुवा महापुरुष पैदा नहीं हुवा. इशा दस पांच महापुरुष पैदा हुवा के फेर आपणा लोगां की मति पलटता देर लागशी नहीं. आजकाल कोई कोई ठिकाणे एकाध सज्जन का कुछ कुछ बिचार पलट्या छे. वींको ठीक अनुकूळ परिणाम मालम पड़े छे. अखबारां मांहे तथा ओर कोई कोई पुस्तकां मांहे भी कुछ कुछ चरचा चाल रही छे. बीज तो बोयो गयो छे. म्हारी जाण मांहे तो अब जलदीही लोगां को अठीने लक्ष्य जावेलो.

बंसीध०–लक्ष्य जावेलो तो सुख भी पावेला. बस, कंवर साब, अब परवानगी द्यो. घणी वार हुई. (जावे छे.)

शिवना०—वाह कंवर साव, आपका विचार वणाज सुन्दर छे. आप की सोवत सूं म्हारा दिल पर कित्तो असर हुवो छे कांई बतावूं ? बस, अब जलदी करने कपड़ा की कळ को मूहरत करो.

रामर०—ठीक छे. आप को हुकम बजाणोही पड़सी. चालो, अब बार फिरवाने चालां. वेळ्या वेळ्याने घणी देर हो गई.

(दोन्यूं जावे छे.)

प्रवेश दूजो.

ठिकाणो—ब्रजलालजी का बगीचा मांहेलो बंगलो.

(मुन्नाजान तथा महबूब बीबी आवे छे.)

मुन्ना०—बेटी, तू बड़ी दीवानी है. अरे ! ब्याही हुई औरत के मुवाफिक प्यार रखना और अपना फायदा न कर लेना ये बातें अपने पेशा के खिलाफ है. तुझे कहांतक सिखाना चाहिये—अब क्या तू नादान है ? कितने दिनों से तुझे कह रही हूं कि रोजबरोज कुछ न कुछ नया बहाना, नई बात या करतूत करके सेठ से खूब जेवर, कपड़ालत्ता और पैसा निकालना चाहिये. तू तो सेठ के इश्क में मस्त हो गई ! तुझे अभी तजुर्वा नहीं है. ये मारवाड़ी बनिये इश्क का लुत्फ क्या जान सकते हैं ? अभी तुझे एकाध बच्चा पैदा हो जाने दे फिर यह बनिया तेरी तरफ आंख उठाकर देखेगा भी नहीं. मैं जब देखती हूं तब हंसी, मजाक, गाने की तान, हरमोनिया का सुर और खेलकूद में मशगूल रहती है. सेठ से कभी हंसी मजाक करते करते हट भी जाना, नजर चुरा लेना, मुंह मरोड़ लेना, भौंय चढ़ा लेना, हंस देना, खफा हो जाना, और कभी कभी नाराज भी हो जाना. क्या तू बनयानी है—जो तू अपना इतना प्यार उस पर रखती

है ? मैं खूब बारीक नजर से तेरी तरफ ताकती रहती हूँ तो जब बनिया तेरे नजदीक रहता है तब तू बागोबाग रहती है और बनिये से अलग होते ही बिलकुल गमगीन और रंजीदा हो जाती है.

महबू०–(सकर) अम्मा जान, मैं बहुत कुछ कोशिस करती हूँ लेकिन् कामयाब नहीं होती. खुदा जाने–बनियेने क्या जादू मुझ पर डाल दी है ? वह मेरे नजदीक आया कि मैं उसके प्यार में बिलकुल दीवानी बन जाती हूँ! सच, अम्मा जान! मैं क्या कहूँ–बनिया बड़ा दिलदार, रंगीला, शौकीन और छैलछबीला है. कितना खूबसूरत है–मैं तो क्या–परियां भी उसको देखकर चकरा जावेंगी ! कैसा अच्छा चलना, बोलना, मुस्कराना, देखना और हँसना है–मैं तो उसके सामने कुछ भी नहीं ! रूसकर या अलग होकर या नजदीक बैठकर या प्यार में लाकर बहुत कोशिस के साथ मांगना चाहती हूँ मगर मुँह के सामने देखतेही सब भूलकर उसके गले में लिपट जाने के या बगलगीर होने के सिवा और कुछ भी नहीं सूझता !

मुन्ना०–(आंख्या फिराकर) क्या कुछ अक्ल भी रखती है ? कहीं रांडियां ऐसे प्यार में फँस जाया करती है ? अफसोस ! तू अब ऐसी तेरी जवानी में कुछ न कमा सकेगी तो क्या मेरी जैसी बुढ़िया होने पर ? मेरी जवानी में मुझे ऐसा यार मिला होता तो न जाने, आज तक कितना जेवर और रुपया कमा लेती ? गंगाबिसन सेठ, हसनखां और करीमोदीन रोज तुझे जो जो बातें सिखलातें हैं वे भी तू भूल जाया करती है ?

महबू०–अम्मा जान, मुए ! बड़े हरामी हैं. मेरे ऊपर हराम नजर रखते हैं ! क्या मैं एक भले मानस के साथ अपना प्यार करके इनके साथ बद फैली करूं ?—“ला होल बिला कुव्वत !” इससे तो मर जाना बेहत्तर ! क्या मैं अपना पाको साफ जिस्म उनसे छुलाकर नापाक कर लूं ? हरगिज नहीं !

मुन्ना०—(मन मांहे) क्या करना चाहिये—लौंडी तो बिलकुल बनिये के फंद में जा फँसी ! कैसी मेरी तक्दीर बुरी है कि दो पैसे कमाने के लिये घर छोड़ा, वतन छोड़ा यहां आकर रही. उस मालिक परवरदिगार की मेहरबानी से बनिया भी खूब मालदार हाथ लगा. इस लौंडी का तो यह फर्ज था कि उसको अपने पंजे में फँसा के खूब लूटती. यह तो उलटी उसके पंजे में जा फँसी है ! और मुझे कहती है मैं क्या करूं ? क्या करना चाहिये—अब इस पर खफा होकर या नाराज रहकर भी कुछ फायदा नहीं. खींचातान में कही अलग न हो बैठे—और मैं मुसीबत में जा पडूं ! हूँ:, रफते रफते ठिकाने पर आ जायगी. मिठास सेही काम लेना चाहिये. (बड़ा सूं) क्यों बेटी, क्या सोच फिक्र कर रही है ?

महबू०—कुछ नहीं अम्मा जान ! सोच रही हूँ कि आज सेठ मेरे पास आते ही कुछ न कुछ जेवर या रुपया मांगूं और हठ करके ले भी लूं !

मुन्ना०—(खुशी होकर) जीती रहो मेरी गुलशने बुलबुल ! तेरी बलैयां लूं ! देख, अब हिकमत से जितनी जल्द माल हाथ कर लेगी वह तेरा है. बनियां रोज बरोज़ खाली हो रहा है. लाखों रुपया सट्टे के बेपार में खो बैठा है. अब यह बंगला, मकानात, गाड़ीघोड़े, मालटाल, जेवर थोड़े ही दिनों में बिकनेवाला है. कैसे कैसे बदमाश इस बनिये के पीछे हाथ धोके लगे हैं—मुझे तो बड़ा खौफ है कि कहीं सेठ को तमाम न कर दें ! (बीच मांहे)

महबू०—(आंसू लाकर) खुदा न खास्ता ऐसा हो जाय तो अम्मा जान, फिर मैं क्या करूंगी ? मैं बेवा हो जाऊंगी ! फिर मुझ पर प्यार कौन करेगा. (रोवे छे.)

मुन्ना०—(आंख्या पूँछकर) अजब दीवानी छोकरी है ! कहीं बाजार में बैठनेवाली रंडी बेवा होती होगी ? (मन मांहे) या अल्ला ! या परवरदिगार ! या रब्बुलालमीन ! तुही मालिक है. इस दीवानी छोकरी को हिदायत देके तुही रस्ते पर लानेवाला है. (सांस भरे छे.)

महबू०–(नजीक जाकर) तो क्या अम्मा जान, फिर मेरा निकाह किसी ओर के साथ कर दोगी ? (रोती हुई) मैं हल्फन् कहती हूं—या अल्ला !–सिवाय सेठ के किसी को अपना नाखून तक नहीं दिखावूंगी ! मर जाना बेहत्तर होगा लेकिन् मैं सदा के लिये पाकदामन रहूंगी !

मुन्ना०–(लिलाड़ पर हाथ रखकर) या खुदा ! या अल्ला ! मेरीही खता हुई कि मैंने इस नादान को दस पांच के साथ नहीं सुलाई !

महबू०–(चोंक कर) अम्मा ! अम्मा ! खुदा के लिये माफ करो ! हरगिज ऐसा नहीं कराना और न मैं करूंगी. (इतना मांहे गंगाविसनजी आवे छे.)

गंगाबि०–(हंसकर) काई माबेटी की सलाह हो रही छे ? म्हांने भी तो क्यूं मालम करो. क्यूं भूलचूक होशी तो सुधार देशां.

मुन्ना०–(ऊभी हाकेर) आदाब, आइये सेठ साहब. इस कोच पर तशरीफ रखिये.

गंगाबि०–(वैठकर) क्यूं बीबी जान, कांई हो रह्यो छे ? आज चेहरो उदास क्यूं ? क्यूं अम्मा जान तो कठे खफा नहीं हुई ? (हाथ पकड़े छे.)

महबू०–(हाथने झिड़कारकर) देखो अम्मा जान, यह कैसी मुसीबत है. भाई साहब ! जरा दूर से बात करोंगे तो बड़ा एहसान होगा.

मुन्ना०–(चिड़कर) क्या बोली ? "भाई साहब !"

महबू०–(मुँह मरोड़कर) जी हां ! तो फिर क्या बोलूं ?

मुन्ना०–(घुस्सा सूं) तो 'यार' बोलने में क्या शरम आती है ? हरामजादी लौंडी कहीं की ! इतना सिखा रही हूँ तौभी फिर वही बात !

(घुस्सा सूं रोती रोती महबूब बीबी अंदर जावे छे.)

गंगाबि०–आवो बीबी जान, कठे जा रह्या छो ? पहली तो इत्तो घुस्सो नहीं थो. आजकाल कांई हो गयो ? मुन्नाजी, क्यूं दूखे पाचे तो छे नहीं ?

मुन्ना०—(दोरी होकर) जाने दीजिये सेठ साहब ! लौंडी बड़ी हठीली है ! उसको क्या हुआ है ? मस्ती सूझी है और तो कुछ भी नहीं.

गंगावि०—क्यूं पण कांई तो होसी ? आजकाल नाराज क्यूं छे ?

मुन्ना०—नाराज है न खुशदिल ! सिर्फ बचपन है !

गंगावि०—खैर जावा द्यो. म्हे थांने कुछ बात कहवाने आयो थो.

मुन्ना०—फरमाइये, ताबेदार हाजिर है.

गंगावि०—आजकाल सेठजी को काम हाल रह्यो छे. थे भी तो सब बातां सुणलीही होशो ?

मुन्ना०—कुछ कुछ तो सुनने में आया है. पूरा हाल हमें कहां से मालूम हो सकता है—फरमाइये.

गंगावि०—हालही हाल छे. आगली पून्यू पर सट्टा का भाव कड्या के सेठजी फट् बोल जासी ! अब महीना डेढ़ महीना मांहे जो हाथ मार लेशो सू थांको छे. मुंबाई सू महबूब के तांई आठ दस हजार को जेवर लाया था सू मिल्यो के नहीं ?

मुन्ना०—(चोंककर) नहीं जनाब, कुछ भी नहीं ! कुछ खेल, सैरबीन, तसवीरें, बाजे की पेटी, लोहे का संदूक, दो तीन साड़ियां, दुपट्टे, जरीदार अंगियां, पाजामे और कुछ कपड़ा—वैसेही कानों की वालियां, एअररिंग, अंगूठी और चूड़ियां—ऐसा वैसा सामान कोई दो ढाई हजार का माल होगा.

गंगावि०—तो, जड़ावू बिंदी, बाजूबन्द ओर जड़ावू टूशी—ये तीन रकमां कोनी दीनी कांई ? ये तीनूं रकमां आठ दस हजार की थी.

मुन्ना०—नहीं सेठ साहब, मुतलक नहीं. आप खुद मालिक से दरयाफ्त फरमावें. आपसे कभी कुछ छिपा सकती हूं ?

गंगावि०—तो फेर ये चीजां सेठाणी के हाथ लग गई. अब कांई मिळणी छे !

मुन्ना०—सेठानी भी बड़ी मक्कार औरत है! आजकल कैसा ढोंग मचा रक्खा है? अजीब अजीब बातें सुनने में आती हैं. फकीराना तौर पर रहकर सेठ को शीशी में उतारना चाहती है. चिल्लाकसी कर रही है. जादूटोना चला रही है. लेकिन् "नोझबिल्ला" सेठ तो उसकी तरफ नजर उठाकर भी देखते नहीं.

गंगाबि०—मुन्ना जान! कांई कहूं, म्हारी भी जड़ काटबा मांहे कमती कोनी कीनी. पण बन्दो तो बसर आयो. फकीरीही लिरा दी! खैर, अब नगदी तथा जेवर हाथ आणो तो मुस्कल छे. पण एक मकान तो बीबी का नांवपर करा ल्यो. अबार तो हो जासी. हाथ सूं गया पीछे फेर कांई छे?

मुन्ना०—या अल्ला! मैं तो लाचार हूँ. मैं सेठ से कुछ नहीं कह सकती, और मेरा मानेंगे भी क्यों? आशक माशुक काही माना करता है. लौंडी का हाल तो आप जानतेही हैं—कैसी नादान, हठीली और कमअक्ल है—कुछ कहा नहीं जा सकता! वह न तो कुछ कहेगी और न कुछ कर सकेगी. जो कुछ मुनासिब समझें आपही करें. मैं आपही की हूँ. आप जो फरमावेंगे उसमें हाजिर हूँ. आपको तर्जुबा आही चुका है कि मैं अपनी जबान पर कैसी पाबन्द हूँ—बस!

गंगाबि०—ठीक छे तो, जो वणसी सू सही. (जावे छे.)

मुन्ना०—देखें, लौंडी मकान में क्या कर रही है?

(जावे छे.)

प्रवेश तीजो.

ठिकाणो—श्रीकिसनजी की हवेली का उपर को बंगलो.

(सुगनी बाई आवे छे.)

सुगनी०—(कोच पर बैठकर मन मांहे) जावो बाई, चाऱ्या कानी काचही काच लगायोड़ा छे, सू आदमी होवे जियान को जियान चाऱ्या कानी दीखबो करे ! आवा दे आज बोलकर पड़दा नखा देशूं. आदमी छे, कोई वखत ढक्यो होवे कोई वखत उघाड़ो होवे—जा बाई, शरम आवे—उशो को उशो दूर तांई कतार की कतार दीखबो करे ! इशा काच लगावणे मांहे कांई मिले कुण जाणे ! फोगट पैसा को ओर सरम को नास करणो छे. कांई बाई, बाईजी का व्याव मांहे लुगायां हाहू मचाई थी पण, सीठणा के गाळ तो गावा दी नहीं सू नहींज नहीं ! बारे बारे जठे जठे लुगायां जाती उठे उठे सिखायोड़ा माद्या भाई लार की लार रहता. तिकासूं डरती लुगायां बिलकुल गाळ गाती नहीं. म्हे भी खूब वहम घाल दीनो थो. नहीं तो मानती कांई ?

(इतना मांहे रामरतनजी आवे छे. सुगनी बाई ऊभी होवे छे.)

रामर०—(सुगनी बाई को हाथ पकड़कर) कुण नहीं मानती ? (टेबल के पास कुरसी पर बैठे छे.)

सुगनी०—(नजीक कुरसी पर बैठकर) लुगाया ओर कुण !

रामर०—कींको ?

सुगनी०—आपको !

रामर०—कांई कोनी मानती ?

सुगनी०—मनाई.

रामर०—कायकी ?

सुगनी०—सीठणा तथा गाळ गावा की !

रामर०—क्यूं नहीं भलां ?

सुगनी०—खुशी व्यांकी !

रामर०—कठे लुगायां की खुशी चालती होशी ?

सुगनी०—क्यूं नहीं ?

रामर०—वे स्वतंत्र नहीं तिकासूं !

सुगनी०—तो कांई वे जिनावर छे ?

रामर०—(हँसकर) नहीं नहीं, वे पुरुष की अर्धांगिनी, प्रियमित्र, नर की जननी, गृहिणी, घर की देवता, संसार की शोभा ओर पुरुषार्थ की खाण छे. पुरुष उनको पति, पुरुष उनको भर्त्ता ओर पुरुष उनको धणी तिकासूं, शास्त्र की आज्ञा छे के लुगायां पुरुष का तावा मांहे रहकर आपकी उमर बितावे. बाळपणा मांहे पिता का अधिकार मांहे, जवानी मांहे धणी का अधिकार मांहे ओर बुढ़ापा मांहे पुत्र का अधिकार मांहे; पिता, पति ओर पुत्र का अभाव मांहे उणके ठिकाणे जो होवे उणका अधिकार मांहे रहणो चाहिजे. "न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति" स्त्रियांने स्वतंत्रता नहीं.

सुगनी०—तो फेर म्हे पुरुष का गुलाम अर्थात् जिनावरही ठहऱ्या !

रामर०—कुण बोले छे ? कदेही नहीं. थे पुरुष की बराबरी का, पुरुष की सहाय करबाळा ओर पुरुष की देवता छो. भगवान् मनु कव्हे छे के—

> पितृभिर्भ्रातृभिश्चैताः पतिभिर्देवरैस्तथा ॥
> पूज्या भूषयितव्याश्च बहु कल्याणमीप्सुभिः ॥
> यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ॥
> यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफलाः क्रियाः ॥
> स्त्रियां तु रोचमानायां सर्वं तद्रोचते कुलम् ॥
> तस्यां त्वरोचमानायां सर्वमेव न रोचते ॥

सुणो—आपका कल्याण की इच्छा करवाळा बाप, भाई, पति ओर देवरने चाहिजे के इणको वस्त्र आभूषण सूं सत्कार करे. जठे लुगाया को सत्कार होवे उठे देवता रमे. जठे इणको सत्कार नहीं होवे उठे सारी क्रिया निष्फळ हो जावे. लुगायां सोहणे सूं कुळ सोह्या करे छे. जठे लुगाया सोहे नहीं उठे कुछ भी सोहे नहीं! व्यास भगवान् कह्यो छे—

> पूज्या लालयितव्याश्च स्त्रियो नित्यं जनाधिप !
> स्त्रियो यत्र च पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ॥
> संमन्यमानाश्चैता हि सर्वकार्याण्यवाप्सथ ॥
> विदेहराजदुहिता चात्र श्लोकमगायत ॥
> श्रिय एताः स्त्रियो नाम सत्कार्या भूतिमिच्छता ॥
> पालिता निगृहीताश्च श्रीः स्त्री भवति भारत ! ॥

भीष्म पितामह कव्हे छे के युधिष्टिर, नित्य स्त्रियां को सत्कार ओर प्रेम सूं पालन करणो. जठे स्त्रियां को सत्कार होवे उठे देवता रमे. इणको सन्मान करवा सूं सब कर्म की सिद्धि होवे. विदेह राजा की कन्या सीता जियान रामचन्द्रजीने जस देवाळी हुई. स्त्रियांही लक्ष्मी को रूप छे तिका सारू कल्याणं की इच्छा रखवाळो इण पर अधिकार रखकर पालन करवा सूं स्त्री लक्ष्मी हुवा करे छे.

सुगनी०—ये इशी पुस्तकां की वातां पुस्तकां मांहे ढकी रह्या करे छे !

रामर०—थे तो थांकी वातां झट बारे काढ़ देवो के नहीं ?

सुगनी०—म्हे म्हांकी कांई वातां बारे काढ़ देवां ?

रामर०—सीठणा ओर गीतगाळ को भजन !

सुगनी०—वो तो मंगळाचार छे !

रामर०—आछो मंगळाचार बतायो—

> तावत्कुलस्त्रीमर्यादा यावल्लज्जावगुंठनम् ॥
> हते तस्मिन्कुलस्त्रीभ्यो वरं वेश्यांगनाजनः ॥

अर्थात् लाज बणी छे उठे तांईही कुलस्त्री की मरजादा छे. लाज गया पीछे बीं कुलस्त्री सूं वेश्या चोखी. तो, जो वेश्या भी फांटा बोल बोल सके नहीं बे थांकी जिशी ऊंचा कुछ की लुगायां के मूंडे सोहे कांई ? पराया मोट्यारने देखकर थे घूंघटो लेवो सू कायके तांई ? जिण जात मांहे लुगाई पराया मोट्यारने आपको मुंह दिखा सके नहीं बा लुगाई यूं मोट्यारां की भरी सभा मांहे बुरा बोल बोलकर आपकी लाज गमाती आछी लागे कांई ?

सुगनी॰—दस पांच लुगायां मिलकर गावे जका मांहे लाज कुणकी जावे ओर कुणकी नहीं बींको कांई वेरो पड़े ? बीं बखत म्हे कांई मूंडो उघाड़कर बैठ्या करां छां के म्हांको अंग दिखाया करां छां—कुछ भी नहीं !

रामर॰—वाह साब वाह ! हिकमत तो खूब भिड़ाई ! दस पांच लुगायां मिलकर क्यूं बुरो काम—चोरीचारी—करे तो कुछ अपराध नहीं, क्यूं के कुण करी ओर कुण नहीं—कुण जाणे ? पण माफ हो जावे कांई ?

सुगनी॰—(हंसकर) तो आजही लुगायां थोड़ी गा रही छे ? परम्परा सूं गाती आई छे. बड़ेरां की बखत की रीतां छे सूं बे कांई इत्ता मूरख था सू इशी रीतां चला गया ?

रामर॰—कुण बोले छे मूरख था ? बे तो घणाही शाणा ओर भला था. आजकाल का लोग विद्याहीन हो गया तिकासूं लुगायां ज्यूं ज्यूं मनभावता बुरा बुरा गीत जोड़कर बेशरमपणा सूं गावा लाग गई त्यूं त्यूं लोग व्यां गीतां सूं बुरो नहीं मानकर उलटा खुशी होवा लाग गया और आगे होकर लुगायां की ठठ्ठामस्करी करकर व्यांने ज्यादा उत्तेजन देवा लाग गया—तिकासूं दिनोंदिन लुगायां निरांकुश होकर कुछ का कुछ प्रचार करवा लाग गई ओर भगवान मनु का वचनां को लोप कराकर हीन दीन बण गई ! ये इशा निर्लज्ज गीत गावा की अंग्रेज सरकार कायदा मांहे मनाई कीनी छे. ओर गावावाळाने सजा लिखी छे. आपणी गीतगाळ मांहे घणखरा लोग समझे नहीं ओर पोलिस को भी अठीने हाल लक्ष्य पूगो नहीं तिकासूं

ठीक छे. नहीं तो अबार एकाध भला घर की लुगाई पर मुकदमो हुवो के हुवो वन्दोवस्त. फेर गावो देखां भलां ?

सुगनी०–(खुशी होकर) छे तो साची बात. पण उपाय काई ? लुगायां बिलकुल माने नहीं !

रामर०–(जोर सूं) माने नहीं ? फेर आपणे अठे कियान मानी ?

सुगनी०–आपका जिशा कोई कहवाळा भी तो चाहिजे. अठे तो साराही लुगायां के सामने बिल्ली वण्या वैठ्या छे ! बारे तो मोटी मोटी वातां करवो करशी ओर घरां आया के कुछ भी नहीं. लुगायां को तो सारो आधार मोट्यार परही छे.

रामर०–इण मांहे कांई शक छे !

यादृग्गुणेन भर्त्रा स्त्री संयुज्येत यथाविधि ॥
तादृग्गुणा सा भवति समुद्रेणेव निम्नगा ॥

अर्थात् लुगाईने धणी आपका जिशा गुणां सूं संयुक्त करे उशा गुणवाळी वा हो जाया करे छे. जियान मीठा जळ की नदी समुद्र मांहे जाता पाण खारी वण जावे.

सुगनी०–ये इशी वातां को ग्यान मोट्यारांने चाहिजे, जरां कुछ होवे. मोट्यार तो म्हाने आपको चाकर–नहीं नहीं–गुलाम समझ्या करे छे. मोट्यारां के भावूं म्हे कुछ भी नहीं. वाजार मांहे सूं कोई जीव जिनावर मोल लावे वींकी तो फेर भी ग्यान गिणती छे. म्हे तो उणसूं भी निपत्तर छां सूं रातदिन मोट्यारां की गुलामगिरी करवो करां.

रामर०–(हंसकर) मोट्यारां का इशा गुलाम वण रह्या छो तो भी मोट्यार थांके सामने विल्ली छे ! पण थे भी थांको क्यूं कर्तव्य कर्म जाणो छो?

सदा प्रहृष्टया भाव्यं गृहकार्येषु दक्षया ॥
सुसंस्कृतोपस्करया व्यये चाऽमुक्तहस्तया ॥

नास्ति स्त्रीणां पृथग्यज्ञो न व्रतं नाप्युपोषितम् ॥
पतिं शुश्रूषते येन तेन स्वर्गे महीयते ॥
पाणिग्राहस्य साध्वी स्त्री जीवतो वा मृतस्य च ॥
पतिलोकमभीप्सन्ती नाचरेत्किंचिदप्रियम् ॥
पतिं या नाभिचरति मनोवाग्देहसंयता ॥
सा भर्तृलोकमाप्नोति सद्भिः साध्वीति चोच्यते ॥

भगवान् मनु कव्हे छे के, सदा प्रसन्न रहकर, घर का काम मांहे चतराई राखकर, घर, कपड़ोलत्तो, बरतणभांडो, साफ रखकर खरचखाता मांहे लुगाईने काठो हाथ राखणो चाहिजे. लुगायांने न्यारो जग्य नहीं, बरत नहीं ओर वास नहीं. एकमात्र पति की सेवा सूंही व्यांने स्वर्ग मिल्या करे छे. पति के साथ धर्माचरण करबा सूं प्राप्त होबाळा स्वर्गादि लोक की इच्छा रखबाळी स्त्रीने चाहिजे के पति के जीवता अथवा मर्‍या पीछे भी कदे बुरो आचरण नहीं करे. जो स्त्री मन सूं, वाणी सूं ओर देह सूं पति को भलो चाव्हे बींने पतिलोक प्राप्त होवे ओर सज्जन बींने पतिव्रता कव्हे.

सुगनी०—आजकाल इशा नेम धरमवाळी लुगायां कठे छे ? तिका मांहे आपणी जात मांहे—नोज !

रामर०—नहीं जरांही तो सारो खराबो छे. महाभारत माहे पार्वती महाराणीने महादेवजी स्त्री को धर्म पूछ्यो जरां—पार्वती बोली के—

सुस्वभावा सुवचना सुवृत्ता सुखदर्शना ॥
पुत्रवक्त्रमिवाभीक्ष्णं भर्तुर्वदनमीक्षति ॥
या भवेद्धर्मपरमा नारी भर्तृसमव्रता ॥
देववत्सततं साध्वी भर्त्तारमनुपश्यति ॥
परुषाण्यपि चोक्ता या दृष्टा क्रुद्धेन चक्षुषा ॥
सुप्रसन्नमुखी भर्तुर्या नारी सा पतिव्रता ॥

न चन्द्रसूर्यौ न तरुं पुन्नाम्नो या निरीक्षते ॥
भर्तृपूज्या वरारोहा सा भवेद्धर्मचारिणी ॥
दरिद्रं व्याधितं दीनमध्वना परिकर्शितम् ॥
पतिं पुत्र मिवोपास्ते सा नारी धर्मचारिणी ॥
शुश्रूषां परिचर्यां च करोत्याविमनाः सदा ॥
सुप्रीता च विनीता च सा नारी धर्मभागिनी ॥
न कामेषु न भोगेषु नैश्वर्ये न सुखे तथा ॥
स्पृहा यस्या यथा पत्यौ सा नारी धर्मभागिनी ॥
श्वश्रूश्वशुरयोः पादौ तोषयन्ती गुणान्विता ॥
मातृपितृपरा नित्यं या नारी सा तपोधना ॥
पतिर्हि देवो नारीणां पतिर्बन्धुः पतिर्गतिः ॥
पत्या गतिः समा नास्ति दैवतं वा यथा पतिः ॥

आछा स्वभाववाळी, आछो वचन बोलवाळी, आछा नेमवाळी, आछा दरसणवाळी स्त्री—पुत्र का मुख के समान वारवार पति को मुख देख्या करे छे. जो धर्म सूं चालवाळी पतिव्रता स्त्री छे वा देव के समान पतिने वारवार देखवो करे. पति कदास कठोर बोले अथवा क्रोध की दृष्टि सूं देखे तो भी जो स्त्री प्रसन्नमुख रव्हे वींने पतिव्रता जाणणी. जो स्त्री चन्द्र, सूरज, झाड़ इत्यादि पुरुष जाति का पदार्थांने नहीं देखे ओर पति की सेवा मांहे रव्हे वीं स्त्रीने धर्म सू चालवावाळी जाणणी. जो स्त्री दरिद्री, रोगी, दीन, थक्या हुवा पति की पुत्र समान सेवा करे वीं स्त्रीने धर्म सूं चालवाळी जाणणी. जो स्त्री सदा प्रीति सूं, नम्रता सू ओर प्रसन्नता सूं पति की उपासना तथा सेवा करे वींने धर्मात्मा जाणणी. जी स्त्री की काम मांहे, भोग मांहे, वैभव मांहे ओर सुख मांहे लालसा नहीं, उशी पति मांहे होवे वींने धर्मात्मा जाणणी. जो स्त्री गुणवती होकर सासूसुसरांने संतोप देवाळी ओर नित्य मातापिता का कह्या परवाणे चालवाळी वींने तपोधन

(तप छे धन जींको) स्त्री जाणणी. पतिही स्त्रियां को देव छे, पतिही स्त्रियां को बन्धु छे ओर पतिही स्त्रियां की गति छे. व्यांने पति समान दूजी कोई गति नहीं ओर पति समान दूजो कोई दैवत नहीं. इशा आचरण सूं ओर धर्म सूं ब्रह्मदेव की सावित्री, कौशिक की शची, मार्कंडेय की धूमोर्णा वैश्रवण की ऋद्धि, वरुण की गौरी, सूर्य की सुवर्चला, चंद्रमा की रोहिणी, अग्नि की स्वाहा ओर कश्यप की अदिति इत्यादि तथा सीता, मंदोदरी, तारा, अहल्या, द्रौपदी, अरुंधती, अनुसूया—कितनीही पतिव्रता हुई छे. तिकारा चरित्र सूं ओर स्मरण सूं मनुष्य को पाप दूर होवे छे.

सुगनी०—(बिचार करने) इशा नेम धरम सूं चालणो लुगायांने घणो ही आछो छे. खाली आछोही नहीं व्यांको उद्धार होकर कुळ को भी उद्धार होवे छे.

रामर०—देखो, महाभारत का अनुशासन पर्व मांहे पतिव्रता स्त्री का संबंध मांहे एक कथा कही छे के—देवलोक मांहे सुमना नामक स्त्री शांडिली नामक पतिव्रताने पूछवा लागी के, हे साध्वि ! तू किशा आचरण सूं ओर धर्म सूं पापां को नाश करने इण देवलोक माहे आई ? अग्नि जिशो थारो तेज छे, तारा जिशी चमके छे ओर गुणवती होकर सारां के ऊपर बैठी हुई शोभ रही छे. ये इशी बातां थोड़ासा तप सूं, थोड़ासा दान सूं ओर थोड़ासा नेमधर्म सूं कदेही प्राप्त होवाळी नहीं.—शांडिली सुणकर बोली के बाई सुमना ! म्हे कदेही भगवा कपड़ा पहऱ्या नहीं, कदेही वल्कल धारण कीना नहीं, मूंड मुंडायो नहीं ओर जटा भी बधाई नहीं. फकत म्हे कोई बखत भी कठोर अथवा कड़वो बचन पतिने सुणायो नहीं. देव पितर तथा ब्राह्मणां की पूजा मांहे तथा सासूसुसरां की सेवा मांहे भूल करी नहीं. मन मांहे भी कुविचार लायो नहीं. पर घर तो दूर, घर का दरवाजा की थळी पर भी पांव रक्ख्यो नहीं. कींको भलो बुरो चींत्यो नहीं. कींको भेद खोल्यो नहीं. कींने देख हंसी नहीं. दूजा पुरुष सूं बातचीत तो रही, नजर उठाकर भी वींके कानी झांकी नहीं. बारे सू

पति आया वरावर ऊभी होकर नमनताई सूं पति का चरणां माहे दृष्टि राख कर आसण बिछाकर प्रेम सूं पूजा कीनी. पति खायो सू खायो, पति पीयो सू पीयो ओर पति दीनो सू वरत्यो. प्रवास मांहे पति गया पीछे मंगलगीत गाया नहीं, अंजन कीनो नहीं, मंगलस्नान कीनो नहीं, चन्दन लगायो नहीं, पुष्प धारण कीना नहीं ओर कोई भी आनन्द उत्साह को काम कीनो नहीं. सुख सूं सूता हुवा पतिने कदे जगाकर त्रास दीनो नहीं ओर कोई भी चीज के तांई कदेही पतिने सतायो नहीं—इशा आचरण ओर धर्म सूंही म्हे देवलोक मांहे इण तरह विराज रही छूं.

सुगनी०—(खुशी होकर) इशी पतिव्रता थी जरांही तो आगला जमाना की लुगायांने आगली पाछली सब मालम पड़ जाती थी.

रामर०—इण मांहे कांई शक छे. महाभारत का वनपर्व मांहे पतिव्रता स्त्री को प्रभाव इण मुजब वर्णन कीनो छे—एक कौशिक नांव को ब्राह्मण तपश्चर्या करतो हुवो झाड़ के नीचे वेदपाठ कर रह्यो थो इतना मांहे झाड़ पर वैठी हुई एक बगळी वीं पर वींट कर दी. झट ऊपर क्रोधभरी दृष्टि सूं ब्राह्मण के देखता पाण बगळी जळबळकर नीचे गिर पड़ी ! इण तरह मरी हुई बगळीने देखकर ब्राह्मणने घणो त्रास आयो ओर उठे सू ऊठकर गांवोगांव भिक्षा मागतो चाल्यो. एक दिन एक गांव मांहे जाकर एक ब्राह्मण के घरां भिक्षा मांगी. ब्राह्मणी बोली के जरा ठहर जावो भिक्षा घालूं छूं. उतना मांहे बारे सू वींको पति आ गयो. झट ऊठकर ब्राह्मणी पतिसेवा मांहे तत्पर हुई तिकासूं ब्राह्मणने भिक्षा नहीं दे सकी. ब्राह्मण वैठयो वैठयो अखता गयो. पति की सेवा पूरी हुवा पीछे ब्राह्मण के पास ब्राह्मणी भिक्षा ले गई. जद अखतायोड़ो ब्राह्मण क्रोधदृष्टि सूं ब्राह्मणी कानी देखकर वोल्यो के " भिक्षाने इत्ती देर ? " जरां ब्राह्मणी हाथ जोड़कर बोली के महाराज, म्हे पतिसेवा मांहे निमग्न थी तिकासू आपने भिक्षा नहीं दे सकी, पति सू—आप तो कांई—प्रत्यक्ष ईश्वर भी अधिक छे नहीं. आप म्हारे कानी क्रोध सूं देख रह्या छो सु म्हे वा झाड़ पर की बगळी छूं नहीं, के

आपकी क्रोधभरी दृष्टि सूं जळ मरूंली ! ब्राह्मण सुणकर चकित हो गयो, ओर हाथ जोड़कर बोल्यो के माता ! तने आ बात कियान मालम हुई ? जरां बा बोली के पति की सेवा के पाण मने सब आगली पाछली मालम पड़े छे. क्रोध करणो ब्राह्मण को काम छे नहीं, जरां ब्राह्मण बोल्यो के हे साध्वि ! मने भी कोई इशो ग्यान को रस्तो बता. जद ब्राह्मणी बोली के तू मिथिला पुरी मांहे जाकर उठे एक कसाई छे बींने मिल. बो माता-पिता की सेवा मांहे तत्पर रह्या करे छे सू तने बो सारो ग्यान सिखा देसी, पुत्रने मातापिता की सेवा ओर स्त्रीने पति की सेवा सब कुछ देबा-वाळी छे.

सुगनी०—ये सारी बातां ठीक छे, पण, म्हे पति की छाया छां. पति बिना म्हे कुछ भी नहीं कर सका, ओर पति के कर्‌या बिना म्हे पतिव्रता भी नहीं हो सका. जियान वसिष्ट ऋषि का प्रभाव सूं अक्षमाला ओर मंद-पाल ऋषि का प्रभाव सूं शारंगी नीच कुळ की होकर भी पति का बरा-वरी की होकर पतिव्रता बणी. इयान कितनीही स्त्रीयां नीचि कुळ की होकर भी आप आपका पति का आछा बरताव सूं श्रेष्ठ बणी छे. सार बात—पति म्हांने वणाशी तिका मुजब म्हे बण जाशां.

रामर०—अठेही तो सारी बात छे. विवाह विधि आ संसार की पहली सीढ़ी छे. उठे दो जीव एकत्र होवे छे. अर्थात् वि=वह—विशेष हेतु धारण कर साथ होणो. धर्माचरण सूं आयुष्य बिताबा के तांई एकमेक साथी होणा—ओही विवाह शब्द को अर्थ छे. **मालती** ओर **माधव** का विवाह के समय **कामन्दकी** बोली छे के—

प्रेयो मित्रं बन्धुता वा समग्रा
सर्वे कामाः शेवधिर्जीवितं वा ।
स्त्रीणां भर्त्ता धर्मदाराश्च पुंसां
इत्यन्योन्यं वत्सयोर्ज्ञातमस्तु ॥

हे वत्स! आज सू थेही एकमेक का प्रिय मित्र ओर सारा भाईबन्द छो. सारी इच्छा, धनमाल ओर जीवन थां एकमेक को—स्त्रीने पति ओर पतिने स्त्री छे. आ वात खूब ध्यान मांहे राखजो. इसी वास्ते—

अर्थस्य संग्रहे चैनां व्यये चैव नियोजयेत् ॥
शौचे धर्मेऽन्नपंक्त्यां च पारिणाह्स्य चेक्षणे ॥
प्रजनार्थं महाभागाः पूजार्हा गृहदीप्तयः ॥
स्त्रियः श्रियश्च गेहेषु न विशेषोऽस्ति कश्चन ॥

धन को संग्रह ओर खर्च भी लुगायां का हाथ मांहे राखणो. सारी वात की सफाई, धर्म, भोजन कराणो तथा घर को कारवार इणका हाथ मांहे राखणो. संतान के तांई महाभाग, सत्कार के योग्य ओर घर की शोभा—स्त्री मांहे तथा लक्ष्मी मांहे एक सरीखी छे. स्त्री के लरेही गृहस्थाश्रम छे. स्त्री विना घर नहीं. जंगल हो, पर्वत हो, मार्ग हो स्त्री साथ हुई तो झाड़ के नीचे भी घर छे. स्त्री विना धन, धान्य, दासदासी पूर्ण राजा को महल भी वीयावान जंगल छे!

सुगनी०—पण आजकाल म्हांकी इशी योग्यता कठे छे के म्हांके ऊपरही सारा घर को आधार रव्हे, ओर पुरुष म्हांको इयान आदर करे?

रामर०—क्यूं नहीं? थांपर घर कोही कांई—सारा जगत को आधार छे! थे पढ़्या लिख्या नहीं ओर थांने घर संसार को भी वरावर शिक्षण नहीं तिकासूं थाको आदर नहीं तथापि—

सर्वेषामपि चैतेषां वेदस्मृतिविधानतः ॥
गृहस्थ उच्यते श्रेष्ठः स त्रीनेतान्बिभर्त्ति हि ॥
यथा नदीनदाः सर्वे सागरे यान्ति संस्थितिम् ॥
तथैवाश्रमिणः सर्वे गृहस्थे यान्ति संस्थितिम् ॥

वेद ओर स्मृति का विधान सूं सारा आश्रमा मांहे गृहस्थाश्रम श्रेष्ठ छे. कारण उठे तीन आश्रमवाळां को निभाव होवे. जियान नदी नद सारा

समुद्र मांहे जा मिले तिका मुजब ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ ओर संन्यासी गृहस्थ के पास आवे. इण परसू सिद्ध छे के सारा आश्रमां मांहे गृहस्थाश्रम श्रेष्ठ छे कारण उठे सारां को सत्कार होवे. भगवान् मनु कव्हे छे के—

तृणानि भूमिरुदकं वाक् चतुर्थी च सूनृता ॥
एतान्यपि सतां गेहे नोच्छिद्यन्ते कदाचन ॥

अर्थात् कोई अतिथि (पावणो) आयो के गृहस्थी का घरे मांहे कुछ भी नहीं हुवो तो भी बैठबा के तांई घास को आसन, निदान स्वच्छ जमीं, तिस्याने पाणी ओर " आवो, बिराजो " इशा आदर का बोल—इणकी तो कोई भी गृहस्थी के घरां कमती छे नहीं. फेर कींको क्यूं नहीं आदर करणो ?

सुगनी०—(हंसकर) अरे राम ! बारला आदमी को इशो आदर करणो तो दूर, बापड़ाने लल कारकर घर के बारे काढ़ देणो आजकाल का लोग जाणे छे !

रामर०—जरांही तो गृहस्थाश्रम को धर्म बराबर सधे नहीं, तिकासूं नाना प्रकार का दुःख संकट भोगणा पड़े छे. महाभारत का शान्ति पर्व मांहे एक गृहस्थाश्रम का संबंध की अपूर्व बात कही छे के—एक कबूतरी तथा कबूतर एक झाड़ पर घर करने रहता था. एक दिन चारो लावाने कबूतरी बारे गई उठे बींने पारधी पकड़ ली. वो पारधी बीं कबूतरीने लेकर बींकाही रहवा का झाड़ के नीचे आकर बैठयो. बींने थंड सूं ओर भूख सूं व्याकुळ देखकर बंधी हुई कबूतरी नजीक आया हुवा आपका चिंतातुर कबूतरने बोली के " ओ पारधी म्हारो गळो काटसी तो खरो पण इण बखत ओ आपणो अतिथि (पावणो) छे ओर थंड सूं तथा भूख सूं व्याकुळ छे. सू ईंकी सहाय करणी चाहिजे. " जरां गृहधर्मने याद कर कबूतर आपकी चोंच सूं घास, काड़्या ओर सूखा पत्ता इकट्ठा करकर जळती हुई लकड़ी जंगल मांहे सूं लाकर अंगार जळा दी, ओर बींकी

थंड दूर करी ! अब खावाने देवा के तांई आपका घर मांहे क्यूं भी नहीं जाणकर कवूतर सिलगी हुई अंगार मांहे कूद पड्यो के आपका शरीर का भून्या हुवा मांस सूं वींकी भूख दूर हो जावे ! इशो ओ गृहस्थाश्रम कठिन छे. ओर ईंको आधार मुख्य स्त्रियां छे.

सुगनी०—म्हे गृहस्थाश्रम की आधार तो छां पण, म्हांने इशो ग्यान भी तो होणो चाहिजे. म्हांका मावाप तो म्हांने बाळपणा मांहे खेलणो, कूदणो, लड़णो, झगड़णो, ओर बुरा भला गीत गाळ गाणा गुवाणा सिखावे. जरा क्यूं समझवा लाग्या नहीं लाग्या के घर को काम—झाड़णो बुवारणो, नीपणो पोतणो, चोको बरतण, पीसणों पिसाणो, घणो तो रसोई पाणी ओर वखत हुवो तो टांको टेको बस ! इणके आगे कुछ नहीं! पढ़वा लिखवा सूं लुगाई विधवा हो जावे इशी समझ जेठे छे उठे आंक सीखवा को कामही कांई ! भलां, सासरे गया तो उठे पीर सू भी ज्यादा फजीतो ! सारां की गुलामगिरी करता करता नाक मांहे दम और धणीजी की धूमधाम ओर मारपीट ! लुगाई मोट्यार की क्यूं भी पिछाण नहीं ! जीं जात मांहे हजारों मोट्यार ठोठ छे उठे लुगायां का सुधार की आशाही कांई ? लुगायां को सुधार नहीं उठे तांई गृहस्थाश्रम को फळ भी नहीं !

रामर०—(खुशी होकर) इण मांहे कांई झूठ छे ? जरांही भगवान मनु कव्हे छे के—

स्वां प्रसूतिं चरित्रं च कुलमात्मानमेव च ॥
स्वं च धर्मं प्रयत्नेन जायां रक्षन्हि रक्षति ॥
पतिर्भार्यां संप्रविश्य गर्भो भूत्वेह जायते ॥
जायायास्तद्धि जायात्वं यदस्यां जायते पुनः ॥
यादृशं भजते हि स्त्री सुतं सूते तथाविधम् ॥
तस्मात्प्रजाविशुद्ध्यर्थं स्त्रियं रक्षेत्प्रयत्नतः ॥

अरक्षिता गृहे रुद्धाः पुरुषैराप्तकारिभिः ॥
आत्मानमात्मना यास्तु रक्षेयुस्ताः सुरक्षिताः ॥

प्रयत्न करने एक जाया का रक्षण सूं आपकी संतान को, निज को ओर स्वधर्म को रक्षण होवे छे. पति आपकी भार्या मांहे प्रवेश करने गर्भरूप होकर उत्पन्न हुवा करे छे. आपकी जाया मांहे पुत्ररूप आप उत्पन्न होबा सूं जाया को जायापणो होवे छे. लुगाई जिशा पुरुष को सेवन करे उशोही पुत्र उत्पन्न होवे. ईंके वास्ते शुद्ध संतान के तांई प्रयत्न सूं लुगाई को रक्षण करणो चाहिजे. घर का आदमी स्त्रियांने घर मांहे रोक रखवां सूं व्यांको रक्षण होवे इशी बात नहीं. तो, धर्म का प्रभाव सूं जो आपने आप रक्षण करबा मांहे समर्थ होवेली बाही लुगाई सुरक्षित जाणणी. इण ऊपर सू सार बात आही छे के "रही तो आपसे नहीं तो सगा बापसे" इशी चंचल लुगायां पर पूरो अंकुश राखकर प्रेम सूं उणको रक्षण करने शुद्ध संतान की प्राप्ति कर लेणी पाहिजे. (बीच मांहे)

सुगनी०—आछी बुरी संतान होणी कींके हाथ छेजी ? आदमी का करबा सूं कांई होवे ? ये सारी बातां भगवान् के हाथ छे.

रामर०—ठीक, भगवान् के तो हाथ सबही कुछ छे. पण—आहार, निद्रा भय और मैथुन—पशु तथा मनुष्यने सरीखा छे. फकत मनुष्य मांहे ग्यान अधिक छे. मनुष्य मांहे ग्यान नहीं होवे तो पशु मांहे ओर मनुष्य मांहे कुछ भी फरक नहीं. परमेश्वर म्हांने जो ग्यान दीनो छे तिका परसूं हर एकने ये बातां जाणबा की शक्ति छे के—

स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय ! जायते वर्णसंकरः ॥
संकरो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च ॥

गीता मांहे अर्जुन कव्हे छे के कृष्ण भगवान् ! लुगायां बिगड़ जाबा सूं वर्णसंकर हो जावे ओर कुलघाती का कुल को संकर नरक ले जावे. इण मांहे कांई शंका छे—आजकाल आपणा देश मांहे शुद्ध बीज को लोप होतो

चल्यो तिकासूं प्रजा दुर्बल ,बुद्धिहीन, कुलहीन, रोगी ओर दोगली पैदा होवा सूं सब की हीनदशा हो गई !

सुगनी०—इण मांहे कांई शक छे. खेत म्हे छां ओर बीज थे छो. जिशो बीज खेत मांहे बोयो जासी उशोही फळ लागसी.

रामर०—इसी वास्ते—

> संतुष्टो भार्यया भर्त्ता भर्त्रा भार्या तथैव च ॥
> यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम् ॥

जिण घर मांहे सदा लुगाई सूं धणी राजी ओर धणी सूं लुगाई राजी वीं घर मांहे निश्चयही कल्याण होवो करे. तात्पर्य ओही छे के धणीधिराणी एक चित्त सूं रहकर, आपका कुलधर्म सूं चालकर ओर नीती सूं धन कमाकर संसारयात्रा करणी.

सुगनी०—ये सारी वातां प्रेम पर छे. दोन्यां का प्रेम विना कुछ भी नहीं

रामर०—हो हो, थांको प्रेम छे जरांही तो ये सारी वातां थे प्रेम सूं सुणकर प्रेम बधा रह्या छो. प्रेम आनन्द को घर, प्रेम स्नेह को घर, प्रेम भक्ति को घर, प्रेम भाव को घर, प्रेम प्यार को घर, प्रेम मित्रता को घर, प्रेम सज्जनता को घर, प्रेम एकता को घर ओर प्रेम कल्याण को घर छे. प्रेमही मनुष्य को जीवन, प्रेमही मनुष्य को आधार, प्रेमही मनुष्य को धन, प्रेमही मनुष्य की माता, प्रेमही मनुष्य को पिता, प्रेमही मनुष्य को बन्धु ओर प्रेमही मनुष्य की स्त्री छे. प्रेम सूंही सत्कार, प्रेम सूंही आदर, प्रेम सूंही प्रीति, प्रेम सूंही मान, प्रेम सूंही प्रतिष्ठा, प्रेम सूंही सहानुभूति, प्रेम सूंही रक्षण ओर प्रेम सूंही निर्वाह छे. प्रेम के आगे धन कुछ नहीं, प्रेम के आगे शरीर कुछ नहीं ओर प्रेम के आगे दुनिया भी कुछ नहीं ! प्रेम के वास्ते स्त्री पुरुप मोह गया, दीवाना हो गया, दुनिया मांहे सू जाता रह्या ! प्रेम के वास्ते स्त्री गुलाम हो गई, पुरुप दास हो गयो ओर प्रेम के वास्ते स्त्री जळ मरी, पुरुप प्राण त्याग दिया ! प्रेम इशोही अपूर्व चीज छे !

सुगनी०–(नजीक आकर) लावो जरा थोड़ो इण दासीने भी देवा की कृपा करो.

रामर०–(हंसकर) थोड़ो क्यूं– सगळोही क्यूं नहीं ?

सुगनी०–सगळा की नहीं, आधा की म्हे मालक छूं.

रामर०–हां हां, आप अर्धांगिनी छो तिकासूं ?

सुगनी०–जरांही तो म्हे म्हारा हिस्सा को मांग रही छूं.

रामर०–कांई ?

सुगनी०–प्रेम !

रामर०–(ठोड़ी ऊपर उठाकर) एक प्यार विनाही ?

सुगनी०–एक क्यूं, दस पांच क्यूं नहीं ?

रामर०–खाली प्यारही ?

सुगनी०–नहीं नहीं, प्रेम के साथ.

रामर०–कांई ?

सुगनी०–आत्मसमर्पण !

रामर०–कितनी देर के तांई ?

सुगनी०–इण जनमही के तांई नहीं, जनम जनम के ताई !

रामर०–तो फेर चालो, अब देर क्यूं ?

सुगनी०–देर काय की, तो पधारो !

(दोनू हाथ पकड़कर हंसता हंसता अन्दर जावे छे.)

प्रवेश चौथो.

ठिकाणो—ब्रजलालजी की दुकान.

(गणेशरामजी आवे छे.)

गणेश०—(मन मांहे) वाह ब्रजलाल सेठ, धन छे थांने ! थाके जिशा नर मारवाड्यां मांहे होणा नहीं ! जिण जात का लोग " हाय पैसो, हाय पैसो" करने पेट के पाटो बांधकर पैसो कमावे, "चमड़ी जावो पण दमड़ी मत जावो " इण तरह पैसाने सांचे तथा पैसाके तांई धर्मने गिणे नहीं, कुळने गिणे नहीं ओर जातने गिणे नहीं—उण जात मांहे इशा नर को उदय होणो म्हां लोगां की पुण्याई कोज फळ थो. पण—हे **राम** !—म्हांकी पुण्याई घणी ओछी तिकासूं बापड़ा को धन जलदीही पूरो हो गयो ! म्हां जिशा कित्ताही गरीब आदम्यां को भलो हो गयो, कित्ताही को रुजगार चाल गयो ओर कित्ताही नोकर का सेठ बण गया ! धन छे धन ! थारी महिमा ! थारे विना दुनिया मांहे कुछ भी नहीं. निर्धन की माता बोले म्हारी कूख लजाई, पिता बोले कपूत पैदा हुवो, भाई बोले दुस्मण खड़्यो हुवो, बहण बोले इशो भाई क्यूं हुवो, लुगाई बोले इशा भिखारी धणी को कांई करूं ओर साराही बोले आछो घर डुबोवू हुवो ! इणका मिनखपणा को, इणका कुळ को, इणकी बात को, ओर इणका नांव को कठे आदर सत्कार नहीं ओर क्यूं ग्यान गिणती भी नहीं. ऊंची जात को होकर भी निपत्तर, ऊंचा कुळ को होकर भी हळको ओर ऊंची चालचलन को होकर भी नीचो ! पैसावाळा की सब बातां इणसूं उलटी छे. वो हळका को भारी, नीच को ऊंचो, कुजात को सुजात, मूरख को पंडित, बावळा को शाणो, नालायक को लायक ओर पत्थर को देव हुवा करे छे !

(इतना मांहे ब्रजलालजी आवे छे.)

ब्रजला०—(उदासी सूं) मुनीमजी, आज हुण्ड्यां की कित्ती भुगतावण छे ?

गणेश०—सेठ साब, आज की तो बीस हजार की छे. पण, अस्सी हजार की हुण्ड्यां आज ६।७ दिनां सूं खड़ी छे. रोजीना लोगां का तथा दिसावर का तगादा आवे छे. काई करां ? कठे तांई व्यांने जवाब देवां ? ये तो आड़त्या की लिख्योड़ी हुण्ड्यां छे जरां कुछ नहीं. अवार घर की दुकान की अथवा हाथ की लिख्योड़ी होती तो मुस्कल हो जाती. एक लाख की तो हुण्ड्यां की भुगतावण छे ओर पचास साठ हजार को बदलो चाल रह्यो छे. पचास वार का बदला मांहे सारी हुंडी गारत हो जाया करे छे ! रातदिन फिकर हो रही छे. क्यूं सूझे नहीं—कांई करणो ओर कांई नहीं करणो.

(इतना मांहे गुलाबचन्दजी आवे छे.)

गुलाब०—(हाथ जोड़कर) जयगोपाल सेठ साब ! (गादी पर बैठे छे.)

ब्रजला०—गुलाबचन्दजी, आज पोतेबाकी कांई छे ?

गुलाब०—(वही देखकर) चार हजार छे सो बंयालीस नो आना छे.

ब्रजला०—(विचार मांहे पड़कर) मुनीमजी, ओर आज कोई का रुपया आवाळा छे ?

गणेश०—घणा तो दो चार हजार आजावो बस ! एक दो दिसावर सूं बदलो कराकर दरसणी हुण्ड्यां मंगाई छे. आगई तो फेर महीनो पंधरा दिन काम चल जासी.

(इतना मांहे मोतीलालजी दलाल आवे छे.)

मोतीला०—(हाथ जोड़कर) जय गोपाल सेठ साब, बोझ बराबर. रुई सित्तोत्तर चार आना. अफीम की बेचवाळी छे. रुई की लेवाळी छे.

ब्रजला०—भाई म्हे तो अफीम के माथे मांगा कोनी. जो सौदो कीनो बीं मांहे नुकसाणही गयो. रुई के माथे मांगा छां सू अबके पोते करी नहीं. अब तेजी मांहे लेबा को दिल होवे नहीं. ओर पूनम भी नजीक आगई. अब तो भाव कट्या पीछे नवो सौदो नीकळ्या सू बात.

मोतीला०—सेठ साव अठे दूजो तो कोई छे नहीं. आपां सारा घर काही छा. म्हे आपको लूणपाणी खायो छे. अफीम का बोझ तथा पेटी आपके पेते घणी छे. आधा मांहे आप एकला छो ओर आधा मांहे सारो बजार छे. आज भाव को घणो फरक पड़ गयो छे. कठे अस्सी एकासी ओर साठ इकसठ ? घर जाण्या मर जाण्या छे ! सू आप दो तीन सराफाने अवार सू मिलाकर ऊंचा भाव का सौदा करावो तो वात की वात मांहे दस टका को फरक पड़ जावेलो. तिका मांहे आधो नुकसाण बच जासी. इण मांहे आपकी ईजत मांहे फरक नहीं आसी ओर काम जठे को उठे बण्यो रहसी.

व्रजला०—मोतीलालजी, थे तो म्हारा फायदा की वात कव्हो छो पण, आजकाल दिनदसा इशी उलटी छे के जो करूं सू उलटो होवे छे. जकाने हजारों रुपया देकर आदमी वणा दिया वे अव पूरी वात भी करे नहीं. पाछा पैसा मांग्या के दुस्मण हुवा ! थे ओर मुनीमजी मिलकरही कोई वात वणावो तो ठीक छे. मने तो आजकाल कुछ भी सूझे नहीं.

मोतीला०—सेठ साव, यूं कांई हीमत हारो ? ओ तो बेपार छे. फेर जका मांहे सट्टो ! एक हाथ सोना मोती को तो दूसरो पत्थर काकरां को ! इण मांहे घबरायां काम चाले नहीं. ईंने तो नाव की जियान खेवटणो चाहिजे. अणी चूकी के धार मारी ! म्हे तो आपने कित्तीही वार कह चूक्यो छूं. सारी वात को वन्दोवस्त हो जासी. हाल तो आपके सिर पर वड़ा भाई मायत वैठ्या छे. व्यांने किशो थांको फिकर कोनी कांई ?

व्रजला०—भाई, वे तो मायत छेही. इशो भाई मिलणो घणोही दुर्लभ छे. म्हे अभाग्यो जरां उणसू न्यारो हुवो. नहीं तो म्हारे माहे आज ओ दुख क्यूं पड़तो ! अव कांई—अव तो न्यारा घरां का न्यारा वरणा ! खैर, अव थे ओर मुनीमजी मिलकर क्यूं तजवीज वैठावो. हरकचन्दजी ओर मगनमलजी तो मान लेसी पण, रामनारायणजी कढ़ी विगाड़ आदमी छे. कुण जाणे—म्हे वींको कांई किनो छे—म्हारे सू तो जरां देखूं जरां आंटही रावो करे !

मोतीला०—सेठ साब, आपके सामने आज सराफा मांहे बोलबाळो कुण छे ? भाव कटसी तो आपणीही दुकान पर के नहीं ? रामनारायणजी की आप फिकर मत करो. बो आदमी पढ्यो लिख्यो शाणो छे. वे आपका वरताव सूं सदा नाराज रव्हे छे. तिकासूं आप आंट जाणो छो. पण बो घणो लायक आदमी छे. आप बींका उपदेश परवाणे चालता तो आज ओ इशो परसंग आतो नहीं. पण जाण्या, फेर भी म्हे बोलूं जियान तजबीज कर लेशो तो वात बणी रह जाशी.

ब्रजला०—ठीक छे तो थांके ध्यान मांहे आवे सू करो.

मोतीला०—बस, अब आपने इत्तोही कव्हणो छे के हूंशारी सूं काम करो. जावूं छूं ? आज तो सौदोसूत क्यूं भी हूक्यो नहीं. (जावे छे.)

ब्रजला०—गणेशरामजी, मोतीलालजी का कव्हणा पर कांई ध्यान बैठे छे ?

गणेश०—ध्यान कांई बैठे छे ? मुम्बाई कलकत्ता जिशा बड़ा बड़ा दिसावरां मांहे तो इयान की कांई इणसूं भी ज्यादा हुवा करे छे. बरस बरस बळण अटक जाया करे छे. फेर ई वात को तो कांई ?

ब्रजला०—बात तो क्यूं भी नहीं, वणबा जिशी छे. पण सारो बजार एक कानी ओर आपां एक कानी छां ! किण सूं मेळमाडो राख्यो नहीं, फेर लोगांने आपणी कांई परवा ? आपणा लोगां मांहे पहलीज एको नहीं, फेर इशा परसंग मांहे तो आगे होकर जाणबूझने बिगाड़बा की करसी ! आपणा मांहे सू एक दुकानदार को नुकसाण हुवो तो नाराज होवा के बदले राजी होसी ओर बींने काळी धार डुबोबा की करसी ! फेर आपणे साथ तो कींकी भी भलाई नहीं. मने तो आ वात दोरीही बणती दीसे छे.

गुलाब०—सेठ साब, धीरज राखो. "धीरज मोटी बात छे" सारी बात चोखीही होशी. हाल तो आपका सिर पर छत्र कायम छे. ओर सेठाणीजी को सत भी पूरो छे. आपने आगे आगे काम आसी.

गणेश०—सेठाणीजी जिसी लुगाई तो होणी घणी दुर्लभ छे. रातदिन आपके तांई वासवरत तथा सत्यनारायण वावा की पूजापत्री करने सारो शरीर गाळ दीनो छे !

गुलाव०—चालो, कंवर साव की सगाई होकर गहणो घलीज गयो—इत्ती तो भी व्यांका जीवने इशी वेळ्यां कुछ नीरांत मिली.

गणेश०—हूँ ! सगाई की ओर गहणा की काई कमती थी ?

गुलाव०—(मन मांहे) इयानंही झूठी साची खुशामद करकर सेठजीने पूरा कर दिया.

(इतना मांहे जगन्नाथप्रसाद वकील आवे छे.)

जगन्ना०—(हाथ उठाकर) जयगोपाल सेठ साहव ! क्या हो रहा है ?

व्रजला०—(ऊठकर) पधारो वकील साव, वणा दिना सूं आज किरपा कीनी ?

जगन्ना०—क्या मुझको आये वहुत दिन हो गये ? वहुत तो १५।२० दिन हुए होंगे. कैसा क्या हाल है ? व्यौपारधन्धा कैसा क्या चल रहा है ?

गणेश०—जिशो समयो छे उशो वेपार छे. अवार तो सारी वात की मंदी छे. अवके सारा लोग नुकसाणी मांहे छे.

जगन्ना०—क्यों भला ? हमारे श्रीकिसन सेठने तो इस वर्ष कोई चार पांच लाख कमाये. अव थोड़ेही दिनों में वे एक दस लाख रुपये की कपड़े की कल खोलनेवाले हैं. एक एक हजार रुपयों का शेअर रक्खा जावेगा. पर आपको ऐसा व्यौपार ठीक नहीं लगेगा. आपको तो वही तेजी मन्दी चाहिये !

व्रजला०—नहीं वावू साव, म्हे लोग सेर पंसेरी मांहे काई समझां ? म्हांका भाई साव भी कांई समझे ? आप लोगां का कहवासुणवा सूं क्यूं

कर लेवे तो मालम नहीं. नहीं तो भाई साब इशी बातां मांहे कदे पड़बाळा नहीं. वे कदे खाली मालताल को तो सौदोसूत करे करावे कोनी तो कळ-बिळ का काम मांहे कठे सू पड़े ? बाबू साब, ये इशी कळां मांहे जीव घणा मरे. ओ इशो म्हां लोगां को काम छे नहीं.

जगन्ना०—फिर किन लोगों का काम है ? क्या नाई चमारों का काम है ? इतनी दुनिया की उलटपलट हो गई है और दिनोंदिन जहां तहां नई रोशनी चमक रही है वहां, अभी आप लोग ऐसे अंधेरेमें पड़े हुए हैं—बड़ी दुःख की बात है ! जरा आपके भतीजे साहब की तरफ तो देखिये-कैसे विद्वान्, सुशील और व्यापारी हैं. आपने अलग होकर लाखों रुपये खोये, उन्होंने लाखों कमाये ! इस परसे भी आपको ख्याल नहीं होता ? आपने उनको कैसा तंग करके अपना हिस्सा लिया था तौभी उनकी आपके लिये कितनी सहानुभूति है—यह क्या कम संतोष की बात है ? खैर, मैं कुछ आपसे एकान्त में बोलना चाहता हूं.

ब्रजला०—भलांही बोलो साब, अठे दूजो कुण छे ?

गुलाब०—(मन मांहे) ठीक छे. वड़ा सेठजी भेज्या दीसे छे. कुछ आपणी खटपट सफळ तो हुई. भाई होणा तो इशाही होणा.

जगन्ना०—नहीं सेठ साहब, सब को यहां से हटा दीजिये.

ब्रजला०—ठीक छे तो—मुनीमजी, गुलाबचन्दजी थे जरा पली कानी हो जावो. (दोन्यू बारे जावें छे.)

जगन्ना०—(मन मांहे) ऐसे दुष्ट भाई को श्रीकिसन सेठ जैसा भाई मिलना कम सौभाग्य की बात है ? आज मुझे कहकर भेजा है कि भाई की कोई भी चीज कहीं न जाने पावे. तुम्हारे नाम पर या और किसी के नाम पर सब हिकमत अमली के साथ खरीद ली जावे (बड़ा सू) आइये सेठ साहब, मेरे नजदीक आइये.

व्रजला०–(नजीक बैठकर) फरमावो बाबू साब, अब कोई छे नहीं.

जगन्ना०–फरमाना विरमाना क्या है–हमने आपको कई बार समझाया पर आपने मुतलक माना नहीं. खैर, उसका नतीजा भी ठीक निकला नहीं. जो होना था सो हुआ. हमारा आपका पुरुखाओं से संबंध है इस लिये आपकी हमारी आवरू और वात एकही है. इस वक्त आपको पांच-पचास हजार की दरकार हो तो मैं मदद कर सकता हूं. मेरे पास जितनी रकम है उतनी सब आपही की है. आप अच्छी तरह जानते हैं कि हमारे पास कुल पचास साठ हजार रुपया नग्द हैं. चाहिये जब आप ले सकते हैं पर, इस पर पूरा ख्याल रहे कि इतनी रकम से आपका काम संभलता हो तो मेरी रकम पर हाथ डालियेगा वरना और कोई वन्दोबस्त किया जावेगा. मैं सुनता हूं आपको इस वक्त ढाई लाखके करीव देना है और कमसे कम सट्टे में इतनाही नुकसान है. वोलते वोलते दिन निकल जावेंगे और साथ साथही आपकी आवरू और नाम डूब जावेंगे ! कहिये क्या बात है ?

व्रजला०–नहीं नहीं बावूजी, कुण बोले छे–इतनो नुकसाण छे ? यूं तो फेर वेपार छे. उण मांहे नफो होता देर नहीं ओर नुकसाण भी लागता देर नहीं.

जगन्ना०–नहीं सेठ साहव, इस वक्त आपको कोई भी वात विलकुल नहीं छिपाना चाहिये. मैं आपका हूँ, आप पूरा विश्वास रखिये. कभी आपकी कही हुई वात किसी को मालूम न होगी और न कभी धोखा होगा. वनेगी वहां तक कोशिस होके आपकी इज्जत वचाई जावेगी.

व्रजला०–(मन मांहे) कांई करणो–वात कहता सरम तो आवे पण नहीं कही तो भी थोड़ा दिनां मांहे सारांने मालूम पड़वाळीही छे. अव तो वात कह्याही, ठीक होसी नहीं तो फेर जहर खावा को परसंग आ गयो छे !

जगन्ना०—क्यों सेठ साहब, चुप क्यों हो गये ? आप किसी बात का संकोच दिल में न लाइये. जो कुछ हो साफ साफ कह दीजिये.

ब्रजला०—कांई कहूं वकील साब, बात कहता वणीही सरम आवे छे. पण उपाय कांई ? "हान्यो जुवारी दूणो रमे" तिकी बात म्हारे मांहे हुई. तीन चार महीना मांहे तो ज्यूं ज्यूं नुकसाण लागतो गयो त्यूं त्यूं दूणा चोगणा सौदा करतो गयो ! पण आदमी की दिनदसा आछी होवे तो कुछ भी उपाय लागे. ज्यूं ज्यूं दलाल आकर बातां वणाता त्यूं त्यूं उनका दम मांहे आकर झट सौदा कर लेतो ओर दो चार दिन हुवा के नुकसाण दीखवा लाग जातो ! फेर वो नुकसाण कियान भी पूरो करवा की लालच मांहे आकर ज्यादा ज्यादा सौदा हो जाता—इयान करकर पूरो सारो नुकसाण कर लीनो ! बाबू साब, कांई कहूं ? सट्टावाळाने रातदिन चैन नहीं, रोटी कपड़ा को सुख नहीं, खायो पीयो अंग लागे नहीं, चिंता मांहे कुछ सूझे नहीं. चाव्हे लाखों रुपया कमा लेवो तो भी—रात दिन बैठता उठता, बोलता बतळाता, फिरता हिरता, जाता आता, लेता देता, करता कराता—वाही बात, वोही फिकर ओर वोही लेण देण ! आराम के, सुख सपना मांहे भी नहीं ! आप मने कितनी वार समझायो थो पण मानी नहीं. (बीच मांहे)

जगन्ना०—अब भी क्या आप मान जावेंगे—मुझे विश्वास नहीं ! आदमी जिस बात का आदी हो जाता है हरगिज उसकी आदत नहीं जाती. किसी नशेबाज को देखिये—प्रतिज्ञा कर लेगा, शपथ कर लेगा, विश्वास भी दिला देगा—एक दो दिन बहुत तो आठ चार दिन उस पर पाबन्द रहकर फिर ज्यों का त्यों ! कई बार आपने मुझ से वादा किया था कि अब मैं सट्टा नहीं करूंगा पर, फिर वह का वही हाल ! इस लिये अब भी आप सट्टा छोड़ देंगे तो आपके पास बहुत कुछ है, आप चाहे सो व्यापार कर सकते हैं. खैर, कहिये अब क्या करना चाहिये ?

व्रजला०—कांई कहूं वावू साव, अक्कल गुंग हो रही छे. क्यूं भी सूझे नहीं!

जगन्ना०—जो हो सो कहिये, कुछ भी पशोपेश न कीजिये.

व्रजला०—कांई कहूं— रुपया डोढ़ लाख को तो हुंडी को वदलो छे. तथा पचास साठ हजार की ओर लागत छे. अवार तो दो लाख हुवा तो वस छे.

जगन्ना०—सेठ साहव, इतनी रकम तो मेरे पास नहीं है. पचास हजार तो मैं दे सकता हूं. इसका तो खुलासा मैं पहिलेंही कर चुका हूं. तौभी इसकी मैं कुछ न कुछ सवील वैठावूंगा. मैंने गुलावचन्द को सव कह दिया है. वह आपको सव समझा देगा. अव मैं हाजिर होता हूं. आप हिम्मत न हारिये. भगवान् सव ठीक करेगा. (जावे छे.)

व्रजला०—(गुलावचन्दजीने पुकारकर) गुलावचन्दजी ! गुलावचन्दजी !

गुलाव०—(आकर) जी, सेठ साव ! आयो.

व्रजला०—जगन्नाथपरसाद अभी गया छे. जाती वखत वोल गया छे के, सारी वात गुलावचन्दजीने समझा दीनी छे सू थांने कह देसी—तो, कांई वात छे सू कहो सू कारवाई करणे माहे आवे.

गुलाव०—(कान मांहे) यूं यूं—

व्रजला०—जेवर गहणो छे सू तो लुगायां देसी नहीं. मोट्यारां को तो पांचपचास हजार को होसी—उत्ता सूं तो काम निसरे नहीं. वाकी तो भाटाधींडा का भीतड़ा छे, व्यांने रख दिया के वात गई. फेर यूं भी गई ओर त्यूं भी गई! गिरवी रखीज्या पीछे कांई छे?

गुलाव०—तो, वावू साव को यूं कहणो थोड़ोही छे के गिरवी रख द्यो के वेच द्यो. व्यांको तो कहवणो इत्तोही छे के कोई वात को तलवो नहीं वैठे ओर ज्यान कोही प्रसंग आय वणे तो फेर म्हारे सिवाय दूजाने कुछ भी कहणो नहीं. वणशी जियान तजवीज म्हे वैठा देशूं, इण मांहे कांई वुराई छे? वापड़ो घरको आदमी छे जगां इत्ती फिकर राखकर सारी वात सूं

मदद देवा तैयार छे. क्यूं न क्यूं उपाय करने काम तो निकाळ्याही सरसी. म्हारो तो ध्यान छे के बावू साब की सल्ला सूं अब कोई भी काम करणो ठीक छे.

ब्रजला०—नहीं कींकी छे. सोचविचार करने कोई भी बात करणी ठीकही छे.

गुलाब०—ठीक छे तो फेर म्हे वावू साव सूं मिलकर आपने बोलशूं. मुनीमजी तो घरां गया—म्हे भी जावूं छूं. (जावे छे.)

ब्रजला०—(मन मांहे) बात तो खूब बणी ! भाई ओर भाभी कांई कहता होसी ? कांई करे, ब्यांने भी कांई दोस छे. "हाथ कमाया कामड़ा दई न दीजे दोस " कांई बात थी ओर कांई हो गई ! हे नारायण ! इण देस मांहे ओ इशो सट्टा को रुजगार कुण चला गयो राम जाणे ! किशा किशा तो इण मांहे छळछिद्र, कपटजाळ करणा पड़े ! किशी किशी साची झूठी बातां बणाणी पड़े ! ओर किशा किशा करतूत करणा पड़े ! हाल कांई लोगा की आंख्या खुले छे ! जद सारा म्हारे जियान धन गमा कर भिखारी बण जासी फेर भलांही क्यूं आंख खुल जावो !—चालो, अब आपां भी फिरबाने जावां.

(जावे छे.)

प्रवेश पांचवो.

ठिकाणो—ब्रजलालजी का बगीचा मांहेला बंगला की एक कोठड़ी.

(राधा बाई आवे छे.)

राधा०—(मन मांहे) गोर माता ! थारे सरणे छूं. तूज म्हारो सुहाग कायम राखजे. तू लुगाई की जात छे इण वास्ते थारी सेवा, पूजा तथा बीनती करवा मांहे हरकत नहीं. धणी को सुख दुख माता तू आछी तरह

जाणे छे. थारा धणी—महादेवजी—थारा हुकम मांहे छे के तने रातदिन आपकी गोदी मांहे बैठाई राखे छे. थारे तांईही वे "अर्धनारीनटेश्वर" हुवा छे. लुगाई की बात लुगाईही जाणे, लुगाई की रीत लुगाईही जाणे ओर लुगाई की पीड़ लुगाईही जाणे. हे जगदम्बे! बोल भलां, लुगाई की जातने धणी बिना दूजो कोई आधार छे कांई? धणी बिना लुगाई जी सके कांई? ओर धणी बिना लुगाई कुछ कर सके कांई? फेर म्हारा बिछेवा क्यूं? म्हे कांई लुगाई कोनी, के म्हारे धणी कोनी, के म्हे थारी सेवक कोनी—सू म्हारे ऊपर ओ इशो दु:खदायी प्रसंग बीत रह्यो छे! (विचार करने) आज मने अमरसिंग अठे ले आयो तो छे पण, जीव धड़क धड़क कर रह्यो छे. कदास ब्यांने मालम नहीं पड़ जावे? हूँ:, मालम हो जावे तो म्हे किशी पराया के घरां आई छूं? छे तो म्हारोही बंगलो! (चाऱ्या कानी देखकर) अरे राम! इण बंगलाने कित्ता रुपया लगा दीना छे? राजा कोसो महल बणायो छे. बंगलो त्यार हुवा पीछे आजही देखवा मांहे आयो. (लिलाड़ पर हाथ रखकर) राम! राम! लुच्चा, सोदा, रांडरंडी, भड़वा को घर हो रह्यो छे! जीव तो इशो अमूंझ रह्यो छे के अबार ईं बगीचा की बावड़ी मांहे कूदकर सुखी हो जाऊं! पण हे राम! अपघात सूं मरबाळा की गति होवे नहीं—जराही विचार ठिकाणे के ठिकाणे रह जावे! (आंसू लाकर) अमरसिंग अठे लायो तो छे पण कांई सुख होसी? उल्टो देख देख जीव जळबळकर खाक हो जासी! (आंसू पूंछकर) पण नहीं—रांड की जात लालची हुवा करे छे. वींने समझावा सूं देखां भलां, ठिकाणे आकर म्हारा शिरताज का कियान भी दरसण हो जावे. एक वार दरसण हुवा पीछे तो इशा काठा पग पकडूंली के कदे घर के बारे जावा द्यूं नहीं. जोर सूं पांव छुड़ाकर कदास दूर हो जासी तो झट पगां पर म्हारा कोमळ वचाने नाख देशूं! देखां भलां, फेर कियान वींने लात मारकर चल्या जासी?

(इतना मांहे अमरसिंग आवे छे.)

अमर०—सेटानी साहब, मुझ से बना वहां तक तो मैंने बहुत कुछ

काम कर डाला है. मैं आपसे कह नहीं सका मगर आज कितनेही दिनोंसे इन मावेटियोंमें झगड़ा मचा दिया है. इसकी मा बड़ी बदजाद, बेशहूर, मक्कार और आला दरजे की बदमाश है. सेठ भी उससे नाराजही थे. गंगाविसन, हसनखां और करीमोदीन की उसके साथ एकदिली, साजिश और मिलावट है. अपने घर गवालियार जाने के लिये सेठजी की इजाजत लेके परसों यहां से चली गई है. साथ हसनखां और करीमोदीन भी गये हैं. अभी इसका भेद खुला नहीं है तौभी इतनी बात तो सही है कि सेठजी को कुछ न कुछ धोखा देके गये हैं! शायद, कहीं रहन रखने के लिये जेवर न लेके चली गई हो! उनके जानेके बाद महबूब को देखता हूं तो उसके अंग पर कुछ जेवर नजर नहीं आता. सेठजी को अभी यहां आनेमें बहुत देर है. शायद आवें, नहीं भी आवें. मैंने बीबी को आपसे मिलने के लिये कह दिया है. वह थोड़ी देरके बाद आनेवाली है. अपनी मा से बीबी बहुत नेक, दिलदार और अच्छी औरत है. ब्याहे हुए खाविंद से भी सेठजी पर ज्यादा प्यार रखती है.

राधा०—भाई, बजार की बैठवाळी को काय को प्यार—पैसो मिले उठे तांईही उणको प्यार रह्या करे छे. पण अमरसिंगजी, हसनखां करीमोदीन ईंकी मा के साथ चल्या गया तो कुछ जेवरही ले गया दीसे छे. नहीं तो ईंकी मा ईंने छोड़कर जावावाळी नहीं. जावो परो क्यूं जाणो जुवाणो छे सू! हे सतनारायण बाबा! अब व्यांको मूंडो उठीनेही काळो हो जावे तो ठीक छे. क्यूं भाई, अब फेरू वे पीछा आवेला कांई?

अमर०— अगर जेवर उनके हाथ लग गया है तो वे फिर सपने में भी वापिस नहीं आते. थोड़े रोज पहिले सेठ साहब, गंगाबिसन, मुनीमजी ये तीनों यहां कुछ सलाह करने के लिये आये तो थे. मुन्नाजी के साथ भी इनकी कुछ बातचीत हुई थी. आजकल सेठजी को रुपयों की निहायत जरूरत है इस लिये मुझे पूरा खयाल होता है कि मुनीमजी और गंगाबिसनने इस रंडी के हाथ गवालियर में किसी के यहां जेवर रखकर रुपये

लानेके लिये कहीं सेठजी को इधर झुकाया न हो? पांचों हिस्सेदार तो हैही. लाख पचास हजार का जेवर हाथ लग गया होगा तो ये लोग फिर वापिस नहीं आते. सेठजी रोधोकर रह जावेंगे. कुछ भी न कर सकेंगे. मुझे तो यकीन होता है कि जब बीबीके अंग पर कुछ जेवर दिखाई नहीं देता है तो उसका भी जेवर वह अपने साथ ले गई हो.

राधा०–हां भाई, बात तो इशीही दीसे छे. कारण पांच छे दिन हुवा गुलाबचन्दजी मने चेता गया था के सेठजी थांके पास गहणो मांगे तो मत दीजो. व्यांको विचार गहणो रखकर रुपया मंगावा को छे. भाई अमरसिंगजी, सतनारायण बावो सुमत दी जरां वे म्हारे पास गहणो मांगवा आया कोनी. नहीं तो वे गहणो मागता तो म्हे नट जाती कांई? ओ तो गहणो छे–अबार म्हारा प्राण माग लेवे तो व्यांका चरणां के ताई देवा त्यार छूं! गहणो कींको ओर म्हे कींकी? व्यांसू गहणो ज्यादा छे कांई? मने तो व्यांके सिवाय क्यूं गहणो चाहिजे न गांठो चाहिजे! व्यांके लारेही सारि वातां छे.

(इतना मांहे महबूब बीबी आवे छे.)

महबू०–(*हाथ उठाकर*) बंदगी सेठानी साहब! आज इस कमतरीन् नाचीज की किधर याद फरमाई? मुझे भी बहुत दिनों से आरज़ू थी कि मैं आपसे मिलकर न्याज हासिल करूं. लेकिन्, खौफ होता था कि शायद आप मुझे देख कहीं रंजीदा न हो जांय? कहावत है कि "मिट्टी की भी सौकन बुरी होती है" खैर, आज मैं बड़ी खुशनसीब हूं कि मुझे आपकी मुलाकात हासिल हुई.

राधा०–बाई, म्हारी अभागण की मुलाकात मांहे कांई रख्योड़ो छे? म्हारे भी घणा दिनां सू दिल मांहे थी के एकबार थारे सूं मिलूं. पण थारी मा सूं डरती मिली कोनी.

महबू०–(*मुँह फेरकर*) नहीं सेठानी, किसकी मा और अम्मा! उसने क्या मुझको जनी थी? बचपन में मुझे मोल ली थी. मैं एक अच्छे बनि-

ये के खानदान की हूँ. मेरे मावाप अभी देहली में मौजूद हैं. मैं ऐसी ही बदनसीब थी जो एक नीच तुर्कनी के हाथ पड़ी! वह बदजाद मुझे क्या कभी आराम लेने देती है? बेचारे सेठ साहब को ऐसे फंदे में डाला है कि उनको बचानेवाला खुदाही मालिक है?

राधा०–(आंसू लाकर) बीबी जान, कांई कहूं–काळजा मांहे अंगार भड़क रही छे! किशो घर थो ओर बींको कियान सत्यानास हुवो? चान्या कानी सू लुच्चा लफंगा लारे पड़कर म्हारा भोळाभाळा देवने भरमा लीनो ओर म्हारे सू विछेवा करा दीना! बाई बीबी, आज चार महीना होसी चरणां को दरसण नहीं जरां थारो सरणो लीनो छे!

महबू०–(अचरज सूं) क्या कहती हो सेठानी साहवा! सेठ की मुलाकात होने चार महीने हो गये?

अमर०–इस में क्या शक है? आपको नजर नहीं आता क्या–कैसा हाल हो रहा है? सेठानी एक वक्त सूखा टुकड़ा खाके फ़कीराना तौर पर खुदापरस्ती में दिन गुजारती हैं! इनकी तो मुलाकात क्या–एकलौता एक गुलाब का गुल–बच्चे तक को तो भूल गये!

महबू०–(चोंककर) या अल्ला! या परवरदिगार! अफसोस है कि सेठ साहब की ऐसी हालत है! मैं कस्मिया कहती हूँ कि जब वे मुझसे मिलते हैं–आपका हाल पूछती हूँ तब वे मुझसे कहा करते हैं कि बहुत अच्छा है. और रोज मैं मिला करता हूँ. "नोझ बिल्ला!" मुझे क्या मालूम कि वे आपके साथ ऐसा बरताव रखते हैं! आजकल सिंघजी, आप देखतेही हैं–मेरे पास भी तो रोज नहीं आते. और आते हैं तो आपका बहाना करके उसी वक्त वापिस चले जाते हैं. शायद, इन दो तीन महीनों में कोई चार या पांच वक्तही यहां मुकाम रहा होगा!

अमर०–(याद आकर) ठीक, अब पूरा खयाल होता है कि सेठ साहब आजकल सेठजी के दम पर गंगाविसनने जो नया मकान बनाया

है—वहां रोज जाया करते हैं और वहीं दोस्त के पास सोया भी करते हैं. शायद + + + —

महबू०—तो क्या वहां और कोई रंडी रक्खी हुई है ? या अल्ला ! सेठजी भी बुरे शौकीन हैं ! मिलने दो आज मुझे, खूब सुनावूंगी.

राधा०—(हाथ जोड़कर) बाई, थारे पांवां पड़ूं. कठे म्हारा मिलाप की बात व्यांने मत कह दीजे. नहीं तो म्हारो पूरो मरण हो जावेलो !

अमर०—नहीं सेठानीजी, महबूब जान ऐसी हलकी औरत नहीं है जो इधर की बात उधर कर दे. आपही की जात में जनमी हुई आला खानदान की लड़की है. आप बेफिकर रहिये. मैंने आपके मिलने के अव्वलही इनसे कसम ले ली है. हरगिज आपकी बात सेठ को तो क्या किसी से नहीं कहेंगी, और हमेशा आपको मदद देती रहेंगी.

महबू०—सिंघजी, खाली तारीफ तो छोड़ दो, और गंगाबिसन के मकान में और कौन रंडी रखी हुई है उसका मुझे बराबर पता दो. अफसोस है कि मैंने सेठजी के प्यार के लिये अपनी अम्मा जान से बिगाड़ कर लिया. उसके सिखाये मुताबिक सेठ से कोई चीज नहीं मांगी और सेठजी के काम के लिये मेरा सारा जेवर अम्मा के सिपुर्द कर दिया ! तो क्या सेठजीने मुझे छोड़कर और किसी को रखली है ? "ला होल बिला कुव्वत" मर्द की जात बहोत बुरी होती है. मेरे साथ कैसी कैसी प्यार की बातें और करनी ऐसी ?

अमर०—नहीं बीबी जान, वहां रंडी लौंडी कहां से आई ? (मन मांहे) कुछ कुछ पता तो चला. बदमाशों के हाथ जेवर लग गया इसमें तो कोई शक नहीं. भगवान् ने चाहा तो अभी थोड़ेही दिनों में सब पता लग जावेगा.

महबू०—(विचार करने) तो क्या फिर गंगाबिसन के मकान मेंही कुछ दोस्ताना जमा लिया है ?

राधा०—(मन मांहे) जेवर गयो इण मांहे तो कांई भी शक कोनी. जावो परो अब कांई बे मुंह दिखावे छे? लेकर कठे का कठीने चल्या गया होसी? एक तो पाप कटयो. आज ईंका मिलाप सूं कित्तीही वाता को पत्तो लाग्यो. (बडा सूं) कुण जाणे वाई? धणीने छोड़कर पराया सूं दोस्ती करे बीं लुगाई को मूंडो काळो! अंगार लगावो वींका लुगाईपणा पर! म्हांको—ओ इशो लख चोऱ्याशी भुगत्या पीछे मिल्यो हुवो दुर्लभ शरीर, मावापां एक पुरुषने दान कन्या पीछे वींने, दूजा पुरुष सूं विटळाकर; काचा रेशम का कपड़ा पर नील का दाग ज्यूं काळो टीको लगा लेणो घणोही बुरो छे. अठे भी मूंडो काळो ओर अगोतर मांहे भी मूंडो काळो! हाय! लुगाई पैसा का लालच सूं साक्षात् देव, कुबेर सूं श्रीमन्त ओर ईश्वर सूं भी अधिक सत्ताधारी धणीने छोड़कर आपको सत गमावे! धणी के आगे पैसो, जेवर, जमीन, घरवार कांई पृथ्वी भी कुछ माल नहीं! धणी के आगे राजा कुछ नहीं, बाप, भाई, मा, वेटावेटी कुछ नहीं ओर साक्षात् ईश्वर भी कुछ नहीं!

अमर०—सेठानी साहब, आप जैसी स्त्रियां इस पृथ्वी का भूषण है. सेठजी का बड़ा भारी तकदीर है कि उनको आप जैसी सती नार मिली. आपही के सत से उनका संरक्षण होगा. बाकी आपके मारवाड़ी बनियों की औरतें—माफ फरमाइयेगा—क्या नहीं करती! सेठजीसे गंगाबिसनने तो हजारों ठगे हैं—लेकिन् मैंने रुपये रुपये के लिये झक मारती देखी है!

महबू०—या अल्ला! निहायत अफसोस की बात है कि सेठ को छोड़ कर मैं दूसरे की तरफ आंख उठाकर भी देखना नहीं चाहती. मुए गंगाविसन, हसनखां और करीमोद्दीनने क्या थोड़ा पीछा उठाया था? लेकिन् नहीं, कभी नहीं, हरगिज नहीं! मैं बात तक नहीं करना चाहती थी. इस लिये कितनेही वक्त अम्मा जानने मुझे बुरा कही, गालियां दीं, धमकाई और रुलाई! कभी बोलने का इत्तेफाक हो भी जाता था तो सिवाय भाई के और कुछ नहीं कहती थी.

अमर०—(सिर हलाकर) वाह् वीवी, आफरीं है ! तुम्हारी क्या वात है ! सचमुच तुम वड़ी नेक और दिलदार हो. मैं वखूवी जानता हूं कि तुम सेठानी के लिये वहुत कुछ कोशिस करके सवाव हांसिल करोगी. सेठानी भी—याद रखियेगा—कभी तुम्हारे एहसान फरामोश नहीं करेंगी.

महबू०—सिंघजी, आपको मेरी सव वातें मालूम होकर भी आप तारीफ करते हैं उससे मुझे ठीक नहीं मालूम होता. मैं एक नाचीज तवायफ क्या कर सकती हूं ! तौ भी औरत की जात का दर्द औरतही जान सकती है. इस लिये मेरा फर्ज है कि मैं सेठानी की हमदर्द वनूं. मुझे यकीन है कि सेठानी मुझ पर प्यार रक्खेंगी, एतकाद रक्खेंगी और रहमदिली फरमावेंगी.

राधा०—(हाथ जोड़कर) वाई, वीवी जान ! तू म्हारी छोटी वहण छे, मने आधो टूक मिलसी तो चौथाई तने देकर खावूंली. थारा उपकार जनम जनम भूलूंली नहीं. कियांनहीं करने थारा सेठजी सूं म्हारो मिलाप करा दे. मने एक एक घड़ी वरस वरावर वीत रही छे ! अव इणसू ज्यादा कांई कहूं ! (रोवे छे.)

महबू०—(पल्ला सूं आंसू पूंछकर) नहीं नहीं, क्या कर रही हो ? हरगिज नहीं, यह मेरा कौल है. आप मकान को जाइये. इन्शा अल्ला ताला ! आजही आपसे मुलाकात हो जायगी. अव मुझे भी परवानगी हो.

राधा०—आछो वाई वीवी, रामजी थारो भलो करसी.

(महवूव वीवी जावे छे.)

अमर०—सेठानी साहव, महवूव से मिलने में वहुत वातों का पता लगा है. परमेश्वर की कृपा और आपका पुण्य काम आवेगा. चालिये गाड़ी तैयार है. वहुत देर हो गई.

(दोन्यूं जावे छे)

प्रवेश छट्टो.

ठिकाणो—ऊपर की मेड़ी को चोक.

(श्रीकिसनजी आवे छे.)

श्रीकिस०—(मन मांहे) कांई करां—रामरतन माने कोनी. बोले छे कपड़ा की कळ काढ़शूं. आपां कळफळ मांहे कांई जाणा ? आपणा बापदादा तो कदे इशो बेपार कीनो नहीं पण, आजकाल सारी उलटपालट हो गई. खाणो पीणो, पहरणो ओढ़णो, लेणो देणो, जाणो आणो सभी बातां बदल गई छे. जरा बेपारधंधो भी बदलणोही चाहिजे. पण बड़ेरां की राहरीत छोड़णी तो किशा काळ मांहे भी आछी नहीं. आपको सनातन धरम कदेही छोड़णो नहीं. आपणा बापदादा कदे सट्टाफाटका को रुजगार कीनो नहीं. तिको ब्रजलाल कन्यो सूं सारी पूंजी गमाकर बापदादा का नांवने बट्टो लगायो के नहीं ? कांई थोड़ो समझायो—पण माने कुण ? कोई भी बिसन हो एक बार लाग्या पीछे छूटे नहीं. ये इशा बिसन संगत सूंही लाग्या करे छे.

(इतना मांहे लछमी बाई आवे छे.)

लछमी०—(नजीक बैठकर) कांई विचार हो रह्यो छे ? आपका भाई साब की बातां तो आप सुणलीही होशो—आज फेर म्हे एक आपने नवी सुणावूं !

श्रीकिस०—(चिमककर) अब कांई नवी बात छे—कुण जाणे ? सुणता सुणता म्हारा तो नाक मांहे दम आ गयो ! कांई करूं—घर मांहे थे, उठीने रामरतन बोलबो करे तो भी (आंसू लाकर) एक पेट मांहे लोटचोड़ा भाई की बुरी बुरी बातां कियान सुणी जावे ?—तिकासूं घणोही बन्दोबस्त करबा की तजवीज कर रह्यो छूं. जगन्नाथपरसाद ने रातादिन बींकाही काम मांहे लगा रख्यो छे. फेर आज कांई नवी बात छे—कुण जाणे ? बींको नांव कोई लियो के म्हारी छाती धड़क धड़क करबा लाग जावे ओर कुछ सूझे नहीं ! (आंख्या पूंछे छे.)

लछमी०—गहला छो, थे तो खाली फिकर करो! कपूत पूत सपूत होवा सू रह्या ओर न्यारा घरां का वारणा एक होवा सू रह्या! (सांस भरकर) वापड़ी वाण्या की बेटी का घणाही बुरा हाल छे. रोटी खावे नहीं, कपड़ो पहरे नहीं, रातदिन सेवा पूजा मांहे रहकर दिन काढ़ रही छे. रतन का भायाजी, लुगाई को जमारो घणोही बुरो छे. लुगाईने धणी विना कुछ भी नहीं. म्हारा देवर का नसीव किशा फूट्योड़ा छे के लाखों रुपयां को धन मिलकर संभाळ सक्या नहीं. पढ़ीलिखी, रूपारेल, घर की लछमी, सती लुगाई मिली वींकी दरकार कीनी नहीं. कुळ को दीपक, आंगण को सिणगार, छोरो—कठे वडेरां की पुण्याई सूं हुवो छे वींके कानी झांककर भी देखे नहीं! छोरा की माटी कठे पड़ी छे? म्हे अवार घड़ी भर राम-रतनने के सुखदेवने देखूं नहीं तो वावळी हो जावूं! बेटाबेटी के तांई मा-वापां को जीव इयान काठो हो जावे कांई? मने याद आवे जरां रूंरूं खड़ा हो जावे—रतन का भायाजी, सुखदेव की मांदगी मांहे म्हे कांई कांई दुख देख्या छे, म्हारो रामही जाणे! थांका पुन्नपरताप सूं लांवी डोरी थी जरां उवऱ्यो—नहीं तो कींनें आस थी? हे राम! मावापां के जीवतां बेटा-वेटी को माथो भी मत दूखजो. व्यांके पहली म्हांने मोत देकर व्यांके खांदे पुगाकर म्हांकी सतीगती करा दीजे!

श्रीकिस०—बोलो, ब्रजलाल की थे कांई नवी वात सुणाता था सू?

लछमी०—थे सुणी कोनी कांई?

श्रीकिस०—वणीही सुणी छे ओर सुणतो जावूं छूं. घर ओर वंगला की होसी ओर कांई?

लछमी०—तो घर को ओर वंगला को कांई हुवो?

श्रीकिस०—होवाने कांई छे—जगन्नाथपरसाद का नांव सूं दो घर, एक वंगलो ओर वगीचो दो लाख मांहे गिरवी करा लीना छे. वाकी एक घर वींकी वहू का नांव पर ओर एक घर वींकी रखी हुई महवूव का नांव पर

कर दीना छे. मालगुजारी का दोगांव रह्या छे सू वे तो सरकार मांहे म्हारा नांव पर छेही. लेणदार जपत करा सके नहीं. खरच जाकर साल मांहे पैदा होवे जिकी भलांही ले ल्यो. हाल भी संभळ जासी तो रोटी कपड़ा की तो क्यूं कमती कोनी.

लछमी०—थे भी रतन का भायाजी, जरा भी विचार देखो कोनी. आपांने घर बंगलो ओर बगीचो कांई करणो छे! आपणे कित्ताक छोरा छे सू ब्यांके तांई चाहिजसी. आ जाकर दो छोरा. मोटी मोटी हेल्या पहली कीही वंध्योड़ी पड़ी छे. वागवगीचा भी मोकळा छे. फेर खाली रकम क्यूं गुता दी! आजकाल को जमानो किशो उलटो छे सू थे जाणो कोनी कांई? थे तो जाणो के आपणा घर की चीज कठे बारे जाण पावे नहीं. पण थांका भाई साब समझसी के सारो फन्दफितूर वड़ो भाई करने म्हारी जिंदगी ले ली! गाळभेळ करसी, बुरो भलो बोलसी ओर लड़वाने त्यार होसी! म्हे आगे आगे कित्ताही भायांने नहीं नहीं सू करता देख्या छे.

श्रीकिस०—हूँ! क्यूं भी करो. "जींकी करणी बींने पार उतरणी" थांने मालम नहीं, आपणे तो रामरतन जिशो छे वींकी वो जाणे. पण इत्तो तो म्हे पक्को जाणूं छूं के कींको भलो कर्‍योड़ो इवरथा जावे नहीं.

(इतना मांहे पंडित वंसीधरजी आवे छे.)

लछमी०—(हाथ जोड़कर) पगां लागू महाराजजी.

श्रीकिस०—(हाथ जोड़कर) पगां लागू पंडितजी.

वंसीध०—(हाथ ऊपर करने)

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः। स्वस्ति नःपूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।

लछमी०—महाराज, आशीस तो खूब लांबी दीनी!

श्रीकिस०—आपणे ऊपर पंडितजी की पूरी किरपा छे. जरां आवे जरां, आपणो तो भलेही चाहकर आशीस दिया करे छे.

लछमी०—क्यूं नहीं देवे? आपां इणका पगां की रज छां.

वंसीध०—सेठाणीजी आप सत्पात्र छो. आपका घर की म्हे आपके सामने प्रशंसा करशूं तो आप खुशामद समझशो पण, म्हारी जाण मांहे तो आपका जिशा घर आजकाल विरळाही छे. कंवर साव की शतायु होजो—आपका कुळ मांहे रत्न नीपज्या छे. आपका मोटा भाग्य छे सू आपने इशा गुणवान, शीलवान, ओर भाग्यवान पुत्र को लाभ हुवो. "शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते" गीताजी मांहे कह्यो छे के योगभ्रष्ट एक तो पवित्र योगी के अठे जन्मे अथवा श्रीमान् का घर मांहे जनम लेवे.

श्रीकिस०—ओ सव आपका चरणां कोही प्रसाद छे महाराज!

लछमी०—पण महाराज, व्रजलालजी सारी वात धूळ मांहे मिला दीना?

वंसीध०—थे कांई करो सेठाणीजी, करम को कोई साथी छे काई? थे तो मांग्यो मांग्यो सू दे दीनो. हिसाव भी देख्यो नहीं. इशी पांती हुवोड़ी तो म्हे कठे देखी नहीं ओर सुणी भी नहीं! धन्य छे थांने! थां जिशा भाई भोजाई दुनिया मांहे होणा घणा काठिन छे. फेर भी सेठजी घणोही सहारो लगायो छे. रातदिन व्यांकीही फिकर कामान्या सूख रह्या छे! पण काई करे? आकास के तो थेगळी लागे नहीं!

लछमी०—ओर तो जो वातां हुई सू हुई पण, आखरी जाता विचारी वाण्या की वेटीने भी तो साफ डुवो दीनी!

श्रीकिस०—(अचंवा सूं) कांई कांई, कियान डुवो दीनी? नवी वात सुणाता था सू आही दीसे छे?

लछमी०—मको थांने तो मालम होशी!

श्रीकिस०—नहीं वावा, होवे सूं झट सुणा तो कोनी देवो परी.

लछमी०—कांई सुणावूं ओर कांई नहीं ?

बंसीध०—जो होवे सू कह द्यो सेठाणीजी. आप नहीं कहशो तो अबार दुकान पर गया के झट मालम हो जाशी. आजकाल सारा शहर मांहे जठे उठे थांका देवर कीही चरचा चालबो करे छे. मने साराही पूछबो करे. पण मने क्यूं बेरो होवे तो बोलूं ! कह द्यो अब. बात तो क्यूं बुरीही होशी पण जोर कांई ?

लछमी०—पंडितजी काई कहूं ओर काई नहीं ? आपकी जांघ उघाड़बा आपनेही सरमाणो पड़े !

श्रीकिस०—बस, कहोनी बाबा झट, छे सू !

लछमी०—कांई कहूं रतन का भायाजी, .जित्तो गहणोगांठो थो उत्तो सूतळी को तोड़ो को तोड़ो—ब्रजलालजी की रखी हुई की मा उड़ा ले गई, ओर कांई ?

श्रीकिस०—काई बोलो छो—सब को सब ! काई चोरकर ले गई ?

लछमी०—चोरकर क्यूं ले गई—बा तो राजरोस, नहीं नहीं करता भी जबरदस्ती मिल्यो जरां राजीखुशी सूं ले गई !

श्रीकिस०—कठे ले गई ?

लछमी०—कोई के गिरवी रखबाने.

श्रीकिस०—तो कांई हुवो, गहणो कठे जावे छे ?

लछमी०—कठे जावे छे—बो तो ळसकर गवालेर के पार चल्यो गयो !

श्रीकिस०—तो काई बींका भरोसा पर एकलीने सूंपकर कठे बारे भेज दियो ?

लछमी०—ओर कांई तो. बींके साथ बे दोनू लफंगा मुसल्ला भी गया छे.

श्रीकिस०—जरां तो अब रामत पूरी हो ली :! गहणा पर अठे काई रुपयां को काळ पड़यो थो ? आछी बापड़ी बाण्या की बेटी काळी धार डूबी !

वंसीध०—सेठ साब, वाण्या की बेटी तो घणीही चोखी मिली छे. धणी का कल्याण के तांई सारा शरीर की मट्टी कर लीनी छे. रातदिन, वासवरत, देवब्राह्मण की पूजा कर रही छे. धणी महीना महीना मिले नहीं जरां वापड़ी धणी की तसवीर सामने रखकर वींकोही ध्यान, वींकोही स्मरण वींकोही पूजन ओर वींकोही पादवंदन कऱ्या करे छे. भागवत मांहे कह्यो छे के—

भर्तुः शुश्रूषणं स्त्रीणां परो धर्मो ह्यमायया ॥
तद्बन्धूनां च कल्याण्यः प्रजानां चानुपोषणम् ॥
दुःशीलो दुर्भगो वृद्धो जडो रोग्यधनोऽपि वा ॥
पतिः स्त्रीभिर्न हातव्यो लोकेप्सुभिरपातकी ॥

अर्थात् धणी की निष्कपट सेवाही स्त्री को परम धर्म छे. उशीही धणी का भायां की सेवा तथा आपकी संतान को पालन भी लुगायां को धर्म छे. खराव स्वभाववाळो, स्त्रीपर प्रेम नहीं रखबावाळो, वूढो, मूरख, रोगी ओर निर्धन पति हो, वीं पवित्र पति को—परलोक की इच्छा करवाळी स्त्रीने कभी निरादर नहीं करणो चाहिजे.

लछमी०—वा तो वापड़ी इशीही छे. पण वींको नसीव आछो कोनी. करमड़ा के आगे कींको भी उपाय कोनी चाले महाराज !

वंसीध०—उपाय क्यूं नहीं चाले ? वातो खरो खरो उपाय कर रही छे. वींकाही उपाय सूं सेठजी को क्यूं भलो होणो छे तो होसी. तुलसीदासजी रामायण मांहे लिख्यो छे के—

कह ऋपि वधू सरल मृदु वानी । नारिधर्म कछु व्याज वखानी ॥
मातु पिता भ्राता हितकारी । मित सुखप्रद सुनु राजकुमारी ॥
अमितदानि भर्त्ता वैदेही । अधम सो नारि जो सेव न तेही ॥
धीरज धर्म मित्र अरु नारी । आपद काल परखिये चारी ॥
वृद्ध रोगवस जड़ धनहीना । अंध वधिर क्रोधी अति दीना ॥
ऐसे हु पति कर किये अपमाना । नारि पाव जमपुर दुख नाना ॥

बनवास मांहे सीताजीने अनुसूया कह रही छे के—माता पीता भाई ये आछा का करवाळा छे तो भी हे राजकुमारी, सुण, थोड़ाही सुख का देवा ळा छे. हे वैदेही, अपार देबावाळा पति की सेवा करे नहीं तिकी लुगाई अधम जाणणी. धीरज, धर्म, मित्र ओर लुगाई की परख विपत पड्याही हुवा करे छे. बूढो, रोगी, मूरख, धनहीन, आंधो, बहरो, क्रोधी ओर घणो गरीब इशा पति को कोई लुगाई अपमान भी कर लेवे तो जमपुरी मांहे वीं लुगाईने घणा दुख देखणा पड़े.

लछमी०—हाल तो कठे जमपुरी महाराज ! बापड़ी अठेही दुख देख रही छे. हे नारायण, कांई थारी माया छे तूही जाणे !

बंसीध०—नहीं सेठाणीजी, ब्रजलालजी की वहू दुख नहीं पा रही छे. आपका आगला भो को सुधार कर रही छे. वींकीं जिशी लुगायां दुनिया मांहे घणी थोड़ी छे.

एकै धर्म एक व्रत नेमा । काय बचन मन पतिपदप्रेमा ॥
बिनु श्रम नारि परम गति लहही । पतिव्रत धर्म छांडि छल गहही ॥
पति प्रतिकूल जनमि जँह जाई । विधवा होय पाय तरुणाई ॥

अर्थात् एक धर्म एक नेम ओर काया, वाचा, मन सूं पतिपद पर प्रेम रखबाळी लुगाई अनायास परम गतिने प्राप्त होवे. ओर जो लुगाई पतिव्रत धर्म छोड़कर छळ सूं पतिके विरुद्ध आचरण करे बा आगले जनम जंवानी मांहे विधवा होवे.

श्रीकिस०—(विचार मांहे) यूं रांडने सारो गहणो सूंप दियो जरां, अब तो पूरो पागल हो गयो समझणो ! रुजगारबाड़ी मांहे नफोनुकसाण होतोही आयो छे. बड़ा बड़ा का काम कच्चा पड़ जाया करे छे. उठे गहणो गांठो गिरवी रखीज जावे विक भी जावे छे. पण बाबा, इशी बातां तो कठे देखवा मांहे आई कोनी. देखां भलां, आज क्यूं मालम पड़े के गयो के रह्यो ? क्यूं भरोसो जाण करही सूंप्यो होसी ?

लछमी०—क्यूं भी हो, अब थे ओरू कठे फन्द मांहे पड़जो मतीना. क्यूं महाराज! वणी जठे तांई तो सारी वात सूं मदद दीनी. अब जो विगड़णी लिखी वींको उपायही कांई? अवार म्हाकी मानता होवे तो लावो, फेर भी म्हे सब कुछ करवाने त्यार छां. वापड़ी ब्रजलालजी की वहू काल म्हारे पास आई थी. घणाही रोरोकर ढेर कर दीना, पण कांई करां—महाराज, वोलो!

वंसीध०—आप कन्यो छे जिशो तो न्यारा हुवोड़ा भाई करवाळा हाल की दुनिया मांहे मने कठेही कोनी दीखे!

लछमी०—महाराज, देवर मांहे तो आ इशी हुई छे. थोड़ो जरा छोराने भी समझाया करो. वो कठे कींका फन्द मांहे नहीं जा पड़े. म्हे सुणी छे के कपड़ा की कळ काढ़वा को विचार कर रह्यो छे. महाराज, आपांने कळफळ कांई करणी छे? आपणे तो सदा सू चालतो आयोड़ोही रुजगार वण्यो रहसी तो घणोही छे. नारायण सेर जवारवाजरो दे राख्यो छे उत्तोही घणो छे. आपांने इशा फन्दफितूर कोनी चाहिजे.

वंसीध०—नहीं सेठाणीजी, इण मांहे फन्दफितूर काय को छे. आ वात तो घणीही आछी छे. आज का समया मांहे तो अब ये इशाही कारखाना काढ़वा मांहे मारवाड़्यां को निभाव छे. नहीं तो अब सट्टाफाटका का परिणामं तो ब्रजलालजी परसू थांके निगह आही गया छे. आसामीतासामी, लेणदेण, व्याजवट्टो, हुंडीपांडी, मालताल मांहे कित्ती जोखम छे सू सेठजीने पूछ ल्यो. हां, जमीन, खेतवाड़ी, मकानां की वात तो ठीक छे. पण व्यांको भी वखत वखत को मोल ओर पैदास छे. आजकाल ऊपर का ऊपर काळ पड़वा सूं जमीन की भीं पैदा हट गई छे. तिकासूं अब आपणा देस मांहे रुई, ऊन, रेसम, सिण, काच, लोहो, मट्टी विगेरा का पदार्थ वणाकर पैदास करणी ठीक छे. थे तो नहीं भूल्या होशो—मारवाड़ मांहे एक एक घर मांहे दो दो तीन तीन चरखा लुगायां राखती, ओर घर को काम कर लिया पीछे वारे गवाड़ी मांहे

बैठकर सूत कातती ओर बीं पर घर को कित्तोही खरच चलाती. पण अब सूत की कळां होबा सूं बे बातां जाती रही. तो फेर कळ काढ़कर सूत कातवा मांहे काई हरकत छे ?

श्रीकिस०—हरकत क्यूं नहीं महाराज ! जीव कित्ता मरे—क्यूं भी ठिकाणो छे !

बंसीध०—(हंसकर) आछी कही सेठ साब, छोटा मोठा कीड़ा मकोड़ा क्यूं मरता होसी तो दो पगां का मोटा मोटा जीव कित्ता पळे वींको भी कदे विचार कीनो छे? एक छोटी सू छोटी कपड़ा की कळ मांहे ७०० ८०० आदम्यां को रुजगार चाले, ओर व्यांके लारे कमती सू कमती तीन चार हजार आदमी पळे! ओर नफो भी कित्तो रव्हे? जनम की जागीर हो जावे. आज अंग्रेज लोग लखपती, करोड़ती, राजा महाराजा वण बैठया छे सू काय पर? (बीच मांहे)

श्रीकिस०—तो, कांई अंग्रेज लोग, कपड़ा बुणता वुणता राजा हुवा छे ?

बंसीध०—तो, फेर काय सूं?

श्रीकिस०—कित्तीही लड़ायां करने सारांने जीतकर राजा बण्या छे.

बंसीध०—हां हां पण, लड़ाई काय के पाण कीनी ?

श्रीकिस०—तो कांई कपड़ा के पाण कीनी ?

बंसीध०—कपड़ा के पाण क्यूं—कंपनी के पाण कीनी.

श्रीकिस०—हां, कंपनी सरकार को तो राज छेही.

बंसीध०—फेर कंपनी काय की छे तो ?

श्रीकिस०—तो, कंपनी कांई कपड़ा की कळ छे ?

श्रीकिस०—नहीं सेठां, हिन्दुस्थान मांहे ये लोग पहली आया जरां आपका देस मांहे बड़ा बड़ा दस बीस आदमी भेळा होकर सात लाख की पूंजी सूं "इस्ट इण्डिया" नांव की कंपनी करने बेपार सुरू कीनो. पहली

सूरत आया उठे दुकान कीनी. फेर धीरे धीरे हिन्दुस्थान मांहे सब ठिकाणे फिन्या. आपका मुलक सू नवी नवी चीजां वणा वणाकर लाकर अठे वेचवा लाग्या. तिका मांहे लाखों रुपया कमाया. सारां सू दोस्ती कीनी. जगां जगां दुकाना खोलकर खूब वेपार वधायो. जमीनदारी भी मिलाई. फेर विलायत मांहे सरकार की खूब मदद मिली तिका जोर सूं वेपार करता करता आज ये आपणा राजा वण गया ओर आपणो सारो वेपार आपका हाथ मांहे लेकर विलायतने स्वर्ग वणा दियो! आज विलायत मांहे कपड़ा की कित्ती कळां छे! फकत आपणे अठे साल मांहे पैंतीस करोड़ रुपयां को कपड़ो आवे छे. तो आपांने अठे कित्ती कळां काढ़णी चाहिजे?

श्रीकिस०—यूं समझाया विना कांई मालम पड़े महाराज! म्हे किशा अंग्रेजी सीख्योड़ा छां सू इशी वातां जाणा? भैया को तो आजकाल कळ पर पूरो ध्यान जम रह्यो छे. वो वोले छे के आपांने घर मांहे सू क्यूं भी रकम लगाणी पड़े नहीं. ओर दस लाख की कळ मांहे आधी पांती रहशी तिका मांहे साल का खरच जाता वाकी चोखा रुपया पच्चीस हजार मिल्वो करसी. महाराज! मने तो वड़ो अचंवो हो रह्यो छे के घर की रकम लागे नहीं ओर कळ मुफत मांहे वणकर साल का इत्ता रुपया मिलता होवे तो लोग किशा आंधा छे सू ओ इशो विना पूंजी को धन्धो करे नहीं?

वंसीध०—नहीं सेठ साव, पहली तो रुपया लगाणाही पड़े. पण दस लाख का एक हजार सेर हजार हजार का काढ्या ओर हजार आदमी एक एक सेर लिया पीछे फेर वीं मांहे आपको कांई लागणो छे? पहली खरच होवे सू भी वीं पूंजी मांहे सू पाई पाई पीछो मिल जाया करे छे. इण मांहे इत्तीही वात छे के करवावाळा की आवरू ओर नांव चोखो चाहिजे. ओर पहली खरचवा के तांई दस वीस हजार चाहिजे. तथा सेर नहीं विके तो उत्ती घर की सरधा भी चाहिजे. ये इशा काम विद्या का, खटपट का ओर एकी का छे. इयानही तो आज विलायत मांहे सैकड़ों

कपड़ा की, लेणदेण की, आड़तकमिशन की, मालताल वेचवालेवा की, बीमा की, बेंका की कंपन्याही कंपन्या छे. तिकासूं वे लोग करोड़ों कमा रह्या छे !

श्रीकिस०–(खुशी होकर) जरां तो महाराज, ओ काम घणो आछो छे.

बंसीध०–भलां, आछो नहीं होवे तो इशा काम मांहे कंवर साब पड़े काई ?

लछमी०–नहीं महाराज, आजकाल को समयो आछो नहीं तिकासूं डर लागे ओर काई ?

बंसीध०–आप वेफिकर रव्हो सेठाणीजी ! म्हे लोग कदेदी वुरी सल्ला देव। नहीं. आ बात आछी नहीं होती तो म्हे कंवर सावने जरांही रोक देतो.

लछमी०–ठीक छे महाराज, थांके ध्यान मांहे आई तो. पण रामरतन हाल टावर छे. बींने आछी तरह समझाता रहीजो ओर काई ?

बंसीध०–आप बेफिकर रव्हो. लो अब परवानगी होवे ? घणी वार हुई. (जावे छे.)

श्रीकिस०–बस, अब म्हे भी दुकान पर जावूं छूं. (जावे छे.)

लछमी०–चाल जीवड़ा, आपां भी आपणा कामने लागां. (जावे छे.)

प्रवेश सातवो.

ठिकाणो–गंगाबिसनजी का घर के ऊपर को झरोको.

(गंगाविसनजी आवे छे.)

गंगावि०–(मन मांहे) गजब कीनो रांड ! म्हारे सूं भी दगलबाजी कर गई ! पण, 'दगा नहीं किसका सगा, करा नहीं तो कर देख' काई मीठी

मीठी वाता करी, कसमासोगना खाई, खूब ईमान दिखायो के जांती बखत आधो माल थांने देकर जावूंगी. हुई सू तो ठीकही हुई पण हाल म्हारे घर को आठ दस हजार को गहणो गयो ! म्हे खूब दोस्ती और प्यार दिखा कर हाथ मारवा को विचार करने, ब्रजलालजी के काम आवा के तांई घर मांहे सू बरजता बरजता जबरदस्ती सूं सारो गाहणो रांड के सुपरद कर दीनो ! नजीक नजीक लाख रुपया को गहणो ले गई छे. वा अब पाछी काय की आवे छे. आज गयाने छे सात दिन हो गया—तार नहीं ओर चिट्ठी भीं नहीं. तार चिट्ठी तो दूर, पूग्या की भी तो मालम नहीं हुई. साथ दोनू बदमाश भी गया छे. विचारा ब्रजलालजी तो घणाही कहता था के थे साथ जावो—पण, म्हे साथ जातो तो फेर म्हारे कांई हाथ आणो थो?—जाणकर म्हे जावा की टाळी तो म्हेही डूब्यो !

(इतना मांहे जड़ाव बाई आवे छे.)

जड़ाव०—(उदास होकर.) अब काय को विचारफिचार छे ? आप भी डूब्या ओर मने भी उघाड़ी कर दीनी ! इशो कांई दोस्ती दिखाबा के तांई नाक झर रह्यो थो ? अब गहणो तो मिल चूक्यो ! आठ चार दिन ओर रस्तो देखो, फेर सेठजी कने सू गहणो नहीं तो गहणा का रुपया मांगो. थे थांका रुजगारधन्धा मांहे चाव्हे सू लेणदेण करो पण, ओ कांई—म्हारो गहणो क्यूं विछे लगा दियो ?

गंगावि०—(जरा चिड़कर) कांई हुवो तो—गहणो कठे चल्यो गयो कांई ? ओर गयो तो गयो ! थे जाणजो सेठजीके कने सू नहीं मिल्यो थो. थांने तो ओर घणोही मिल जासी. नुकसाण हुवो तो म्हांको हुवो ?

जड़ाव०—थांको हुवो तो कांई ओर सेठजी को हुवो तो कांई—एकही वात छे. पण लोगां को तो घर हुवो ? " चोरी को धन मोरी में जाय ! "

गंगावि०—(चिड़कर) तो कांई म्हे कठे चोरी करकर लायो थो कांई ?

जड़ाव०—(हंसकर) नहीं तो कांई कठे कमावा गया था ?

गंगाबि०—कठे बिना कमायोड़ो धन आतो होसी ?

जड़ाव०—फेर कियान गयो तो ?

गंगाबि०—कठे जावे छे ? आवा दे सेठजीने. हाल तो सेठाणी कने घणोही माल छे. थांका गहणा की तो तजवीज लाग जाशी. अवार सेठजी आवे जरां म्हे तो बारे जाऊं छूं—थे जरा तजवीज सूं बात करकर सेठाणी का गहणा पर हाथ मारवा को डांवपेंच भिड़ा दीजो. थांकी बात सेठ जरांही मान लेशी. भूलजो मतीना—म्हे बारे जावूं छूं. सेठजी अवार आया का आया छे. (कपड़ा पहरकर जावे छे.)

जड़ाव०—(मन मांहे) नसीबा का आछा भाड़खावू मिल्या ! हे **राम** ! मारवाड़ी जात की आछी सत्या गई ? पैसा के तांई नहीं नहीं सू करवा लाग गया ! अब बापड़ा के पास कांई रह्यो छे सू वो गहणो ला देसी ? आगे होकर तो बापड़ाने काळी धार डुबो दियो ! पहली तो एक रांड गळा मांहे घाल दीनी, खूब पैसा उड़ाया ओर समेट्या भी ! फेर धाप्या नहीं तो म्हारी भी लाज सरम गमाई ! पैसो बुरी बलाय रह्या करे छे—कुछ भी सूझबा देवे नहीं ! पण बाई, किशाही घर का धणी की—भलांही परायो करोड़ पती क्यूं नहीं होवे—कदे बराबरी नहीं हो सके. म्हारे तो चोरीछिपी को काम छे नहीं तो भी जीव धड़कधड़क करबो करे. सेठ के साथ करां खाली बातचीत करूं तो भी डर लागबो करे के कोई देखतो सुणतो तो नहीं होसी ? ओर लोग मने कांई कहता होसी ? अंगार लागो बाई, इशा धनने—के जींके तांई कुळ की लाज ओर धरम गमाणो !

(इतना मांहे ब्रजलालजी आवे छे,)

ब्रजला०—(ऊपर आकर बारे सू) **गंगाबिसनजी ! गंगाबिसनजी !**

जड़ाव०—(दरवाजा के पास आकर) क्यूं जी, आज बारे सूही क्यूं ? क्यूं मायने आतां डर लागे छे कांई ?

व्रजला०–कींको डर ?

जड़ाव०–म्हांको ओर कींको ?

व्रजला०–क्यूं भलां ?

जड़ाव०–म्हे जबरदस्त छां !

व्रजला०–कद सू ?

जड़ाव०–आज सूही !

व्रजला०–जरां आज कोई नवी वात दीखे छे ?

जड़ाव०–अब रोजीना नवी नवीही वातां दीखबो करशी !

व्रजला०–म्हांने एकलानेही के आपका सेठजी–नहीं नहीं, धणीजीने भी ?

जड़ाव०–धणीजीने क्यूं–वो वापड़ो थांको कांई लीनो छे ?

व्रजला०–म्हांको कांई लेवे ? उलटी आपकी प्यारी चीज म्हाने दीनी छे !

जड़ाव०–कुणशी प्यारी चीज ?

व्रजला०–आ सामने खड़ी छे ! (हाथ पकड़कर) चालो मांयने, डरविर भगा देवां ! सेठजी–नहीं, धणीजी तो कठे वारे पधाऱ्या दीसे छे !

जड़ाव०–कठे वारे पधारे तो कांई, ओर घर मांहे होवे तो कांई ?

व्रजला०–जरां अब कोई वात को पड़दोविड़दो क्यूं भी नहीं ?

जड़ाव०–नोज ! धनलोभी मारवाड़ी की जातने काय को पड़दो फड़दो !

व्रजला०–(चिड़कर) जरां मारवाड़ी साराही थांके ज्यूं ऊत गयोड़ा छे कांई ?

जड़ाव०—इण माहे कोई शक छे कांई ?

ब्रजला०—जरां फेर थोड़ी वार म्हांके अठे तो चालकर देखो.

जड़ाव०—कांई देखूं—थे नजीकही ऊत गयोड़ा बेठ्या छो के नहीं? वीं बापड़ीने क्यूं ऊत गमावो छो? थांके म्हांके जिशा कांई दुनिया माहे थोड़ा छे?

ब्रजला०—नहीं, घणा छे तो, म्हे कांई कीनो?

जड़ाव० —दुनिया नहीं करे सू !

ब्रजला०—दुनिया तो म्हांसू भी ज्यादा करे छे.

जड़ाव०—यूं म्हां लुगायां का सराप लेवे कांई?

ब्रजला०—गुलामगिरी करता करता ही थे सराप देवो तो फेर उठे उपायही कांई!

जड़ाव०—गुलामगिरी! लुगायां की मोट्यार करे! हे **राम**! कोई सुण लेसी तो कांई कहसी?

ब्रजला०—कांई कहसी—तो झूठी बात छे कांई?

जड़ाव०—ये साची झूठी बातां तो जाबा द्यो. पण, आपकी माजी साबने आप सारो गहणो सूंप कर रवाना करी बा कठे छे—क्यूं वींको पत्तो भी?

ब्रजला०—होसी—थांको म्हां मोट्यारां की पंचात में पड़बा को काम कांई ?

जड़ाव०—म्हांको काम नहीं, ओर म्हांने पड़बो भी लाजम नहीं. पण—

ब्रजला०—पण—कांई छे सू बोल द्यो.

जड़ाव०—पण—कांई बोलूं? बोलकर भी कांई होणो छे?

ब्रजला०—बोल तो द्यो. क्यूं होवो, नहीं होवो—थांने कांई ?

जड़ाव०—बोल खाली जावे उशो बोलकर भी फायदो कांई ?

ब्रजला०—थांको बोल खाली गयो तो फेर सारीही बात गई!

जड़ाव०—द्यो तो फेर वचन ! (हाथ पसारे छे.)

व्रजला०—(हाथ पर हाथ मारकर) बस, अब तो बोलशो ?

जड़ाव०—लावो म्हांको दस हजार को गहणो, नहीं तो उत्ता रुपया !

व्रजला०—थांको गहणो—मने कद सूंप्यो थो ?

जड़ाव०—घर मांहे सू जबरदस्ती थांका भाई साब रांड के साथ भेजवा ले गया था.

व्रजला०—तो, जकाने दियो होसी जका कने मांगो.

जड़ाव०—म्हे तो पहलीही बोल चूकी थी के, फोगट जावे उशो बोलकर फायदो कांई ? फेर वचन दियोड़ो यूंही गयो ? गाड़ी का चाक ओर मर्दां का वचन तो फिरताही भला ?

व्रजला०—नहीं नहीं, वचन फिरता क्यूं भला—कदेही नहीं. नवो गहणो चाहिजे तो लावो घड़ा द्यूं ?

जड़ाव०—जठे तांई फेर कांई म्हे यूं उघाड़ी आछी लागूं ?

व्रजला०—वावा, अवार तो सारो अंग कपड़ा सूं ढक्योड़ो छे. उघाड़ा कठे छो ?

जड़ाव०—उघाड़ी नहीं तो कांई ? सोना की कील भी तो अंग पर छे कांई ?

व्रजला०—सोनो अंग पर होवे तोज लुगाई ढकी, नहीं तो उघाड़ी कांई ?

जड़ाव०—तो, इण मांहे कांई फरक छे—कपड़ोलत्तो ओर गहणोही लुगायां की सोभा छे.

व्रजला०—(हंसकर) जरां, मोट्यार सूं तो लुगायां की कुछ भी सोभा नहीं तो फेर !

जडाव०—क्यूं नहीं—गहणोगांठो मोट्यार विना कठे सू आवे ?

ब्रजला०—मोट्यार कने सू गहणोगांठो नहीं मिले तो फेर वो भी कुछ काम को नहीं!

जड़ाव०—इण मांहे कांई फेर छे? म्हा जिशी लुगायां के तो फेर वो मोट्यार काम को नहीं! थांका भाई यूं काम का नहीं रह्या जरांही तो थांसूं दोस्ती करणी पड़ी के नहीं?

ब्रजला०—दोस्ती को फळ भी तो क्यूं मिल्योही होसी?

जड़ाव०—क्यूं नहीं—फेर अब कांई देर छे?

ब्रजला०— काय की?

जड़ाव०—गहणा की!

ब्रजला०— म्हे समझ्यो के ऊपर चोबारा मांहे चालबा की?

जड़ाव०—हो हो, मने तो जठे ले जाशो उठे चालबा तैयार छूं! पण गहणो—

ब्रजला०—धीरज राखो, सब मिल जासी. चालो तो ऊपर!

जड़ाव०—ठीक छे तो चालो. (दोन्यू ऊपर जावे छे.)

(इतना मांहे गंगाविसनजी आवे छे.)

गंगावि०—(मन मांहे) इण पैसा के तांई आछो धरम डुबोयो! आपकी लुगाई के साथ यूं परायो मोट्यार—रमतगमत ओर बात करणो तो दूर, खाली नजर उठाकर झांक लेवे तो वींसू सहन हो सके नहीं. कमजोर, नामर्द, बूढ़ो, रोगी, मन्योमुरदो क्यूं न हों—लुगाई का ओर वीं पराया आदमी का टूकटूक करबा तैयार हो जासी! इशी बातां परसू अगाड़ी अगाड़ी कित्ताही खून हो गया छे, कित्ताही फांसी चढ़ गया छे ओर कित्ताही कैद हो गया छे—तिकारी गिणती नहीं! पण मारवाड़ी जातने धन छे, पैसा के तांई यूं आपकी लुगाई धोळे दिन धणी के सामने पराया के साथ मोजमजा करबो करे ओर म्हारे जिशो नालायक धणी आंख उठाकर भी देखे नहीं! इत्तोही नहीं, आगे होकर बोले के, "सेठजीने समझा-

कर गहणो ले लीजे. म्हे वारे जावूं छूं!" (जूता ओर लकड़ी कानी देखकर) सेठजी आयोड़ा दीसे छे. दोन्यूं जणा ऊपर मोजमजा करता होसी ओर काई! धिरकार छे मने! म्हारी जातने! ओर म्हारा वाण्यापणाने!! म्हे काई कर रह्यो छूं ओर लोग मने कांई कहता होसी? (इतना मांहे मातीलालजी दलाल आवे छे.)

मोतीला०—(डरतो डरतो जीना मांहे सू) **गंगाविसनजी, गंगाविसनजी!**

गंगावि०—(वड़ा सूं) कुण छे? **मोतीलालजी!**

मोतीला०—हां म्हे छूं. ऊपर आवूं कांई? परवानगी छे!

गंगावि०—आवो, पधारो, थांने परवानगी काय की?

मोतिला०—(ऊपर आकर) वावा, कुण जाणे—सेठाणीने साथ लिय वैठ्या होवो तो?

गंगावि०—दिनकाही?

मोतीला०—तो, दिन का क्यूं हरकत छे कांई?

गंगावि०—कठे मोट्यार आपकी लुगाईने दिन का साथ लेकर वैठता होसी?

मोतीला०—क्यूं नहीं भलां? म्हे तो रोजीना लेकर वैठया करा छां!

गंगावि०—वावा, थांकी लीला थेही जाणो?

मोतीला०—(मन मांहे) थारी लीला तो सारो शहर जाण रह्यो छे! सेठ व्रजलालजी का जूता ओर लकड़ी पड़ी छे सू सेठजी ऊपर सेठाणी के साथ मोजमजा कर रह्या होसी? आछी रामत गमाई?

गंगावि०—क्यूं चुपचाप कियान वैठ्या छो?

मोतीला०—क्यूं भी नहीं, ये जूता ओर लकड़ी फिछाण कीसी दीख रह्या छे.

गंगावि०—(चिमककर) तो, म्हारा जूता ओर लकड़ी थांने पिछाणता अवे कोनी काई? (मन मांहे) भाई, सेठ भी वड़ोही गैलसप्पो छे के, लकड़ी जूता भी सामनेही छोड़कर ऊपर चल्यो गयो! कांई करूं—कठे

ऊपर सू ईंके बैठ्या बैठ्या नीचे नहीं चल्यो आवे? यूं सारा लोग चर्चा करही रह्या छे. फेर ओ–आंख्या देख जासी तो–दलाल भाई छे सू घरोघर कहतो फिरसी ओर कांई? अब ईंने अठे सू जलदीही भगाणो ठीक छे.

मोतीला०–(हंसकर) नहीं भाई, ये आपका जूता ओर लकड़ी छे नहीं. खैर, म्हांने कांई करणा छे? कींका भी हो! बोलो भाई, सेठजी तो खूब पूरा हुवा?

गंगाबि०–क्यूं भाई, पूरा क्यूं करो छो? हाल तो बारा बरस का बैठ्या छे!

मोतीला०–अब कांई छे–जीवता मन्या जिशाही छे! अदमी की बात गया पीछे फेर बो जीवे तो कांई ओर मरे तो कांई!

गंगावि०–भाई, आ बात नवी थोड़ीही छे–आगे आगे सैकड़ों का काम कच्चा पड़ गया छे, दीवाळा नीसुर गया छे, फिरयादीफांटा होकर घरदार जपत हो गया छे!

मोतीला०–जो हुई सू तो ठीक पण मुफत मांहे म्हे गरीब मार्‌यो गयो!

गंगाबि०–तो, कांई हुवो–हजारों रुपया कमाया जठे दसपांच हजार डूब गया तो कांई हुवो? म्हे तो तीसचाळीस हजार की फेंट माहे आ रह्यो छूं!

मोतीला०–लो भाईजी, आप कठे ओर म्हे कठे! आप लखपती पड्या, म्हे गरीब आदमी–सारां की खुशामद करने पेट भरवाळो! भलां, थांकी म्हारी बराबरी छे? पण, गंगाबिसनजी, ब्रजलालजी घणो बुरो काम कीन्हो. छतां धन आबरू गमाई ओर सारो धन आपका हाथ सूं बरबाद कर दियो! अब सेठजी के ऊपर फिरयादीनालसां होकर रह्यो सह्यो सब माल जपत हो जासी! हाल भी–कुछ नहीं तो भी–घर को कूड़ोकचरो पांचपचास हजार को नीसरसी. कांई थांकी सल्ला छे? म्हे भी नालस कर द्यूं कांई?

गंगाबि०–भाई साब, घर मांहे सू नगदी थेल्या गई छे जरां तो नालस

करो परी. नहीं तो वीसपच्चीस के वदले दसपंघराही कामाया जाणकर चुप बैठ जावो. थां म्हां सू सेठजी को दूसरो विचार छे नहीं. वापड़ा अवार तो चाऱ्यां कानी सू दुखी हो रह्या छे. करे सू उल्टो होवे छे. उणकी नीत खराव छे नहीं. उणको हाथ चाल्यो के थांकी म्हांकी तो रकम सारां के पहली देशी. वीचार करने कोई काम करो. वखत नीकळ जावेली ओर वात याद आवो करेली !

मोतीला०–(मन मांहे) देखो वेटो भाड़खावू ! किशा परमोद दे रह्यो छे ? सारो धन खाकर सेठजीने विगाड़ तो दियो तो भी वोले छे के तीसचाळीस हजार के नीचे आ गयो ! आजकाल इशाही नीच, पाजी, चंडाळ, कसायां का दिन छे. विचारा आछा ईमानदार आदमी तो भूखा मरता फिरे !

गंगावि०–क्यूं भाई, चुपचाप कियान वैठ्या छो ? काई विचार छे वोलो.

मोतीला०–विचार काय को छे–सेठजी की दुकान पर सौदा का भाव कट्या वीं दिन की वात याद आ रही छे. आपणी मारवाड़ी जात को क्यूं भी ठिकाणो नहीं. ये कींका भाईवन्द नहीं, ये कींका सगा सोई नहीं ओर कींका दोस्तमिंतर नहीं ! घणीही खटपट कीनी ओर घणाही साराने समझाया. पण, भाव कटती वखत कोई भी आगो पीछो देख्यो नहीं ! मारवाड़ी की जात वड़ी लालची–जाण्यो के भाव कटता पाण थेल्यां घर मांहे आ जाशी ! भाई करोड़पती छे. वो भाई की वात जावा देशी कांई ? पण भाई काई करे–वापड़ो तीन लाख रुपया तो घर, वागवगीचा पर दे दीना. फेर भी लाख दो लाख दे देतो पण; अठे तो पांच छे लाख को दीवाळो–जरां कांई होवे ? भाव ऊंचा काटता ओर थोड़ो नुकसाण होतो तो सारांने दिरीज जातो ओर दुकान भी वणी रहती.

गंगावि०–भाईजी, जठे देखो जठे आपणा लोग धन काही भूखा छे

करणी अकरणी करता देर लगावे नहीं. बेटाबेटीने वेच देवे, लुगाईने वेच देवे ओर खुद आप बिक जावे ! साचझूठ करे, छळच्छिद्र करे, कूड़कपट करे, जाळजंजाळ करे, चोरीछिनाली करे—नहीं नहीं सू करे ! वेईमानी सू पैसो मिलायोड़ो रव्हे कांई ? पण लालची आदमी सूं लालच छूटे नहीं. लालच मांहे बावळो हो जावे !

मोतीला०—(मन मांहे) तू हो रह्यो छेना बाबा ! खुद घर की लुगाईने सूंप राखी छे. अब इणसू ज्यादा लालच ओर बावळोपणो कांई होसी ? (बड़ा सूं) ठीक छे तो, अब जावूं छूं. कांई करां क्यूं भी थरथाळ बैठे नहीं. जरां हाल ठहर जावूं—देखां कांई होवे छे ?

गंगाबि०—म्हारो भी ध्यान ओही बैठे छे. (मोतीलालजी जावे छे.) चालो, बलाय टळी ! (ऊपर सू ब्रजलालजी आवे छे.)

ब्रजला०—जयगोपालजीकी. आज आप कठीने पधार्‍या था ?

गंगाबि०—कठीने पधार्‍यो थो—अठेही थो !

ब्रजला०—फेर म्हे आयो जरां तो घर मांहे नहीं था.

गंगाबि०—जरां थोड़ी वार बारे गयो थो. जदही पाछो आ गयो थो.

ब्रजला०—तो, फेर ऊपर क्यूं नहीं आया ?

गंगाबि०—(चिड़कर) थे अब यूं धोळे दिन म्हारे पीछे ऊपर एक-लाही लुगायां के कने चल्या जावो तो, आ बात आछी छे कांई ? आपकी तो आप सारी लाजसरम गमाई पण, अब म्हांकी भी गमा रह्या दीसो छो !

ब्रजला०—(जोर सूं) इण मांहे कांई लाज गमाई ? म्हे कांई थांकी सेठाणीके बटका भर लीना के, नख लगा दीना सू चिड़ रह्या छो ! म्हे तो अठेही ऊभो ऊभो बात करतो थो पण, आपकी सेठाणीजी साब बोल्या के क्यूं गहाणा की बात करणी छे ऊपर चालो. जरां, ब्यांकी साथ ऊपर गयो थो. बात पूरी हुई. अब घर को रस्तो !

गंगावि०–तो, फेर गहाणा को कांई हुवो ? सेठ साव, आप तो मोटा आदमी छो. म्हे पड्यो गरीव आदमी. वखत ऊपर आपको काम काढ़वा के तांई–घर मांहे वरजता वरजता जबरदस्ती सूं सारो गहणो आपने सूंप दीनो ! आपने कांई कहणो पड़े ? आप सारी वात जाणोही छो.

व्रजला०–कांई करणो भाई, वखत की वात छे. जो नहीं वणणी थी सृ वण गई. अव हीमत छोड्यां कांई होवे ? देखां, तजवीज वैठाई तो छे. हाथ आया सूं आपको गहणो मिल जासी. म्हारो कांई–म्हे तो सारी कानी सू डूवही गयो छूं. खातरी राखजो थे नहीं डूवोला. चालो, अव परवानगी होवे. (जावे छे.)

गंगावि०–(खुशी होकर मन मांहे) धन छे लुगाई की जातने ! तजवीज वैठाई तो दीसे छे. लुगाई की जात अजव मोहिनी हुवा करे छे. इणके आगे कींको कुछ चाले नहीं. सारा इणका गुलाम छे ! वड़ा वड़ा श्रीमन्त, सरदार, राजा, महाराजा पण इणका तावेदार छे ! खुद भगवान् भी हाथ जोड़्या खड़्यो छे ! इण की लीला अपार छे! कांई मोट्यार गहला छे सू सारे दिन मेहनतमजूरी करने पैसा के तांई नहीं नहीं सू धन्धा करता फिरे! घर मांहे लुगाई हुई तो फेर पैसा की कांई कमती छे ? उनकी कमर के तो सोना की नोळी वंधी हुई छे ! (इतना मांहे ऊपर सू जड़ाव वाई आवे छे.)

जड़ाव०–(आंख्या फेरकर) कांई वारे सू आया तो नीचेही वैठ्यो रहणो ?

गंगावि०–(जोर सूं) फेर कांई करूं तो–सेठ सेठाणी की, धोळे दिन ऊपर, मोजमजा चाल रही छी तो म्हे वीच मांहे आकर कांई करूं ? आछी आपकी सरम तथा म्हांकी आवरू गमाई !

जड़ाव०–(चिड़कर) तो फेर कियान हुकम कर गया था के सेठजी कने सू कियानही गहणो काढ़वा की तजवीज करीजे, म्हे वरे जावूं छूं. धन छे वावा, मोट्यार की जातने ! इयान भी वोल्ता देर नहीं ओर उयान भी

बोलबा देर नहीं! तो काई म्हे सेठजी के साथ आपकी लाज गमा रही थी? काई म्हे इशा गया घर की छूं सू यूं दिन काही लोगां के लारे लागती फिरूं छूं? (मूंडो फुगा लेवे छे.)

गंगाबि०--(ऊपर देखकर) तो, कांई बोलता कींकी जीभ और छींकता कींको नाक कटीजे छे कांई ? (मन मांहे) "तिरया चिरत न जाणे कोय, मुणस मारकर सत्ती होय ! " सारी जहानने तो मालम छे. म्हारे सामने भी छक्कापंजा मारती टळे नहीं जिकी कींसू हारे !

जड़ाव०--बोलो साह, थांके ध्यान मांहे आवे–बस, फेर तो क्यूं नहीं ?

गंगाबि०–(नजीक जाकर) बस, अब बोलणोबुलाणो कांई छे–थे थांका गहणा की तजवीज लगा ली होशो? फेर अब म्हारे कने मांगजो मतीना.

जड़ाव०–क्यूं मत मांगजो ? गहणो थांने सूंप्यो छे. सेठजीने थोड़ोही सूंप्यो छे सू म्हे व्यांके कने मांगूं ओर बे मने देवे ? थेही एक लेणदेण ओर बातचीत मांहे समझो छो--दूजा तो साराही गैलसप्पा छे !

गंगाबि०–तो फेर डावपेच कोनी भिड़्यो दीसे छे ?

जड़ाव०–(हंसकर) क्यूं नहीं भिड़े ? "देख बन्दी की फेरी मा तेरी के मेरी ! "

गंगाबि०–(खुशी होकर) जरां तो गढ़ जीत लियो ! वाह साब, आपकी काई बात छे ! फेर तो सेठजी के साथ चाव्हे सू करो–बातां करो, चीतां करो ओर मोजमजा करो ! आपणे तो घर मांहे माल आयो चाहिजे.

जड़ाव०–बस, खूब सत्या गमाई ?

गंगाबि०–बस, सत्याफत्या रहबा द्यो. काई कीनो सू झट बता द्यो.

जड़ाव०–काई कीनो–सेठाणी का नांव की चिट्ठी लिखा लीनी छे. (कांचळी मांहे सू काढ़कर) आ लेवो. नीसाणी के तांई घड़ी तथा रुमाल ले लीना छे.

गंगावि०—(चिठ्ठी वांचकर) वस जरां तो काम हुवो. सेठाणी पढ़योड़ी छे, वड़ी रुमाल की काई जरूरत थी? चालो जो हाथ लाग्यो सूही कमायो.

जड़ाव०—कदास सेठाणी सेठ की चिठ्ठी कवूल नहीं करी तो?

गंगावि०—(सामने देखकर) तो कांई, वा थांकी जिशी लुगाई छे सू गहणा के तांई सेठ को हुकम मानसी नहीं? म्हारी जाण मांहे तो गहणो कांई—सेठके तांई—सेठ मांगे तो, आपका प्यारा प्राण देवा तैयार छे! फेर तो वा वा कळूकाळ छे, कुण जाणे—धन का लालच माहे आकर कठे नट जावे तो मालम नहीं. (विचार करने) नहीं नहीं, सेठाणी धणी के आगे धनमाल, दुनिया कांई, प्यारा प्राण भी कुछ चीज समझे नहीं!

जड़ाव०—(चिड़कर) हो हो, मालम छे थांका सेठ ओर सेठाणी सत-वंता छे सू!

गंगावि०—(हंसकर) सेठ को कांई—सेठ तो पूरो गैलसप्पो छे. पण, सेठाणी पूरी सती लुगाई छे इण मांहे शक नहीं. खैर, देखीजशी. चिठ्ठी तो सेठाणी के पास पूगवा द्यो.

जड़ाव०—वस, अव तो हुवा खुशी! चालो ऊपर.

(दोन्यूं जावे छे)

अंक तीजो समाप्त.
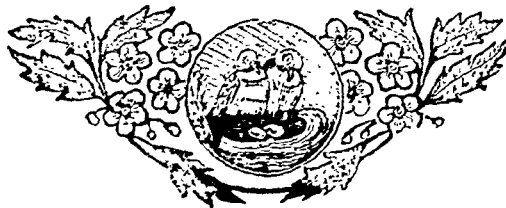
कळ होजो कपड़ा तणी, सुन्दर धन की खान । बधजो उद्यम मोकळो, सुख साता सन्मान ॥

॥ श्री ॥

फाटकाजंजाल नाटक.
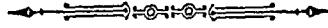
अंक चौथो.

पात्रः—रामरतनजी, शिवनारायणजी, पंडित वंसीधरजी, रामचन्दरजी, नारायणराव, मणिलाल, जगन्नाथप्रसाद, श्रीकिसनजी, शहर का मारवाड़ी, दूजा लोग, बाजावाळा, महबूब बीबी, गंगाबिसनजी, ब्रजलालजी, दो दलाल, जयदेव (ब्रजलालजी को डावड़ो), राधा बाई, अमरसिंग ओर गुलाबचन्दजी.

प्रवेश पहलो.

ठिकाणो—श्रीकिसनजी का बगीचा मांहेलो मंडप.

(रामरतनजी आवे छे.)

रामर०—(चाऱ्या कानी फिरता फिरता मन मांहे) चालो, मंडप तो ठीक हुवो. शामियानो लगा देता तो भी काम चल जातो. पण मंडवा की होड़ होती नहीं. चाऱ्या कानी दीवालां पर चक्करदार फूलां की माळा तथा फूलां का गुच्छ लगावा सूं खूब शोभा हो रही छे. छत भी घणो चोखो हुवो छे. ऊपर फूलां की माळा खूब सजाई छे. बिछायत भी ठीक छे. कुरशां भी मोकळी छे. अबार तो सारी व्यवस्था घणीही चोखी छे. पण आपणा मारवाड़ी सरदार पधाऱ्या पीछे कठे की कुरशी कठे चली जाशी ओर कठे को बैठबाळो कठे जाकर बैठ जासी! कुण जाणे—परमेश्वर इणको हिरदो काय को बणायो छे सू बीं मांहे कोई बात को प्रवेश नहीं होवे! "सभ्यता" ये तीन अक्षर

काई छे, क्यूं वण्या छे ओर कांई काम का छे सू सपना मांहे भी जाणे नहीं! थक्या हुवा चित्तने—थोड़ी वार, चार जणां मांहे वैठकर, फिर हिरकर, देवदर्शनादि करकर अथवा कोई समाज, सभा, मंडळी मांहे जाकर—क्षणभर विश्रान्ति देणी? राम को नांव! कदे जासी नहीं, ओर कदास आग्रह सूं बुलाया पीछे गया तो किशा ठीक सभ्यता सूं वैठसी के, वोलसी के, चालसी—कुछ भी नहीं! मारवाड़ी जाति का उदयकाळने हाल घणी देर छे. आपां भी एक मारवाड़ी कुळ मांहे जन्म लीनो छे. आपणो फरज छे के तन मन धन सूं इनकी सेवा करणी, भलो चाहणो ओर उपकार करणो—वींके तांई ही आज ओ परमेश्वर की कृपा सूं शुभ दिन प्राप्त हुवो छे.

(इतना मांहे शिवनारायणजी आवे छे.)

शिवना०—(हाथ उठाकर) जयगोपाल कंवर साव! (चान्या कानी मंडवो देखकर) मंडवो तो ठीक वण्यो छे. अव कांई देर छे?

रामर०—हाल तो घणी देर छे. चार वज्या को मुहूर्त्त छे.

शिवना०— तो, फेर एक जगां वैठ जावो. नींव को पत्थर तो सेठजी का हाथ सूंही धराणे को विचार छे ना?

रामर०—हां, विचार तो इशोही छे. भायाजी वखत ऊपर आकर आपका हाथ सूं पत्थर धर देवे जगां खरो. पुराणा विचार का आदमी छे, वखत पर ध्यान वैठे नहीं वैठे!

शिवना०—यूं वखत पर नहीं आवे तो फेर हांशी होवे नहीं कांई?

रामर०—नहीं नहीं, समझकर वात मान तो लीनी छे. फेर होसी सू दीखाजिशी.

शिवना०—नींव के तांई चांदी सोना का पावड़ोकुदाळी कराया होशो?

रामर—नहीं भाई, आपां किशा अंग्रेज लोग छां? फकत एक चांदी की करणी कराई छे. तिका भायाजी का हाथ मांहे देकर पत्थर के ऊपर वींसूं चूनो नखाय देशां.

शिवना०—करणी कठे छे देखां भलां ?

रामर०—(लाकर) आ देखो भाई !

शिवना०—वाह भाई साब, खूब आछी बणाई छे. वीच मांहे तो सेठजी को नांव "द्वारकानाथ श्रीकीसन" लिख्यो छे. ओर नीचे ऊपर दोहो लिख्यो छे—

कळ होजो कपड़ा तणी, सुन्दर धन की खान ।
वधजो वेपार घणो, सुख साता सन्मान ॥

रामर०—क्यूं ठीक छेना ?

शिवना०—आपकी कांई वात कहणी ? आछा कारीगर का हाथ सूं बणी छे. फेर ईंके ऊपर ओ इशो सुन्दर दोहो लिखीजो छे. " सोनो ओर सुगन्ध !"

(इतना मांहे पंडित वंसीधरजी आवे छे.)

रामर०—(ऊठकर) पगां लागूं पंडितजी. (पांवां पड़े छे.)

संसमिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ ॥
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्याभर ॥

शिवना०—(हाथ जोड़कर) पगां लागूं महाराज !

वंसीध०—कल्याणमस्तु. कंवर साव, पूजा को सारो सामान आ गयो छे ना ? हाल तो देर छे. सेठजी आया नहीं. शहर का लोग भी हाल कोई आया नहीं.

रामर०—(पूजा को सामान दिखाकर) देखो, गुरुदयाल, ओ छे.

वंसीध०—(देखकर) ठीक छे. ढककर आछी तरह सूं रख द्यो.

शिवना०—बाजो देशी मंगायो छे के अंग्रेजी ?

रामर०—दोन्यूं भी आया छे.

(इतना मांहे रामचन्दरजी हारतुरा, गुलाव, अतरपान लेकर आवे छे.)

रामचं०–कंवर साव, ओ देख ल्यो सब सामान.

रामर०–गुरुजी, जरा आप भी निगह कर ल्यो.

वंसीध०–घणोही छे, ओर घणो सुन्दर छे. कंवर साब, आज ध्वजा-पताका चान्या कानी लगावणे सूं वगीचा की शोभा खूब वढ़ रही छे. पण अठे कळ की इमारत होणे सूं फेर ये सारा झाड़झडूला टूट जासी ओर मालताल सूं सारो वगीचो भर जासी जरां तो, फेर बगीचा की इशी शोभा रहवा की नहीं,

रामर०–नहीं, गुरु महाराज! मालताल के तांई सरकार मांहे सूं वगीचा की उत्तर वाजू की सड़क के पास की ४०|५० एकर जगा लीनी छे. वगीचा का छेवड़ा के नाका पर कळ की इमारत वणशी. ओर मालताल का गोदाम दूसरी जमीन पर वणसी. वगीचो तो इशोही कायम रहकर इणकी ओर ज्यादा दुरस्ती होकर खूब सजायो जासी. वगीचो रहसी तो कळ केही लारे ओर कंपनी ईंकी मालक होसी. सरकार कृपा करने ज्यूं कंपनीने जगा दीनी छे त्यूं म्हांका पिताजी उदारता करने कंपनीने ओ वगीचो दीनो छे.

वंसीध०–जठे सारोही काम उदारता सूं हो रह्यो छे उठे प्रभु की भी उदारताही होशी! कंवर साव, कंपनी को नांव कांई राख्यो छे?

रामर०–"धी मारवाड़ी कॉटन मेन्युफेक्चरिंग कंपनी, लिमिटेड."

वंसीध०–ईंको अर्थ कांई हुवो?

रामर०–मारवाड़ी लोगां की रुई को माल तैयार करवा की मंडळी.

वंसीध०–"लिमिटेड" कांई?

रामर०–"लिमिटेड" को अर्थ नियमित–अर्थात् हिस्सा दारां की जवाबदारी उणके हिस्सा का रुपया ताई की छे. कोई भी हालत मांहे हिस्सादार पर हिस्सा का रुपयां के सिवाय ओर कोई जोखम आ सके नहीं.

बंसीध०—कदास कंपनी डूब जाय ओर कंपनी पर करज हो जाय तो फेर कुण देवे?

रामर०—कंपनी की पूंजी मांहे सू दिरीजे. कोई हिस्सादारने कुछ नहीं देणो पड़े.

बंसीध०—कदास पूंजी सू करज ज्यादा हो जाय तो?

रमार०—बींकी दामाशाई होकर करज चुकायो जावे.

बंसीध०—जरां फेर साहूकार लोग धीजपतीज कियान करशी?

रामर०—क्यूं नहीं? काई नुकसाण लागे तो काम चालबो करे? कदेही नहीं. एक दो साल कंपनी नफो नहीं मिलावे ओर नुकसाण मालम पड़े तो कोई भी हिस्सादार आगे होकर सरकार सू उसी वखत काम बन्द करा देवे. इसी वास्ते सरकार एक कंपनी को कायदो वणायो छे. कंपनी के ऊपर सरकार की देखभाळ रह्या करे छे. कंपनी का नफानुकसाण को हिसाब हरसाल सरकार मांहे भेजणो पड़े छे.

बंसीध०—इण कंपनी की पूंजी कित्ती रखी छे? ओर बींका कित्ता सेर कीना छे?

रामर०— हाल तो दस लाख की पूंजी कीनी छे. बधावा को कारण हुवो तो चाव्हे जित्ती बधावा को अधिकार छे. हजार हजार रुपया का एक हजार सेर कीना छे.

बंसीध०—तो, कंवर साब, आपको इण मांहे काई विभाग छे? ओर आपने इण मांहे कांई प्राप्ति होशी?

रामर०—'कमिशन एजंसी' मांहे म्हारो आठ आना को विभाग छे.

बंसीध०—'कामिशन एजंसी' कांई हुवा करे छे?

रामर०—'कमिशन एजंसी' बींने कह्या करे छे के, एक अथवा अधिक आदमी मिलकर इशी कळ अथवा ओर कोई बेपार करबा को इरादो करने इण काम मांहे पड़कर कंपनी का संस्थापक होवे. बे आपस

मांहे लिखत करने एजन्ट बणे ओर कंपनी का डायरेक्टर बणाकर उणकी तरफ सूं आपकी तनखा अथवा नफा मांहे सूं कमिशन अथवा माल की विक्री पर आड़त अथवा ओर कोई प्रकार की प्राप्ति नियमित कराकर लेख करने कंपनी की रजिस्टरी करावे. चाहिजे उत्ती पूंजी इकट्ठी करने कंपनी को काम सुरू करे. सारा काम को बोझ आपका माथा पर लेकर कंपनी को काम चलावे. सरकार का कायदा मुजब साल मांहे दो वार नफानुकसाण को हिसाब हिस्सादाराने समझा देवे ओर मिले सू नफो वांट देवे.

वंसीध०—तो, आपने इण मांहे कांई प्राप्ति होशी ?

रामर०—चोखा नफा पर पंधरा टका कमिशन ओर कळ चालू होवे जठे ताई रु० ७५०) ओर चालू हुवा पीछे रु० १,५००) हर महीने तनखा—इशो ठहराव हुवो छे. कोई साल आठ आना सू कमती व्याज हिस्सादारांवे मिले तो म्हे लोग आपका कमिशन मांहे सू पूरो कर देणो.

वंसीध०—इण मांहे आपकी रकम कित्ती लागसी ?

रामर०—दसपांच हजार खरच पुरती. फेर वा भी पीछी मिल जाशी. ओर कुछ भी नहीं.

वंसीध०—तो, कांई मुफत मांहे आपने तनखा ओर कमिशन मिलसी ?

रामर०—मुफत मांहे क्यूं ? कळ की इमारत वांधणी, कळां मंगाकर उण मांहे लगाणी ओर कळ चलावा को सारो काम करणो. सेर भराकर रकम पूरी नहीं हुई तो वींको ओर कोई बन्दोवस्त करणो अथवा घर सू देणी. माल की खरीदीविकरी करणी ओर नफानुकसाण को हिसाब भुगताणो. म्हे लोग हिस्सेदारां का नोकर वणकर नोकरी देवाळां छां ! मुफत कुण कोई कीने देवे छे गुरुदयाल ?

वंसीध०—ठीक छे तो जरां, वरस भर की आपकी तनखा, कमिशन, कामवाळां की मजूरी, नोकरां की तनखा, हापस को खरच, दलाली,

हमाली, ब्याजबट्टो, भाड़ेतोड़ो, आड़तकमिशन, लकड़ीकोयलो विगेरा सारो ख़रच जाकर इण कळ मांहे नफो कांई रहसी—तिकारो पण आप हिसाव लगायो होसी ?

रामर०—हां गुरु महाराज, इण कळ मांहे सूत कातवा की चरख्या (स्पिंडल) पंधरा हजार ओर कपड़ो बुणवा का करघा (लूम) तीनसो लगावा को विचार छे. तिका मांहे छुट्टियां वाद जाता वरस का ३०० दिन का हिसाव सूं सूत साड़ा वाईस लाख रत्तल ओर वीं सूत माहे सू साड़ी बारा लाख रत्तल कपड़ो तैयार होसी. वींका कमती सू कमती रुपया तेरा लाख ऊपजसी. ओर पक्का ८० का तोल सूं चाळीस सेर का मण लेखे एकतीस हजार मण रुई लागशी. तिकारी कीमत तेजी मंदी का हिसाब सूं सात लाख रुपया हुई ओर मजूरी, तनखा, खरच, ब्याज, बीमो, लकड़ीकोयलो, आड़तदलाली विगेरा कुल खरच अंदाज सूं ढाई लाख—जुमला साड़ी नो लाख हुवा. वाकी नफो साड़ा तीन लाख रुपया रह्यो सू अमानत फंड मांहे भी मोकळो रखकर हिस्सा-दारांने साल मांहे सवाई नफो मिलसी.

बंसीध०—(अचंवा सूं) इत्तो नफो मिलसी ?

रामर०—ओ तो कुछ भी नहीं. कमती सू कमती हिसाव लगायो छे. अमदावाद, नागपुर, सोलापुर ओर मुम्बाई की मिलां का सेरां का भाव अवार दूणा तीणा हो रह्या छे—सू काय सूं ? नफो ज्यादा मिलवांही सूं के नहीं ! माणिकजी पेटिटवाळा एक हजार का सेर पर एक साल मांहे नफा का चारसो रुपया दीना छे. ओर अमानत फंड मांहे भी घणी रकम राख लीनी छे. अवार इण कंपनी का एक हजार का सेर को भाव ३९०० को छे ! तीनचार बरस मांहे नफा का एक हजार घर मांहे आकर चोगणा हो जावे, फेर इण सूं बेजोखमी ओर इत्ता नफा को ओर किशो रुजगार छे ?

वंसीध०—इशा नफा को रुजगार छे? आ तो एक अनोखीही वात सुणवा मांहे आई! अमानत फंड कांई हुवा करे छे कंवर साव?

रामर०—साल भर को हिसाव हुवा पीछे कुल खरच बाद करने वाकी का नफा मांहे सू—कदास कोई साल नुकसाण लाग जावे, घसकर खराव हो जावा सूं कोई नवी कळ बैठाणी पड़े अथवा ओर कोई दुरस्ती करणी पड़े तिका सारू—नफा का कमी ज्यादा प्रमाण पर सैकडे पांच सू पंधरा तांई की रकम निकाळकर रख ली जावे, वींने अमानत फंड कह्या करे छे. आ इशी रकम वखत पर काम आवे ओर नुकसाणी की धास्ती रव्हे नहीं.

वंसीध०—जरां ओ काम तो घणोही चोखो छे. मिले तो नफोही. नुकसाण को तो कामही नहीं. तिका मांहे एजन्टांने तो कुछ भी जोखम उठाणी पड़े नहीं. एक छोटा मोटा राज कोसो काम छे. ये इशा रुजगार छोड़कर आपणा मारवाड़ी लोग क्यूं "फाटकाजंजाळ" ओर "झूठकपट" का वेपार मांहे फस रह्या छे—राम जाणे!

शिवना०—गुरु महाराज, नोज! आपणा लोगांने इशी वातां सूं कांई करणो छे? पहली तो समझे नहीं, कोई समझावे तो माने नहीं ओर माने तो भी करे नहीं! व्यांने तो फकत एक वात मालम छे--"घी को पैसो ओर पैसा के घी!" इणके आगे वे कोई भी वात जाणे नहीं!

वंसीध०—अवार इशा गयावीत्या समय मांहे भी आपणा लोगां मांहे सैकडों लखपती, कितनाही करोड़पती, रायवहादुर, राजा, सी. आय. ई. मौजूद छे. वे अवार दिल पर धारे तो सारा हिन्दुस्थान मांहे कित्ती कपड़ा की कळां खड़ी कर देवे, किशा मोटा वेपारी वणकर देशी कपड़ो चाहिजे जिशो तैयार करने देश को सौभाग्य वधावे ओर आप श्रीमान् वणकर हजारों गरीवां को पेट भरकर पुण्य का भागी होवे!

रामर०—पण महाराज, उणको तो एक सिद्धान्त हो रह्यो छे के इशी कळां मांहे जीव मरे तिका सूं ओ काम करणो नहीं. मावाप, भाईबन्द, सगासोई, बिरादरी ओर देश का लोग चाव्हे जित्ता भूखा मरता मर जावे तो बींको पाप नहीं, पण ये इशा कीड़ामकोड़ा मर जावे तो व्यांको महा पाप लागे !! उठे कांई उपाय ?

शिवना०—कंवर साब, आही एक वात छे सू नहीं. कींको विश्वास कीं पर नहीं, धीजपतीज नहीं ओर स्वार्थत्याग नहीं. आपां रोजीना देखां छां के सीरी सीरी मांहे जठे उठे किशा लड़ाईझगड़ा चालबो करे छे ? ये इशा काम देशभक्ति, बन्धुभाव ओर एकता का छे. दो मारवाड़ी मिलकर कन्योड़ो काम श्रीजी की बड़ी कृपाही सूं पार पड़ जाय तो पड़ जाय, नहीं तो राड़झगड़ो तो सामने खड़्योही छे !

बंसीध०—अब इण वातां परसू मने पूरी मालम हो गई के मारवाड़ी लोगां माहे विद्या नहीं तिकासूं वे कुछ समझ सके नहीं, ओर आपको मन चाह्यो फायदो उठाकर कुळ को के, जाति को के, देश को भलो कर सके नहीं !

(इतना मांहे नारायणराव, मणिलाल ओर जगन्नाथपरसाद आवे छे,)

रामर०—(आगे होकर) आवो, पधारो ! भला बखत ऊपर आया. (आपके नजीक कुरशी पर वैठावे छे.)

नाराय०—आजचा थाट पाहून तर बुवा, चकित व्हावें लागलें. बागाच्या दरवाज्यावर " धी मारवाड़ी कॉटन मेन्युफेक्चरिंग कंपनी, लिमिटेड " हें नांव सोनेरी अक्षरांनीं किती सुंदर आणि मनोहर लिहिलेलें आहे ? बागांत शिरतांच पहिल्या कमानीवर " वेल्कम " चीं अक्षरें किती खुबी-दार लिहिलेलीं आहेत ! मंगलपताका सर्व ठिकाणीं किती सुरेख रीतीनें टांगलेल्या आहेत कीं,त्या जणों वायुवेगानें सर्वांस आव्हानच करित आहेत ! आणि मंडपापुढील कारंजा तर आपल्या शीतल तुषारानीं मंडळीचें जणों

प्रेमपूर्वक स्वागत करित आहे! मंडप तरी फारच सुंदर तैयार केला आहे. ठिकठिकाणीं फुलांच्या माळा आणि चक्राकृति हार भिंतीवर फारच शोभा देत आहेत. वैठक आणि खुर्च्या वगैरे यथास्थित मांडल्या आहेत. परंतु बुवा, हें मध्येंच टेवल कशाला ? (आज को ठाठ देखकर तो वावा, चकित होणो पड्यो. वाग का दरवाजा पर "धी मारवाड़ी कॉटन मेन्युफेक्चरिंग कंपनी, लिमिटेड" ओ नांव सुनेरी अक्षरां सूं कित्तो सुन्दर ओर मनोहर लिख्योड़ो छे ? वाग मांहे वड़तांही पहली कमान पर " वेल्कम " का अक्षर किशा खूबीदार लिख्या हुवा छे ! मंगलपताका सब जगां किसी सुंदर रीत सूं टांगी हुई छे के वे जाणे हवा का वेग सूं सारांने बुलाही रही छे ! ओर मंडप का अगाड़ी को फंवारो तो आपका शीतल तुषारां सूं मंडळी को जाणे प्रेमपूर्वक स्वागत कर रह्यो छे ! मंडवो भी घणोज सुन्दर तैयार किनो छे. जगां जगां फूलां की माळा ओर चक्राकृति हार भींत पर घणीज शोभा दे रह्या छे. वैठक ओर कुरशां विगेरा ठीक रखी हुई छे. पण वावा, ओ वीच मंज टेवल क्यूं ?)

रामर०—राव साव, आपने आता देर हुई नहीं, वरावर वैठ्या नहीं, सामान देख्यो नहीं ओर चाऱ्या कानी फिऱ्या नहीं—तो भी एकदम तारीफ कर दीनी ! म्हारी जाण मांहे तो कुछ भी काम ठीक हुवो नहीं. कांई करणो राव साव, म्हे वोलचालकर मारवाड़ी पड्या ! कित्ती भी हूंशारी सूं, मेहनत सूं ओर कारीगरी सूं काम कीनो तो भी कठे न कठे खामी रहवावाळीही ! ओ वीच मांहे टेवल आपका वावू साव जगन्नाथपरसाद के तांई धऱ्यो छे.

मणिला०—केम शूं करवा ? जगन्नाथपरसाद एनी उपर वेसशे के ?

जगन्ना०—वाह भाई, खूव ! कहीं मजालिस में कोई टेवल पर वैठता होगा ?

नाराय०—(याद आकर) नाहीं नाहीं, आतां मी समजलों. हें लेक्चर

देणाराच्या पुढें असावें ह्मणून ठेवलेलें आहे ! (नहीं नहीं, अब म्हे समझ गयो. ओ लेकचर देवाळा के आगे होणो तिका सारू रख्यो हुवो छे.)

शिवना०–(हँसकर) इयान जरा राव साब, रस्ता पर आवो.

नाराय०–बरें तर लेक्चर कोण देणार ? (ठीक तो लेकचर कुण देसी ?)

रामर०–बाबू जगन्नाथप्रसाद !

जगन्ना०–क्यों भला, मेरा क्या काम है ? मिल का नाम मारवाड़ी, मिल का काम मारवाड़ी, मिल के डायरेक्टर मारवाड़ी, मिल के एजन्ट मारवाड़ी, और शेअर-होल्डर भी मारवाड़ी—तो, मारवाड़ीही को आज लेक्चर देना ठीक होगा. क्यों भाई, मणिलाल ?

मणिला०–ठीक छे तो एमां कंई हरकत नथी. अमारा रामरतन शेठ लेक्चर आपशे. पछे तो कांई हरकत नथी ?

रामर०–नहीं भाई, थोड़ी हरकत छे. मारवाड़ी लोगां को ओ काम छे तो भी आज का समारंभ मांहे सभी जात का लोग आणेवाळा छे. व्यांने भी मिल संबंधी सारी बातां समझणी चाहिजे—तिका सारू हिन्दी भाषा मांहे आज लेक्चर होणो जरूर छे. हिन्दी का वक्ता बाबू साब छे सू व्यांनेज तकलीफ देणी पड़शी. नहीं तो म्हे एक पग पर तैयार छूं. म्हारी तरफ सूं कुछ हरकत नहीं. पण मारवाड़ी बोली सारा समझबा का नहीं इत्तोज !

बंसीध०–ठीक छे कंवर साब, आप को कहणो वाजबी छे. हिन्दुस्थान देश की भाषा हिन्दीही छे. कदे न कदे सारा हिन्दुस्थान की एक भाषा हिन्दी होवेली; जदही कुछ देश को भलो होवेलो.

नाराय०–ठीक आहे. पंडितजीचें म्हणणें अगदीं योग्य आहे. आमचे बाबू साहेब विद्वान, देशभक्त आणि व्यापाराचे पूर्ण माहितगार आहेत. हे मंडळीच्या हृदयावर आपल्या भाषणाचा चांगला ठसा उठवतील. ईश्वर-

कृपेनें आजचा दिवस हिंदुस्थानच्या इतिहासांत सुवर्णाक्षरांनीं लिहून ठेवण्याचा आला आहे! कारण मारवाड़ी वैश्य खरे खरे वैश्य (व्यापारी) असून त्यांचा अधोगतीस प्राप्त झालेला व्यापार आज एका मारवाडी समिति कडून उन्नत होऊन त्याची प्रगति होत आहे—ही काय लहानसहान आनंदाची गोष्ट आहे? (ठीक छे. पंडितजी को कहणो घणो योग्य छे. म्हांका वावू साव विद्वान्, देशभक्त ओर वेपार का पूरा वाकफकार छे. ये लोगां का हिरदा पर आपका भापण की आछी छाप वैठा देशी. ईश्वर की कृपा सूं आज को दिन हिन्दुस्थान का इतिहास मांहे सोना का अक्षरां सूं लिख रखवा को आयो छे! कारण मारवाड़ी वैश्य साचा साचा वैश्य (वेपारी) होकर उनको अधोगतिने प्राप्त हुवोड़ो वेपार आज एक मारवाड़ी समिति की तरफ सूं उन्नत होकर वींको उत्कर्ष हो रह्यो छे—आ कांई छोटा मोटा आनन्द की वात छे?)

जगन्ना०—जव सव का ऐसाही अभिप्राय है तो फिर मेरी क्या हरकत है? परन्तु अभी सेठ साहव भी तो पधारे नहीं.

रामर०—वे तो अवार आया का आया छे. (नारायण रावने) जित्ते आप सामान ओर व्यवस्था देखकर क्यूं कमती ज्यादा होवे तो कह द्यो सू ठीकठाक करणे मांहे आवे.

नाराय०—(सव समान ओर चाऱ्या कानी देखकर) तुम्ही आतां मारवाडी थोडेच राहिले आहां तर तुमच्या कामांत कोठें न्यूनता पडेल? सर्व व्यवस्थित आहे. मुहूर्त किती वाजतांचा आहे? (थे अव मारवाड़ी थोड़ाही रह्या छो तो थांका काम मांहे कठे कमी पड़े? सव ठीक छे. मुहूर्त कित्ती वज्या को छे?)

रामर०—राव साव, चार वज्या को छे. हाल तो देर छे.

(इतना मांहे शहर का मारवाड़ी ओर दूसरा लोग आवे छे, ज्यांने कुरशी पर जठे के उठे रामचन्दरजी मुनीम वैठावे छे.)

माणिला०–भाई, आजनो दाड़ो तो बहुज श्रेष्ठ छे के, मारवाडी लोकोने घणूं आग्रह करीने बोलाविये तो पण कहीं जता नथी, ते आज बद्धा अहीं आवीने भेगा थाये छे! जोवो, एटलामांज मंडप भराई गयो!

नाराय०–मणिलाल शेट, असेंच असतें–जोंपर्यंत मनुष्य कोणतेंही काम हातांत धरित नाहीं तोंपर्यंत फारच कठिण वाटत असतें. काम हातीं धरून प्रयत्न केल्यानें काय नाहीं होत? "उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः" यांत काय संशय आहे? मारवाडी पुढें होत नाहींत, मारवाड्यांना कांहीं समजत नाहीं व मारवाडी कांहीं करित नाहीं–असें ओरडून कांहीं होत नाहीं पुढें झालें म्हणजे सर्व कांहीं होतें. मात्र, ह्या मंडळींत आतां आमच्या रामरतन शेटसारख्या पुढाऱ्यांची फार आवश्यकता आहे. "उद्यमेन हि सिद्धयन्ति कार्याणि न मनोरथैः। नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥" यांत कांहीं संशय आहे काय? कधीं कोणी ऐकिलें आहे काय कीं सिंहाच्या तोंडांत आपोआप हरिण जाऊन पडला! (मणिलाल सेठ, इयानही छे–जठे ताईं आदमी कोई काम हाथ माहे लेवे नहीं उठे तांई घणोही कठिन मालम हुवा करे छे. काम हाथ मांहे लेकर प्रयत्न करवा सूं कांई नहीं होवे? "उद्योगी पुरुषसिंह के नजीक लक्ष्मी आवे" इण मांहे कांई संशय छे? मारवाड़ी आगे होवे नहीं, मारवाड़्यांने कुछ समझे नहीं ओर मारवाड़ी कुछ करे नहीं–इयान पुकारबा सूं कुछ होवे नहीं. अगाड़ी हुवा के सब कुछ होवे. अलबत, इण जात मांहे अब म्हांके रामरतन सेठ जिशा अगुवा की विशेष आवश्यकता छे. "उद्योग सूंही कार्य की सिद्धि हुवा करे छे. मनोरथ सूं नहीं. सोया हुवा सिंग का मूंडा मांहे हरण आ कर पड़े नहीं" इण मांहे कुछ संशय छे कांई? कदे कोई सुण्यो छे कांई के सिंग का मूंडा मांहे आपोआप हरण जा कर पड़्यो!)

(इतना मांहे श्रीकिसनजी की गाड़ी आवे छे. बेंडवाजो बाजणो सुरू होवे छे.)

जगन्ना०–(आगे होकर.) आइये सेठ साहब! पधारिये. सब लोग

आपही की मार्गप्रतीक्षा कर रहे हैं. सब तैयारी है. आपही के आने की देरी थी.

(श्रीकिसनजी मंडप मांहे आवे छे.)

श्रीकिस०—बाबू साव, कित्ती देर छे ?

जगन्ना०—कुछ देर नहीं है. सवा तीन बज गये हैं. चलिये अब नीव के पास.

श्रीकिस०—(वंसीधरजी का पगां पर सिर रखकर) पावांधोक छे महाराज !

वंसीध०—(शिर पर हाथ रखकर)

समानीव आकूतिः समाना हृदयानि वः ॥
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥

नाराय०—(खुशी होकर) वा: पंडितजी, शेटजीस ह्या वेळेस पाहिजे तसाच आपण आशीर्वाद दिला आहे. ईश्वर करो आणि मारवाडी जातीचें हृदय व विचार सारखे होऊन अशा देशकार्यांत प्रवृत्त होवोत. (वाह पंडितजी, सेठजीने इण वखत चाहिजे उशोही आप आशीर्वाद दीनो छे. ईश्वर करो ओर मारवाड़ी जात को हृदय ओर विचार सरीखा होकर इशा देश का काम मांहे प्रवृत्त होवो.)

जगन्ना०—इसमें क्या संदेह है ? पंडितजी खाली आशीर्वादही नहीं देते किन्तु मारवाड़ियों की एकता करनेके लिये स्वयं कटिबद्ध हैं. ऐसे बिगड़े समयमें भी अभी मारवाड़ी जाति का अपने पुरोहितों पर धर्म विश्वास कायम है. यदि पुरोहित लोग अपना उपदेश, प्रयत्न और कृति इनके सुधारमें लगाना चाहे तो अवश्य उसका फल इसी प्रकार हो सकता है. (बीच मांहे)

वंसीध०—बाबू साब, आप बोलो सू तो ठीक छे पण, म्हां ब्राह्मणां की

भी तो विद्या शक्ति जाती रही ! मारवाड़ी ब्राह्मणां कानी आप देखशो तो उनके पास एक जनेऊ का डोरा सिवाय ओर कुछ भी मिलसी नहीं ! बो डोरो भी कुण जाणे—कियान गळा माहे पड़ जाया करे छे ! तो इशा पुरोहित कांई कर सके ? मारवाड़ी ब्राह्मणां को, मारवाड़ी वाण्यां को ओर मारवाड़ देश का लोगां को जिण दिन कुछ आछो समय आ-वेलो उण दिनही कुछ सुधार होवे तो होवो ! हाल मारवाड़ी जातिने ग्यान ऊपजबा, बिचार सूझवा ओर इशा कार्य मांहे ऊतरबा दो तीन पीढ़ी की देर छे. चालो सेठ साब, अब नींव की जगां. पूजन करता कराता भी तो कुछ देर लागशीही.

(श्रीकिसनजी, बंसीधरजी, रामरतनजी, शिवनारायणजी, नारायणराव, जगन्नाथ-प्रसाद, मणिलाल, रामचन्द्रजी विगेरा सब नींव के पास जावे छे.)

श्रीकिस०—कठे बैठणो महाराज !

बंसीध०—हां सेठ साब, आप इण पाटा के सामने बैठो. गणेशपूजन कराणो छे.

(श्रीकिसनजी पाटा के सामने बैठे छे.)

श्रीकिस०—अब मुहूर्त्तने कित्ती देर छे—जरा देख ल्यो.

बंसीध०—आप पूजाबीजा करशो उठे ताई चार बज जाशी. हां, पगड़ी को पल्लो खोल द्यो ओर आंख्या के जळ लगावो. (रामरतनजीने) हां कंवर साब, आप भी सेठजी के कने बैठ जावो.

रामर०—(सेन करने) हूँ: चालबा द्यो, म्हे नजीकही छूं.

बंसीध०—सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णक: ॥

लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायक: ॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजानन: ॥

द्वादशैतानि नामानि य: पठेच्छृणुयादपि ॥

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ॥
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ॥
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

ल्यो, हाथ माहे अक्षता—गं गणपतिं आवाहयामि—अक्षता नाखो.

(पूजन कराया पीछे सारा नींव के पास जावे छे.)

श्रीकिस०—हां पंडितजी, अब अठे कांई करणो छे ?

वंसीध०—(चांदी की करणी हाथ मांहे लेकर) लेवो सेठ साव, इण करणी सूं टोकरी मांहिलो चूनो इण खाड़ा मांहे नाख द्यो ओर इण भाटा के हाथ लगावो सूं सारा मिलकर चूना पर रख देवां !

(करणी हाथ मांहे लेकर श्रीकिसनजी चूनो नाखे छे ओर सारा मिलकर पत्थरने उठाकर नींव ऊपर रखे छे.)

श्रीकिस०—बस, गुरु महाराज, अब तो हुवो ?

वंसीध०—सेठ साव, अभी कांई हुवो छे ? अभी तो खाली "श्रीगणेशायनमः" हुवो छे. मारवाड़ी लोगां का सुधार की आज ही नींव पड़ी छे. हाल तो होवा हुवावाने घणीही देर छे.

श्रीकिस०—आपकी शुभ आशीस सूं श्रीठाकुरजी सभी कुछ करसी. मुख्य ब्राह्मणां को आशीर्वाद ओर श्रीठाकुरजी की कृपा चाहिजे.

जगन्ना०—इसमें क्या संशय है सेठ साहब ! आज यह शुभ मुहूर्त्त हमारे परम माननीय पंडितजी केही प्रभाव का फल है. नहीं तो आप सिर्फ जीवजन्तु बचाने की चिन्ता में निमग्न थे परन्तु यह नहीं सोचा जाता था कि एक मनुष्य का मर जाना अनन्त कोटि जीवों के मर जाने से भी अधिक है ! सेठजी, क्या कहूं—आज कितनेही लोग भूख के मारे मर रहे हैं उनमें से कम से कम तीन चार हजार आदमियों की इससे भूख मिटेगी. तो क्या उन जीवजन्तुओं की अपेक्षा यह कम पुण्य होगा ?

श्रीकिस०—हां बावू साव, म्हे इण बातां मांहे कांई समझां ? आप जिशा चार बड़ा बड़ा आदम्यां का कह्वा सूं ओ काम कीनो छे. अब ईने शिरे चढ़ाणो आप लोगां केही हाथ छे. रामरतनने आपके सुपरद कीनो छे. अब थे जाणो ओर वो जाणो ! मने जो जो काम कहशो करवाने तैयार छूं.

नाराय०—बस, शेट साहेब ! इतकें आपलें अभिवचन बस आहे. आतां ही मिल यशस्वी झाली यांत शंका नाहीं. चला आतां मंडपांत जाऊं. तेथें आमच्या बाबू साहेबांचें थोडेसें भाषण झाल्यानंतर मग सर्वांस हारतुरे, अतरगुलाब आणि पानसुपारी देण्यांत येईल. (बस, सेठ साब ! इत्तो आपको अभिवचन बस छे. अब आ मिल यशस्वी हुई इण मांहे शंका नहीं. चालो, अब मंडप मांहे जावां ! उठे म्हांका बाबू साब को थोड़ो सो भाषण हुवा पीछे फेर सबने हारतुरा, अतरगुलाब ओर पानसुपारी देणे मांहे आशी.) (सारा मंडप मांहे आकर आप आप की जगां बैठे छे.)

शिवना०—(ऊभा होकर) आज का जलसा का सभापति मान्यवर पंडित बंसीधरजीने बणावा की म्हारी सूचना छे. (बैठे छे.)

मणिला०—(खड़ा होकर) शिवनारायण शेठनी सूचना योग्य छे. सर्व प्रकारथी पंडितजीने आ मान योग्य घटे छे. (बैठे छे.)

नाराय०—(ऊभा रहकर) शिवनारायण शेटची सूचना आणि मणिलाल शेटचें समर्थन फारच योग्य असून त्यास केवळ माझेंच नाहीं सर्वांचें अनुमोदन आहे. (शिवनारायण सेठ की सूचना ओर मणिलाल सेठ को समर्थन घणो योग्य छे. ज्यांने फकत म्हारोही नहीं सारां को अनुमोदन छे.) (बैठे छे.)

बंसीध०—(ऊभा होकर) हे चराचर जगन्निवास ! दयालो परमेश्वर !

ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः । शं नो भवत्वर्यमा ।
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः । शं नो विष्णुरुरुक्रमः ॥

नमो ब्रम्हणे । नमस्ते वायो । त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रम्ह वदिष्यामि । ऋतं वदिष्यामि । सत्यं वदिष्यामि । तन्मामवतु । तद्वक्तारमवतु । अवतु माम् । अवतु वक्तारम् ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

हे सर्वशक्तिसंपन्न जगत्प्रभो ! आपने कोटिशः धन्यवाद छे के आज मने सर्व साधारण के समक्ष म्हारी जजमान मारवाड़ीजातिने दो शब्द सुणावा को शुभ अवसर प्राप्त कर्‍यो. हे परात्पर प्रभो ! इणसू भी आपको अनेकानेक धन्यवाद छे के आप द्वारकानाथजी जिशा सत्पात्र का कुळ मांहे श्रीकिसनजी जिशा कुळदीपक को उदय कीनो ओर उणका घर मांहे रामरतनजी जिशो सद्रत्न निर्माण कीनो ! (टाळियां) हे ईश्वर ! आज आपकी प्रेरणा सूं—इणही का घर सूं, इणही का साहस सूं, इणही का सद्विचार सूं ओर इणही की पवित्र इच्छा सूं ओ इशो शुभ काम वण्यो छे. आज वड़ोही आनन्द को दिन छे के मारवाड़ी जाति का प्रतिष्ठित, प्रधान ओर शिष्ट पुरुष साराही अठे विराजमान होकर आपकी जाति को गौरव वधायो छे, नहीं नहीं—एक वेपार का वड़ा भारी मार्ग की खोज कीनी छे. (टाळियां) कपड़ो कांई चीज छे, कपड़ा की कळ कांई छे ओर इणसूं कांई कांई फायदा छे तिका वद्दल थोड़ी वार एक व्याख्यान बाबू जगन्नाथप्रसाद देणेवाळा छे. सू आप साराही सरदार कृपा करने चित्त लगाकर सुणशो तो आपने धणी वातां मालम होकर इशो लाभकारक काम करवा की आपका हृदय मांहे शुभ कामना उत्पन्न होशी. (वैठेछे.टाळियां)

जगन्ना०—(ऊभा होकर) उस परात्पर भगवान् को प्रणाम करता हूँ, परम पूज्यपाद मातापिता को नमस्कार करता हूँ और परम वन्द्य पंडित

श्रीबंसीधर शर्मा का अभिवादन करता हूँ कि जिनकी कृपा से आज सर्व साधारण की सेवा में मुझको कुछ प्रार्थना करने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ.

सर्व माननीय सद्गृहस्थ हो !

आज अनन्त काल से हमारी भारत भूमि जलपूर्णा, अन्नपूर्णा और फलपूर्णा है. यह भूमि सार्वदेशिक जल से सिंचित, वायु से पूरित और फलों से फलित है. यहां मधुर, क्षार, तरल, जड़ जल का परिवर्त्तन; शीत, उष्ण, समशीतोष्ण वायु का परिवर्त्तन और सार्वदेशिक धान्य, फल, पुष्पों का परिवर्त्तन जहां तहां—संचित, संचालित और सम्पादित है. इसी लिये इसका नाम हिरण्यगर्भा वा स्वर्णभूमि है. इसकी संतान को किसी पदार्थ के लिये, किसी वस्तु के लिये, किसी चीज के लिये—किसी पर देश का, किसी पर भूमि का और किसी पर मनुष्य का कभी मुँह ताकना नहीं पड़ता था. हमारी मातृभूमि—उत्तुंगतरंगमय नीलाम्बुपूर्ण समुद्रवलयांकित है. हमारी पुण्यभूमि—तीर्थोदकपवित्रा, तरुलतापुष्पविचित्रा, मरकतप्रभ श्यामायमान कृषिक्षेत्रा है, और हमारी स्वदेशभूमि—सृष्टिसौंदर्यपूरिता, विशालसौधमालापरिशोभिता, अन्नफलभारविनम्रा है. भारतवर्ष विश्व का शिल्प-प्रदर्शनागार है, भारतवर्ष अशेष ज्ञान का भाण्डागार है, भारतवर्ष सनातनधर्म का तत्वागार है और भारतवर्ष कर्मभूमि का पुण्यागार है. (तालियां)

संसार में अपने निर्वाह के लिये मनुष्य को अनेक पदार्थों की आवश्यकता है. उनमें विशेष आवश्यकीय पदार्थ अन्न और वस्त्र हैं. अन्न शरीर का धारक है और वस्त्र शरीर का संरक्षक है. अन्न तो यहीं हमारी मातृभूमि हमको विपुल देती है. इसी प्रकार मातृभूमि से हमको वस्त्र सामग्री विपुल मिलने पर भी और हम उसके आद्यप्रणेता होकर भी—कालचक्रवश परदेशियों का संसर्ग होतेही हम सालस्य और उद्योगपराङ्मुख हो गये ! और यहां से रुई परदेश को भेज के विशेष खर्च से उसके

वस्त्र बनकर यहां आने पर हम परिधान करते हैं! और आज हम उसकी कीमत के पैंतीस करोड़ रुपये देते हैं जिससे हमारा सालाना बीस करोड़ का नुकसान होता है! (टाळियां)

इसमें कोई संशय नहीं है कि दुनिया में वस्त्र बुनने की कला प्रथम भारतवर्षही से ईजाद हुई है. इसका प्रमाण—हमारे अनादि तथा पाश्चात्य विद्वानों के भी सिद्धान्तानुसार जगत् की प्रथम पुस्तक ऋग्वेद में जगह जगह पाया जाता है. सब से विशेष यह है कि—

दिवश्चिदा पूर्व्या जायमाना विजागृविर्विदथे शस्यमाना
भद्रा वस्त्राण्यर्जुना वसाना सेयमस्मे सनजा पित्र्या धीः॥

इसका अर्थः—हे इन्द्र, प्रकाशमान सूर्य से भी प्रथम प्रातःकाल संबंधी जो स्तुति रूप वाणी उत्पन्न होती है वही—यज्ञ में प्रशंसा की हुई पवित्र, शुभ्र एवं तेजोमय वस्त्रों को धारण की हुई, हमारे पूर्वजों से क्रमागत अर्थात् प्राचीन, स्तुतियोग्य आपको जगाती हुई—आपकी स्तुति होती है. इसमें वस्त्र का वर्णन तो हैही पर, वे वस्त्र पवित्र, शुभ्र और तेजस्वी थे तथा पूर्वजों से क्रमागत थे—इस पर से उस वक्त रुई के महीन, सफेद और तेजस्वी अर्थात् स्वच्छ धुले हुए कपड़े प्रस्तुत होते थे और वे उद्गाता के पूर्वजों से चले आते थे. वेदों के पीछे स्मृतिशास्त्र बना है उस में मनुस्मृति प्रधान है. उस में "वस्त्रं पत्रमलंकारं कृतान्नमुदकं स्त्रियः। योगक्षेमं प्रचारं च न विभाज्यं प्रचक्षते॥" अर्थात् वस्त्र, अलंकार, वाहनादिक का विभाग नहीं करना चाहिये. इस पर से उस समय तो वस्त्र विपुल थे. इसके पीछे पुराण काल में वाल्मीकि रामायण आदि काव्य है उसमें राजा दशरथ के अमात्यों के वर्णन में आद्य कवि वाल्मीकिने बालकांड में लिखा है कि—

सुवाससः सुवेषाश्च ते च सर्वे शुचिव्रताः ॥
हितार्थाश्च नरेन्द्रस्य जाग्रतो नयचक्षुषा ॥

दशरथ राजा के मंत्री सुन्दर वस्त्र और सुन्दर वेप धारण करनेवाले थे. अब हमारे श्रुति, स्मृति, पुराण ग्रंथों पर से निर्विवाद सिद्ध है कि हमारे यहां वस्त्र बुनने की कला अत्यन्तही प्राचीन है. इस विषय में पाश्चात्यों का भी यही अभिप्राय है. आज दो हजार वर्ष पहिले जिस वक्त सिकन्दर इस देशमें आया था उस वक्त उसके साथ उस देश का प्रथम ग्रंथकार हेरोडोटस् था. उसने कहा है कि हिन्दुस्थान में एक ऐसा पौधा होता है कि जिसमें ऊन पैदा होती है, ओर वहां के लोग उसके कपड़े बनाकर पहनते हैं. उस वक्त हमारे लोगों की पोशाग उसने सादी, सुन्दर और कीमती, सफेद तथा रंगीन चमकीली छींटों से बनी हुई देखी थी.

ईसा के पहिले छठी शताब्दी में यहां से रुई का पौधा मिसर देश को गया था. तब से वहां इसकी खेती होती है. उसके अनन्तर बहुत काल व्यतीत होने पर ईसा की नववीं शताब्दी में यूरोप में स्प्यानिश मूर लोगोंने प्रथम रुई का पौधा मिसर से ले जाके व्हेलेन्सिया के मैदान में उसकी खेती की. अनन्तर चौदहवीं शताब्दी में कारडोव्हा, ग्रानाडा और सेव्हेली प्रान्तों में रुई की पैदावार हुई और रुई साफ करने के कहीं कहीं कारखाने खुले. धीरे धीरे उसका सूत निकलने लगा, और मोटा कपड़ा भी तैयार होने लगा, जो उस वक्त साइरिया के कपड़े से कुछ ठीक था; और जिसको वहां के लोग एक प्रकार का बड़ा भारी तोहफा समझते थे ! अमेरिका में अंग्रेजोंने अनुभव के लिये सन १६२१ में व्हर्जीनिया प्रांत में प्रथम रुई की खेती की थी. अठारहवीं शताब्दी के अन्त तक अमेरिका से सालाना कुछ सैकडे रुई के गठ्ठे बाहर रवाना होते थे. पीछे एकही शताब्दी में वहां इसकी खेती का इतना बड़ा भारी विस्तार हुआ कि आज वहा

करोड़ से भी अधिक रुई के गट्ठे पैदा होते हैं और रुई की न्यूनाधिक कीमत वहीं के पैदावार पर निर्भर है !

यों तो भारतवर्ष में सर्वत्रही हाथ चर्खों पर महीन से महीन सूत काता जाता था, और हाथ करघों पर अधिक से अधिक कीमती कपड़े वुने जाते थे. पर वंगाल के ढाका नगर और उसके नजदीक के गांवों में उसकी कमाल थी. वहां की स्त्रियां अपने नाखून में वारीक वारीक छिद्र करके उनके द्वारा इतना महीन सूत वनाती थी कि इस वक्त के हिसाव से ८४० गज की ५३० तक आटियां एक पौण्ड में रहती थीं—अर्थात् उस सूत का ५३० नंवर हुआ ! इतने महीन सूत की वनी हुई मलमलें और अन्यान्य छींट इत्यादिक वहुत प्रकार का कपड़ा यहां से परदेशीय यात्री अपने देश को ले जाते थे और वहां अपने राजाओं को प्रसन्न करने के लिये उनको नजर करते थे. वैसेही अरव, तुर्क, चीनी, रोमन इत्यादिक लोग यहा से लाखों रुपयों का कपड़ा खरीद कर अन्यान्य देशों में उसका वि-क्रय करते थे. सतरहवीं शताब्दी में उक्त ढाका नगर से पोलण्ड के आग-स्टस वादशाह के दरवार में वहुतसे मलमल के थान भेजे गये थे. वंगाल में इतनी महीन, सुन्दर और वहुमूल्य मलमल वनती थी कि उसका उप-योग वड़े वड़े श्रीमान, राजा, महाराजाही कर सकते थे ! यह मलमल वजन में इतनी हलकी और महीन वनाई जाती थी कि अंग्रेजों के यहां आने पर का एक प्रमाण मिला है कि वीस गज लंवी और सवा गज अरज की मलमल का थान वजन में कुल ३५ तोले था ! सन १८४६ के साल में डाक्टर टेलर के सूत की तलाश में १३४९ गज सूत का वजन सिर्फ२२ ग्रेन था—अर्थात् लगभग दो आनी भर हुआ. जिसका ५२४ का नंवर आता है ! इतना महीन सूत संप्रति कलाकुशलता के शिखर पर पहुंचे हुए प्रतिसृष्टिकर्ता अंग्रेज लोग भी नहीं वना सकते—जो एक भारतवर्ष की अनभिज्ञ स्त्री अपने झोपड़े में जंगली चरखे से कातकर वनाती थी ! (टाळियां) एक कारीगरने इतनी महीन मलमल वनाई थी कि उसकी घड़ी एक छोटे

से बांस की नली में रखकर अकबर बादशाह को अर्पण की थी. जिसकी चौड़ाई और लंबाई इतनी थी कि वह उस नलीमें से निकालकर अम्मारी सहित हाथी पर डालने से दोनों तरफ उसके पैर तक आई थी! ऐसे उमदा उमदा बने हुए सैकड़ों प्रकार के कपड़ों के लिये परदेशीय बड़े बड़े श्रीमान् और राजा महाराजा सदा उत्कंठित रहकर बतौर तोहफा यहां से खरीद करके मंगाते थे और उनको परिधान करके विशेष गौरव तथा आनन्दलाभ करते थे! (टाळियां)

परन्तु कालचक्र की कुटिलता कौन जान सकता है? अंग्रेजी व्यौपारियों का यहां पदार्पण होतेही—उनके व्यापार की तरक्की, उनके धन की समृद्धि और साम्राज्य की प्राप्ति हमारे व्यापार की, धन की और राज्य की प्रतिबन्धक हुई. उस वक्त यहां से यूरोप में लाखों रुपयों का कपड़ा जाता था, और वहां की प्रजा उसको उत्साहपूर्वक उपयोग में लाती थी पर, वहां के अतुल पराक्रमी देशहितैषी वीर पुरुषोंने अपने देश की हानि समझकर इसको रोकना चाहा. सरकार से ७० से ८० सैकड़े तक महसूल लगवा दिया गया तौभी यहां का कपड़ा नहीं रुक सका! आखिर वहां की सरकारने सन १७२१ में कानून बनाकर वहां की प्रजा को हिन्दुस्थानी कपड़ा पहिनने से रोका. पीछे यद्यपि यूरोप में रुई, कारीगर और चरखे करघों का अभाव था तौभी सन १७६७ में लांकेशायर के नजदीक स्टानहिल में रहनेवाले एक गरीब हारग्रीव्हस् नामक कारीगरनें सूत कातने "जेनी" नामक एक यंत्र निर्माण किया, जिसमें खड़ा चाक फिराने से ८ तार एकदम निकलते थे. सन १७६९ में आर्कराइट नामक कारीगरने उसमें एकदम ५० तार निकलने की व्यवस्था करके सरकार से उसका पेटन्ट लिया, और उसने डर्बीशायर में पानी के जोर से चलनेवाला एक छोटासा सूत कातने का कारखाना खोल दिया. सन १७७१ में लांकेशायर में प्रथम कपड़ा बुनना आरंभ हुआ और परमेश्वर की पूर्ण कृपा से सन १७७९ में यांत्रिकशक्ति उपयोग में लाई गई!

प्रथम जब विलायती कपड़ा यहां आने लगा तब इतना खराब आता था कि वहुधा उसको कोई न लेते थे. कदाचित् कोई थान उसमें अच्छा होता था तो उसको देख साश्चर्य कहते थे कि "क्या यहां के जैसा कपड़ा विलायत में भी वनने लग गया?" पीछे भाग्यदेवी का वर इनको प्राप्त होतेही दिनोंदिन कलों में नये नये सुधार होने लगे. शारीरिक शक्ति की अपेक्षा यांत्रिक शक्ति द्वारा हरएक काम वहुत सत्वर, सुन्दर और सस्ता होता है—इसी लिये क्रमश: गंगानदी के किनारों के झोपड़ों में ५०० नंबर जितना वननेवाला वारीक सूत और वे कीमती मलमलें नावूद होने लगी, यहां तक कि राजा महाराजाओं के महलों से लेकर उन्हीं झोंपडों तक वही विलायती सूत और कपड़ा दाखिल होकर उसने वे सुत कातने के जंगली चरखे और हाथ से चलनेवाले करघों को एक तरफ रखवा दिया! और अपनी सुन्दरता, मनोहरता तथा विशेपकर सस्तेपन से भारतवासियों को यहां तक भुला दिया कि अपने देश का कपड़ा उनको विलकुलही अपवित्र, घृणित और वुरा मालूम होने लग गया!!

इस प्रकार यहां के कपड़े का वड़ा भारी उद्योग अंग्रेजों के हाथ में जाने से इस देश की करोड़ों की हानि होने लगी, और वहुधा यहां के सूत कातने और कपड़ा वुनने के कारखाने जहां तहां वंद होकर कारीगर लोग मजदूरी करने लग गये, और व्यापार नष्ट होने से देश दरिद्री वन गया! दिन दिन नई नई तर्ज का कपड़ा विलायत से यहां आने लग गया और खूवही सस्ता विकने से रहा सहा यहां का कपड़ा प्राय: नामशेप होने पर आ गया! परन्तु ऐसा क्यों हो रहा है, और हम क्या कर रहे हैं—इसका विचार कोई भी नहीं करता! अज्ञान पक्षी जो हजारों वर्प के पहिले से अपने घोसले वनाते आये हैं उसी तरह आजतक वे अपने घोसले वनाने में आलसी, हतोत्साह और निरुद्यम नहीं हैं. पर, हा! हमारे भारतवासी तो उनसे भी अज्ञान होकर इस वक्त लाचार वन गये! अपना तर्क; अपना ज्ञान और अपनी शक्ति खो वैठे! (तालियां)

प्राचीन काल के उन कारीगरों के हाथ के बनाये हुए भव्य देवालय, स्तूप, मीनार, किले, इमारतें, विजयस्तंभ, पर्वतों में बनाये हुए विहारस्थान, गुहा इत्यादि देखकर किसको आश्चर्य नहीं होता, किसको अपने देश का सौभाग्य नहीं दिखाई देता, किसको अपने देश का महत्व नहीं मालूम होता और किसको अपने देश का अभिमान नहीं प्राप्त होता ? कैसा तर्क, कैसा ज्ञान, कैसा वैभव, कैसा धन और कैसा व्यापार था कि जिससे हमारा देश एक दिन अतुल तर्कशाली, ज्ञानशाली, वैभवशाली और व्यापारशाली था !! (टालियां)

अन्त में इन्हीं अंग्रेजों का धन्यवाद है कि जिनके प्रभाव से, शक्ति से, कृपा से और सहानुभूति से सन १८५४ की साल भारतवर्ष में एक कपड़ा बुनने की मिल बम्बई में खुली. पीछे धीरे धीरे सन १८६५ में १३, सन १८७६ में ४७, सन १८८६ में ९५, सन १९०५ में १९७ और सन १९०६ में कुल २०४ मिलें खुली हैं. उनकी पूंजी १७२ करोड़ की है. जिनमें कुल स्पिंडल (सूत कातने की चरखियां) तिरपन लाख हैं, और कुल लूम (करघे) बावन हजार हैं. जिन पर लगभग दो ढाई लाख मजदूरों का निर्वाह होता है. ३९२ पौण्ड की एक गठड़ी के हिसाब से उन्नीस बीस लाख गठड़ी रुई इन कलों में खर्च होती है, जो यहां की पैदावार में सैकडे साठ पैंसठ हिस्से है. उसका सूत पैंसठ करोड़ पौण्ड और कपड़ा सतरह करोड़ पौण्ड बनता है. तौभी परदेश से सालाना लगभग पचास करोड़ पौण्ड कपड़ा आता है तो, फिर हाल अभी अपने देश का कपड़ा हमको पूरा मिलने के लिये कम से कम और इतनीही मिलों की जरूरत है.

जिस देश के लोग अपनेही बनाये हुए पदार्थ अपने उपयोग में लाकर अन्य देश के बाजारों में भी भेजकर बेच सकते हैं वे धनाढ्य और सुखी होते हैं. उनका देश संपन्न और सशक्त होता है. उनके देश में कभी अकाल नहीं पड़ता, कभी भूख के मारे लोग नहीं मरते, और कभी लोग

भिक्षा मांग अपना निर्वाह नहीं करते. व्यापार से वित्तार्जन होता है, वित्तार्जन से पुरुषार्थ वढ़ता है, पुरुषार्थ से आदर होता है, आदर से बन्धुभाव दृढ़ होता है, वन्धुभाव से एकता होती है; एकता से सामर्थ्य आता है और सामर्थ्य से शक्ति प्रवल होती है. "संघे शक्तिः कलौ युगे" इसमें क्या संशय है? (टाळियां)

ये इतनी कपड़े की कलें इस देश में निकालकर दो तीन लाख आदमियों का निर्वाह कर देश को धनसंपन्न करना केवल धनाढ्योंहीं का काम है. इस वक्त पूरे धनाढ्य अंग्रेज लोग हैं वे—जव उनकी विलायती कलों का माल यहां अव्याहत विक रहा है तो—परदेश में अपनी पूंजी लगाकर परदेश का फायदा क्यों कर सकते हैं? इस देश के यहुदी, पारसी, खोजे, वोहरे, गुजराती आदि पढ़े लिखे धनाढ्य पुरुष यथाशक्ति ऐसी कलें खोलकर वे आज लाखों रुपयों के मालिक वन वैठे हैं. अव रहा वड़ा भारी धनाढ्य वर्ग मारवाडियों का—अफसोस! अफसोस! वे ऐसे लाभकारी, सुखकारी और धर्मकारी कामों से मुँह मोड़ के, लेनदेन, आढ़तदलाली, छोटा मोटा देशावरी माल, सौदासूत, तेजीमंदी, रुई अफीम का सट्टाफाटका, कपटजालजंजाल में फँसे हुए हैं! (टाळियां) इनके वन्धुभाव तथा देशभाव के अभाव से, स्वार्थपरायणता से, लालची स्वभाव से और अघटित तृष्णा से—द्रव्यसंचय करने में अनेक वुराइयां पैदा होती हैं. माल खरीदने में सवा सेर और वेचने में तीन पाव, उधार लेने में चार छ आने सैकड़ा और उधार देने में चार छ रुपये सैकड़ा, किसानों से रुपयों पर सवाई और धान्य पर ड्योढ़ी दुगनी तथा हिसाव में भी गोलमाल! इसी लिये अहमदनगर के किसानों ने इनके साथ वड़ी धूमधाम करके इनके वहीखाते जला डाले थे! आढ़त के व्यापार में—चार आने में एक सौ की जोखम, हुण्डी के व्यापार में—दो आने में एक सौ की जोखम, दलाली में—एक आने में एक सौ की जोखम और सट्टाफाटके में—तो, एक शब्द में हजारों की जोखम

उठाना पड़ती है!—इसी लिये जहां तहां इनका अविचार, मिथ्या भाषण, निर्दयता और वेपरवाही व्यक्त होके निरादर, लघुता और शायलाक की तुलना पाई जाती है! तौभी इन ऐसे घृणित और गर्हित मार्गों को छोड़कर ऐसे योग्य, प्रशंसनीय और धार्मिक वित्तार्जन की तरफ नजर उठाकर नहीं देखते कि जिससे धर्म का, कुल का, जाति का और देश का उद्धार हो.

आज मारवाड़ी जाति में विद्या का प्रचार होके बन्धुभाव प्राप्त हो जाय और एकता बढ़के स्वार्थ छोड़कर मारवाड़ी जाति स्वदेश वस्तूपार्जन में दत्तचित्त हो जाय तो, बात की बात में सहकारी धन एकत्रित होके उपर्युक्त २०० कलें सिर्फ मारवाड़ी लोगही खोल के ऐसे धनाढ्य बन सकते हैं कि उनका छलच्छिद्र का सब व्यापार छूट जाय, "हाय पैसा हाय पैसा!" इस मंत्र का लोप हो जाय, उनके गृहस्थाश्रम का सुधार हो जाय और वे राजा महाराजा बन जांय. व्यापार द्वाराही अंग्रेज लोग आज भारतवर्ष के सम्राट् बने हैं. व्यापार एकमात्र वैश्यों का ईश्वरप्रणीत स्वभावसिद्ध कर्म है. और अग्रवाल महेश्वरी इत्यादि मारवाड़ी व्यापारी जाति सच्चे सच्चे वैश्य हैं. संघशक्ति द्वारा सहकारी मूलधन से व्यापार कर अपने देश का धन बढ़ाना—यह बात आज यूरोप अमेरिका इत्यादि देशों में इतनी सफलता को प्राप्त हुई है कि आज वे सर्व सत्ताधारी राजा महाराजा बन बैठे हैं! तथापि हमारे यहां भी यह बात नई नहीं है. प्राचीन लेखों से यह निर्विवाद है कि यहां भी व्यापारीसमितियां थीं. यद्यपि उनका लोप हो गया है तौभी इस वक्त हमारी विद्याविचार-संपन्न प्रभावशालिनी गवर्नमेन्ट ऐसी समितियों के सम्पादन में सहायता प्राप्त होने के लिये उदारभाव से कायदा बना के हमारा व्यापार बढ़ाने के लिये सन्नद्ध है तो, हमारा परम कर्त्तव्य है कि इस वक्त सहकारी मूल धन से अनेक कंपनियां खोलकर देश का व्यापार बढ़ा के हमको धनसंपन्न होना चाहिये.

ऊपर कहे अनुसार यहां कलों की न्यूनता और फेशनेवल (नई नई तर्ज के) महीन, सोफियाना और चमकदार कपड़े की अपेक्षा होने से इस वक्त मिल का उद्योग कितना लाभकारी है उसका परिचय इतनाही वस है कि बम्बई, अहमदावाद, सोलापुर, नागपुर जैसे अनेक असुविधाजनक और विशेषतर खर्चवाले स्थानों की मिलें भी फेशनेवल, वारीक और सुन्दर कपड़ा बुनने से साल में सवाई ड्योढ़ा फायदा उठा के शेअर-होलडरों को पंधरह से पैंतीस टके सैकड़ा हरसाल नफा अदा करती हैं—इस लिये उनके शेअर का भाव इस वक्त दुगने से तिगुने तक होके शेअर मिलने दुश्वार हो गये हैं. इस से वढ़कर और क्या प्रत्यक्ष प्रमाण दिया जा सकता है ? (टाळियां)

आज श्रीसूर्यदेव सुवर्ण किरण वरसा रहा है, आज वायुदेव सुवर्ण में सुगन्ध मिला रहा है, आज भूमि माता सुवर्ण प्रसव रही है, आज अभागे भारत का भाग्योदय हो रहा है, आज मारवाड़ी जाति का नाम इतिहास में सुवर्णाक्षरों से मुद्रित हो रहा है, आज मारवाड़ी जाति की भाग्यश्री की अथश्री हो रही है और आज व्यापार के जीर्णोद्धार का प्रथम दिन है! आज इस वगीचे के द्वार पर सुन्दर सुवर्णाक्षरों में "धी मारवाड़ी कॉटन मेन्युफेक्चरिंग कंपनी, लिमिटेड" का सुवर्णयुक्त नाम श्रीसूर्यनारायण के सुवर्णमय किरणों में झलक रहा हैं! आज जहा तहां "वेलकम" पताका वायुदेव की सुवर्ण लहरियों से उड़ रही हैं! और आज उद्यान के तरु लता भी विनम्र होके सब का स्वागत कर रहे हैं! आज इस हिरण्यगर्भा मातृभूमि पर सौहार्द भाव स्थापित हुआ है, आज इस हिरण्यगर्भा मातृभूमि पर मारवाड़ी जाति की जातीयता स्थापित हुई है अथवा आज इस हिरण्यगर्भा मातृभूमि पर एक मारवाड़ी मिल का कोनप्रस्तर स्थापित हुआ है! जिसके डायरेक्टर मारवाड़ी हैं, एजन्ट मारवाड़ी हैं, शेअर-होल्डर मारवाड़ी हैं, वकील मारवाड़ी है, वेंक मारवाड़ी है, आफिस मारवाड़ी है, काम करनेवाले मारवाड़ी हैं, हिसाव मारवाड़ी है, लेनदेन मार-

वाड़ी है, चालचलन, रहनसहन भी मारवाड़ी है. पूंजी दस लाख की है, शेअर हजार हजार के एक हजार हैं और पूंजी वढ़ाने का अधिकार भी है. रुई मारवाड़ी खरीदेंगे और कपड़ा भी मारवाड़ियों के लिये वारीक, मोटा, धुला, रंगदार, चमकीला नई नई तर्ज का हर प्रकार का वनेगा. मारवाड़ियों के लिये एक कलाभवन खुलेगा. उसमें मारवाड़ी जाति को मुफ्त सिखाया जावेगा. उनको जापान, अमेरिका या विलायत भेजा जावेगा. अनाथ वालक विधवाओं का पालन होगा. मारवाड़ी भाषा में अच्छी अच्छी पुस्तकें वनकर प्रकाशित होंगी, जातिसुधार के लिये उपदेशक नियत किये जावेंगे—इत्यादि कितनेही सुधार के काम होकर भी इस मिल से आशातीत धन, सन्मान और पुण्य का लाभ होगा. (टाळियां)

अन्त में मारवाड़ी सद्गृहस्थों से यही वक्तव्य, परामर्श और प्रार्थना है कि—भाईयो! अव वह देश नहीं है, अव वह राज्य नहीं है, अव वह काल नहीं है, अव वह वायु नहीं है, अव वह जल नहीं है, अव वह अन्न नहीं है, अव वह विचार नहीं है, अव वह आचार नहीं है और अव वह स्थिति रीति भी नहीं है! अगली दुनिया का परिवर्तन हो गया है, अगली दुनिया का रूपान्तर हो गया है और अगली दुनिया का स्थित्यन्तर हो गया है! नई सत्ता स्थापित हो चुकी है, नई प्रवृत्ति प्रचलित हो चुकी है और नई रोशनी चमक उठी है! पश्चिमी विद्या का प्रचार है, पश्चिमी साहित्य का सत्कार है, पश्चिमी सभ्यता का आविष्कार है, फेशन का पुरस्कार है, चमकदमक का प्रस्तार है और समय का हेरफेर है! व्यापारही एकमात्र देश का आधार है और उस व्यापार के आप लोग आधार हैं—इस लिये कटिबद्ध होकर इधर झुकिये, इधर झांकिये, इधर लक्ष्य लगाइये और हमारे **श्री**किसन सेठ एवं परमोत्साही **राम**रतन सेठ का अनुकरण कीजिये! (वैठे छे. टाळियां को गजर होवे छे.)

वंसीध०—(ऊठकर) आज को दिन धन्य, आज की तिथि धन्य, आज को वार धन्य, आज को नक्षत्र धन्य और आज को समय धन्य छे के जिण

मांहे इशा शुभ काम की, इशा धर्म काम की ओर इशा सत्य व्यापार की नींव पड़ी! आज मारवाड़ी जाति को परिवर्त्तन छे, आज मारवाड़ी जाति को अभ्युदय छे ओर आज मारवाड़ी जाति को गौरव छे! आज मारवाड़ी जाति को धर्म अटल छे, आज मारवाड़ी जाति को शद्ध अटल छे ओर आज मारवाड़ी जाति को व्यापार अटल छे! आज उनकी कीर्ति, आज उनकी बात, आज उनकी आबरू, आज उनको काम, आज उनको नाम, आज उनको विचार ओर आज उनको संजोग मंगलमय छे! आज धर्म को मंगल, आज कुळ को मंगल, आज जाति को मंगल ओर आज देश को मंगल छे! वो सर्व शक्तिमान् परात्पर प्रभु इण जाति को इसी प्रकार सदैव आनन्द मंगल करतो रहो! (टाळियां)

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च
यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु ॥
यस्मान्न ऋते किंच न कर्म क्रियते
तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥

रामर०—(ऊठकर) आज परात्पर प्रभु की प्रेरणा सूं, मातापिता की अनुमति सूं, गुरुवर्य पंडितजी की शुभाशीस सूं ओर सारा भायां की सहानुभुति सूं इशो शुभ अवसर प्राप्त हुवो के आप सारा सरदार अठे पधारकर आपका शुभागमन सूं आपका एक जातीय लघु सेवकने कृतकृत्य कीनो. आप सारा सरदारां को अभिनन्दन करने स्वागत करूं छूं ओर चाहूं छूं के, साराही सरदार आपका इण जातीय नम्र सेवकने इसी प्रकार सहानुभूति प्रदान कर इणका हाथ सूं नित्य सेवा लेवोला. म्हारी आ पवित्र कामना आप सरदारां कीही कृपा सूं—इतनी जलदी पूर्ण होणी संभव नहीं छतां—अल्प काळ मांहे पूर्ण हुई. आज दोही महीना मांहे एक हजार शेर हाथोहाथ विक गया! ओर

हाल कितनाही लोग शेर मांग रह्या छे. शेर वाकी नहीं तो वोले छे के पूंजी वधावो परन्तु नहीं—इशी दूजी कळ फेर खड़ी करवा मांहे कांई हरकत छे? हाल आपणा देश मांहे घणी कळां की जरूर छे. दिनोंदिन कपड़ालत्ता की फेशन (तरज) वदलती जा रही छे. मोटयारां सूं आपणी लुगायां कपड़ा की घणी रसीली छे ! (टाळियां) व्यांने रोजीना नित नवो ओर नवी तरज को कपड़ो चाहिजे छे ! उणके लायक आपणा देस मांहे हाल एक भी कपड़ो वणे छे नहीं. (टाळियां) तिकासूं इत्ता वड़ा नहीं तो भी छोटा मोटा कारखाना काढकर आपणा देश मांहेलाही कपड़ा सूं व्यांने सुशोभित करणी चाहिजे ! (टाळियां) जठे तांई आप लोग **फाटकाजंजाल** मांहे सूं मुक्त नहीं होवोला, कृषि, गोरक्ष्य, वाणिज्य की तरफ नहीं लक्ष्य देवोला ओर "परहित वस जिनके मन मांही, तिन कँह जग दुर्लभ कछु नाहीं" महात्मा श्रीतुलसीदासजी का इण वचनपर विश्वास नहीं करोला—उठे तांई कदेही आप धन, वैभव, संपत्ति मिलाकर "मारवाड़ी" ये चार अक्षर पवित्र ओर सुशोभित नहीं कर सकोला ! (टाळियां, नीचे वैठे छे.)

(वेंड वाजे छे, रामचन्द्रजी सारांने हारतुरा, अतरगुलाव, पानसुपारी वांटे छे.)

एक मारवाड़ी—(खुशी होकर आपका नजीक वाळाने) सुणी भाई साव, वातां ? खूब आछो जलसो हुवो ! वात तो इशीही छे. भाई साव, आजकाल आपणा लोगां को सारो रुजगार विगड़ रह्यो छे. पैदा रुपया की तो, नुकसाण सो को ! जो वड़ा वड़ा सत पीढ्या साहूकार ओर आसामी छे वे आपका धन का सहारा सूं भलांही क्यूं कमाई कर ल्यो. बाकी नवो धन्धोरुजगार करने कुछ मिलावे उशी बात आजकाल बिलकुल रही नहीं. हजारों मारवाड़ी भाई अठी का उठीने फांफा मारता फिरे छे! हजार मांहे पांच लखपती हुवा तो कांई हुवो ? व्यां पांचां को ध्यान जठे तांई म्हां जिशा गरीव भायां कानी पूगे नहीं उठे ताई उणकी कमाई निष्फळ जाणणी ! कांई हुवो— व्याव, सगाई, ओसरमोसरने हजारों रुपया लगा दे, ओर घर को भाई

भूखा मरतो फिरे ? धूळ वीं कमाई पर ओर वींका वड़ापणा पर ! इशा धनवाळा हुवा नहीं हुवा सरीखा छे ! (बीच मांहे)

दूजो–(धीरे सूं) सुणो सेठां, लांबा चोड़ा मंडवा तणाज्या छे, दस लाख की कळ की नींव पड़ी छे, सारा लोग आया छे, सारांने पानसुपारी, अतर, हारतुरा पहराया छे, सारा का नफा की ओर भायां का सुधार की मोटी मोटी वातां हुई छे. पण, सागे माजायो भाई धूळ खातो फिरे छे ! वींकी कुछ भी तजवीज नहीं कीनी ? सेठ साव, बोलवा की वातां ओर तथा करवा की वातां ओर रह्या करे छे !

पहलो–नहीं भाई, आपने मालम नहीं. पंधरा लाख की पूंजी लेकर भाई साव न्यारा हुवा. सट्टाफाटका, रांडरंडी, वागवगीचा, यारदोस्तां मांहे सारो पैसो वरवाद कर दीनो ! तो भी श्रीकिसनजी तीन चार लाख रुपया की मदद कीनी. ओर फेर भी रोजीना समझा रह्या छे के घर मांहे आ जा–थारी ओर आधी पांती कायमही छे ! क्यूं अठी को उठीने भटकतो फिरे छे–पण मूरख आदमी माने नहीं उठे कींको उपाय ? वाकी इशो भाई तो दुनिया मांहे मिलणो घणोही कठिन छे !

नाराय०–(रामरतनजीने) वरें, शेट साहेब, आज आपण एक आपल्या जातिचें फार मोठें काम केलें आहे, त्याचें–सर्वांतर्फे मी अभिनंदन करून आपणांस धन्यवाद देत आहें. आणि परमेश्वराजवळ प्रार्थना करित आहें कीं, सर्व मारवाडी वन्धु असेंच आपलें अनुकरण करो. वस, आतां सर्वांना परवानगी असावी. (ठीक, सेठ साव, आज आप एक आपकी जात को वड़ो भारी काम कीनो छे, वींको सारां की तरफ सूं म्हे अभिनन्दन करने आपने धन्यवाद देवूं छूं. ओर परमेश्वर कने प्रार्थना करूं छूं के, सारा मारवाड़ी भाई इयानही आपको अनुकरण करो. वस, अव सारांने परवानगी होवे.)

मणिला०–धन्य छो शेठ, आज तमे तमारी जातनी वणी सारी सेवा

कीधी छे. तमारी लागणी घणी सारी छे. तमारा जेवा पुरुषरत्नोनी मारवाड़ी जातिमां घणीज अछत छे—ते परमेश्वर जलदी थी पूरी करो एज विनंति छे.

शिवना०—भाई साब, म्हे साराही मारवाड़ी सरदारां की तरफ सूं आप साराही को अभिनन्दन करूं छूं ओर चाहूं छूं के वास्वार इशा प्रसंग आवो करो ओर ईश्वर की कृपा सूं मारवाड़ी जाति की दिन दिन उन्नति होवो करो !

(सारा जावे छे.)

प्रवेश दूजो.

ठिकाणो–ब्रजलालजी की रखी हुई महबूब बीबी को घर.

(महबूब बीबी आवे छे.)

महबूब–(मन मांहे) क्या करना चाहिये—अम्मा का कुछ भी पता नहीं. हसनखां और करीमोदीन भी गुम हो गये! उनके मकान के लोग रोज मुझे पूछ पूछ के नाक में दम लाते हैं! क्या मालूम—अम्मा जान कहीं इन्हीं बदमाशों के धोखे में न आगई हो या कहीं दूसरों के फन्दे में न जा फंसी हो? तीनोही बदमाश थे. गये तो अच्छा हुआ. मेरे पीछे का एक झगड़ा मिट गया! मगर अब बेचारे सेठ के पास भी तो कुछ नहीं रहा. इस वक्त तो बड़ा ही तंग, लाचार और परेशान है! अम्मा जान को ऐसे मोतेबर, खानदानी, शौकीन और जिन्दा दिल सेठ को धोखा नहीं देना था! हाय अफसोस! पैसा बहोत बुरा है—आदमी की नियत को बिगाड़ देता, खराब कर देता और हराम कर देता! आखिर बनयों की माने बनियोंही को जना है! इतना माल लेकर ये तीनो गुम हो गये जिससे बेचारा इतनी मुसीबत में मुप्तिला है

तौभी उधर नजर उठाकर नहीं देखता! दो चार बार कहा भी लेकिन् कुछ भी जवाव नहीं. ऐसे शरीफ आदमी को तकलीफ और रंज पहुंचाना वहुतही बुरा काम है.

(इतना मांहे गंगाविसनजी आवे छे.)

गंगावि०—राम राम, वीवी साव! आज आपका सेठ साव कठे छे? हाल वारे सू आया कोनी कांई?

महवू०—(हंसकर) तो, क्या मैं वनियानी हूं—जो तुम मुझसे राम राम करते हो? वाह! जव आते हो तव एक न एक नईही वात सुनाते हो?

गंगावि०—(हंसकर) इण मांहे कांई नवी वात छे? म्हारे तो सेठाणी ही छो. फेर विराणी होवे तो कांई ओर मुसलमाननी होवे तो काई? ये वातां तो रहवा द्यो—क्यूं आपकी माजी साव की भी खवर?

महवू०—कुछ भी नहीं, मैं वड़ी फिक्रमन्द हूं. ग्वालियर में तो नहीं है, न मकान पर गई है, न वहां कहीं शहर में किसी से मिली है! मैंने वहा तीनचार जगह खत लिखे थे—सव का इन्कारी जवाव आ गया!

गंगावि०—फेर कांई कठे गैवही हो गया? धन तो धन के ठिकाणे रह्यो पण ज्यां तीन्यां की कांई गत हुई सू राम जाणे!

महवू०—गत क्या होगी? वे वदमाश साथ हैं. उन्हीं का डर लगता है. शायद उसको कहीं धोखा न दिया हो या खूनखरावी न कर डाली हो! अभी तो कुछ भी पता चलता नहीं. खुदा मालिक है. वेचारा सेठ वेवझे हलाक हो रहा है! क्या किया जाय? रोजवरोज तगाजे पर तगाजे आ रहे हैं!

गंगावि०—सेठजी मांहे हुई सूतो हुई पण म्हे गरीव आदमी मुफत मांहे मान्यो गयो! मने तो क्यूं भी सूझ पड़े नहीं!

महबू०—क्यों भला, तुम काय से मारे गये? तुम्हारा जेवर पांचछ ाार का गया उसके वदले तुमने आठदस हजार का जेवर सेठानी से लिया है! क्या ये वातें मैं नहीं जानती हूं? मगर ऐसा तुमको नहीं ्ना था. मेरा भी तो जेवर गया है, लेकिन् मैंने सेठ से कुछ भी नहीं गा. मांगू क्या—मुझे सब उनका हाल जाहिर है.

गंगाबि०—नहीं वीवी जान, कोई सो दोसो कम ज्यादा को होसी. तो वहदो कठे पड़्यो छे? पण वो भी तो सारो जातो रह्यो!

महबू०—क्या चोरी हो गई?

गंगाबि०—वड़ी चोरी!

महबू०—तो क्या डकैती?

गंगाबि०—डाका सूं भी वड़ो डाको!

महबू०—जो हो सो सच कह दो सेठ साहब!

गंगाबि०—सारा गांवने मालम छे. सेठजी थांने कह्यो कोनी कांई?

महबू०—नहीं नहीं, मुतलक कुछ भी नहीं. कहिये, फरमाइये क्या ात है?

गंगाबि०—वात कांई छे—सेठेजी का मांगतोड़ा जो थो सू सब ले गया!

महबू०—तो, सेठजी के कर्जख्वाह आपसे कैसे ले सकते हैं?

गंगाबि०—उनका हुकमनामा परसू जपती लाकर सारो माल जपत कर ले गया. तिका मांहे उणकी दियोड़ी तथा उनका नांव की कितनी ही चीजां ओर गहणो थो सू सब चल्यो गयो! ये सारा काम गुलाबचन्द ओर अमरसिंग का छे. सेठजी म्हारे अठे नहीं आता जाता तो कींकी मगदूर थी म्हारे अठे जपती लातो?

महब्रू०—ऐसा हुआ क्या—तो इस में क्या होगा? सुबूत देने से सब माल छूट जायगा. सिर्फ दो चारसो का खर्च है. और तो कुछ भी नहीं. इसमें इस कदर घबराने की क्या जरूरत है?

गंगावि०—नहीं बीबी जान, लोग पुरावो कर देसी के ओ सारो माल सेठजी को छे. सारी बातां खुल जाशी जरां म्हे कांई कहशूं? गयो माल पीछो आणो घणोही मुस्कल छे. सेठजी कने सू क्यूं कागदपत्र भी नहीं लिखा लियो थो. बापड़ा वे तो—बोलशूं तो—अबार भी लिख देसी पण, आगली मित्ती को इस्टाम्प मिल सके नहीं. म्हे तो काळी धार डूब गयो! लुगाई तो घर मांहे पाव धरवा देवे नहीं. कळे मचा रखी छे. कांई करूं क्यूं भी सूझे नहीं!

महब्रू०—जैसा आया वैसा गया! जाने दीजिये—क्या हुआ, सेठजी से पाया था और उन्हींके साहूकारोंने ले लिया! जहां का तहां गया!

गंगावि०—म्हे क्यूं सल्ला करवा आयो थो तो कह दियो के जावा द्यो! गयो तो सेठजी को थो सू सेठजीने पूग्यो पण—

महब्रू०—पन वन क्या है—अल्ला अल्ला करो! सेठ से अब कुछ मांगो न बोलो और न कुछ लिखवा लो. अब बेचारे मरे को क्यों मारते हो?

गंगावि०—(उदास होकर) तो फेर जावूं छूं. राम राम! (जावे छे.)

महब्रू०—(मन मांहे) अच्छा हुआ! मिय्या बीबी दोनोंने मिलकर सेठ को बरबाद किया था. जैसा किया वैसा पाया! "नोझ बिल्ला" ऐसा शौहर कहीं देखने में तो क्या—सुनने में भी शायदही आया हो कि जो अपनी बीबी को अपने सामनेही पराये के साथ मौजमजा करने दे! भला, यह तो एक भाड़खाबू हुआ मगर वह सेठानी भी कैसी बेहया निकली कि जो खसम के सामने खुले दस्त ऐसी कारवाई कर रही है! ऐसी ब्याही औरतों से तो हमारी जैसी बाजार की बैठनेवाली तवायफ भी कई दरजे अच्छी है!

(इतना मांहे ब्रजलालजी आवे छे.)

ब्रजला०—बीबी, कोई आयो थो कांई ?

महबू०—दो चार आदमी आये थे. नाम तो मैं जानती नहीं, लेकिन सब लोग मांगनेवाले थे. सब रो रो के चले गये! किसीने गालियां भी दी.

ब्रजला०—देवो बाबा, गाळ्यां को कांई—गाळ्यां तो अब नसीबा मांहे छेही. ब्यां मांहे थारे पिछाण को कोई भी नहीं थो ?

महबू०—हां, एक शख्स था.

ब्रजला०—कुण थो ? फेर बतावे क्यूं नहीं ?

महबू०—क्या बतावूं—वे आपके दोस्त थे !

ब्रजला०—पहली तो घणाही दोस्त था. अब तो एकही कोनी.

महबू०—क्या तजुर्बा आ गया ?

ब्रजला०—आही गयो छे. बता तो फेर इशो कुण दोस्त आयो थो ?

महबू०—आपकी प्यारी सेठानी के खसम !

ब्रजला०—तो कांई म्हांकी सेठाणी कोई दूजो खसम कर लीनो ?

महबू०—या अल्ला ! हरगिज ऐसे बद सखुन मत निकालो ! वह बेचारी इतनी नेक, अच्छी और पाकदामन औरत है कि मारवाड़ियों में तो उसके सानी शायदही हो !

ब्रजला०—आजकाल सारीही बातां सुलटी की उलटी हो रही छे—बाबा, फेर राम जाणे ! आछा आछा भाई, दोस्त, मिंतर छोड़ गया तो, बा तो लुगाई की जात छे !

महबू०—या अल्ला ! कैसी तेरी कुदरत है ? क्या कहना चाहिये सेठ साहब ! “दरेगा ! हस्रता ! अफसोस ! व आहा । रफीके मान शुद् कस्दर बलाहा” बला आती है उस वक्त कोई भी रफीक नहीं रहता—यह बात

सही है लेकिन् दुनिया में सच्चा दोस्त एक औरतही होती है. मुफ्लिस आदमी को सब छोड़ चले जाते हैं मगर वह बेचारी छोड़कर कहां जा सकती है ? लेकिन शौहर को भी उसकी कदर करना चाहिये. आप तो बिलकुल ही अपनी नेक बीबी को याद तक नहीं करते—कैसी सख्त अफसोस की बात है !

ब्रजला०—बस बावा, ये बातां तो रहवा दे. म्हारी पिछाण को म्हारो दोस्त कुण आयो थो ओर क्यूं आयो थो सू बता दे.

महबू०—वही आपके प्यारे दोस्त गंगाबिसन सेठ साहब !

ब्रजला०—यूं कांई ? नांव के आगे पीछे तो आछी पूंछड़ी लगाई ?

महबू०—क्या करना चाहिये—नहीं लगावें तो हमारा भी यहां रहना मुश्किल हो जाय ?

ब्रजला०—हां, तो कांई बोल तो थो ? क्यूं टटोळवा आयो होसी ओर कांई ?

महबू०—क्या बोलेगा—रोता था सारा माल जब्त हो गया—अब क्या करूं?

ब्रजला०—कांई करे—खूब रो ओर कांई ! अब भी पीछो कोनी छोड़े ?

महबू०—क्यों छोड़े—उसको आपकी आस बनीही है.

ब्रजला०—अब आसबीस काय की छे—अब तो मने म्हारोही पेट भरणो मुस्कल हो रह्यो छे ! गळीकूंचड़ी, आंकजोखम लगाकर कुछ लावूं छूं ओर थारो म्हारो पेट चलावूं छूं !

महबू०—सेठ साहब, सौदेसूत सेही आप बरबाद हुए. फिर भी उन को छोड़कर अलग नहीं होते ? बस, अब तो खुदा के वास्ते बाज आवो !

ब्रजला०—थे साराही बोलो सू तो ठीक छे. म्हे किशो कोनी समझूं—पण, करूं तो भी कांई ? कबूतर ने तो कुवोही सूझे. नहीं करूं तो पेट कियान चाले ? अब किशी पूंजी के, पैसोटको छे सू दुकान मांडकर बैठूं ?

महबू०–क्या किया जाय–बहुतही बुरा मालूम होता है, इलाज नहीं; न मेरे पास आपने कुछ रहने दिया न सेठानी के पास! अब मेरा भी निभाव कैसा होगा? उधर अम्मा छोड़कर चली गई, इधर आपका ऐसा हाल हुआ!

ब्रजला०–बस, अब फिकर कन्या कांई होणो छे? जो जो बात नसीवा मांहे लिखी हुई छे सू सू भुगतणी भाग छे! बस, चालो अब ऊपर चालां.

(दोन्यू जावे छे.)

प्रवेश तीजो.

ठिकाणो–शहर को वड़ो रस्तो.

(दो दलाल आवे छे.)

पहलो–क्यूं भाई साव, म्हे बोलतो थो ना पांचो आसी?

दूजो–भाई थे तो बोलता था, पण गये महीने भी पांचो आयो तिकासूं विसवास आयो नहीं. ओर मने रामनारायणजी चोको वतायो छो. म्हे तो वीं भरोसा पर खूब फस गयो. रुपया तीनसो की डळी लाग गई! थांने पांचां की मालम थी तो फेर थे तो क्यूं कमायो नहीं!

पहलो–कमावां कांई–पांचा पर वीसवाईस रुपया लगाया था तो उठीने जोखम खाली थी, सू पूरा हो गया. उलटा सो सवा सो का घाटा मांहे रह गया.

दूजो–थांके जोतसी छे पण, म्हे भी एक बावाजीने पकड़्यो छे. देखो, अबके पूरी पूरी सरधा मालम हो जावेली. बावाजी छे तो महातमा पुरस.

पहलो–भाई, कठे कींका दम मांहे आकर फस मत जाईजो.

दूजो—नहीं जी भाई, म्हे किशो कोनी जाणूं—आजकाल घणाही ढोंगी बाबा बणकर लोगांने ठगता फिरे छे सू!

पहलो—भाई, बाबाबीबा की बात तो कुछ छे नहीं, और सरधाविरधा भी कुछ नहीं. कलकत्ते जाकर कोई कवाड़ो हाथ लाग जावे तो फेर बारा न्यारा हो जाय—बाकी तो फांफा मारणा छे! एकाध बार दसपांच कमा लेशो तो दसपांच बार मांहे सो दोसो गमा बैठशो!

दूजो—भाई, आपां पड्या गरीब आदमी. कवाड़ो आपणे हाथ कियान आवे? ओ तो बड़ा बड़ा आदम्या को काम छे सू हर महीने कोई न कोई करे छेही.

पहलो—तो फेर भाई, कलकत्ता सू तार मंगावो करां?

दूजो—तार सारां के पहली पूगे तो ठीक, नहीं तो आड़त और तार का पैसा मुफत मांहे जावे और उलटो सुलटो मामलो हो जावे.

पहलो—तो भाई, फेर कांई तजवीज करणी?

दूजो—तजवीज काय की छे—नीलाम छोड़ देणो और दूजो कोई धन्धो कर पेट भरणो.

पहलो—दूजो धंधो भी तो क्यूं दीसे नहीं. अठीने उठीने सू मेहनत मजूरी करने क्यूं मिलावां जका नीलाम के चरणे चढ़ा देवां!

दूजो—भाई साब, म्हे भी घणोही विचार करबो करूं के अबके महीने सौदो नहीं करणो. बस, अब छोड़ देणो—पण पहली तारीख आई के झट हड़भड़ी भर जावे और अठीने उठीने सू दसपांच रुपया लाकर फेर गमा गुमाकर रोता हुवा घरां चल्या आवां! ईनाऊं तो नोकरी नहीं, गुलामगिरी भी चोखी के पेट भर टुकड़ो तो मिलबो करे! इण जुवा के आगे क्यूं सूझे नहीं!

पहलो—भाईजी, आपणा लोगां की आजकाल दिनदसा इशीही छे. कुण जाणे—मारवाड़ी जात को कांई होणहार छे? आपां लोगांने सट्टो,

फाटको, नीलाम, बरसात का सोदा विना क्यूं भी दूजो रुजगार दीखे नहीं. जो ऊठसी सू वस, इशाही रुजगार पर मंडसी! पण कोई आछा काम की तरफ ध्यान देसी नहीं! काई करां—अव छोड़कर ओर कठे जाणो पड़सी. वस, अव अटे निभाव लागे नहीं.

दूजो—तो भाई साव, इयान हीमत हाऱ्या भी कांई होसी? आज काल तो लोगां को देसी चीजां पर खूब ध्यान छे. वजार मांहे देखवो करूं तो जो आवे सू देशीही चीज मांगे. पण भाई, आपणी जातने भी धन छे! नारायण आपणा लोगां को काळजो काय को वणायो छे सू वो ही जाणे! कपड़ावाळा खूव चाल चलकर सवाई ड्योढ़ा कर रह्या छे! विलायती सूत का वंडला पर का कागद खोलकर हिन्दुस्थान की वणावट का छे करने दिखावा के तांई उण पर उशा कागद छपाकर लगा देवे छे! तथा वारीक कोरो विलायती कपड़ो धोव्या कने सू धुवाकर देसी को नांव करने वेच रह्या छे! अव इशी वातांने काई कव्हणो? साच तो रहीज नहीं! विना झूठ ओर थापवाजी के कोई भी रुजगार नहीं!

पहलो—थे वोलो झूठ विना रुजगार नहीं तो भलां, कोई अंग्रेज की दुकानपर जावो, देखां भलां, उठे झूठ ओर दगावाजी को काम छे काई? जठे को वण्योड़ो होसी वींको नांव वरावर वीं मालपर रहसी. चाव्हे एक का दो होवे चाव्हे एक को आधो होवे, वीं मांहे फेरवदल करसी नहीं. एक भाव, एक वात, एक लेणदेण, चाव्हे माल विको मत विको, झूठ कपट को काम नहीं.

दूजो—भाई, व्यांकी वात कठे! फेर वे आपणे ऊपर यूंही राज कर रह्या छे काई?

पहलो—(दूर सू निगह वांधकर) देखो भाई, वे उठीने—आपांने देख कर—वीं गळी कानी ब्रजलालजी मुड़्या काई?

दूजो—हो हो, ब्रजलालजीही छे.

पहलो—तो जरा ठहर जावो—म्हे वींने पकड़कर थांके पास लावूं छूं. जाईजो मती ना. म्हारा पचास रुपया खा बैठ्यो छे! अब तो मुंह भी दिखावे नहीं. (दोड़तो जावे छे.)

दूजो—(मन मांहे) हे नारायण! थारी माया तूही जाणे! कांई विचारा ब्रजलालजी को ठाठ थो? गाड़ी घोड़ा विना जमींपर पांव नहीं रखता था, जिणको मिलाप दुर्लभ थो, जिणको बोल अमोल थो, जिणको हुकम सिरमाथे थो, जिणके सामने बड़ा बड़ा हाथ जोड़ कर खड़ा रहता था—वे आज इयान गळींकूंचड़ी मांहे मैला कपड़ा पहरकर फिरता फिरे ओर म्हां जिशा छोटा मोटा आदमी सू डरकर लुखता फिरे! “माया थारा तीन नाम परस्यो, परसो, परसराम!” दुनिया मांहे पैसा विना आदमी कोड़ी को भी नहीं! फेर इण मांहे भी—रेसम का पोतड़ा मांहे जनम्यो हुवो ओर राजा कीशी साहेबी भोग्यो हुवो इण तऱ्हे हो जाय जको तो जीवतोही मऱ्यो जाणणो! हे राम! मोटा आदमीने मरण दे देणो पण नादारी नहीं देणी.

(इतना मांहे पहलो ब्रजलालजीने पकड़कर लावे छे.)

ब्रजला०—(हाथ जोड़कर) छोड़ द्यो भाई, यूं पकड़्या कांई होवे छे. थांका रुपया देणा छे सू नटूं थोड़ोही छूं? कोई न कोई महीनो सब जासी तो उठे का उठे पहली थांने दे देशूं. हर महीने थे तो साथही रह्या करो छो. इण दिनां मांहे क्यूं मिल्यो कांई? फेर भलां, जाण बूझकर रस्ता मांहे म्हारी इज्जत क्यूं गमा रह्या छो?

पहलो—(गुस्सा सूं) वाह भाई, बड़ी इज्जत रही छेना आपकी! जठे उठे इज्जत का किशा मोटा मोटा तारा टूट रह्या छे? सेठजी, इज्जत बिज्जत आपकी आपके पास रहवा द्यो, ओर इशी तिशी कराकर म्हारा रुपया दे द्यो!

दूजो—वाह भाईजी, थे इशा घराणा का आदमी होकर थांकी आ वात ? आंक का सौदा की गळी का रुपया थे इयान कोनी देवो ? म्हे गरीव आदमी मेहनत मजूरी करने पेट भरां छां तिका वींकी वीं वखत दे देवां. नजीक नहीं होवे तो सौदोसूत नहीं करां. वजार मांहे फिर फिरा कर पाछा घरां चल्या जावां.

पहलो—आपांही यांने वेकुफ मिल्या के इणका भरोसा पर उधार कर लीनी. (व्रजलालजीने) रांडभड़वांने देवाने ओर अठीने उठीने उडावाने ओर मोजमजा मारवाने तो पैसा मोकळा मिले छे—ओर म्हांका पांचपचास थांसू दिरीजे नहीं ! आछा लखपती का घर मांहे जनमकर घराणाने लजायो ? ईंनाऊं तो भाई साव, एकाध म्हां जिशा कंगाल के अठे जनमता तो भी ठीक होतो !

व्रजला०—भाई साव, क्यूं भी वोलो—चाव्हे गाळ द्यो—चाव्हे भेळ द्यो—नसीवा का चक्कर छे सू भुगत रह्यो छूं ! उपाय कांई छे—नारायण मोत भी देवे कोनी जो सुख हो जावे !

पहलो—भाई मरजो तो भी म्हारा रुपया चुकाकर मरजो ! नहीं तो मसणा मांहे जाकर थांकी धूळ उडावूंला !

दूजो—नहीं भाई साव, इशी वात मूंडा मांहे सू मत काढो. परसंग आदमी परही वीत्या करे छे. कांई हुवो—आज नादारी आ गई तो ? हाल तो इणका सिर पर वडा भाई करोड़पती मोजूद छे. यांने कांई कमती छे. ये तो गुणां का लड़ला छे सू खाली अठी का उंठीने मान्या मान्या फिरे छे ! काई हुवो, वड़ो भाई छे—पग पकड़कर माफी मांग लेणी ओर जाकर घर मांहे वैठ जाणो, देखां भलां वारे काढ दे काई ?

पहलो—भाई साव, ये तो अवार घणाही झक मारकर भाई के पास चल्या जावे ओर वे यांने फेर घर मांहे काई घर का मालक भी वणा देवे

पण, इणका ये ढंग मिटे जद ना ? भाई फेर ये इशी वाता करवा दे काई, घर के वारे जावा दे कांई ओर सट्टाफाटका झूठसाच करवा दे काई ?

दूजो—भाई साव, फेर किशा ये इत्ता मूरख छे सू आपकी चालचलन सुधारशी नहीं. आदमीने ठोकर लाग्या विना आंख भी खुले कोनी. अव सिवाय मरवा के ओर काई वाकी रह्यो छे—सू अव वुरा ढंग छोड़सी कोनी. इणका भाई आज दस लाख की कळ काढ़ी छे—तिका मांहे देख भाळ करो, काम काज करो ओर मालकी करो. दूजा पराया आदमीने ढूंढता फिरे छे ओर सैकड़ों रुपया तनखा देकर भी आछा आदमी मिले कोनी, फेर ये तो घर काही छे.

पहलो—भाई, वड़ा कारखाना की वात इशीही छे. हाल कळ को मकान तैयार होकर कळ चालू नहीं हुई तो भी हजार का सेर को भाव आज वारासो को हो गयो ! चार छे महीना मांहे सवाया हो गया ! इशो रुजगार तो घणोही चोखो छे पण, ओ पड़्यो वड़ा आदम्यां को काम. आपणा जिशा को उठे लागही कांई ? इशा अवार छोटा मोटा धंधा सोसो पचास पचास का सेर राखकर निकळे तो आपणे जिशा कित्ताही गरीव आदम्यां को निभाव होवे ओर ये इशा जुवा खेलवा सू वंचा !

दूजो—भाई साव, मुम्वाई कानी देखो, उठे इशी छोटी मोटी कंपन्या कित्तीही छे. दस दस पाच पांच हजार की पूंजी का दस दस, पचीस पचीस रुपयां का सेर काढ़कर लोग खूव धन्धो चला रह्या छे. “ ऊधो को लेणो न माधो को देणो ! ”

व्रजला०—(उदास होकर) पण भाई साव, आपणा लोगांने इण वातां को विलकुलही ग्यान कोनी जरां काई होवे ? म्हे न्यारो हुवो जरां वापड़ो वावू जगन्नाथपरसाद काई मने थोड़ो समझायो थो—पण म्हारी तो पूंजी जाणी, सू मने कियान कोई काम सूझे ? नहीं तो वीं वखत म्हे कपड़ा

की कळ करणी चाहतो तो नहीं हो सकती कांई—ओर आज इयान दुख भी क्यूं पातो ? अब कांई छे—मऱ्यो न जीयो !

दूजो—बस सेठजी, अब आप ये सब ढंग छोड़ द्यो. हाल भी आज जठे को उठे सारां को निकाळ करने भाई कने चल्या जाशो तो आपने क्यूं भी कमती कोनी. फेर वे का वे ठाठ वण्या छे !

व्रजला०—भाई साव, थे कव्हो छो सू तो ठीक छे पण, न्यारा घरां का न्यारा वारणा ! ओर म्हे भाई सावने कांई सुख दीनो छे, उणको कांई भलो कीनो छे ओर उण सूं कांई प्यार राख्यो छे के ओ म्हारो काळो मुंह व्यांने जाकर दिखावूं तथा कुत्ता की जियान उणका दरवाजा पर पड़कर टुकड़ा तोड़ूं ?

दूजो—भाई साव, ये आपका विचार विलकुल गलत छे. थांका जिशो भाई तो दुनिया मांहे फेर होणो नहीं. थांकाही नसीव खराव छे जरां थांने इयान की वातां सूझ रही छे ! म्हे थांके तांई फिकर करता, थांके तांई दुखी होता ओर थांके तांई आंसू नाखता थांका भाई सावने केई वार देख्या छे !

पहलो—जावा द्यो भाई, आपांने कांई—ये कींकी नहीं माने तो ? मानताही तो आज इणकी आ दशा क्यूं होती ? रखड़वा द्यो खूब ? हाल वापड़ी विराणी का सत सूं वखत की वखत रोटी को टुकड़ो मिले छे जठे तांई तो फेर भी आंख्या खुले नहीं ?

दूजो—धूळ पड़ी भाई, इशी रोट्यां मांहे ! शरीर को हालही दीस रह्यो छे के किशी रोट्यां मिले छे सू ! चालो, जावा द्यो वापड़ाने. अब सतावा सूं कांई होणो छे ? रुपया आणा लिख्या छे तो आजासी नहीं तो नहीं. यूं करवा सूं कांई होवे छे—पधारो सेठ साब !

(सारा जावे छे.)

प्रवेश चौथो.

ठिकाणो—व्रजलालजी को घर.

(राधाबाई तथा जयदेव आवे छे.)

जयदे०—(रोतो रोतो) जा, म्हे आ टोपी नहीं लेवूं जा ! भायाजी किशी सोना की टोपी ला देता था ? तूं तो आ कठे की लाल लालही ला दी छे. जा ! मने उशी टोपी मंगा दे जा ! अँ, अँ, अँ,—(रोवे छे.)

राधा०—(पुचकारकर) यूं कांई बेटा, जयदेव ! आ कांई टोपी बुरी छे ? आ तो लाल मखमल की छे. अबार तो आही ओढ़ ले. फेर थारा भायाजी आया पीछे तने उशी चिमकां की मंगा देशूं.

जयदे०—(आंख्या मसळतो हुवो) जा ! फेर भायाजी कठे छे ? अबार क्यूं नहीं मंगा देवे ? इसकोल मांहे सारा छोरा चिड़ावो करे ! अंगरखी, कोट सारा फाट गया ! जूता भी कोनी ! जा ! म्हे अब इसकोल जाऊं ही नहीं ! जा ! अँ अँ अँ— म्हांने टोपी अबार की अबार मंगा दे—अँ अँ अँ ! नहीं तो म्हे उघाड़े सिरही फिरूंगा ! जा ! अँ अँ अँ ! (रोवे छे.)

राधा०—(आंसू लाकर) यूं कांई म्हारा बच्चा ! आवा दे थारा भायाजी ने मंगा देशूं. बाबा, म्हे भलांही भूखा रह जाशां, कपड़ा बिना रह जाशां पण, म्हारा लाल ! तने तो मांगसी सू देशां ! जरा ठहर जा. अबार कोई आसी तो बजार मांहे सू उशी चिमकां की टोपी मंगा देशूं. (जयदेव की आंख्या पल्ला सूं पूंछकर) रो मतीना ! हे राम ! अब म्हे कांई करूं ? मोरलो सो छोरो यूं बिलखे ! ईनाऊं तो—हे नारायण ! मोत दे देवे तो घणोही आछो ! (जयदेवने नजीक लेकर) बेटा जयदेव, इसकोल मांहे नहीं जासी ओर ठोड रह जासी तो—एक तो म्हे रातदिन रोही रही छूं—फेर वाण्या की बेटी का कांई हाल होसी ? क्यूं पढ़ जासी तो भलां, म्हारो बुढ़ापो ओर वाण्या की बेटी को जमारो तो सुधर जासी. नहीं बाबा, (सिरपर हाथ फेर

कर) इसकोल मांहे तो रोजीना जाणो चाहिजे. म्हे तू मांगशी जिकी चीज मंगा देशूं. (मन मांहे) काय सूं तो कोई चीज मंगावूं ओर कीं ने कांई कहूं ? आछा म्हे म्हारा नसीवा का भोग भोग रही छूं ! इशी कोई चीज नजीक रही कोनी के वेचकर हजार पांचसो रुपया कर ल्यूं ! वरतणभांडो भी रह्यो कोनी के वेचकर सो दो सो सूं भी हाथ उरळो कर ल्यूं !! अव तो दिनोंदिन मुस्कल हो रही छे. लोगां की जपती को डर न्यारो लागवो करे. करां न करा ये रसोईपाणी का ठीकरा चल्या गया तो फेर मट्टी का वरतण भी मिलणा मुस्कल छे ! हे रामजी ! म्हे आगले जनम इशा कांई पाप कन्या छे जका को ओ इशो वदलो भुगत रही छूं ! आज कित्ताही दिन हुवा व्यांका चरणां का दरसण नहीं हुवा. पूजा की वखत व्यांकी तसवीर सामने रखकर, वींका दरसण करने, पांवां पड़कर ओर ध्यान करने दिल को समाधान करूं छूं ! पण इशा समाधान सूं कांई होवे ? नारायणके घरां किशो न्याय छे सू मालम नहीं—जिकी लुगायां धणी का दरसण सूं राजी नहीं, धणी का वोल सूं खुशी नहीं, धणी का काम सूं सोरी नहीं, धणी का हुकम की तावेदार नहीं, धणी का सुख दुख की पांतीदार नहीं, धणी का भला वुरा की गरजी नहीं ओर धणी का मरवा जीवा की साथी नहीं—व्यां लुगायां का धणी व्यांने दरसण देवा तैयार, व्यां सूं वोलवा तैयार, व्यां कने काम करावा तैयार, व्यां पर हुकम करवा तैयार, व्यांका सुख दुख का पांतीदार, भला वुरा का गरजी ओर मरवा जीवा का साथी हुवा करे छे ! म्हे म्हारा धणी का—भरतार का—नहीं नहीं, धणी रूप ईश्वर का दरसण की, वोल की, काम की, हुकम की, सुख दुख की, भला वुरा की ओर मरवा जीवा की तन मन धन सूं दरकार राखूं छूं, चिन्ता राखूं छूं ओर रात दिन झूरूं छूं, तो पण मने अभागणने कुछ भी मिले नहीं. जरां, इण पर सू हे नारायण !—थारे घरां तो साचोही न्याय छे के, म्हे उशी लुगायां सू भी घणी घणी पापी, अधम ओर नीच छूं ! फेर वावा, थारे कानी कांई

दोस छे? तो भी हे परमेसर, म्हारा ये इशा पाप दूर करवाने तूही एक समर्थ छे सू अब म्हारी शरणागत की करुणा लाकर दीन, अनाथ, गरीब गाय पर दया कर. ओर म्हारा साचा साचा देवने सुमत देकर इण दासी, गुलाम का हाथ सूं सेवा कराकर, ये इशा महा पाप मिटाकर, मने थोडी वार के ताई तो भी चरणां का दरसण सूं सुखी कर! (आंसू नाखे छे.)

जयदे०—मा, तू तो चुप हो गई जा! म्हे आज रोटी नहीं खावा को ओर इसकोल भी नहीं जावा को जा! आ थारी टोपी संभाळ! (घुस्सा सूं ऊठकर घर मांहे जावे छे.)

(इतना मांहे गुलावचन्दजी ओर अमरसिंग आवे छे.)

गुलाव०—(हाथ जोड़कर.) पांवाधोक सेठाणीजी!

राधा०—जीवता रव्हो! भाई, करां आया?

गुलाव०—आज फजर की गाड़ी मांहे आया.

राधा०—कियान कांई—क्यूं पत्तो लाग्यो के फोगटही हैरान हुवा?

अमर०—नहीं वाई साहव, ऐसा कहीं होता है?

राधा०—भाई अमरसिंगजी, आजकाल तकदीर को चक्कर फिऱ्यो हुवो छे सू—कुण जाणे—कांई होवे ओर नहीं होवे?

अमर०—सुनिये अब—हम आपके हुक्म के मुताविक यहां से लश्कर ग्वालियर को पहुंचे. वहां इस रंडी का तलाश किया मगर वहां इसका नाम तक कोई नहीं जानता—फिर कहां से पता लगे? वहुतही कोशिस के साथ तलाश करते करते एक गलीकूंची में इसका झोपड़ा मिला. वहां दर्याफ्त करने से मालूम हुआ कि, गई है तब से वापिस नहीं आई. वड़ी वदमाश रंडी है और जेल भुगती हुई है!

राधा०—अठे कांई रांड नखरा करती थी? जमींपर पग भी नहीं टिकतो थो! म्हारी दस हजार की हेली छे ओर सिंदिया सरकार मने गावाने वुलवे छे. सरकार सू मने साल की साल रुपया मिले छे. कांई रांड की जात झूठी हुवा करे छे! भलां, फेर आगे?

अमर०—फिर मैंने सोचा कि इसकी इत्तिला पुलीस में देनी चाहिये कि जिससे शायद और भी कुछ ज्यादा खबर मिल जाय, क्यों कि यह जेल भुगती हुई है तो वहां इसका नाम जरूर दर्ज होगा और किस गुन्हे में जेल भुगती है यह भी मालूम हो जायगा. फिर मैंने गुलावचन्दजी को तो अपने डेरे पर वैठा दिया और मैं शहर के कुतवाल के यहां जाकर उनसे मिला. वे वड़े नेक, वुजुर्ग और शरीफ आदमी थे. उन्होंने मुझसे सारा हाल पूछा और हंस पड़े! उनको हंसते हुए देख मैं चुप हो गया और दिल में सोचता हुआ उनके मुंह की ओर ताकता रहा.

राधा०—फेर आगे काई हुवो ?

अमर०—क्या होना था—उन्होंने मेरी पहिंचान मांगी और कहा कि तुम खास ब्रजलाल सेठ केही आदमी हो ऐसा मुझे इतमिनान दिलावो. मुझे मजवूर होना पड़ा. फिर मैंने वड़े सेठको तार दिया. उन्होंने यहां से जव सरकार के जरिये से पहिंचान पहुंचाई तव कुतवाल साहव का इतमिनान हुआ और मेरे साथ उन्होंने वातचीत की.

राधा०—तो, फेर आगे कांई हुवो भाई, क्यूं पत्तो लाग्यो के नहीं—झट वोल द्यो परो!

अमर०—आगे क्या होना जाना था—सव पता लग गया. वात वड़ी वेढंगी है. वहुत देरतक कहना होगी तव आपके ध्यान में आवेगी.

राधा०—खैर, पत्तो लाग गयो जरां तो क्यूं हरकत नहीं. धीरे धीरे कहो.

अमर०—ये तीनों यहां से निकले सो ग्वालियर को नहीं गये. ये सव माल लेकर सीधे कानपुर पहुंचे. वहां एक अच्छा मकान किराये से लेके खूव ऐशो इश्रत के साथ रहे! कोई १०।१२ दिनों के वाद मुन्ना और हसनखां व करीमोदीन के वीच माल पर से कुछ नाइत्तेफाकी पैदा हुई. माल तो सव रंडीही के पास था. इस लिये इन्होंने सलाह मसलहत करके रंडी को तमाम करना चाहा. खूव प्यारो मोहव्वत दिखा के उसके गुलाम वन गये, और एक दिन रात को उसे खूव शराव पिला के वेहोश वना दी, और

हलाक करके सब माल लेके दोनों भी चंपत हुए! सुबह पुलीस को खबर हुई कि किसी रंडी का खून हुआ है. पुलीस वहां दर्याफ्त के लिये आई. इन दोनों का नाम जाहिर हुआ. सब का कयास यही हुआ कि इन्हीं बदमाशों का यह काम है. फिर जायबजाय तार दिये गये और पुलीस की तफतीश शुरू हुई.

राधा०—अरेरे! बिचारी फोगटही मारी गई! काई अमरसिंगजी गळो काट नाख्यो होसी—ओर काई?

अमर०—नहीं सेठानीजी, गले में फांसी लगा के दम रोक दिया गया था!

राधा०—हां भाई, फेर आगे?

अमर०—ये दोनों माल लेकर वहां से निकले सो पटियाले पहुंचे. वहां शहर में कोई नया आदमी आया कि उसकी महसूल के लिये जामातलाशी होती है—इसी तरह इनकी भी तलाशी ली गई. तलाशी में इनके पास खूब कीमती जेवर मिला. देखकर सब लोग चौकन्ने हो गये. इनको पूछा गया. लाजवाब हुए. फिर इनपर खूब सख्ती गुजारी गई. बेटोंने झट एकबाल कर लिया. फिर मय जेवर के इनको कानपुर चालान किया गया. अपने को छुड़ाने के लिये इन लोगोंने बहुत कुछ कोशिस की और कुछ जेवर भी अफरातफर किया मगर कुछ न हुआ. कैद होकर कानपुर आनाही पड़ा. जिस दिन मैं ग्वालियर के कुतवाल के पास गया था और मेरी सब हकीकत सुन वे हंस पड़े थे, उसका सबब यही था कि मेरे जाने के कुछ थोड़ीही देर के अव्वल कानपुर से यह सारी हकीकत उनके पास पहुंची थी. और मेरी पहिंचान पहुंचने के बाद उन्होंने फिर मुझे सब हाल सुनाया था. और जेवर की फेहरिस्त भी मांगी थी सो मैंने उनको दरखास्त के साथ दे दी थी. अब हमको कुतवाल साहबने कहा कि तुमको कानपुर जाना होगा. फिर हमारे साथ एक पुलीस का जवान और खत देकर कानपुर के पुलीस सुपरिन्टेन्डन्ट साहबके पास हमको रवाना कर दिया.

राधा०—(खुशी होकर) वाह भाई, चोरी तो खूब मिली! पण कुछ माल जातो भी रह्यो. जावो परो! वदमासां को सत्यानास तो हुवो—हां, आगे भाई?

अमर०—हम लोग कानपुर पहुंचे वहां हमको सब चीजें दिखाई गई. अपनी दूकान की थी वे सब जैसी की तैसी मिल गई. उनमें से कुछ भी नहीं गया. यहां से जाते वक्त सब चीजों का तौल, लागत और तफसील जमा खर्च पर से हम उतार कर ले गये थे. सिवाय इसके कि जिस वक्त चीजें सिपुर्द की गई थीं उस वक्त भी एक फेहरिस्त मय वजन के लिखकर इन तीनों के दस्तखत लिये गये थे. सब मेल मिल गया, और सुपरिन्टेन्डन्ट साहब भी वहुत खुश हो गये. फक्त गंगाविसन का तो सब जेवर जाता रहा और कुछ बीवी जान का गया. वाकी अपना तो ज्यों का त्यों सब मिल गया. फिर साहवने उन कैदियों को दिखाया. बस, हसनखां और करीमोद्दीन थे. हमको देखतेही रो पड़े! बेहोश हो रहे थे! बुरे काम का बुराही नतीजा है. मुकद्दमा सेशनकमिट हुआ है. अब तारीख कोई १५।१६ दिन वाकी है. दूकान के वहीखाते साथ लेकर सेठजी को वहां गवाही के लिये जाना होगा. अपना माल करीब पचास साठ हजार के होगा. परमेश्वरने वड़ी बात की. हमारी मेहनत सफल हुई.

राधा०—(विचार करने) भाई, थांका सेठ नहीं गया तो? ब्यांको कांई ठिकाणो छे? ओर जाकर भी कदास डरता कुछ को कुछ बोल देवे तो फेर?

अमर०—अब आप बेफिकर रहिये. हम सब बन्दोवस्त कर लेंगे. आप का जेवर अब कहा जाता है? सेठानी साहब, गुलावचन्दजी की इस काम में पूरी कोशिस हुई है. सब चीजें इनकी पहिंचान की थीं तभी वहां के लोगों का इतमिनान हो गया कि खास इन्हीं के यहां की है. कानपुर के सुपरिन्टेन्डन्ट साहवने तो बाजार से वैसीही कई चीजें मंगाकर उन

चीजों में मिलाकर गुलावचन्दजी से शनाख्त करवाई—पर इनको शावास है, इन्होंने अपनी सव चीजें उसी वक्त अलग निकालकर रख दी! साहव वहुतही खुश हो गया. कानपुर के लोग अपनी वड़ी दूकान को जानते हैं.

गुलाव०—नहीं, सेठाणीजी, मने तो कुछ भी कोसिस करणी पड़ी नहीं! म्हे तो डेरा पर वैठो रव्हतो. आ सारी कोसिस के, मेहनत के, हूंशारी अमरसिंगजी कीही छे. वारवास मांहे आदमी भी इशाही चाहिजे. मने तो कठे भी जराही तकलीफ नहीं होवा दी. सारो काम यांही सुधार्यो छे.

राधा०—भाई, थां दोन्यां का म्हारे ऊपर घणा घणा उपकार छे. जनम ताई थांका गुण गावूंली ओर वणशी सू थांकी सेवा करूंली.

अमर०—नहीं नहीं, सेठानी साहव! यह क्या आप कह रही हैं? हम दोनों आपके तावेदार हैं. हमने अपना फर्ज अदा किया है. इसमें हमारा उपकार क्या? हम आपकी सेवा करें कि आपसे करावें? राम राम! यह क्या वात आपने कह डाली! अच्छा अव परवानगी हो.

राधा०—आछो तो भाई, अव आगला काम की पूरी फिकर राखजो.

गुलाव०—ठीक छे सेठाणीजी, इण काम की तो अव म्हांनेही पूरी फिकर छे.

(अमरसिंग तथा गुलावचन्दजी जावे छे.)

राधा०—(मन मांहे) चालो, एक वात को तो निकाळ हुवो. मुन्वा मान्या को सत्यानास हुवो! कांई उदमाद मचायो थो—राम थारी माया! चालो, अव आपां भी घर मांहे जावां जयदेव एकलो छे. (जावे छे.)

अंक चौथो समाप्त.

THE MARWARI COTTON MANUFACTURING CO LTD

॥ श्री ॥

फाटकाजंजाल नाटक.

अंक पांचवो.

पात्र:—लछमी वाई, सुगनी वाई, चंपा वाई (वंसीधरजी पंडित की वहू); राधा वाई, जयदेव, वंसीधरजी, गोपालजी (पुजारी), गुलाबचन्दजी, ब्रजलालजी, अमरसिंग, रामरतनजी, शिवनारायणजी, जगन्नाथप्रसाद, श्रीकिसनजी ओर रामचन्दरजी.

प्रवेश पहलो.

ठिकाणो—श्रीकिसनजी को घर.

(लछमी वाई तथा सुगनी वाई आवे छे.)

लछमी॰—बींदणी, कल तिंव्हार छे—हाथां पगां के मेहंदीविहंदी लगाई के नहीं ? ओर रसोईबिसोई कांई करणी छे वींको अवार सू बंदोवस्त कर लीजे. नहीं तो वखत की वखत सामान कठे सू त्यार होवेलो ?

सुगनी॰—सासूजी, आजकाल मेहंदी मांडणी बामण्या तो छोड़ दीनी छे. म्हे म्हांकी मांड लेशां. ओर सामान कांई कांई चाहिजे छे सू बोल देवो सू त्यार कर ल्यूं. पण पहली सुसराजीने पूछ ल्यो—रसोई कांई करणी छे. फेर सामान की बात.

लछमी॰—तो बामणी कद सू मेहंदी लगाबा आवे कोनी ?

सुगनी०—वींने तो घणा दिन हो गया. कठे पहली अठे कोई अजमेर वाळो आकर पंचायत कराई थी जरां, वाण्या के अठे वामण्या मेंहदी लगाणी नहीं इशो ठहराव हुवो थो तिका दिन सू मेंहदी लगाणी वन्द छे.

लछमी०—आछी वाई, रोजीना एक एक नवी वात सुणवा मांहे आवे छे ! मुव्वामान्या अजमेरफजमेर का कठे का लोग कठे आकर कोई न कोई नवी वात चला देवे ! कोई आवे जको वोले—गति मत गावो, कोई वोले—गाळयां मत गावो, कोई वोले—सीठणा मत गावो, कोई वोले—हाथांपगां के मेंहदी मत लगावो—आछा राममान्या म्हां लुगायां के पीछे हाथ धोकर लाग्या छे ! म्हे न्यांको कांई विगाड्यो छे राम जाणे ? आपका घर मांहे तो क्यूं भी कर सके कोनी ओर लोगां का घरां मांहे नवी नवी रीतां चलाता फिरे !

(इतना मांहे चंपावाई मिसराणी आवे छे.)

चंपा०—सेठाणीजी, कुण काय की नवी नवी रीतां चलाता फिरे ?

लछमी०—(ऊठकर) आवो मिसराणीजी, आज तो घणा दिनां सू आया ? (पगां लागे छे.)

चंपा०—दूधां न्हावो, पूतां फळो, पेळ्यापाट्यां राज करो, जुगजुग जीवो !

सुगनी०—(चंपावाई का हाथ पकड़कर) मने भी तो क्यूं आशीस ?

चंपा०—क्यूं नहीं कंवराणीजी,—सासू सुसरा धणी का हुकम मांहे रह कर न्यांकी सेवा करो, हुकम मानो ओर सुख देवो ! म्हां ब्राह्मणां को मान राखकर आशीस लेवो, ओर रामजी की किरपा सूं तथा वडेरां का पुन्नपरताप सूं कन्हैया सो वेटो होकर वंस को वधेवो होवो ! वस, अव इण सू ज्यादा कांई ?

लछमी०—मिसराणीजी, थांकी आसीस सूंही आस वंध रही छे सू अव के तो म्हांका वुढ़पा मांहे भगवान् धजा चढ़ा देवे तो, म्हे तो—मिसराणीजी ! जीवताही सरग चल्या जावां ! काल तिव्हार छे. म्हे वींदणीने कह्यो के हाथां पगां के मेंहदी मंडा लीजे तो, वींदणी वोलवा लागी के आजकाल

वामण्या मेहंदी लगावे कोनी. कोई पंचायतफंचायत कराकर लगाणी बन्द कर दी बतावे छे. तिका परसूं म्हे कहती थी के "काई लोग नवी नवी रीतां चलाता फिरे ?"

चंपा०—यूं कांई ? जरा सेठाणीजी, थे भी तो विचार करो के, म्हां वामण्यां का हाथ मांहे थे थांका पग देकर मेहंदी मंडावो सू आछी बात छे कांई ? थां वाण्यां को धरम वामणां की सेवा करवा को छे के उलटी वामणां कने सू सेवा करावा को छे ?—थेही बोलो ! इशी उलटी वातां होवा लाग गई जरांही तो सारा लोग दुख पा रह्या छे !

लछमी०—बाई मिसराणीजी, थे बोलो सू तो ठीक छे पण म्हे वाण्यां कांई कराजी ? थे वामण अवार कोई काम नहीं करणो चाहो तो म्हांकी मगदूर छे—म्हे जवरदस्ती थां कनेसू कोई काम करा लेवां ?

चंपा०—सेठाणीजी, थे बोलो सू साची छे, पण ओ राममान्यो पेट ये इशा काम करावे छे. वामण ओर वामण्यां कांई—सारा वेग्यान छे. व्यांको कांई वामणपणा को सूल छे सू जाण सके के वामणने किशो काम करणो चाहिजे ओर किशो नहीं ! व्यांने तो पेट भरबा सू काम ! आज वामण ओर वामण्यां नहीं नहीं सू काम कर रही छे. मेहंदी लगाणी कांई, माथो चोटी करणी कांई, गीतगाळ गाणी कांई ओर दूतीपणो करणो कांई—उशा ही वामण—रसोई करणी कांई, झूठा चोका वरतण करणा कांई, लुगायां का घाघरा धोणा कांई, लुगायां के तेल मसळणो कांई ओर आछा आछा घरां मांहे बुरा बुरा काम करणा कांई—ये इशा इणका काम छे कांई ? अस-नान करे नहीं, संध्या जाणे नहीं; गायतरी याद नहीं, देवपूजा कर जाणे नहीं, कुछ भी ग्यान नहीं—जाटकडूंव्यां ज्यूं सारो काम—जरां कियान भी तो पेट भरणो ? अवार म्हांका घरवाळाने के मने बोलो भला, म्हे इशा काम करां कांई ? सार वात—वामण कांई ओर वामण्यां कांई सारा मूरख वण रह्या छे. तिकासूं वे वामणपणो भूल गया ! तो भी वाण्यांने तो वे पूजनिकही छे. ओर व्यां कने सू ये इशा काम कराकर वाण्यांने पाप

मांहे पड़णो छे ! सू थां वाण्या को धरम छे के ये इशा बामण वामण्यां आगे होकर क्यूं काम करे तो भी व्यांने रोक देणो चाहिजे. इण तरह हुवो के फेर ये लोग ठिकाणे आया. कांई करां—म्हांके घरवाळा तो, कोई बामण इशा काम नहीं करण पावे तिका सारू घणी खटपट कर रह्या छे पण, ये इशा काम छूटता छूटता छूटसी.

लछमी०—बाई मिसराणीजी, वडेरां सू चालती आई रीतां तो कदेही मिटवा की नहीं—थे चाव्हे सू कर ल्यो ! अब म्हांके मेहंदी लगाणी ओर माथोचोटी करणी—बामण नाई नहीं करे तो ओर दुजो कुण करे जी !

चंपा०—थे थांका हाथ सूं करो, नहीं तो नायण कने सू करावो !

लछमी०-भलां, ये काम तो म्हे कर लेशां, नहीं तो नायण कने करा लेशा पण, गीतगाळ भी इशा मोटा मोटा म्हांका सगासोईने नायण्या कने सू गवाकर व्यांने लजावां कांई ? ओर म्हे नायण्या की साथ बैठकर गाती आछी लागां कांई ?

चंपा०—नहीं सेठाणीजी, थे इशा सीठणा ओर गाळ्यां गावो मती ओर बामण्या कने सू गवावो भी मती. आपां लुगायां की सोभा सारी लाज सरम सूंही छे. अवार थे—बूढ़ा छो तो भी देखां भलां, बजार मांहे सू उघाड़े मूंडे नीसर सको कांई ? पहर ओढ़कर घूंघटापल्ला सूं नीसरशो तो थांने लोग आछा कहसी. नहीं तो जरा कठे हाथ भी उघाड़ो रह जासी तो थे भी भेळा भेळा होशो ओर लोग थांने बेसरम बताकर बुरी कहशी—सू बजार की बैठवाळी बेसवा भी बोल सके नहीं उशा बोल बोलकर सीठणा ओर गाळ्यां बड़ा बड़ा मोट्यारां की मिजलस मांहे गाणी आछी कांई ? इण मांहे छोटा बड़ा को काणकायदो जातो रव्हे, लाजसरम छूट जावे, धरम भिस्ट हो जावे, मरजादा जाती रव्हे ओर पराई जात का लोग बुरा कहकर हंसे ! —इण मांहे कांई मिले ? फोगटही आपां गळो फाड़ फाड़कर आपकी सरम गमाकर पाप मांहे पड़ा !

लछमी०—बात तो ठीक छे मिसराणीजी, पण गाळ्यां गाणी बन्द होणो घणी मुस्कल की बात छे. बड़ेरां की वखत सू चालती हुई रीतां यूं मिट जाणी कांई सहज की बात छे ? (याद आकर) जरांही अबके म्हांकी सदासुखी का व्याव मांहे भैयो गाळ गावा दी नहीं. धणी धिराणी एक मतो करने व्याव को मजो विगाड़ दीनो !

चंपा०—तो, कांई गाळ्यां गावा सूंही व्याव को मजो आया करे छे—ओर वातां सूं नहीं ?

सुगनी०—नहीं मिसराणीजी, गाळ्यां गावाने म्हे कद आड़ी आईजी ? थे तो नजीकही था. सासूजी बोलता ज्यूं म्हे करता—म्हांने कांई (मन मांहे) व्याव होकर कित्ताही दिन हो गया तो भी हाल गाळ्यां गावा का भटका आवेही छे ! रामजी म्हां लुगायां की जात काय की बणाई छे कुण जाणे !

(इतना मांहे राधाबाई ओर जयदेव आवे छे.)

लछमी०—(खुशी होकर) आवो, बेटा जयदेव ! आज तो घणा दिनां सू आयो ? (जयदेव पांवांधोक देवे छे.) हजारी उमर हो वस, बेटा वस. (राधा बाई पगां लागे छे.) शेळी हो, सपूती हो, धणी धिराणी सूख सूं रव्हो ! (राधा बाई मिसराणी के पगां लागे छे.)

चंपा०—दूधां न्हावो, पूतां फळो, धणी धिराणी हिलमिल रहो !

राधा०—(जयदेवने) बेटा, मिसराणीजी के पावांधोक नहीं देवे कांई ? ओर आ अठीने बड़ी भाभी बैठी छे वा भी कांई कहशी ? (जयदेव पावांधोक देवे छे.)

चंपा०—हजारी उमर होवो, जुगजुग जीवो ओर खूब दुकानदारी करने बापदादा को नांव चलावो ! (सुगनी बाई राधा बाई के पगां लागे छे.)

राधा०—बस बाई, बींदणी वस !

लछमी०—हां बाई मिसराणीजी, अब म्हांको तो सारो आधार जयदेव रामरतन पर ही छे. ये आछे रस्ते चालकर बापदादा को नांव चला-

सी जका मांहेही ठीक छे. (जयदेव का सिर पर हाथ फेरकर.) वेटा, आज-काल थारा भायाजी कठे छे भैया ?

जयदे०—जा ! मने कांई मालम ? माने मालम होशी ! आ मने वतावे कोनी ! कठे छिपा रख्या छे ! देख ताई ! मने टोपी भी मंगा देवे नहीं. ओर म्हारी गाड़ी कठे छिपा दी—म्हे इसकोल मांहे रोज पगां पगां जाया करूं छूं ! पग मांहे देख तो भलां, जूता भी छे कांई ? मा मंगा तो नहीं देवे ओर म्हारी कानी देख देख रोवो करे !

राधा०—(डराकर) वाह वेटा, ताई के पास पुकार तो खूब करी ! जाणे म्हे क्यूं भी नहीं द्यूं. परसू टोपी बूट मंगा दिया था जका फेंक दिया ! फेर म्हे कांई करूं ?

जयदे०—जा ! म्हे फेक द्यूं नहीं तो कांई करूं—उशा मने सुहावे कांई ? भायाजी किशा मने सोना की टोपी ओर काळा काळा बूट ला देता था ? जा ! परी कठे की !

लछमी०—वेटा, थारी मा तो गहली हो गई ! क्यूं भी समझे नहीं ? म्हे तने टोपी द्यूं. (सुगनी वाईने) वींदणी, वा कपाट मांहे सू टोपी तो लिया.

चंपा०—सेठाणीजी, व्रजलालजी इयान घर को नास कर देवेला—इशी तो कोई भी जाणी नहीं थी. कांई तो वापड़ी विराणी का हाल हो रह्या छे, आप कठीने भटकता फिरे छे—पत्तो नहीं ? सोना सो एक छोरो वींको भी प्यार नहीं. प्यार तो रह्यो पण खवर भी लेवे नहीं ! आजकाल कठे छे ओर कांई करे छे मालम नहीं ! सेठाणीजी, थांके जिशा भाई भोजाई तो दुनियां माहे कठेही होणा नहीं. थे इत्ती फिकर, इत्ती दरकार ओर इत्ती ममत राखो छो पण थांसू भी आकर मिले नहीं !

लछमी०—मिसराणीजी, दिनदसा का फेर छे. नहीं तो व्रजलालजीने कुण कह्यो थो के थे न्यारा हो जावो. म्हारे किशा दसपांच देवरजेठ था सू कांई करूं—न्यारा हुवाही सरे ! व्रजलालजी कुण ओर रामरतन कुण ?

पण काई करां–म्हांकाही नसीब खोटा छे सू ये इशी वातां हुई ! अवार भी सुध संभाळकर म्हांके कने आ जावे तो म्हे किशा घर मांहे आवा द्या कोनी ? भलां व्यांसू कोई दूजी वात छे ? म्हारो रामरतन तो रोजीना फिकर करबो करे ओर बोलबो करे के–काकाजी अवार आ जावे तो कपड़ा की कळ को सारो काम व्यांने सूंपकर म्हे म्हारो काम करबो करूं. घर का आदमी कठे पड्या छे ? परायो घरका की होड़ करे कांई ? परायो सू परायोही परायो ! पण वाई, जोर कांई–जद नारायण सुमत देवेलो जद व्यांको ही घर छे. ओर वे मालकही छे. म्हांके कानी सू तो जरा भी दूजो विचार छे नहीं.

सुगनी०–(टोपी लाकर) लेवो कंवर साव, टोपी ! हाथ जोड़ो तो देवूं.

जयदे०–(टोपीने देख खुशी होकर) जा वड़ी आई हाथ जुड़ावाळी ? ला म्हारी टोपी ! (टोपी लेकर) देख तो भलां मा, आ टोपी किशी सोना की छे !

राधा०–(मन मांहे) कांई करूं म्हारा बच्चा ! सोना की टोपी कांई तने सोना को मुगट पहरा द्यूं पण लाचारी के आगे कांई करूं.

चंपा०–सेठाणीजी, देख्या, ब्रजलालजी की वहू का कांई हाल हो रह्या छे ? शामण को सो भेस ले राख्यो छे. रातदिन पूजापाठ मांहे गमावे छे. इणकाही सुहाग सूं ओर सत सूं ब्रजलालजीने सुध आवेली. अब कांई बाकी रह्यो छे सू खाली भटकता फिरे छे. आजकाल का दिन कांई आछा छे ? चाऱ्यां कानी रोगचाळो चाल रह्यो छे. आदमी को क्यूंभी ठिकाणो नहीं. अब घरां बैठकर राम राम करने पीछो बापदादा को नांव सुधार लेवे तो ठीक छे.

राधा०–बाई जोसणजी, म्हे कित्ती अभागण छूं सू म्हारे मांहे किसी वीत रही छे ? म्हारे तो जेठजी ओर भाभीजी सासू सुसराही छे. म्हे इणके पास रही जठे तांई मने कदेही पीर की याद आई नहीं. मावेट्या

ज्यूं प्यार रह्यो ! अबार भी कांई थोड़ो फिकर कर रह्या था पण, करमड़ा के आगे जोर कांई ?

चंपा०—क्यूं फिकर करो छो सेठाणीजी, अब थांका गिरह फिऱ्या छे करने घर मांहे बोलता था. म्हे भी रात दिन थांका भला की ही माळा फेर रह्या छां ! ल्यो अब सेठाणीजी, घणी वार हुई, जाऊं छूं ?

लछमी०—मिसराणीजी, बाई घणा दिना सूं तो थे आवो ओर जावा की भी उतावळ करो. यूं रोजीना आकर म्हांने ग्यान की बातां सिखावो तो म्हांको जनम नहीं सुधर जाय ?

चंपा०—नहीं सेठाणीजी, मने इशी कांई ग्यान की बातां आवे छे सू थांने सिखावूं ? थे तो आप ग्यानी ओर घराणा का आदमी छो. थांने कांई सिखाणो छे ? (जावे छे.)

सुगनी०—(मन मांहे) देख्या, काकीजी का कांई हाल हो रह्या छे ? धणी के तांई शामण हो रही छे ! इशी लुगायां सूं ही कुळ को, धणी को ओर आप को उद्धार हुवा करे छे. इशी पतिव्रता लुगायां आजकाल कठे छे ? हे नारायण मने भी काकीजी जियान रातदिन सेवा करवा की सुमत देईजे ! इशी लुगाई का दरसण सूंही धणी मांहे किशो प्रेम, भक्ति ओर सरधा ऊपजे ?

लछमी०—कांई ब्रजलालजी की बहू, सारा गहणा को तो पत्तो लाग गयो बतावे छे—करने काल थारा जेठजी जिकर करता था. जाणां तो हां अब क्यूं साता फिरी दीसे छे. थारा जेठजी थांकीही फिकर का मान्या दूबळा हो रह्या छे ! आजकाल तो—ऊठता बैठता, बोलता चालता, हिरता फिरता ब्रजलालजीने भूलेही कोनी ! जका मांहे भैयो तो ब्यांके लारेही पड़ रह्यो छे के कियानही करने काकाजीने आपणे कने ले आवो. पण व्यांको तो पत्तो भी नहीं आजकाल कठे छे सू !

राधा०–(आंसू लाकर) पत्तो क्यूं नहीं–अठेही छे. गंगाविसनजी के अठे के वीं रांड के अठे पड़्या रह्या करे छे ! हुई सू तो हुई पण, अब मिल्यो मिलायो गहणो कठे सरकार मांहे नहीं चल्यो जाय ? व्यांको तो मने इशो भरोसो कोनी के उठे जाकर क्यूं खटपट करने बोलचाल कर गहणो ले आसी ! (आंसू नाखे छे.)

लछमी०–(ओढणा का पल्ला सू आंसू पूंछकर) गहणोबीहणो तो घणोही आजासी–थारा जेठ वन्दोवस्त कर रह्या छे. अब ब्रजलालजीने समझा सुमझाकर रस्ते लगावा कीही फिकर मांहे सारा छे. नारायण कीनो तो अब थोड़ाही दीन को संकट छे. हीमत राख !

राधा०–थेही मायत छो. थांनेही फिकर आसी. ओर अब थेही जीवदान देशो ! अब थांके विना म्हारे ओर दुनिया मांहे कुण छे सू छत्तर छाया करसी ?

जयदे०–मा, घरां चाले नहीं कांई ? घणी बार हुई चाल, ऊठ.

राधा०–जावूं छूं तो भाभीजी ! अब म्हे ज्यादा कांई कहूं–गहणा की फीकर राखजो. चाल, बेटा चालां (दोन्यूं मा बेटा जावे छे.)

लछमी०–चाल बाई वींदणी, आपां भी आपणा कामने लागां.

(सारा जावे छे.)

प्रवेश दूजो.

ठिकाणो–पंडित बंसीधरजी को घर.

(बंसीधरजी आवे छे.)

बंसीध०–(मन मांहे) श्रीकिसन सेठ का घर मांहे रामरतन एक अनर्घ्य रत्न नीपज्यो छे. कपड़ा की कळ मांहे म्हारा भी दस सेर भरा दीना था. सू आज दस का पंधरा हजार हो गया. ! लोग नगदी देवे छे.

पण रामरतन कव्हे छे के ठहर जावो. थोड़ाही दिनां मांहे दस का वीस हजार हो जासी ! वड़ोही आश्चर्य ओर खेद हो रह्यो छे के मारवाड़ी वाण्या रुजगार वेपार मांहे इशा हूंशार, वाकफगार ओर धुरनवाज छे के कठे को कठे ध्यान पुगाकर रुजगार धन्धो जमा लेवे पण व्यांकी अठीने नजर कियान पूगी नहीं–कुण जाणे ! कठे जाणो पड़े न आणो पड़े ओर हाय हाय करणी पड़े ? राजा को सो हुकम, राजा को सो देणोलेणो ओर राजा को सो मानसन्मान ! सारो काम कायदा सू, सारो व्यवहार नियम सू ओर सारी वात व्यवस्था सू चालवो करे ! म्हे तो कळ की इमारत, सामान ओर यंत्र देखकर चकित हो गयो ?

(इतना मांहे गोपालजी पुजारी आवे छे.)

गोपाल०–(हाथ जोड़कर) नमस्कार, पंडितजी ! कांई हो रह्यो छे ?

वंसीध०–पधारो पुजारीजी, आज कठीने कृपा कीनी ?

गोपाल०–रसोई जीमकर मिंदर कानी जातो थो तो रस्ता मांहे हल्लो सुण्यो के गंगाविसनजी का घर पर पोलीस का लोग गया छे. उठे जाकर खबर काढ़ी तो क्यूं की क्यूं सुणवा मांहे आई. सारा वोले के ओ कळजुग छे–पण म्हारी जाण मांहे तो करजुग छे–इण हाथ करो ओर इण हाथ भुगतो !

वंसीध०–इशी कांई खबर सुणी म्हांने भी तो सुणावो !

गोपाल०–हां पंडितजी, आपने सुणावा के तांई तो अठीने सू आयोही छूं.

वंसीध०–तो, कांई गंगाविसनजी ने पकड़कर ले गया ?

गोपाल०–कुण ?

वंसीध०–पोलीस का लोग ओर कुण ?

गोपाल०–नहीं नहीं, वड़ा पोलीस का लोग !

वंसीध०–वड़ा ओर छोटा कुण रह्या करे छे ? पकड़वाळा जवान तो जठे देखशो उठे एक सरीखाही रह्या करे छे.

गोपाल०—जमराज का पोलीस का लोग !

बंसीध०—अरेरे ! तो कांई मर गयो ? फेर उठे पोलीस का लोग क्यूं गया था ? म्हे तो मांदोतातो भी सुण्यो नहीं. दो तीन दिन पहली तो बजार मांहे फिरताने देख्यो थो. बाबा, आजकाल को समय भी इशो बुरो आ गयो छे के आदमीने मरता मराता जरा भी देर लागे नहीं !

गोपाल०—कांई देर लागी तो ! रात का तो चोखी तरह थो. फजर का घर मांहे सू मऱ्यो नीसऱ्यो ! पोलीस का लोग पूग्या. डाक्टरखाना मांहे मुरदाने ले गया. पेट चीऱ्यो तो पेट मांहे सू अफीम नीसरी बतावे छे !

(इतना मांहे गुलाबचन्दजी आवे छे.)

गुलाब०—(हाथ जोड़कर) पगां लागूं महाराज !

गोपाल०—अब गुलाबचन्दजी आ गया. यांने सारी बात पूरी पूरी मालम होशी.

गुलाब०—काय की महाराज ?

गोपाल०—आपका सेठजी का दोस्त यार की !

बंसीध०—सीधो नांव तो कोनी बतावो—दोस्त ओर यार मांहे ये कांई समझे ?

गोपाल०—सारा शहर का छोरा छोरा तो जाणे छे—फेर यांने कियान कोनी मालम ?

गुलाब०—कांई गंगाबिसनजी की बात ? हां हां, सारी मालम छे. भलां, सेठजी का दोस्त यार म्हां सू छिप्या छे !

गोपाल०—फेर सुणावो तो पंडितजीने सारी हकीकत. मने तो इत्तीही मालम पड़ी के मुरदो अस्पताल मांहे ले गया था ओर पेट मांहे सू अफीम नीसरी थी.

गुलाब०—महाराज, बात कांई ओर बिगत कांई—बडेरां का पुन्नपरताप सूं ओर सेठाणीजी का सतसुहाग सूं सेठजी बंच गया. नहीं तो आज उठे

होता तो ये किशा नहीं पकड़्या जाता ? क्योंकोही साराने वहम आतो पण, सेठाणीजी को सत काम आयो.

वंसीध०—इण मांहे कांई शंका छे ? पतिव्रता स्त्री को प्रभाव इशोही हुवा करे छे. "हुताशनश्चन्दनबिंदुशीतल: " एक लुगाई धणी की सेवा कर रही थी. उतना मांहे वींको बाळक खेलतो खेलतो अंगार मांहे जा गिऱ्यो, सू वींका प्रभाव सूं अंगार चन्दन जिशी थंडी हो गई ! सती का प्रभाव सू कांई नही होवे ? हां, गुलाबचन्दजी, सुणावो सारी हकीकत. खाली उत्कंठा क्यूं वधावो छो ?

गुलाब०—सुणो पंडितजी, आजकाल सेठजी को तो गंगाविसनजी का अठे सू आणो जाणो छूटही गयो थो. फकत महबूब के अठेही रहता था. उठेही एक विरामण रख दियो थो सू व्यांने रोटीटुकड़ो कर घालतो थो. घरां चालवा के तांई साराही कहता पण बिलकुल मानता नहीं. बोलता के अब म्हे घरां चालकर जयदेव की माने कांई मुंडो दिखावूं ? वींके पास किशा मुंह सूं जावूं ? म्हे घणी तसल्ली करता पण रांडने छोड़वा को व्यां को बिलकुलही विचार कोनी देख्यो जरा, फेर म्हे साराही वड़ा सेठजी की सलाह सू व्यांके ऊपर दो तीन जणां की डिगऱ्या हुवोड़ीही थी—कैद की दरखास्त दिराकर सेठजीने दीवानी जेल माहे पूगता कीना ! उठे फेर ये सारी वातां भूल गया ! उठीने म्हे रांडने दम दे दिवाकर रोती रोती ने गवालेर रवाना कीनी. उठे कांई धऱ्यो छे—गहणो गांठो तो वींको पहली ही पूरो हो चूक्यो थो. उठे जाकर माने रो रुवाकर पीछी अठे की अठे चली आशी. जित्ते म्हे घर को वन्दोवस्त करने वींने अलग कर देशां.

वंसीध०—गई होशी, जावो परी रांड—इण मांहे गंगाविसनजी को कांई हुवो ?

गुलाब०—जरा धीरज तो राखो. सुणो, सेठजी को जाणो आणो कमती हुवो तो म्हांका मुनीमजी गणेशरामजी को गंगाविसनजी के उठे

आसन जम्यो. उठे तो एक न एक कोई चाहीजेही. पैसा कमाणा—फेर लाजसरम, दीनदुनिया ओर कींकी परवाही काई ? गणेशरामजी ओर गंगाबिसनजी पूरा दोस्त. सेठजी का माल मांहे दोन्यां की पांती. कायको पड़दो ? उठे झट गणेशरामजी को विस्तर लग गयो! गणेशरामजी पक्को, देख्यो यूं तो आपणो लाग लागे नहीं—चीजवस्त रुपयापैसा लेकर रांडने उड़ावो सू खूब मजा आवे! आज चार दिन हुवा—गणेशरामजी तो सारों मालताल ओर रांडने लेकर कठीने चंपत हुवा ! गंगाबिसनजी ओ गजब देखकर घबरा गया ओर बेहोंस हो गया! अबके बजार मांहे सौदोसूत भी मोकळो कन्योड़ो छे उण मांहे भी पूरो पूरो नुकसाण छे. चान्या कानी सू गोता मांहे आ गया. कुछ सूझी नहीं. झट अफीम की डळी खा ली ओर बिछाणा पर सो गया सू फजर मन्याही नीसन्या! हराम को धन हराम मांहे गयो! अपघात सूं मरकर दीन ओर दुनिया खोई ! सेठजी ईं वखत उठे होता तो किशो बुरो काम होतो ?

बंसीध०—जरां आ वात तो घणीही बुरी हुई. एक वाण्या को नहीं, म्हांका जजमान को घर डूब गयो !

गोपाल०—आछा जजमान बणाया पंडितजी ! इशा धर्म, आचार ओर नीति भ्रष्ट को मूंडो काळो ओर लीला पग ! कन्यो जिशो भुगत्यो! फेर आगे गुलाबचन्दजी ?

गुलाब०—आगे कांई छे—उनकी लास पर ज्यूरी होकर दाग दिरीजो. घर मांहे काका को बेटो भाई आकर बैठ गयो. रांड ओर गणेशरामजी को पोलीस पत्तो लगा रही छे. पकड़ीज्या का पकड़ीज्या छे. व्यांके तांई भी जेल तैयार छेही. चालो, सेठजी को धन खायो जिशो सारी बात को निकाल भी हो गयो !

बंसीध०—भाई गुलाबचन्दजी, अब तो सेठजी का गिरह फिन्या छे. अव उनका घणखरा बंधन भी टूट गया. रांड गई, गंगाबिसनजी जोड़ा सूधा गया, चीजां गई थी सू मिल गई. अब ब्रजलालजीने जेल सू छुड़ा-

कर जठे का उठे ठिकाणे वैठा द्यो. थे खरा खरा स्वामीभक्त सेवक छो. शास्त्र मांहे कह्या प्रमाणे थे स्वामीभक्ति वजाई छे. ईश्वर थांको कल्याण ही करसी.

गुलाव०—नहीं महाराज, म्हे कांई कीनो छे—कुछ भी नहीं! जद सेठजी का सारा फंद छूटकर वरावर रस्ता पर आ जासी; और आछी तरह नीति सूं आपको संसार करवा लाग जासी जद समझूंलो के आज कुछ हुवो! और आपको आशीर्वाद छे तो अव कुछ देर छे नहीं. सारी वात वियान की वियान हो जाशी. सेठजी की नीत घणी चोखी छे. वोले छे के कींकी कोड़ी राखूं नहीं. सारा को निकाळ कर देशूं. ओ तो पक्को गुण छे के कदे झूठ वोले नहीं और कींने डुवोणो चाव्हे नहीं. म्हांकी सेठाणीजी काही सत सूं अव सेठजी का दिन फिऱ्या छे. सेठाणीजी कांई थोड़ो तप कर रह्या छे? धन छे उणकी मातापिताने और धन छे उणका सासू सुसरा धणीने के इशी नार जाई और इशा भला घर मांहे आई!

गोपाल०—हां साव, व्यांकी तो सारा शहर मांहे इशीही शोभा छे.

वंसीध०—तो फेर अव सेठजी के लारे को सारो झगड़ो जठे को उठे मिटा द्यो और कपड़ा की कळ के ऊपर मुख्त्यार कर द्यो. कांई कहूं गुलावचन्दजी वड़ोही फायदा को काम छे. म्हारे तो पड़्या पड़्या सेरा मांहे ड्योढ़ा हो गया!

गुलाव०—हां महाराजजी, तजवीज तो सारी आपका हुकम माफक ही हुई छे. अठीने आप जिशा पुरोहित और वड़ा भाईभोजाई और उठीने सेठजी की सती लुगाई मोजूद छे—सेठजीने क्यूं भी कमती नहीं. और जरां भी कांई कमती थी? पण गिरह दशा का चक्कर था सू भोग्या विना कियान मिटे?

गोपाल०—लो पंडितजी, अव परवानगी होवे?

वंसीध०—क्यूं भाई पुजारीजी, इशी जलदी क्यूं?

गोपाल०—बस, अब सेठजी की सारी कथा सुण ली. मंदिर जाणो छे. (जावे छे.)

गुलाब०—पंडितजी, म्हे भी अब देखां, सेठजी कने जेल मांहे जाऊं छूं. व्यां सूं कुछ सल्लासूत करणी छे. (जावे छे.)

वंसीध०—(मन मांहे) हे परात्पर प्रभो ! करुणाघन जगदीश ! थारी घणीही अगाध ओर विचित्र लीला छे—वींको पार ब्रम्हादिकांने भी नहीं आयो ! पैसो तो जाणोही थो क्यूं के " अन्यायोपार्जितं द्रव्यं दश वर्षाणि तिष्ठति " भाई कने सूं जबरदस्ती लड़ झगड़ कर लियो थो. पण नारायण की कृपादृष्टि होता पाण—मुन्ना मरी, दोनूं मुसल्ला फांसी चढ्या, रांड गई, गणेशराम गंगाबिसन की बहूने ले भाग्यो, गंगाबिसनजी यमपुरी दाखल हुवा ! गयोड़ो गहणो सारो मिल गयो. अब जाणा हां सेठजी ठिकाणे बैठ जासी. कारण सारा फन्द टूट गया. पूरी ठोकर लाग गई छे तो, अब आंख्या खुलही गई होशी. चालो, बिचारी सेठाणी का नसीब सूं ही बिगड़ी बात सुधरी छे. (कपड़ा पहरकर) अब आपां भी बजार कानी जावां. (जावे छे.)

प्रवेश तीजो.

ठिकाणो—ब्रजलालजी को घर.

(ब्रजलालजी, गुलाबचन्दजी ओर अमरसिंग आवे छे.)

ब्रजला०—(आंसू लाकर) भाई गुलाबचन्दजी, अब मने इशा खाली ओर सूना घर मांहे लाकर म्हारो काळो मूंडो क्यूं घरवाळाने दिखा रह्या छो ! म्हे इण घर मांहे पांव रखबा के लायक नहीं, म्हे इण घर मांहे आवा के लायक नहीं ओर म्हे घरवाळा सूं मिळबा के लायक नहीं ! म्हे इशो दुष्ट, म्हे इशो पापी ओर म्हे इशो दुराचारी छूं के मने—लुगाई की

तो रही पण—म्हारा बाळक की भी ममता ऊपजी नहीं ! कांई कोई म्हारे पर जादू नाख दी थी के, काई कोई म्हारे पर मोहनी नाख दी थी के, कांई कोई म्हारे पर भुरकी नाख दी थी सू घर का आदमी मने दुस्मण ज्यूं दीसता ! अब ठोकर लाग गई, आंख्या खुल गई ओर अक्कल ठिकाणे आ गई ! पैसा विना कोई कींको नहीं ! भाई, थां दोन्यां का म्हारे ऊपर घणा घणा उपकार छे. (वींच मांहे)

गुलाब०—सेठ साब, आप इशा बोल बोलोला तो फेर म्हांको सारो कर्यो करायो इवरथा जावेलो ! म्हे कांई करबा जिशा छां सू आप पर उपकार करां ? म्हे एक गरीब आदमी आपका तावेदार छां ! म्हे म्हांकी फरज बजाई छे.

व्रजला०—खैर, भाई थे फरजही बजाई सही ! पण अब मने घर मांहे तो जबरदस्ती ले आया—अब म्हे अठे कांई करशूं ? घरवाळाने कांई कह-कर समझाशूं ओर आगे म्हारो निभाव भी कियान होसी ?

अमर०—सेठ साहब, आप क्यों फिकर करते हैं ? बड़े सेठ को आपकी बड़ी भारी फिकर है. वे आपका सारा बन्दोबस्त कर चुके हैं. अब आप मुतलक न घबराइये.

व्रजला०—बन्दोबस्त कांई—फेर उणके पास जाकर रव्हणो के नहीं ? एकबार न्यारो होकर फारगती हो गई, अब म्हे उणके कांई माथे मांगूं सू उणके पास जाकर रहूं ! अब उणका घर मांहे जाकर टुकड़ा तोड़णा आछा लागसी कांई ? यूं तो वे बड़ा भाई भोजाई मायत ज्यूंही छे. व्यांके जीवता तो मने क्यूं भी हरकत नहीं तोभी अमरसिंगजी, न्यारा घरां का न्यारा बारणा हुवा करे छे. इण बात को पूरो विचार करणो चाहिजे.

अमर०—सेठ साहब, आप जैसा विचार कर रहे हैं वे भी वैसाही कर रहे होंगे—क्या ये बातें वे जानते नहीं ? दुनिया में भाई होना तो श्रीकिसन सेठ जैसाही होना, नहीं तो, जननीने एकही पुत्र जनना ! आपके लिये

कितनी चिन्ता, कितना प्रयत्न और कितना विचार किया है—वह किसीसे छिपा नहीं है.

ब्रजला०—भाईजी, ब्यांका ही पुन्नपरताप सूं आज मने घर को बारणो दीख्यो छे. नहीं तों जीवता तो घरां आवा की आस थी नहीं ! पण अब आगे उमर कटणी घणी दोरी छे. (इतना मांहे घर मांहे सू दोड़तो हुवो जयदेव आवे छे.)

जयदे०—(बापके लिपटकर) भायाजी आया ! भायाजी आया ! इत्ता दिन जा ! अँ अँ अँ मने छोड़ कर कठे चल्या गया था ? म्हारी घोड़ा की गाड़ी ले गया ! अब रोज इसकोल में पांव पांव जाणो पड़े. अँ अँ अँ !

ब्रजला०—(प्यार सूं) बस बेटा, बस ! आ, म्हारे पास बैठ जा. थारी घोड़ा की गाड़ी भी आजाशी ओर तने चाहिजसी सू सब मिल जासी. आ, म्हारे नजीक आ ! (सिर पर हाथ फिराकर) बाळबीळ किशा कर राख्या छे—कदे न्हावेधोवे कोनी कांई ?

जयदे०—जा, म्हांके तांई सोना की टोपी नहीं लाया ! अँ अँ अँ ! आ टोपी ताई दीनी जिकी झूठा सोना की छे ! जा ! बूट भी नहीं. अँ अँ अँ!

ब्रजला०—गहलो बेटो, अबार बजार मांहे सू मंगा देशूं. बैठ जा !

गुलाब०—कंवर साव, जरा ठहर जावो. मंगाशो सू सब आजासी !

ब्रजला०—कांई हाल हो रह्या छे—टाबर कानी देख्यो नहीं जावे !

गुलाब०—कंवर साव तो फेर भी ठीक छे सेठ साव ! आप सेठाणीजीने देखोला जरां खबर पड़ेली के घराणदार सती लुगायां किशी हुवा करे छे !

ब्रजला०—जो हुवो सू तो ठीकही हुवो ! उठे सू थे मने छुड़ाकर घरां लाया पण, हाल लोगां की डिगऱ्या घणी छे सू लोग रोजीना जपती लासी ओर मने कैद कराता फिरसी जरां, बाकी बा बात ओर बोको बो दुख ! अठे यूं रहकर निभाव कियान होसी ?

गुलाब०—नहीं सेठ साव, अव न तो जपती आसी ओर न कोई आपने कैद करासी. सारो वन्दोवस्त हो चूक्यो छे. अव आप रसोई जीमो ओर सेठाणीजी सूं मिलकर व्यांको जीव सोरो करो! रातदिन थांकी चिंता; रातदिन थांको ध्यान ओर रातदिन थांकी माळा फेरकर सारा शरीर की लकड़ी, राख ओर मट्टी कर राखी छे! अव म्हांने हुकम होवे? भाई अमरसिंगजी, चालो कंवर साव के तांई टोपी विगेरा वजार मांहे सूं ले आवां.

अमर०—अच्छा तो चलियेगा. अव हम शाम को आवेंगे. (दोनूं जावे छे.)

व्रजला०—(विचार करता हुवा मन मांहे) आपणा लोगां का भायां कानी देखूं ओर म्हारा भाई साव कानी देखूं जरां मने इत्तो अचंबो आवे के कुण जाणे म्हे किशी दुनिया मांहे छूं! म्हारे जिशो भाई तो अवार इण दुनिया मांहे घणो दुर्लभ छे. तिका मांहे आपणा मारवाड्यां मांहे इशो भाई? नोज! आपणा भाई—भाई का पांतीदार, आपणा भाई—भाई का वुराईगार ओर आपणा भाई—भाई का दावादार! आपणा भायां मांहे वीज, रक्त ओर मांस को मेळ नहीं, आपणा भायां मांहे मातापिता का प्रेम को परिणाम नहीं, आपणा भाया मांहे वन्धुता को भाव नहीं ओर आपणा भायां मांहे भाई की पिछाण नहीं! अहाहा! म्हारा श्रीकिसन भाई, तूं साचो भाई छे! थारो म्हारो साचो साचो एक वीज रक्त ओर मांस छे. जीं उदर मांहे भाई, तूं नो मास रह्यो वींही उदर मांहे म्हें भी तो मास रह्यो छूं. तूं आज कुळ को दीपक छे, माता पिता को सत्पुत्र छे ओर म्हारो एक सहायकारी भाई छे! भाई, थारा गुण गावूं, थारी सोभा करूं ओर तने सहरावूं इत्तोही थोड़ो छे!

जयदे०—भायाजी चालो, अव मने भूख लागी. चालो म्हारी मा के पास.

व्रजला०—(उठकर) चाल वावा, अव चालणो ही भाग छे. (दोनूं ऊपर जावे छे.)

राधा०–(आगे आकर धणी का पांवां पर सिर रखने) हे पति देव ! हे प्रत्यक्ष परमेश्वर ! आज म्हे स्वर्ग में हूं, पतिलोक में हूं अथवा भू लोक में हूं ? आज कांई म्हे नन्दन वन में हूं, कांई म्हे अमरपुरी में हूं अथवा कांई म्हें वैकुण्ठपुरी में हूं ? म्हारे आज सोना को दिन ऊग्यो, म्हारे आज मोती हिरां को चोक पुरीज्यो, म्हारे आज सुहाग को तारो चिमक्यो, म्हारे आज पुण्याई को प्रताप वध्यो, म्हारे आज धर्म को प्रसार हुवो ओर म्हारे आज मूर्तिमान् आनन्द को पधारवो हुवो ! आज म्हारो स्नान, ध्यान, पाठपूजन, उपास, व्रत, नियम सफळ हुवा, आज म्हारो जनम सुधर्‍यो ओर आज दुनियां मांहे म्हारो माथो ऊजळो हुवो ! आज म्हारा घर की, कुळ की ओर म्हारी शोभा, गति ओर भलाई हुई. आज मरी हुई जी ई, आज गई हुई आई ओर आज सेवा रहीसही मिली ! आज म्हे पवित्र, आज म्हे शुद्ध, आज म्हे आछी, आज म्हे भली, आज म्हे शाणी ओर आज म्हे गृहिणी हुई ! आज म्हे दुनिया मांहे आई, आज म्हे संसार मांहे आई ओर आज म्हे म्हारा घर मांहे आई ? आज म्हे सबने आछी लागी, आज म्हे सबने सुहाई ओर आज म्हे इण चरणां के सरणे आई ! जनम जनम चरणां को वियोग मत होजो, संजोग मत मिटजो ओर आधार मत टूटजो ! आज घणा परिश्रम सूं, घणा कष्ट सूं ओर दुःख सूं चरणां को दसरण हुवो छे, लाभ हुवो छे ओर स्पर्श हुवो छे ! अब म्हे चरणांने कदे छोडूंली नहीं, दूर करूंली नहीं ओर कठे जावा धूंली नहीं ! ये चरण सदा म्हारे सिर पर, हिरदा पर ओर हाथां पर राखूंली, पूजूंली ओर सेवूंली !

ब्रजला०–(हाथ पकड़कर) बस बस ! अब ये चरण कठेही भागे कोनी, फिरे कोनी ओर जावे कोनी ! शान्ति राखो ! म्हे थांको घणोही अन्याई, अपराधी ओर दोषी छूं ! म्हे घणाही पाप कीना छे, नहीं नहीं सू काम कीना छे ओर थांने दुख दीना छे. थांकी माफी मिल्या विना इशा अपराधां की परमेश्वर कदेही माफी करसी नहीं. आज म्हारा भाई का साचा भाईपणा सूं ओर थांका लुगाईपणा सूंही घर का दरसण हुवा छे.

म्हे आजही दुनिया मांहे आयो छूं, संसार मांहे आयो छूं ओर थांके पास आयो छूं ! बस, अब आज सू सारी नवी बात, सारो नवो घरबार ओर सारो नवो संसार छे ! अब घर के बारे जाबा की, बुरे रस्ते चालबा की ओर थांका हुकम बिना कोई भी काम करवा की सोगन छे !

राधा०—(आंसू टपकाकर) नहीं नहीं, जयदेव का भायाजी,—म्हे गुलाम म्हारो काय को हुकम ? हुकम तो इण चरणां कोही सिर माथे रव्हसी ! इत्तोही वचन चाहिजें के इण गुलाम पर सदा हुकम बण्यो रव्हे. अब हुकम को नहीं होणो मरवा सू भी कठन जाणजो ! लुगाईने धणी बिना दीन नहीं, दुनिया नहीं, मावाप नहीं, भाईबहण नहीं, सासूसुसरा नहीं, देवरजेठ नहीं ओर बेटाबेटी भी नहीं ! धणी बिना संसार नहीं, ओ लोक नहीं ओर पर लोक नहीं ! अब हाथ जोड़कर इत्तीही बीनती छे के चरणां की सेवा सूं इण दासी को उद्धार करजो !

ब्रजला०—बस, आज थे मने मिल गया—सारो धन, सारो संसार ओर सारी दुनिया मिल गई ! अब कुणकुणशी वातांने याद करकर रोवूं ओर कुणशीने नहीं ? " जीवेगा नर तो फेर करेगा घर " इण परसंग मांहे दुनिया को खूब अनुभव आयो ! धन माल खजानो सब गयो पण दुनिया की वातां खूब नजर आई ! धन के तांई दुनिया मांहे लोग कांई काई बुरा भला, साचा झूठा, नहीं नहीं सू काम, कपटजाळ जंजाळ, दगा धोखा ओर छल छिद्र कऱ्या करे छे तिकारो पार नहीं ! तिका मांहे आपणा मारवाड़ी तो—हे राम ! कांई कांई करे ओर कांई कांई नहीं !

राधा०—करो करावो क्यूं भी कोई—अब गई वातांने सपना मांहे भी याद करणी नहीं. थांको शरीर छे तो सारो धन, सारी दौलत ओर सारी दुनिया छे. कांई करणो छे धनने ? धन सूं कांई सुख हुवा करे छे—हाय धन ! हाय धन ! ! करता करता को कठीने दिन बीते सू मालम नहीं ! इशा धन को कांई करणो छे ? पंधरा लाख को धन मिलकर कांई हुवो ? धन धन करवा सूं धन होवे छे के, रव्हे छे ?

ब्रजला०—अब आगे कांई करणो, कठे जाणो अथवा अठे रहणो—क्यूं भी सूझ पड़े नहीं ! चित्त कठी को कठीने दोड़ रह्यो छे.

राधा०—अब कठे जाणो न आणो. चित्त ठिकाणे राखो. थांका हाथ सू कींको बुरो तो—म्हारी जाण मांहे—हुवो छे नहीं. सू फेर थांने कींको डर छे ? थांसू बुराई करवाळा का घणखरा का तो परणाम लग गया छे—कित्ताही तो दुनिया मांहे सू जाता रह्या ओर कित्ताही जावा का पंथ मांहे छे ! सारांने अठे को अठेही वदलो मिल गयो ! वस, चालो अव रसोई तैयार छे. आज मने अभागणने, नहीं नहीं सभागणने झूठण को परसाद ओर चरणां को तीरथ देकर म्हारा वास को पारणो करावो !

(सारा जावे छे.)

प्रवेश चोथो.

ठिकाणो कपड़ा का कळ की हापस.

(ब्रजलालजी तथा रामरतनजी आवे छे.)

रामर०—देखी काकाजी, इंजन बायलर ओर सारी कळां ? पहली कपास जीन घर मांहे नाखकर बींका बिनोळा (सरकी) काढ्या पीछे वींने मिक्सिंग कळ मांहे ले जाणी पड़े. उठे हळकी भारी, करड़ी नरम रुई मिलाकर बींको पालो हुवा पीछो बींको चोड़ो थप्पो बणकर फेर बींकी मोटी पूणी बणे. मोटी पूण्यां की बारीक, बारीक की बींसू बारीक बणता बणता छोटी छोटी कूकड्यां के ऊपर मोटो, मोटा सू बारीक ओर बारीक सू महीन—इण तरह सूत तैयार होकर बाबिन (कूकड़्या) पर लपेटतो चल्यो जावे. पीछे बे सारी कूकड्या निकाळकर अलग धर देवे. बींकी आट्यां बणाकर सूत बेचणो होवे तो नंबर वार बंडल बांध दिया जावे ओर कपड़ो

बुणणो होवो जका को ताणो वणाकर साइझिंग मशिन मांहे गंजी देकर ताणाने करघा का रोलर पर लपेट देवे ओर वाणा को सूत ढरकी (धोटा) मांहे नाखकर करघा चलावे. ताणा का सूत सू वाणा को सूत बारीक लगाणो पड़े छे. थान तयार हुआ पीछे फेर वींने गंजी देकर वींकी घड़ी करकर नंबर मारकर गांठ वांधकर गोदाम मांहे धर दिया करे छे. आजकाल आपणा देस मांहे चाळीस नंबर सू ज्यादा वारीक सूत नीसरे कोनी. कारण दिनोंदिन रुई छोटा तारवाळी ओर करड़ी पैदा होवा लाग गई. लंबा तार की नरम रुई पैदा करवा की तरफ किरसाणां को ध्यान नहीं. नहीं तो, आज सो वरस पहली आपणा देस मांहे पांचसो नंबर जित्तो वारीक सूत तैयार होतो थो !

व्रजला०—भैया, सूत को नंवर कियान मालम हुवा करे छे ?

रामर०—सुणो काकाजी, वींको हिसाव इयान छे के, १२० गज की एक ली (छोटी आटी) हुवा करे छे. सात ली की एक ह्यांक (वडी आटी) होवे छे. ढ़ाई तोळा को एक औन्स ओर सोळा औन्स को एक पौण्ड हुवा करे छे. इशा एक पौण्ड मांहे जित्ता ह्यांक मावे उत्तोही वीं सूत को नंवर अर्थात् पौण्ड मांहे एक ह्यांक चढ़े तो, एक नंवर को सूत, पांच ह्यांक चढ़्या तो पांच नंवर को सूत ओर दस ह्यांक चढ़्या तो दस नंवर को सूत जाणणो. इण परसू जितनो सूत को नंवर ज्यादा उतनो ही वारीक सूत हुवो. क्यूं के एक पौण्ड मांहे ८४० गज सूत रह्यो तो—एक नंवर को हुवो, ८४०० गज सूत रह्यो तो—दस नंवर को हुवो ओर ८४००० गज सूत रह्यो तो सो नंवर को हुवो.

व्रजला०—इशी वड़ी वड़ी कळां होकर भी वारीक सूत क्यूं नहीं निकळे भलां ?

रामर०—वारीक सूत नीकळे क्यूं नहीं ? रुई नरम ओर लंवा तार-वाळी चाहिजे, सर्द हवा तथा पाणी चाहिजे. कळ का जोर मांहे सूखो

सूत ज्यादा ठिकाव नहीं पकड़े—तिका सारू म्हे भी वारीक सूत नीसरवा के तांई कळ का मकान मांहे हवा मांहे भीनास तथा सरदी रहवा सारू अबार नवो निकळ्यो हुवो "ह्यूमिडिफायर" नामक यंत्र लगायो छे. तिकासूं सूत बारीक निकळ सकसी तथा करघा के ऊपर कपड़ो बुणती बखत सूत ज्यादा टूटसी भी नहीं. विलायत मांहे तो थंडी ओर भीनास की हवा सदाही छे. तथा अमेरिका की रुई घणी नरम ओर लंबा तार-वाळी छे तिकासूं उठे २०० नंबर तांई सूत निकळवा मांहे दिक्कत पड़े नहीं. इत्तो भी आपणा देस को कपड़ा बुणवा को धंधो ऊठ गयो छे तो भी हाल—पगड़ी, साड़ी, धोती, दुपट्टा, पीतांवर, मश्रू, दुसाला, अलवान, किनखाव विगेरा कपड़ा वणे छे तिका मुजब प्रतिसृष्टिकर्त्ता विलायतवाळा वणा सके नहीं ! कपड़ो बुणवा की कळा आपणाही देश की छे. सारी दुनिया मांहे सारां के पहली कपड़ो आपणाही देस मांहे तैयार होतो थो. आगला जमाना मांहे अंग्रेज लोग अंगपर रंग लगाकर झाड़ का पत्ता सूं आपको शरीर ढकता था तो वे वापड़ा कपड़ा मांहे जाणताही था कांई ! पण आज उण पर श्रीजी की कृपा होणे सूं वेपार के पाण आपणा देश का बादशाह बण बैठ्या छे !

ब्रजला०—इण कळ मांहे रोजीना सूत ओर कपड़ो कित्तो तैयार होवे छे?

रामर०—इण मांहे पंधरा हजार स्पिंडल (चरख्यां) छे. एक चरखी मांहे आठ औन्स अर्थात् आधो पौण्ड सूत तैयार होवे छे सू रोज को सूत साड़ी सात हजार पौण्ड हुवो. ओर कपड़ा का करघा (माग) तीनसो छे सू एक करघा मांहे रोज को कपड़ो चौदा पौण्ड तैयार होवे छे सू रोज को तैंयाळीससो पौण्ड हुवो. कपड़ो ओर सूत बारा हजार पौण्ड के आसरे तैयार होवे छे. थोड़ा दिनां पीछे ओर डेढ़सो करघा लगावा को विचार छे सू कपड़ो ज्यादा बणवो करसी.

ब्रजला०—भैया, आजकाल कपड़ा को उठाव घणो छे सू कपड़ो धोणो, रंगणो ओर छापणो विगेरा की तजवीज हो जाय तो ठीक छे.

रामर०—हां काकाजी, इण वात की व्यवस्था तो पहलीही सू कर राखी छे. धोवा की, रंगवा की ओर छापवा की सब कळां लाकर धरी हुई छे. अब पाणी की मोकळी तजवीज हो गई छे सूं सूत कपड़ो धोणो, रंगणो ओर छापणो सुरू करणो छे. धोवा रंगवा मांहे फायदो घणोही छे. ये तो सारा हुनर का काम छे. आजकाल लोगानें चमकदमक तथा भपको ज्यादा पसन्द छे तिकासूं जो कपड़ो वारीक, सफाईदार, घोट्यो हुवो, रंगविरंगी, तरहदार ओर चमकदार तथा वरावर घड़ी कऱ्यो हुवो ऊपर छाप तसवीर लगी हुई ओर अंदर तथा ऊपर कागद लपेट्यो हुवो होवे वो लोगांने झट पसन्द आजावे ओर मुंह मांग्या दाम देकर लोग ले लेवे ! आज विलायत को रुजगार इत्तो बध्यो सू काय पर ? माल की सफाई, सुन्दरता ओर सस्ताई पर वे लोग लाखों रुपया कमा रह्या छे ! जद आपणा लोगां को आजकाल ध्यान आपणा देसी कपड़ा पर छे तो आपणो फरज छे के उशो वारीक, सफाईदार, धोयो हुवो चाहिजे जिशो कपड़ो आपणे अठेही तैयार करने व्यांने देणो ओर देस को वेपार वधाकर उपकार करणो.

ब्रजला०—भाई रामरतन, ओ वड़ो भारी काम छे. इणकी देखभाळ पूरी होणी चाहिजे. ओर इण वात की समझ भी पूरी चाहिजे—नहीं तो काम चालणो घणो मुस्कल छे.

रामर०—इण मांहे कांई शक छे काकाजी ! पूरी पूरी निजर राखकर संभाळणो चाहिजे. पण एकवार आदमी के सिर कोई भी काम आकर पड़ जाय ओर वीं काम मांहे वींको चित्त लाग जाय पछे तो, वींने काम संभाळता देर लागे नहीं. पहली म्हे कांई समझतो थो—कुछ भी नहीं. अंग पर वोझो पड़ गयो जरां सब काम आपही आगयो !

ब्रजला०—भाई, तू तो अंग्रेजी पढ्योड़ो छे. तने काम आ जाय इण मांहे नवलही कांई ? म्हां जिशा ढोडने कियान आ सके ?

रामर०—क्यूं नहीं काकाजी, इण मांहे कांई छे—आदमी नहीं करे जठे ताई वींने कोई भी काम अनोखो अनोखो लागे ! एकवार काम हाथ मांहे लिया पीछे आपही काम हाकमी सिखा देवे !

ब्रजला०—हां भाई, तो ओ इत्तो खरचखातो जाकर इण मांहे रोज को नफो कित्तो होतो होसी ?

रामर०—म्हारा हिसाब सू काकाजी, सारो खरच खातो जा जुवाकर कम सू कम रोजीना एक हजार रुपया नफो रव्हणो चाहिजे. कारण कळ को काम सुरू हुवाने तीन महीना को सुमार हुवो थो जरां पहला वरस की मीटिंग हुई थी तो, सेर ऊपर सत्तर रुपया नफो दीनो थो. कुल नफो अस्सी हजार के सुमार हुवो थो. हाल तो कळ चालणी सुरू ही हुई छे. जाणा हां, आवती साल मांहे सेर पीछे रुपया तीनसो सू कम नहीं वाटंगा. चलतू हिसाब ओ छे के, आजकाल एक पौण्ड सूत अथवा कपड़ा पर कम सू कम दो आना ओर ज्यादा सू ज्यादा तीन आना नफो मिले छे.

ब्रजला०—जरांही सेर को भाव आजकाल दो हजार इक्कीस सो हो रह्यो छे ! बारा महीना मांहे एक का दो हो गया ! कांई करूं भाई, आज मने घणोही पिस्तवो आ रह्यो छे के न्यारो हुवो थो जरां म्हेभी इशा काम मांहे पड़ जातो तो मने आज ओ दिन क्यूं आतो ?

रामर०—काकाजी, अब आगली बातां सब भूल जावो. जाणे हुई थी ही नहीं. ओ काम कींको छे—थांको ही छे. भाई भाई कठे न्यारा होता होसी ? न्यारा तो दुस्मण हुवा करे छे. (इतना मांहे पंडित बंसीधरजी आवे छे.)

अमर०—(उठकर) आवो, पधारो गुरुजी ! (पगां पर सिर रक्खे छे.)

ब्रजला०—(पग पकड़कर) पांवाधोक पंडितजी !

बंसीध०—(दोन्यां के सिरपर हाथ धरकर)

सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै ॥
तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥

धन्य ! धन्य !! आज द्वारकानाथजी को कुळ धन्य !!! आज काका भतीजा एक ठिकाणे बैठ्या हुवा छे, प्रेम सूं बात कर रह्या छे ओर एक भाव व्यक्त कर रह्या छे ! ओ पुण्य को फल छे, ओ शुभवासना को मनोरथ छे ओर ओ एकता को सात्विक भाव छे. ओ समागम, ओ संवाद, ओ प्रसंग ओर ओ समय—सुखकारक, उपदेशकारक, लाभकारक ओर हृदयहारक छे.

रामर०—गुरु महाराज, ओ सब आपही की शुभ आशीस को फळ छे.

वंसीध०—कंवर साव, थे तो म्हारी आत्माही छो. थांने शुभ आशीस देवूं इण मांहे आश्चर्यही कांई—परन्तु म्हारी आशीस तो साराही मारवाड़ी भायांने इशीही छे के साराही सज्जन एकता सूं, प्रेम सूं ओर बन्धुभाव सूं चालकर संसार मांहे सुखी होकर उदाहरणभूत होवो ओर आपका धर्म को, कुळ को, जाति को ओर देश को भलो करो !

रामर०—गुरुदयाल ! जद आपकी इशी शुभ भावना, शुभ इच्छा ओर शुभ आशीस छे तो म्हांको भलो, सुधार ओर कल्याण होता कांई देर लागसी ?

ब्रजला०—बात तो इशीही छे. आगला जमाना माहे भी ब्राह्मण कीही शुभ आशीस सूं चाव्हे सूं काम होता था. फेर भी महाराजजी जिशा ऋषि आज विराजमान छे ओर ब्यांकी म्हां सेवकां पर पूरी कृपा छे तो, फेर कांई बात कोनी बणशी ?

(इतना मांहे शिवनारायणजी ओर जगन्नाथप्रसाद आवे छे.)

जगन्ना०—(हाथ उठाकर) जयगोपाल ! काकाभतीजों का आनन्द मंगल ! परमेश्वर मारवाड़ी जाति का ऐसाही कल्याण करता रहे. एकता

ही सबका प्राण है, एकताही सबका जीवन है, एकताही सबका आधार है, एकताही सबका सौभाग्य है, एकताही सबका धनवैभव है और एकताही सबका आनन्दमंगल है !

रामर०—पधारो बाबू साब, बिराजो ! आपणां देस मांहे एकता नहीं तिकासूंही तो इशा इशा प्रकार हो रह्या छे ! नहीं तो आज मारवाड़ी समाज काई नहीं कर सके ?

शिवना०—भाई साब, आप मारवाड़ी जाति मांहे एकता नहीं बोलो छो पण, ओर किशी जात मांहे एकता छे सू तो बतावो ?

जगन्ना०—जरा अहले इस्लाम की तरफ तो देखिये—अपने धर्म और जाति के लिये कैसे मरने मारने को तैयार रहते हैं ? पारसियों की तरफ देखिये—व्यापार में कैसी एकता रखते हैं ? महाराष्ट्र बंगालियों की तरफ देखिये—विद्योपार्जन में कैसी एकता रखते हैं ? मारवाड़ी जाति के समान फूट, निरादर, असभ्यता और मूर्खता तो शायदही और किसी जाति में हो !

बंसीध०—बाबू साब, मूर्खता तो मिटता मिटता मिटशी. अब आप जिशा पढ़्यागुण्या लोगां को सहवास मारवाड़ी जातिने हो रह्यो छे—तिकासूं उनका हिरदा मांहे पण कुछ कुछ प्रकाश पड़तो चाल्यो छे. श्रीजी की कृपा हुई तो जाणा हां, ओ समाज भी अब थोड़ाही समय मांहे सुधर जावेलो. हाल तो आपणा देशकी आर्थिक दशा बिलकुल खराब हो रही छे तिका कानी प्रथम लक्ष्य देणो जाहिजे कारण—“ द्रव्यमूलमिदं जगत् ” “द्रव्येण सर्वे वशा: ” “सर्वे गुणा: कांचनमाश्रयन्ति ”

जगन्ना०—इसमें क्या शक है ? हिसाब लगाकर देखा गया है कि अपने देशमें हर एक मनुष्य की सालाना प्राप्ति रुपया २० होती है और इंग्लेंड की रुपया ६००! क्या किसी मारवाड़ीने इसका कभी बिचार किया है ?

शिवना०—बाबू साब, मारवाड़ी मांहे क्यूं ग्यान होवे तो बे इशी बातां

को विचार करे—इंग्लेंड ओर हिन्दुस्थान के बीच जितनो अंतर छे उतनोही उणकी कमाई मांहे छे ! कव्हे छे के उठे कदेही काळ पड़े नहीं.

जगन्ना०—नहीं नहीं, कभी नहीं ! यों देखा जाय तो वहां सदाही अकाल है—क्यों कि वहां चौथे हिस्से की प्रजा का निर्वाह हो सके इतना ही अनाज पैदा होता है. वाकी सब अनाज वाहरी मुल्कों से आता है. वह कितनाही और कैसाही सस्तामहंगा क्यों न हो बा आसानी सब खरीद कर सकते हैं. कौई कभी नहीं कहता कि हमारे यहां अनाज महंगा है, नहीं मिलता या अकाल है. अथवा इतने मजदूर रिलीफ कामपर लगे हुए हैं, या इतने देश छोड़कर कहीं पेट भरने चले गये, या इतने मर गये और मर रहे हैं ! जब वहां हिन्दुस्थान की प्रजा की अपेक्षा तीस गुना अधिक प्राप्ति होती है तो, काल अकाल की क्या परवाह है, और भूखे मरने का भी क्या डर है ?

रामर०—वावू साव, यूरोप सू आपणा देश का मृत्यु को भी प्रमाण घणो ज्यादा छे. ओर तीस करोड़ आदम्यां मांहे सू चौथाई लोक एक वारही अन्न खाकर निर्वाह करे छे !

जगन्ना०—अधिक मृत्यु का कारण, भूखे रहने का कारण, अकाल का कारण और अधिकतर अपराध होने का कारण—केवल दारिद्रता है. “क्षीणा नरा निष्करुणा भवन्ति, भूखा क्या न करता ” इस में क्या शक है ?

शिवना०—फेर वावू साव, इण वातांने रोकवा के तांई कांई करणो चाहिजे?

जगन्ना०—एक मात्र व्यापार !

शिवना०—वेपार तो सारा देश मांहे खूब होंही रह्यो छे. फेर अव नवो वेपार कांई करणो छे सू उण सूं ये वाता मिट जावे ? वावूजी, वेपार सूं भलांही धन कमा ल्यो पण, मरता हुवा आदमीने कियान जिवा लेवे ? आदमीने अवार आपां इयान जिवा लेवां तो फेर आपांने की वात को डर ! ओर अमर नहीं हो जावां कांई ?

जगन्ना०—नहीं भाई, आप नहीं समझे. व्यापार से धन मिलता है और

धन से शरीर का रक्षण होता है. सौ भूखे आदमी और सौ पेटभर खानेवाले आदमी हैं उनमें से पहिले कौन और कितने मरते हैं—उस पर ख्याल कीजिये तो, आपको मालूम हो जायगा कि मरना जीना क्या होता है?

रामर०—भाई, जो जन्मो छे वींने मरणो तो छेज पण, एक आदमी धापतो मरे ओर एक भूखो मरतो मरे तिका मांहे कित्तो जमीन अस्मान कोसो अन्तर पड़े छे! इसी वास्ते देस मांहे धन ज्यादा होकर लोग धन-संपन्न होवा सूं सारी बात की आबादानी रह्या करे छे.

शिवना०—कंवर साब, बेपार छे सू तो चालही रह्यो छे. ओर जीं वींका नसीबा परवाणे जीं वींने धन भी मिल रह्यो छे—फेर उठे ज्यादा धन मिलाणो नहीं मिलाणो कींके हाथ कांई छे? कुण नहीं चाव्हे के मने एकलाने सारी दुनिया को धन मिल जाय! धन कींने प्यारो नहीं लागे ओर कुण धन के तांई प्रयत्न नहीं करे?

जगन्ना०—भाई साहब, धन कमाने के लिये जिस प्रकार हमको कोशिस और उद्योग करना चाहिये वह प्रकार इस वक्त हम भूल बैठे हैं—इसी लिये हमको अपेक्षित धन नहीं मिलता. यों तो व्यापार होही रहा है और धन भी मिल रहा है पर, अंग्रेज लोग ठाटबाट से रहकर भी सौ रुपये के माल पर कम से कम तीस रुपये और अधिक से अधिक दोसो रुपये तक लाभ उठाते हैं. और हम लोग गरीबी से रहकर भी सौ रुपये के माल पर कम से कम एक रुपया और अधिक से अधिक तीस रुपये तक लाभ उठा सकते हैं—बस, हद हो गई!

शिवना०—बाबू साब, आ तो बड़ी अचंबा की बात छे! तो, म्हे लोग इत्तो नफो नहीं मिला सका कांई?

जगन्ना०—क्यों नहीं? परन्तु हम लोगोंने हुनर और उद्योग सब छोड़ दिया है. इस लिये फल का गूदा हुनरमन्द अंग्रेज खाते हैं और ऊपर का छिलका हमारे हाथ आता है! बिचारिये—चार या अधिक तो आठ आने की एक पौण्ड रुई का सौ नंबरी सूत बनाने में तीन या चार आने

खर्च आता है, जुमला बारह आना हुए. और उसको दो रुपये पौण्ड से कम नहीं बेचते. एक सादी मलमल या नैनसुख का थान जो लगभग दो पौण्ड वजन में रहता है, जिसमें रुई अधिक से अधिक एक या ड़ेढ रुपये की होती है उसको पांच छः रुपये में बेचते हैं. एक मिट्टी की चीज जिस में लागत पैसे दो पैसे से अधिक नहीं, चार आठ आने से कम नहीं बेचते ! नफा इसका नाम है, कमाइ इसका नाम है और धन इसका नाम हैं !

शिवना०—बाबू साब, आपणा देस मांहे हुन्नर काम करवाळा कारीगर कांई थोड़ा छे ? पण उणको माल कोई लेवे नहीं जरा व्यांको कांई उपाय? ओर व्यांने नफो भी कियान मिले ? बापड़ा हजारो कारीगर भूखा मरता आपको धंधो छोड़कर मोलमजूरी करता फिरे छे !

जगन्ना०—भाई साब, यही तो सब घाटा है, यही तो सब नुकसान है और यही तो सब दरिद्रता है ! हमारे देश के प्रत्येक आदमी का कर्त्तव्य है कि उसको अपनेही देश का माल उपयोग में लाना चाहिये. चाहे बुरा भला, सस्ता महंगा कैसाही क्यों न हो. ऐसा निश्चय जिस दिन हो जायगा तो फिर देखिये भला, कोई कारीगर आपको बेकार मिलता है क्या ? जरा यूरोप अमेरिका की तरफ तो देखिये—वहां के लोग अन्य देशीय पदार्थों को कैसे घृणित , अपवित्र और अस्पर्श मानते हैं ? परदेश का माल वहां फेंक देना पड़ा है, लौटा देना पड़ा है और दरया में डुबा देना पड़ा है ! !

रामर०—पण बाबू साब, उठे की प्रजाने सरकार की कित्ती मदद छे ? उशी अठे आपांने छे कांई ? अबार सरकार—परदेश को माल आणो तो बन्द कांई करे पण, ज्यादा महसूल बैठा देवे ओर अठे सू माल जावे तिका पर महसूल लेवे नहीं तो अबार आपणा देस को कित्तो फायदो होवे ? मेनचेस्टर वाळां का कहवा सूं उलटो आपणा देस की कळ को कपड़ो अठेही बिके छे तो भी वीं पर सैकड़े साड़े तीन टका महसूल बैठा दीनो छे !

जगन्ना०—नहीं भाई, हमारी अंग्रेज सरकार वड़ी न्यायशीला और प्रभावशालिनी है. हमारी भूली हुई विद्या उन्होंने हमको सिखाई, हमारी गई हुई स्वतंत्रता उन्होंने हमको दी, हमारी खोई हुई सभ्यता उन्होंने हमको ला दी और हमारी गई हुई शान्तता उन्हीं हीने हमको दी है. अव उनके जातीय पक्षपात के संवन्ध में इतनाही कहना वस होगा कि जो भूप जाति होती है उसका गौरव, सन्मान और महत्व अधिक रहता है. मुसलमानोंकी अमलदारी में क्या था, मराठों की अमलदारी में क्या था और राजपूतों की अमलदारी में क्या था ? तौभी हमारी शक्तिमत्ती ब्रिटिश गवर्नमेन्ट अपनी जाति को दण्ड देती नहीं ऐसा नहीं है और हमारे देश के हुनर और उद्योग की पक्षपाती नहीं ऐसा भी नहीं है. सरकारी काम के लिये मिले वहां तक इस देशही के पदार्थ व्यवहृत किये जांय—ऐसी सरकारने आज्ञा दे रक्खी है. वैसेही कृषि की उन्नति के लिये और उसको सुधारने के लिये सरकार का कितना लक्ष्य है— तव हमारा परम कर्त्तव्य है कि जहां तक हो सके, हम अपने देश के पदार्थ उपयोग में लावे.

रामर०—वावू साव, आपको कहणो ठीक छे पण, चाह्यो देशी माल भी तो मिलणो चाहिजे ? ओर मिले भी तो चोखो, वाजवी ओर एक भाव सू मिलणो चाहिजे ! अठे तो म्हां वेपार्‍यां को नेम छे के जीं माल की ज्यादा खपत होशी वीं माल को झट भाव चढ़ा देशा ! ओर घर मांहे कोठा भर्‍या हुवा छे तो भी लालच का मार्‍या गाहाकने फेर देशां—जाणां के, दो दिन पीछे ओर भी महंगो विकसी. पण उशो माल ज्यादा तैयार कराकर थोड़ा नफा सू वेचणो समझा नहीं ! गाहक वापड़ो सारो वजार दुकान दुकान फिर आसी तो बींने कठे भी कोई माल का सस्ता महंगा को पत्तो लागसी नहीं. ओर आपां ठगाया नहीं, वरावर कीमत मांहे चीज मिली छे इशी बींकी तसल्ली होशी नहीं ! किशो भी भलो, धर्मी ओर साचो वेपारी हो ओर किशो भी हूंशार, चोकस ओर जाणकार गाहक हो—तो भी वेपारी कदेही साच वोलकर गाहक को भलो चाहसी नहीं ओर गाहक कदेही विश्वास रख-

कर वेपारी को भलो चाहसी नहीं ! दुकानदार चाहसी के रुपयो लेकर गाहकने आना को माल द्यूं ओर गाहक चाहसी के आनो देकर वेपारी सू रुपया को माल ल्यूं ! तो भी आखर गाहकनेही ठगाया लार छूटे ! जरां इशा वेपार सूं देश की उन्नति कियान होवे ?

जगन्ना०—कंवर साहव, आपका फरमाना वहुतही ठीक है. इसमें क्या संशय है—जव तक हम स्वार्थत्यागी नहीं वनेंगे तव तक हम किसीका कुछ भला नहीं कर सकेंगे. जर्मन, हंगेरी, जावा इत्यादि देशों की वात सुनकर हमको आश्चर्यचकित होना पड़ेगा ! वहां जो चीनी वनाई जाती है उसका यहां विशेष प्रचार करने के लिये अर्थात् अपना व्यापार वढ़ाने के लिये उलटी हजारों की हानि सहन कर के यहां चीनी सस्ती वेचते हैं और उस हानि का वदला—वही चीनी अपने देश में महंगी वेचकर उसके लाभ से पूरा कर लेते हैं ! देखिये, उनका कैसा साहस, स्वार्थत्याग और व्यापार है ? ऐसी प्रजा जिस देशमें है—वह देश धन्य, उसके ग्रामनगर धन्य, उनके घर धन्य, उनका कुल धन्य, वे स्वयं धन्य, उनका राज्य धन्य और उनका राजा धन्य !! हमारे यहां तो यह वात है कि, किसका देश, किस का समाज, किसकी जाति, किसकी वन्धुता, किसकी सहायता और किसकी सहानुभूति—चाहे किसीका कुछ भी हो हमारे दो पैसे हलाल होना चाहिये!!

शिवना०—वावू साव, ये इशी वातां की समझ थां म्हां जिशा दोचार आदम्यांने होवे तो कांई होवे ? इशी वातां पर सारां को ध्यान पूगे जरां क्यूं भी हो सके. एक दो आदम्यां को तो ओ काम छे नहीं.

रामर०—भाई साव, कोई काम करवा सूंही हुवा करे छे. आदमी आगे होकर प्रयत्न करे तो क्यूं न क्यूं परिणाम नीसरेही. अव थांके सामनेही की वात छेना—"मारवाड़ मनसोवा डूवी" इयान करता तो आ कपड़ा की कळ खुलती कांई ? यूंही वातां वातां मांहे भूल जाता. चालो, फेर कोई वखत "आपां मारवाड़ी इशी वातां मांहे कांई जाणां—आपणो ओ काम छे नहीं." वोलकर आपको समाधान कर लेता वस, फेर वात गई आई !

शिवना०—कंवर साव, गई आई क्यूं—आजकाल लोगां को देशी माल पर ध्यान पूग्यो छे तिका सूं नफो देखकर आपभी इशा काम मांहे पड़्या छो. नहीं तो आगे पड़्या होता ? आगे कित्ताही कपड़ा की कळवाळां का दीवाळा नीसर गया, कळां बन्द होगई, कळां बिक गई ओर सेर भरबाळा डूब गया !

रामर०—नहीं भाई साव, इण मांहे आपकी भूल छे. आपणा लोगां को नेम छे के एकही लीक कूटता चल्यो जाणो ! आजकाल दुनिया को रंग न्यारो हो रह्यो छे. आगली वात रही नहीं. जीं वींने वारीक, आछो, सफाईदार ओर सस्तो कपड़ो चाहिजे छे. आपणा लोग तो वोही लठ्ठो तैयार करकर बेचणो चाव्हे. वो माल बराबर विके नहीं जद आपही नुकसाण होवे. फेर आपां आपकी भूलने तो नहीं सुधारां ओर रोवो करां के कळ मांहे कुछ फायदो नहीं ! जिण बखत मुम्बाई का लोग कपड़ा की कळां मांहे हद सू ज्यादा नुकसाण उठा रह्या था वींही बखत अमबाद, सोलापुर नागपुर की मिलवाळा तरह तरह को, तर्जदार, मोटो, वारीक, धोयाड़ो, रंगदार ओर सफाईदार कपड़ो काढ़णो सुरू कर दीनो तो, वीं कपड़ा को खूब उठाव हुवो ओर इत्तो नफो मिल्यो के, मुम्बाई की मिलां का सेर का भाव रुपया का आठ आना हो गया—बींही बखत उणकी मिलां का सेर का भाव ड्योढ़ा दूणा हो गया ! जिण बखत अबार जिशी देसी माल की लोगांने चाहना भी नहीं थी.

बंसीध०—बाबू साब, थे थांका बड़ा बड़ा कामां को हिसाब लगा लीनो ओर देश को नफो नुकसाण भी समझ लीनो. पण म्हां गरीब लोगां के लायक भी कोई छोटा मोटा धन्धा होवे तो दिखावो सू म्हे लोग भी भीक मांगबा सू बाज आवां. थे जाणोही छो के आजकाल आपणा देस मांहे बावन लाख के लगभग भिखारी हो गया छे ! ओर ज्यांके तांई दूजा लोगां का साल मांहे पचास करोड़ रुपया मुफ्त खरच होवे छे ! सू म्हां जिशा भिखारी इशा धन्धा मांहे पड़ जावे तो थां लोगां को दूणो फायदो

होवे- एक तो थे लोग म्हांका सतावा सू वंचो ओर दानदक्षिणा सू भी वचो. धंधावाळा वणकर म्हेभी म्हांकी सुख सूं रोटी खावां! भीख मांगकर पेट भरवा मांहे आप लोग क्यूं प्रतिष्ठा, सन्मान ओर सुख समझता होशो ? पण भीख मागणो ओर मरणो वरावर छे—

तृणादपि लघुस्तूलस्तूलादपि च याचकः ॥
वायुना किं न नीतोऽसौ मामयं याचयिष्यति ॥

तृण सू रुई हळकी छे ओर रुई सू भी हळको याचक छे—तो फेर वींने हवा क्यूं नहीं उड़ा ले जावे ?—मांगवा का डर सूं ! (सारा हंसे छे.)

जगन्ना०—वाह पंडितजी, आप एक पंडित-रत्न हैं. छोटे मोटे कारीगरी धन्धों की क्या कमती है—विसाती वाने में हर चीज वनाइये. जैसे—वटन, सावुन, तेल, इतर, सेन्ट, पेन, पेन्सिल, चाकू, कैंची, सरौते, दवाइयां, मसाले, रंग, डिवियां, सूइयां, पिन्स, निव, खिलौने, मिट्टी के वरतन, काच का सामान इत्यादि अनेक प्रकार हैं. धातु वाने में—तरह तरह के वरतन, खिलौने, पानदान, डिवियां इत्यादि हैं. घर में स्त्रियों को लिये—सीना, पिरोना, कसीदा, मौजे, दस्ताने, गंजीफ्राक, गलूवन्द, रूमाल इत्यादि वुनना, सीना, और उन पर वेलवूंटे निकालना. पुरुषों के लिये—छोटे छोटे हाथ करघों पर कपड़ा वुनना, धोना, रंगना, छापना, सावन आगकाड़ी वनाना इत्यादि वहुत कुछ हैं. ये सव धन्धे वहुत थोड़ी पूंजी में अर्थात् पांचपचीस से लगा कर चारपांचसो में चल सकते हैं और नफा भी किसी हालत में ड्योढ़ी सवाई से कम नहीं होता. ओर अधिक कोई सालमें दुगना तिगना भी हो जाय. जापान छोटासा राष्ट्र होकर भी आज वह इतना भाग्यशाली, वैभवशाली और विजयशाली क्यों है—इशी लिये कि वहां घर घर में ऐसे छोटे मोटे कारखाने हैं और वे सव उनकी स्त्रियां चलाती हैं. पहिले अपने देश में भी यही वात थी. आपके मारवाड़ में क्या अच्छे अच्छे घर की त्रिया सूत नहीं कातती थीं ?

बंसीध०—तो कांई बाबूजी, ये इशा सूथारी, लुहारी, सुनारी, जुलाहा का काम हाथ सूंही करणा ? इण मांहे मेहनत घणी ओर काम थोड़ो होवा सूं इशो कांई फायदो होवाळो ?

जगन्ना०—नहीं नहीं पंडितजी, ऐसी चीजें बनाने के लिये अंग्रेजोंने छोटे मोटे बहुतसे यंत्र बनाकर जगत् का बड़ा भारी उपकार किया है. जिनके सहारे से एक मनुष्य थोड़ेसे खर्च में दस मनुष्य का क्या—उनसे भी अधिक काम अल्प समय में कर सकता है. आप जानतेही हैं कि शारीरिक शक्ति की अपेक्षा यांत्रिक शक्ति से हर एक काम बहुत सत्वर, सुन्दर ओर सस्ता होता है. बस, ऐसी छोटी छोटी कलें मंगवाइये और अपने घर में बैठे बैठेही धन्धा करिये. फिर देखें भला, कैसे भीख मांगने का प्रसंग आता है ?

(इतना मांहे श्रीकिसनजी, रामचन्द्रजी, गुलाबचन्दजी ओर अमरसिंग आवे छे. सारा खड़ा होकर फेर जठे का उठे बैठ्या पीछे–)

श्रीकिस०—(बंसीधरजी के पगां पर सिर धरकर) पंडितजी पावांधोक छे.

बंसीध०—(सिरपर हाथ धर कर)

सक्तुमिव तितउ ना पुनन्तो
यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत ॥
अत्रासखायः सख्यानि जानते
भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि ॥

रामचं०—आज अठे जो जो चाहिजे छे स सारांही विराजमान छे. ओर पंडितजी सूं विशेष शोभा आ रही छे !

श्रीकिस०—मुनीमजी, पुरोहित बिना कुणसो काम आछो हुवा करे छे?

वंसीध०—नहीं सेठ साव, अव इन्द्र कीसी, रामचन्द्र कीसी ओर नळ-युधिष्ठिरां कीसी म्हांकी पुरोहिताई कठे बाकी रही छे ?

श्रीकिस०—नहीं पंडितजी, आपकी पुरोहिताई बा की वा कायम छे. आप जिशा म्हारे पुरोहित नहीं होता तो आज ओ इशो सोना को दिन ऊगतो नहीं.

(व्रजलालजी श्रीकिसनजी के पांवांधोक देवे छे.)

व्रजला०—(आंसू लाकर) म्हारो धन भाग ओर धन घड़ी छे के मने आज ये पग सिर पर धरवाने मिल्या ! अव म्हे आप जिशा वडेरां के आगे क्यूं भी वोल सकूं नहीं तो भी परमेसर सू इत्तो ही हाथ जोड़कर मांगूं छूं के, हे नारायण ! म्हारे जिशा भाई अव आगे सू दुनिया मांहे कठेही मत पैदा करजे ! (रोवे छे.)

श्रीकिस०—(उठाकर, गळा सूं लगाकर ओर दुपट्टा सूं आंख्या पूंछकर) नहीं भाई व्रजलाल ! ये इशा म्हारीही ओछी पुण्याई का फळ था सू म्हारे सू तू दूर रह्यो ओर नहीं नहीं सू दुख पायो ! ओर म्हे इशो पापी भाई हुवो के म्हारे सू थारी कुछ भी सहायता वणी नहीं ! (आंसू लाकर) भाई जिशो सज्जन, भाई जिशो मित्र ओर भाई जिशो वांहवळ दुनिया मांहे ओर कोई छे काई ? एक पिता को अंश, एक माता की कूख ओर एक रक्तमांस को गोळो वींको—तुच्छ, अशाश्वत् ओर अनर्थकारी धन के तांई अपमान करणो, निरादर करणो ओर त्याग करणो महा मूर्खता, महा कठिनता ओर महा क्रूरता छे ! (ठिकाणे वैठकर) वस भाई, अव आगली वातां सव भूल जा, गया धनने विसार दे, पाया हुवा दुःख की याद मत कर ओर प्रेम सूं म्हारे पास रहकर टावरांने संभाळ !

वंसीध०—वाह सेठ साव, दुनिया मांहे भाई होणो तो आप जिशोही होणो. वाही माता पुत्रवती जाणणी के जो आप जिशा भाईने जन्म देवे, वाही भूमि पवित्र जाणणी के जिण पर आप जिशो भाई संचार करे, वोही

कुल धन्य जाणणो के जिण मांहे आप जिशो भाई उत्पन्न होवे ओर वोही समय उत्तम जाणणो के जिण मांहे आप जिशो भाई विद्यमान रव्हे !

रामर०–(कुरशी परसू ऊठने आगे आकर) पंडितजी महाराज, ओर सारा सरदार कृपा करने सुणो–(गोज्या मांहे सू कागद काढ़कर)

" धी मारवाड़ी काटन मेन्युफेक्चरिंग कंपनी, लिमिटेड " का भागीदारां की आज सभा होकर सारो कामकाज हुवा पीछे, भाई रामरतनजी एक्स आफिसियो डायरेक्टर की फरमास सूं ओर तीन डायरेक्टरां की राय सूं भाई ब्रजलालजीने इण मिल का मेनेजर नेम्या छे. ओर तारीख १ जनवरी सू इणकी तनखा रुपया पांचसो की कीनी छे. ओर रहवा के तांई मिल मांहेलो वंगलो तथा गाड़ी घोड़ो इणके सुपर्द कीनो छे. इणपर भाई ब्रजलालजी का दस्तखत लेकर नेमी हुई तारीख के दिन मेनेजरी को चार्ज इणाने देणो चाहिजे–संमत् १९६३ मित्ती....." (खीसा मांहे सू ओर कागद काढ़कर)

आ वात तो मिल का डायरेक्टर महाशया कीनी छे. अव म्हारी तरफ सू–कमिशन एजंसी मांहे म्हारो भाग आठ आना को छे तिका मांहे सू चार आना को भाग काकाजीने दीनो छे, तिकारो ओ दस्तावेज कर दीनो छे. (दोन्यूं कागद सामने रखे छे) काकाजी का आज तांई का देणा को निकाळ कर दीनो छे. सारां की रसीदां ले लीनी छे. अव इणको लेणो तो लोगां मांहे छे पण कींको देणो पाई एक छे नहीं. एक हवेली ओर वगीचो चिरू जयदेव का नांव पर कर दीनो छे ओर वींका व्याव के तांई रुपया दस हजार जमा करा दीना छे. (सारा कागद जगन्नाथपरसाद कने देवे छे.)

जगन्ना०–वाह भाई रामरतन सेठ, आज आपको धन्य है, आज आपका कुल देदीप्य मान है, आज आप पुण्यवान् हैं और सर्व शिरोमणि हैं. आपने आज जो प्रेमभाव और सौहार्द दिखाया है वह अतुल है, अनुकरणीय है और अकथनीय है !

रामर०–ओर भी सुणो वावू साव, म्हांका काकाजी का उशा दुःख

मांहे गुलाबचन्दजी तथा अमरसिंग घणा काम आया ओर जात की एक नीच वेश्या होकर भी महबूब काकीजीने मदद दी. तिकासूं महबूब का नांव पर काकाजी का हाथ को कन्यो हुवो घर कायम राखकर जीवे जठे तांई वींने तीस रुपया तनखा देवा को निश्चय हुवो छे. (खीसा मांहे सूं काढ़कर) ये पांच हजार की नोटां गुलाबचन्दजीने इनाम ओर एकसो रुपया की तनखा पर यांने मिल का मुनीम कीना छे. तथा अमरसिंगने भी ये पांच हजार रुपया की नोटां इनाम ओर सवासो रुपया तनखा पर मिल का सुपरवायजर नेम्या छे.

गुलाब०–(श्रीकिसनजीके पगां पड़कर) सेठ साब, म्हे इशो कांई काम कीनो थो सू आप म्हारे तांई आ इत्ती तकलीफ उठाई ! म्हे तो आपको ताबेदार छूं–म्हे म्हारो फरज बजायो इण मांहे कांई हुवो ?

अमर०–वाह सेठ साहब, हम लोग इतने गौरव के लायक नहीं है. हमने हमारा फर्ज अदा किया है. सिवाय इसके और हमने क्या किया है ?

रामचं०–भाई, थे दोन्यू था जरांही कठे ब्रजलालजी जीवता भी रह्या ओर आज ओ इशो सोना को सूरज ऊग्यो !

श्रीकिस०–म्हारे तो ब्रजलाल कुण ओर रामरतन कुण ? कींकी पांती ओर पूळी ! टाबर भूलकर कोई बात कर लेवे अथवा बिगाड़ देवे तो बींको कांई ? पण, मानी नहीं जरां आ इशी तजवीज करणी पड़ी–तो भी अब म्हारो इत्तोही कहणो छे के ओ सारो घरदार ईंको छे ओर ये सारा टाबर ईंका छे यांने संभाळ, सिखा ओर पाळकर अब म्हां लोग लुगायांने रहीसही उमर देव ब्राह्मण की पूजा ओर ईश्वर का भजन मांहे गुजारबा दे !

ब्रजला०–(आंख्या भरकर) आज म्हारा पिता समान पूजनिक बड़ा भाई इतनी दया कीनी छे, इतनी प्रीति कीनी छे ओर इतनी सहायता कीनी छे–तिकारो पार नहीं. वीं नारायणने हाथ जोड़कर बार बार आही प्रार्थना छे के, जनम जनम इशाही भाई, भोजाई ओर भतीजा मने मिलता रव्हो;

ओर म्हारे जिशो दुष्ट, पापी ओर दुराचारी भाई कींने कोई भी काळ मांहे मत मिलो !

श्रीकिस०–(हाथ जोड़कर) फरमावो पंडितजी, अब ओर कांई करणो रह्यो ?

वंसीध०–सेठ साव, अब म्हारी जाण मांहे तो कुछभी बाकी नहीं रह्यो–तो भी परमेश्वर की कृपा सूं:—

भरतवाक्य.

(श्लोक)

होजो सारा घणाही तन, मन, धन सूं स्वस्थ, शान्त, प्रतापी,
बन्धुप्रीति, प्रभाव प्रतिदिन वधजो, फूट होजो न पापी ॥
भारी वेपार होजो हितकर इणको, शक्ति पूरी भुजां की
लक्ष्मी, विद्या सदाही हिलमिल रहजो मारवाड़ी प्रजा की ॥

(सारा जावे छे.)

उपसंहार.

(दोहो)

करवा निज वेपार सूं, अमित[1] देश-उपकार ।
हिळमिल सब सूं चालवा, रच्यो ग्रन्थ सुख[2]-सार ॥ १ ॥

(श्लोक)

उन्नीससो त्रेसट के महीने,
वैसाख लाँग्यां[3] नवमी तिथीने ॥
आरम्भ कीनो, झट अष्टमीने-
पूरो हुवो जेठ वदी महीने ॥ २ ॥

म्हारो जन्म वरिष्ठ वैश्य-कुळ में, हूं अग्रवंशी[4], तथा-
गोत्री सिंगल, बैंक छे भरतिया, विद्यानिवास[5] प्रथा ॥
कीनो ग्रन्थ समर्पण[6] प्रभु-पगां, वो बुद्धि देवो सदा-
सारांने, कुळरीत शुद्ध करने, होवा घणी लाँभदा[7] ॥ ३ ॥

कीना घणा श्रम सदा करवा सुधार-
जाति-प्रचार[8], मन मांहि उमंग धार ॥
ओ ग्रन्थ केवळ रच्यो समयानुसार[9],
वेपार को सुधरवा निज कारभार ॥ ४ ॥

लक्ष्मी को रहवो सदा विणज में, साचो कर्‌यां-छे घणो,
सट्टो वेशक फाटको, कपट को जंजाळ छे चोगणो ! ॥
चीजां हुनर सूं वणाकर घणी वेचो खरीदो सदा,
लावाने परदेश[10] सू धन उठे भेजो, करो लाभदा ॥ ५ ॥

---

१ गिणती विना को, घणो. २ सुख को सार, सुख रूपी. ३ वैसाख वदी. ४ अग्रवाल. ५ "विद्यानिवास" जिणकी पदवी छे. ६ अर्पण कीनो. ७ फायदो करवाळी. ८ जात की रीतां. ९ समया के माफक. १० विलायत विगेरा दूजा देस.

रक्षा करो धरम की, निज देशकीही,
सस्ती गिणो न महँगी न भली बुरीही ॥
ल्यो देश की वणि हुई निज चीज सारी,
छीवो न अन्य[1], करवा निज की खुवारी[2] ॥ ६ ॥

विद्या, कला[3], उद्यम[4], सीख भारी,
वेपार की रीत सुधार सारी ॥
स्वदेश की चीज करो प्रचार[5],
भेळो करो द्रव्य पछे अपार ॥ ७ ॥

एकी करो, प्रीत वधा, भरोसो–
राखो प्रभू को, छल सूं न कोसो[6] ॥
स्वधर्म-जाति[7] स्वकुल-प्रभाव[8],
सदा वधावो निज देश-भाव[9] ॥ ८ ॥

भाषा मरेठी, निज मारवाड़ी,
हिन्दी तथा गुर्जर[10] में अगाड़ी ॥
रच्या घणा ग्रन्थ, निबन्ध-चर्चा[11],
विद्यार्थ[12] बुद्धी, धन[13] खूब खर्चा ॥ ९ ॥

देख्या घणा दुःख, उशो प्रवास[14]–
कीनो, सदा पुस्तक-सन्निस[15] ॥
सेव्या घणा पंडित साधु लोग,
भोग्या विशा राजविलास[16] भोग ॥ १० ॥

---

१ दूजी, दूजा देस की, परदेस की. २ खरावो, नाश. ३ हुनर, यंत्र को काम. ४ चीजां वणावा को काम. ५ बरतणो, काम मांहे लेणो. ६ छीननो. ७ आपको धर्म ओर जात. ८ आपका कुळ को वड़पण. ९ देस की प्रीति. १० गुजराती. ११ लेख की चर्चा. १२ विद्या के ताईं. १३ पैसो. १४ मुशाफरी. १५ पोथी पुस्तकां मांहे रव्हणो. १६ राजा का सा भोग.

परन्तु माया प्रभु की अपार,
जाणे न कोई, सबही असार[1]।
स्वदेश[2]-सेवा प्रभु-नाम साचो,
ज्यांके[3] विना कोइ वड़ो न आछो ॥ ११ ॥

(आर्या)

आकाश-चन्द्र-निधि-भूँ[4], संवत शुभ[5] चैत्र-शुक्ल सातमने ॥
जन्म हुवो इण कवि को, अर्प्यो प्रभु के पदाब्ज[6] आतमने[7] ॥१२॥

(दोहा)

दादा गंगारामजी, जिणको पुण्य अपार ।
जाया सुत बलदेवजी, कीनो कुळविस्तार ॥ १३ ॥
उणको सुत शिवचन्द्र है, कुळ में शास्त्र-प्रवीन[8] ।
कुळ की रीत सुधारवा, कीनो ग्रन्थ[9] नवीन ॥ १४ ॥
आवो सज्जन साहवा ! पढ़ो सुणो चित लाय ।
कुळ की रीत सुधारने, टाळो दूर बलाय ॥ १५ ॥
भजन करो जगदीश को, देशभक्ति चित आण ।
देश-कथा प्रभु-नाम सूं, होजो अमर सुजाण ॥ १६ ॥
वार वार आ प्रार्थना, प्रभुजी हे जगदीश ! ।
करो दया इण देश पर, देवो शुभ आशीस ॥ १७ ॥

॥ इति ॐ तत्सत् ॥

---

१ झूठ, सार विना को. २ आपका देश की सेवा. ३ देश की सेवा और प्रभु का नाम विना. ४ संवत् १९१०. ५ आछा चैत की सुदी सातमेन. ६ पदकमल पर. ७ अत्माने. ८ सास्तर मांहे पूरो. ९ " फाटकाजंजाल नाटक. "